छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा **षष्ठम् सत्र**

गुरुवार, दिनांक 05 मार्च, 2020

(फाल्गुन 15, शक सम्वत् 1941)

[अंक 09]

Website copy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

गुरूवार, दिनांक 5 मार्च, 2020

(फाल्गुन 15, शक संवत् 1941)

विधान सभा पूर्वाहन 11.00 बजे समवेत हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर

नगरीय निकाय को ग्राम पंचायत बनाने का निर्माण

1. (*क्र. 1296) श्री खेलसाय सिंह : क्या नगरीय प्रशासन मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) विगत पांच वर्षों में छत्तीसगढ़ प्रदेश के किन-किन जिलों के किन-किन नगरीय निकायों को ग्राम पंचायत बना दिया गया है ? जिलेवार निकायवार जानकारी देवें ? (ख) क्या जिला सूरजपुर के नगर पंचायत प्रेमनगर को पुनः ग्राम पंचायत बनाये जाने हेतु प्रक्रिया विचाराधीन है ? यदि हां, तो प्रक्रिया कब तक पूर्ण कर लिया जावेगा ?

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) : (क) जिला-कोण्डागांव के नगर पंचायत विश्रामपुरी को राज्य शासन की अधिसूचना क्र. एफ 1-40/2009/18 दिनांक 21.09.2015 द्वारा विघटित किया गया है. (ख) जी नहीं.

अध्यक्ष महोदय :- खेलसाय सिंह जी आये हैं। आपका स्वागत है। आप पहला प्रश्न करिए। खेलसाय सिंह जी।

श्री खेलसाय सिंह :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया है कि जिला कोण्डागांव से नगर-पंचायत विश्रामपुरी..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, खेलसाय सिंह जी बहुत ही सीनियर सदस्य हैं। उन्हें यदि प्रश्न पूछने की जरूरत पड़ गई तो इसका मतलब है कि कोई न कोई गंभीर बात है। क्यों खेलसाय सिंह जी कोई न कोई गंभीर बात है। क्योंकि कि वे अमूमन पूछते नहीं।

श्री अरूण वोरा :- चन्द्राकर जी आपको इसमें पारदर्शिता नहीं दिखती कि सरकार कितनी पारदर्शी है।

श्री कवासी लखमा :- आप इतने वरिष्ठ आदमी को क्यों टोक रहे हैं ?

श्री अरूण वोरा :- यस।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आपका 10 लाख लीटर दारू पकड़ाया है, उसे जाकर देखो, इधर छोड़ो और टाइल्स के भीतर में दारू पकड़ाया। यह होली क्या अकेले सुकमा में मनायी जाएगी। वह 10 लाख लीटर सुकमा में जाएगा क्या? यह बताओ। क्या अकेले सुकमा जायेगा क्या अकेले 10 लाख लीटर दारू?

श्री कवासी लखमा :- सुकमा जायेगा क्या अकेले ? 10 लाख रूपये दूंगा। तुम क्यों नहीं चले जाते?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग तो पकड़ रहे हैं। ये लोग तो पूरा पी जाते थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपका महाप्रसाद अभी शुरू नहीं करथन। बाद में करबो।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, खेलसाय सिंह जी बैठे हैं। उन्हें इस बात का सम्मान..।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, आज विपक्ष पूरा का पूरा साफ है। दिख नहीं रहा है, उसी काम में लगे हैं क्या?

श्री धर्मजीत सिंह :- इतने वरिष्ठ सदस्य हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- उधर एक ही आदमी की गिनती होती है। आप भ्रम में मत रहना कि आपकी कोई गिनती है। जब वे नहीं हैं तो कोई नहीं है। थोड़ा बहुत वलीय हो गये हैं माननीय मोहम्मद अकबर जी।

अध्यक्ष महोदय :- वलीय।

श्री अजीत जोगी :- लखमा जी, वह पूरी 10 लाख लीटर शराब कुरूद भेज दो।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, ये पूरी तैयारी प्रश्न के जी हां के जवाब को लेकर आये थे। अभी-अभी इनको पता चला कि जी नहीं हो गया है करके। (हंसी) अब वे बहुत परेशान हैं, लेकिन फिर भी वे पूछेंगे। अभी 5 मिनट पहले उन्हें जी नहीं करके बताया गया है। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- हां, उन्हें पूछने दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- सहन करने की आदत हो गई है न।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए।

श्री खेलसाय सिंह :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने उत्तर दिया है कि जिला कोण्डागांव के नगर-पंचायत विश्रामपुरी को राज्य शासन की अधिसूचना क्रमांक एफ 1-40/2009/18 दिनांक 21/09/2015 द्वारा विघटित कर दिया गया है। मैं यह जानना चाहता हूं कि कोण्डागांव नगर-पंचायत विश्रामपुरी को विघटित करने का क्या कारण है?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आवाज कम लग रहा है। मैं कान में लगा लेता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- यह कोण्डागांव का प्रश्न है।

श्री खेलसाय सिंह :- संबंधित है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोण्डागांव का तो इसमें कोई प्रश्न ही नहीं है।

श्री खेलसाय सिंह :- आया हुआ है। आपने इसमें खुद लिखा है।

अध्यक्ष महोदय :- जिला कोण्डागांव के नगर-पंचायत विश्रामपुरी को राज्य शासन की अधिसूचना से विघटित किया गया है। इन्होंने सूरजपुर के बारे में पूछा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष जी, मैंने माननीय सदस्य को बताया है कि यह पुराने प्रस्ताव हैं। वर्ष 2015 में नगर-पंचायत विश्रामपुरी को विघटित किया गया था।

श्री खेलसाय सिंह :- विघटित किया गया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पहले नगर-पंचायत था, अब उसे ग्राम पंचायत बना दिया गया है, क्योंकि वहां के नगर-पंचायत ने प्रस्ताव पारित करके कहा था कि हमें नगर-पंचायत के स्थान पर ग्राम पंचायत बना दिया जाए। इसलिए उसे उस समय की सरकार ने निर्णय लेकर बना दिया था।

श्री खेलसाय सिंह :- मैं यह पूछना चाहता हूं कि जिला सूरजपुर के नगर-पंचायत विश्रामपुर को क्या ग्राम सभा से नगर-पंचायत बनाने की अनुमति थी? क्या यह प्रस्तावित हुआ था?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मैं उसे दिखवा लूंगा।

श्री खेलसाय सिंह :- अध्यक्ष महोदय, कारण तो वही है। कौन सा प्रस्ताव नहीं हुआ था, इसी कारण मैंने यहां पर प्रश्न रखा है कि जब ग्राम सभा से प्रस्तावित नहीं है नगर-पंचायत प्रेमनगर तो क्यों बनाया गया।

श्री अजीत जोगी :- आदरणीय अध्यक्ष जी..।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हमारे जो ग्राम पंचायत का प्रस्ताव है, इनको बनाने के लिए ग्राम पंचायत ने प्रस्ताव पारित किया था, इसलिए उसे बनाया गया था। ग्राम पंचायत ने विधिवत प्रस्ताव दिया था। प्रेमनगर की बैठक दिनांक 07/05/2008 में प्रस्ताव क्रमांक 8 द्वारा यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि ग्राम पंचायत को नगर-पंचायत बना दिया जाए। इसलिए उस समय नगर-पंचायत बना दिया गया था और अभी वहां माननीय सदस्य जी ने कहा था कि उसे ग्राम-पंचायत बना दिया जाए। उस प्रस्ताव पर चर्चा हुई और वहां पर नगर-पंचायत में बैठक रखा गया। नगर-पंचायत की सामान्य सभा ने उसे पूर्ण बहुमत से निरस्त कर दिया कि हमें ग्राम-पंचायत नहीं बनाना है। कलेक्टर सूरजपुर ने पत्र क्रमांक 37 दिनांक 27.04. में बताया है कि अनुविभागीय अधिकारी राजस्व की उपस्थिति में दिनांक 24.03.18 दिन शनिवार अपराह्न 12.45 बजे से 1.00 बजे तक गुप्त मतदान के माध्यम से मतदान कराया गया। जिसमें 16 मत थे। समस्त पार्षदगण और अध्यक्ष सहित डाले गये थे। 15 मत वैध हुए और 1 मत अवैध हुआ। नगर पंचायत प्रेमनगर यथावत बनाये रखने के पक्ष में 8 मत पड़ा था, जो कि बहुमत है। इसलिए कलेक्टर ने प्रस्ताव भेजकर कहा कि सामान्य सभा ने इसको निरस्त कर दिया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

इसलिए नगर पंचायत को विघटित नहीं किया जाना चाहिए, ऐसा प्रस्ताव कलेक्टर को आया है। इसलिए अभी उस पर कोई विचार नहीं कर रहे हैं।

श्री अजीत जोगी :- अध्यक्ष जी, एक संवैधानिक प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। मुझे लगता है कि खेलसाय सिंह जी के साथ खेल हो गया है। (हंसी) 16 वोट थे। 15 वोट पड़े। 8 पक्ष में पड़े और एक निरस्त हो गया और इस तरह से खेल हो गया, ऐसा लगता है। आपको क्या लगता है ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय खेलसाय सिंह जी हमारे वरिष्ठ सदस्य हैं। हम सब उनका सम्मान करते हैं और उनके साथ इस तरह का खेल कोई नहीं कर सकता है।

श्री खेलसाय सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ..।

श्री अजीत जोगी :- खेलसाय सिंह जी, आप ही संबंधित प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष महोदय :- सब आपके साथ हैं। आप शांति से बैठे रहिये।

श्री अजीत जोगी :- एक महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न है। संविधान में अनुसूची-5 और अनुसूची-6 है, जो आदिवासियों के हितों को सरंक्षित करती है। इसलिए अनुसूची 5 और अनुसूची-6 के क्षेत्रों में कोई नगर पंचायत नहीं बन सकता। इसका मुख्य कारण है कि ग्राम पंचायत रहती है तो पूरा आरक्षण आदिवासियों का रहता है। नगर पंचायत बनने के बाद आदिवासी बाहुल्य इलाकें में भी अन्य वर्गों को भी प्रतिनिधित्व मिल जाता है। इसलिए बाबा साहब अम्बेडकर ने संविधान की अनुसूची 5 और अनुसूची 6 के क्षेत्रों में में केवल ग्राम पंचायत बन सकता है और उसके बाद नगर निगम बन सकता है। नगर पंचायत नहीं बन सकता। क्योंकि नगर पंचायत बनेगा तो उसमें हमार आदिवासियों को मौका नहीं मिलेगा। अध्यक्ष गैर आदिवासी भी होगा। तो यह एक मौलिक संवैधानिक प्रश्न है। आप अनुसूची-5 के क्षेत्र में नगर पंचायत को नहीं बना सकते। जहां भी नगर पंचायत बनी है, वह आदिवासियों के हितों के विपरीत है। मैं यह पूछना चाहूंगा कि क्या आप इस संवैधानिक प्रावधान का पालन करेंगे ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- निश्चित रूप से माननीय अध्यक्ष महोदय। संविधान की पालन करने की प्रक्रिया रही है। हमारी कांग्रेस पार्टी और हमारी कांग्रेस की सरकार बाबा साहब अम्बेडकर के संविधान को पूरी तरह से मानती है। इन क्षेत्रों में आदिवासियों की कहीं अहित न हो, यह सरकार सुनिश्चित करेगी।

श्री अजीत जोगी :- तो फिर आप नगर पंचायत मत बनाओ। नगर पंचायत नहीं बननी चाहिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- बाबा साहब अम्बेडकर की कौन-कौन सी बात मान रहे हैं, जरा बता दो। सब चीज तो विरोध में करते हो। कुछ मानते तो हो नहीं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप बीच में मत खड़े हो। संविधान विरोधी आदमी हो। संविधान को मानते हो नहीं।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अरूण वोरा :- शर्मा जी, पंडित जवाहर लाल नेहरू से लेकर अब तक बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के संविधान पर ही सरकार चल रही है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बढ़िया।

श्री धर्मजीत सिंह :- भैय्या, खेलसाय जी को पूछने दो। परेशान हैं। उनको तो हल निकालने दो। आप पूछो।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने बोला कि पूछ रहे है तो मामला गंभीर है।

श्री खेलसाय सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी सदन में दिनांक 02.03.2019 को ही प्रश्न जिला सूरजपुर के नगर पंचायत विश्रामपुर को नगर पंचायत बनाने के लिए रखा था। इसमें माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय पंचायत मंत्री आदरणीय टी.एस. सिंहदेव जी, माननीय मंत्री श्री अमरजीत भगत जी, आदरणीय धनेन्द्र साहू जी ने भी समर्थन किया था कि इसको नगर पंचायत बनाया जाये। जब हमारे सभी वरिष्ठ लोगों ने समर्थन किया तो आज आपको समर्थन करना चाहिए कि नगर पंचायत बनाया जाये। इसमें आपका क्या कहना है ?

श्री अजीत जोगी :- खेलसाय जी, मत बनवाईये। गैर आदिवासी आ जायेगा। ग्राम पंचायत रहने दीजिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- उधर जाते ही क्या हो गया, ये बोल रहे हैं ? अमरजीत जी, आप सिर झुकाकर बैठे हैं, बोलिये न। बहुत बोलते हैं। इनके बारे में बोलिये।

श्री अजीत जोगी :- गैर आदिवासी आ जायेगा।

श्री खेलसाय सिंह :- सभी लोगों ने समर्थन किया तो क्या कारण है कि आज आप उसका विरोध करते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- ये चाहते हैं कि पंचायत बना दिया जाये तो विधान सभा से बड़ा नगर पंचायत थोड़े ही है। यहां घोषणा करके बना दीजिये।

खाद्यमंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी बढ़िया जवाब दे रहे हैं । माननीय खेलसाय सिंह जी जो बोल रहे हैं, उनके साथ हम सबकी भावनाएं हैं ।

श्री अजीत जोगी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शिव डहरिया जी सबसे प्रबुद्ध मंत्रियों में से हैं, अच्छा जवाब दे रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सिंहदेव साहब, आज का प्रश्न क्रमांक 1 है, खेलसाय सिंह जी जैसे वरिष्ठ सदस्य परेशान हैं । इस पर आपकी टिप्पणी चाहिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह अभी आए हे, पढ़े ला लागही, थोड़ी टाईम लगही ।

अध्यक्ष महोदय :- जब तक आप उत्तर दीजिए, तब तक वे पढ़ रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो उत्तर दे डरेव अउ हमार सदस्य जी भी संतुष्ट हो गे हे, बैठ गे हे, फेर ओला काबर उठाए बर तैयार हो ए हवव।

श्री खेलसाय सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने जो उत्तर दिया है, वह मेरे पास है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपना प्रश्न दोहरा दीजिए । खेलसाय जी वरिष्ठतम सदस्य हैं, लोकसभा के वरिष्ठतम सदस्य रह चुके हैं ।

पंचायत मंत्री (श्री टी. एस. सिंहदेव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात सही है कि वहां के नागरिकों की एक मत राय थी कि विश्रामपुर को नगर पंचायत बनायी जाए । हम लोगों ने सबसे बात की थी । अमूमन यह पंचायत में नहीं होता है, बाकी शासन की मंशा है, लेकिन वहां के लोगों की, सबकी एक राय यही है ।

अध्यक्ष महोदय :- और कुछ कहना चाहते हैं ?

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, खेलसाय जी ग्राम पंचायत बनाने की मांग कर रहे हैं ।

श्री खेलसाय सिंह :- प्रेमनगर को ।

श्री टी. एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रेमनगर को ग्राम पंचायत और विश्रामपुर को नगर पंचायत बनाने की बात है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य अपने नगर पंचायत को ग्राम पंचायन बनवाना चाहते हैं । मंत्री जी बोल रहे हैं कि नगर पालिका से प्रस्ताव पास हो गया है कि ग्राम पंचायत नहीं बनाना है, लेकिन जब आप यहां बैठे थे, अमरजीत जी यहां बैठे थे और मुख्यमंत्री जी यहां बैठे थे (अपनी सीट की ओर इशारा करते हुए) तो आप लोगों ने कहा था कि हां, ग्राम पंचायत बननी चाहिए। अब ग्राम पंचायत बनाने से आप डर क्यों रहे हैं? पीछे बैठे मंत्री जी बोलिए न ।

श्री टी. एस. सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोई डर नहीं है, मैं तो निवदेन करूंगा कि इसमें एक समय-सीमा होती होगी क्योंकि वहां मतदान कराया गया था कि आप चाहते हो या नहीं ? मतदान में प्रस्ताव पारित नहीं हुआ तो कितने समय बाद वह प्रस्ताव दोबारा लाया जा सकता है तो प्रस्ताव लाकर उसमें विचार करना चाहिए क्योंकि लोगों की मंशा है और वह ग्रामीण परिवेश की बस्ती है, जहां काम नहीं हो पाता । मनरेगा नहीं हो पाता, वन अधिकार नियम लागू नहीं हो पाता, बाकी अन्य काम हैं, जो उस बस्ती में नहीं हो पाते, हालांकि वह ब्लॉक मुख्यालय है, लेकिन बहुत सारे काम नहीं हो पाते । यह सही बात है कि माननीय सदस्य ने जो बात उठाई है, वहां एक बड़ा वर्ग चाहता है और विशेषकर आदिवासी वर्ग यह चाहता है कि वहां पर नगर पंचायत बनायी जाए ।

श्री अजीत जोगी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी, आप देर से आये । मैंने पहले कहा कि संविधान यह कहता है कि अनुसूची 5 के क्षेत्रों में नगर पंचायत नहीं बनायी जा सकती क्योंकि

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

यह आदिवासियों के हितों के विपरीत है । वहां आप वनाधिकार पट्टा नहीं दे सकते, वहां आप जो सरपंच बनेगा, नगर पंचायत अध्यक्ष बनेगा, वह आरक्षित पद नहीं रहेगा, सामान्य व्यक्ति बन जाएगा और अगर ग्राम पंचायत रहेगी तो वह आदिवासी ही रहेगा इसलिए संविधान में यह प्रावधान है, यह मंत्री जी के विवेक पर निर्भर नहीं करता । खेलसाय सिंह जी जो कह रहे हैं, वह बिल्कुल सही कह रहे हैं । वहां ग्राम पंचायत ही रहनी चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- आप क्या कर रहे हैं ?

श्री शिशुपाल सोरी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी संदर्भ में मैं बोलना चाहता हूं । संविधान के अनुच्छेद 243 (जेड) (सी) है, जिसका उल्लेख जोगी जी कर रहे हैं । उसमें अधिसूचित क्षेत्रों में इस तरह का काम वर्जित है और अभी पूरे आदिवासी समाज से यह मांग भी आ रही है कि जो अधिसूचित क्षेत्रों में राज्य निर्माण के बाद नगर पंचायत बने हैं, वह अवैध हैं । उनको फिर से पंचायत बनायी जाए ।

अध्यक्ष महोदय :- उसमें माननीय मंत्री जी विचार कर लेंगे ।

श्री अजीत जोगी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें आप व्यवस्था दे दीजिए, यह संवैधानिक प्रश्न है और माननीय सदस्य जो कह रहे हैं, वे मेरी बात को ही और ज्यादा स्पष्ट कर रहे हैं । संविधान के अनुसार अनुसूची 5 के क्षेत्र में आप नगर पंचायत नहीं बना सकते ।

अध्यक्ष महोदय :- वे देख लेंगे, माननीय मंत्री जी उनको अलग से मिलकर बता देंगे।

श्री अजीत जोगी :- अगर नगर पंचायत बन जाएंगे, उनको वनाधिकार पट्टा नही मिलेगा, उनको मनरेगा नहीं मिलेगा, उनको बहुत सी सुविधाएं नहीं मिलेंगी, उनको आरक्षण नहीं मिलेगा । कृपया एडव्होकेट जनरल से उस पर ओपीनियन ले लीजिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय जोगी जी वरिष्ठतम सदस्य हैं, वे अपनी बात को तीन-चार बार बोल चुके हैं । मैं समझ गया, सरकार उनकी मंशा को समझ गई । संविधान में जो आदिवासियों का हित है, उस हितों की रक्षा के लिए हम प्रतिबद्ध हैं, उनके हितों पर कहीं कोई दिक्कत नहीं आएगी और सरकार उनके हितों का पूरा ध्यान रखेगी ।

श्री अजीत जोगी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप आसंदी से आदेश कीजिए कि एडव्होकेट जनरल से राय ले लें कि इसमें क्या संवैधानिक बात है ? मैंने और सोरी जी ने जो बात कही और मेरे आदिवासी जितने विधायक साथी हैं, वे भी यही बात कहेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री मोहन मरकाम ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

<u>मदिरा दुकानों में कार्यरत स्टॉफ को वेतन भुगतान</u>

2. (*क्र. 1257) श्री मोहन मरकाम : क्या वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) क्या वित्तीय वर्ष 2018-19 एवं 19-20 में शासन द्वारा मदिरा विक्रय हेतु किए गए अनुबंध की शर्तों में मदिरा दुकानों में रखे जाने वाले स्टाफ को किस दर पर वेतन भुगतान किए जाने का प्रावधान रखा गया है ? (ख) क्या अनुबंधित फर्म/एजेन्सी को स्टाफ से अमानत राशि लिये जाने का प्रावधान अनुबंध की शर्तों में हैं ?

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) : (क) वित्तीय वर्ष 2018-19 एवं 2019-20 में छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा चयनित एजेंसियों के द्वारा मदिरा दुकानों में रखे जाने वाले नियोजित कर्मियों के वेतन की जानकारी परिशिष्ट पर †[1] संलग्न है. (ख) कर्मियों से अमानत राशि लये जाने का प्रावधान नहीं है.

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहा था और माननीय मंत्री जी का उत्तर आ गया है । छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन के माध्यम से, प्लेसमेंट एजेंसियों के माध्यम से, मदिरा दुकानों में कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती है । माननीय मंत्री जी का उत्तर आया है, इसमें कर्मियों से अमानत राशि लिये जाने का प्रावधान नहीं है । मुझे बहुत से शिक्षित बेरोजगारों ने बताया है कि डी.डी. के रूप में प्लेसमेंट एजेंसियों ने उनसे एक बड़ी अमानत राशि ली है । मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ में मदिरा दुकानों में कितने कर्मचारी तैनात हैं ? आपका जो ऑन्सर आया है, क्या यह सही है ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, सरकार की ओर से अमानत राशि जमा करने का कोई निर्देश नहीं है ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, बेरोजगार लोग ...।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मरकाम जी, आप भी बस्तर में रहते हैं, वह भी बस्तर में रहते हैं । आप उनकी मजबूरियों को समझते हैं । आप जबरदस्ती उलझाने लायक प्रश्न क्यों कर रहे हैं ?

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, शिक्षित बेरोजगारों के साथ अन्याय हो रहा है । सरकार ने जो भी निर्देश दिया है, जो प्लेसमेंट एजेंसी हैं, वह शिक्षित बेराजगारों के साथ अन्याय कर रही है । मेरा स्पष्ट कहना है कि जो मेरे पास डी.डी. है, प्राइम वन वर्क फोर्स प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल अलर्ट कमांडोस...।

अध्यक्ष महोदय :- मैं वही तो कह रहा हूँ ।

[1] परिशिष्ट “एक”

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, जो प्लेसमेंट एजेंसी है, सरकार के निर्देशों की भी अवहेलना कर रही है । मेरा स्पष्ट कहना है कि क्या सरकार उनके ऊपर कार्यवाही करेगी ...। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- मरकाम जी, एक मिनट । आपके जनघोषणा पत्र बनाने वाले ने कहा था कि आऊटसोर्सिंग नहीं करेंगे । आप प्रश्न ही मत पूछिये, आऊटसोर्सिंग बंद करने की घोषणा कीजिए, हटाने की घोषणा कीजिए । आपकी सरकार ने कहा था...। (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे शिक्षित बेरोजगारों के साथ प्लेसमेंट एजेंसियां अन्याय कर रही है । सरकार ने निर्देश दिया अच्छी बात है कि उनसे कोई अमानत राशि नहीं लेना है । मगर डी.डी. भेजे हैं, किसी से 30 हजार, 40 हजार, 50 हजार रूपये ले रहे हैं ....। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- आप आऊटसोर्सिंग के समर्थन में है क्या ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि जो मैंने पहले कहा प्राईम वन वर्क फोर्स प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल अलर्ट कमांडो जो शिक्षित बेरोजगारों से पैसा लिये हैं, क्या उनके ऊपर कार्यवाही करेंगे ? मेरा दूसरा प्रश्न है, जो कर्मचारी हैं, उनसे ई.पी.एफ. राशि वसूल की जाती है क्या? ई.पी.एफ. के रूप में राशि काटा जाता है क्या ?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले भी बोला था, अभी भी बोल रहा हूँ कि पैसा लेने का कहीं भी कानून में नहीं है, माननीय मोहन मरकाम जी हमारे विधायक भी हैं, प्रदेश अध्यक्ष भी हैं, यदि शिकायत करते हैं तो उनका पैसा वापस किया जायेगा ।

अध्यक्ष महोदय :- अपने कक्ष में बुला लीजिए और समझाईये । श्री चन्द्रदेव राय ।

श्री मोहन मरकाम :-अध्यक्ष महोदय, कर्मचारियों के हित की बात है । एजेंसियों द्वारा संबंधित कर्मचारियों के वेतन से ई.पी.एफ. राशि काटी जाती है क्या ? क्योंकि डेली वेजेस भी होते हैं, उनसे भी ई.पी.एफ. राशि काटी जाती है ।

श्री अजीत जोगी :- स्पेसिफिक सवाल है, उसका जवाब आने दो ना ।

श्री कवासी लखमा :- अगर शिकायत करेंगे, हमारे विधायक जी बोलेंगे कि ऐसा कहीं-कहीं हुआ है तो पैसा कहीं जमा हुआ है तो उनको जांच करेंगे और पैसा वापस किया जायेगा ।

अध्यक्ष महोदय :- गरीब आदमी को क्यों परेशान कर रहे हो ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रदेश का मामला है ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ई.पी.एफ. राशि कर्मचारियों से काटी जाती है..।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, यह नाटक पूरे प्रदेश में हो रहा है । इस सरकार ने आऊटसोर्सिंग बंद करने का आदेश किया था, पूरे प्रदेश में बिहार और यू.पी. के लठैत दारूभट्ठियों से यहां का आधार कार्ड बनाकर काम कर रहे हैं । आऊटसोर्सिंग बंद करने की बात करते हो । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो कर्मचारी काम करते हैं, उनका ई.पी.एफ. और पी.एफ. कटता है कि नहीं कटता है ? मोहन मरकाम बहुत अच्छा प्रश्न कर रहे हैं, माननीय मंत्री जी जवाब दें ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कर्मचारियों का ई.पी.एफ. राशि काटा जाता है क्या ? ई.पी.एफ. उस विभाग को जाता है क्या ? माननीय अध्यक्ष जी, जो कर्मचारी काम करते हैं, पलेसमेंट एजेंसियां है, उनसे ई.पी.एफ. राशि काट लेती है । क्या वह सरकार के विभाग में जमा होती है ?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, मोहन मरकाम जो बोल रहे हैं, ई.पी.एफ. से संबंधित कोई शिकायत करेंगे तो उसे दूर किया जायेगा ।

श्री मोहम मरकाम :- धन्यवाद अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न नहीं कर सकते, सलाह दे सकते हैं। आपने दे दिया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय।

श्री कवासी लखमा :- पंडित आदमी को दारू की क्या जरूरत है? पीते हैं क्या? अगर पीते हैं तो भेज देता हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह उत्तर देना चाहते हैं और अकबर साहब उनको पकड़-पकड़कर बिठाते हैं।

<u>बिलाईगढ़ विधानसभा क्षेत्र के शासकीय महाविद्यालयों में स्वीकृत एवं रिक्त पद</u>

3. (*क्र. 1609) श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय: क्या उच्च शिक्षा मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) बिलाईगढ़ विधानसभा क्षेत्र में कितने शासकीय महाविद्यालय हैं? (ख) महाविद्यालयों में स्वीकृत पदों की जानकारी दीजिए? (ग) कितने पद रिक्त और कितने में पदस्थ हैं? (घ) रिक्त पदों की भर्ती कब तक हो जायेगी?

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) : (क) बिलाईगढ़ विधान सभा क्षेत्र में 03 शासकीय महाविद्यालय है. (ख) एवं (ग) जानकारी परिशिष्ट पर ††[2] संलग्न है. (घ) निश्चित समयावधि बताना संभव नहीं है।

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय:- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से महाविद्यालयों में स्वीकृत, कार्यरत और रिक्त पदों की जानकारी चाही है। वह जानकारी दी गई है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि बिलाईगढ़ महाविद्यालय में प्राचार्य के पद खाली हैं, सहायक

---

††[2] परिशिष्ट "दो"

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्राध्यापक के 12 पद स्वीकृत हैं जिसमें से 5 भरे हैं, शेष 07 पद रिक्त हैं। वैसे ही ग्रंथपाल, सहायक ग्रेड-2, सहायक ग्रेड-3, प्रयोगशाला तकनीशियन, प्रयोगशाला परिचारक ये पूरे पद खाली हैं। भटगांव महाविद्यालय में भी प्राचार्य नहीं हैं और वहां सहायक प्राध्यापक के 06 पद रिक्त हैं। नवीन महाविद्यालय सोनाखान में पूरे के पूरे पद खाली हैं। वहां न तो प्राचार्य हैं, न प्रोफेसर हैं, न सहायक प्राध्यापक हैं, न ही प्रयोगशाला परिचारक या तकनीशियन हैं और न ही भृत्य हैं। वहां एक भी कर्मचारी नहीं है। मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि ये पूरे पद कब तक भरे जायेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- मेरा सभी सदस्यों से एक निवेदन है यदि आप लोग सुनें तो, एक प्रश्न में सरकार के कम से कम 10 लाख रूपये बर्बाद होते हैं। कहां कितने पद खाली हैं, कितने भरे गये हैं, कब भरे जायेंगे इस तरह के प्रश्नों पर सरकार की 10 लाख रूपये की राशि को जाया करना मैं उचित नहीं समझता।

श्री अजीत जोगी :- अध्यक्ष जी, हम लोग आपसे सहमत हैं। धन्यवाद, आपका अच्छा आदेश हुआ।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- जोगी जी, आजकल हमारी सरकार के हर बात पर पूरी तरह सहमत हो जाते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग सहमत हैं या नहीं?

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, लेकिन एक बात है कि इतने पद खाली हैं तो कालेज चल कैसे रहा है यह भी तो सदन जानना चाहता है? चल कैसे रहा है यह हम जानना चाहते हैं?

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, करें, आज के प्रश्न पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है, भविष्य के लिए बोल रहा हूं। सामान्य प्रश्नों में सरकार का 10 लाख रूपये खर्च होना उचित नहीं है।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष महोदय, आसंदी से बहुत अच्छा निर्देश हुआ। अभी अजय जी पूछ रहे हैं कि पूरे पद खाली हैं तो कालेज कैसे चल रहा है, तो आप उच्च शिक्षा मंत्री रहे हैं तब से चल रहा है। दूसरी बात ये तो प्रश्नों के संदर्भ में नियम प्रक्रियाओं में आपके निर्देश हैं कि इंफारमेटिव कितने शब्द में प्रश्न आना चाहिए। कभी-कभी एकाध प्रश्न ऐसा हो जाता है कि मैं समझता हूं कि प्रश्न करने वाले और उत्तर देने वाले दोनों उसको नहीं पढ़ सकते, क्योंकि एक पूरा रामायण की किताब जैसा पुस्तकालय से उत्तर आता है। थोड़ा सा यह कि सचिवालय भी ऐसे प्रश्नों को अग्राहय करे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, संसदीय कार्यमंत्री का सुझाव क्या है, इसमें उनकी असल नीयत क्या है? ये स्पष्ट होना चाहिए। क्योंकि सवा साल में भाई साहब के बनने के बाद पूरे सत्र में ऐसे 100 उदाहरण आये हैं कि ये अपने ढंग से उनको नये तरीके से करके यहां की कार्रवाई को प्रभावित करना चाहते हैं। प्रश्न पूछना हमारा अधिकार है और प्रश्न कैसे पूछे जाएं, नहीं पूछे जाएं उसके पर्याप्त निर्देश नियमावली में हैं। अध्यक्ष महोदय, आपने बहुत नीतिगत बात कही लेकिन यदि लंबे प्रश्न

Uncorrected and unedited/Not for Publication Thursday, March 05, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

को छोटे किए जाएं तो यही संसदीय कार्य मंत्री की अधिकारिता है? यह अधिकारिता सचिवालय की है, अध्यक्ष महोदय आपकी है।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी अधिकारिता समझता हूं और आसंदी का क्षेत्राधिकार भी समझता हूं। अजय जी, इसमें मुझे आपके सुझाव की जरूरत नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप प्रश्न की साईज क्यों बता रहे थे?

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, मैंने बताया न। ऐसा होता है जैसा आसंदी ने चिंता व्यक्त की और सरकार की चिंता है। आपने कहा न कि माननीय सदस्य ने प्रश्न किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या सरकार लंबे, छोटे प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार नहीं है, आपके मंत्री तैयार नहीं हैं? क्या आसंदी से आग्रह कर रहे हैं कि आपके अनुकूल प्रश्न करें? या आप बता दीजिए हम अनुकूल प्रश्न करेंगे जिससे आप सहज महसूस करें।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, मैंने आग्रह नहीं किया। आसंदी ने जो व्यवस्था दी।

श्री अजय चन्द्राकर :- उन्होंने दूसरी बात कही, आपने दूसरी बात कही।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, हर प्रश्न को आप दूसरी दिशा में क्यों ले जाना चाहते हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- यह दायित्व तो हमको है लेकिन आपने दूसरी दिशा में घुमा दिया। अध्यक्ष महोदय, मैं यहां कार्यमंत्रणा समिति का उद्धरण नहीं दे सकता, आज भी कोई न कोई प्रश्न होगा इसलिए ये समय काट रहे हैं। ये भी उनकी स्ट्रेटजी है।

श्री रविन्द्र चौबे :- लो।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, मंत्री जी उसका उत्तर दीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री धरमलाल कौशिक :- एक मिनट। आसंदी जो तय करे, स्वीकार करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- तय नहीं कर रहा हूं, मैं आप लोगों को निवेदन कर रहा हूं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, निवेदन नहीं, माननीय सदस्य ने प्रश्न लगाया, उसके यहां कोई डॉक्टर नहीं है, कॉलेज में कोई प्रोफेसर नहीं है, कॉलेज में प्राध्यापक नहीं है और ऐसे प्रश्न को यदि हम लोग पूछना बंद कर देंगे हमारे पास में दूसरा विकल्प क्या होगा। अस्पताल को चलाने के लिये उसकी पोस्टिंग कब की जायेगी ? हम लोग उसकी कैसे जानकारी लेंगे ? उसको हम लोग कहां रखेंगे? विधानसभा में यही एक माध्यम होता है, प्रश्न माननीय सदस्य पूछते हैं। उसमें दिक्कत यह आयेगी कि न तो कोई अस्पताल भरे जाएं, खाली जगह है, न तो डॉक्टर की पोस्टिंग होगी, न टेक्निशियन की भर्ती होगी। कॉलेज में प्राफेसर, प्राध्यापक नहीं हैं। वह भरे नहीं जायेंगे। यदि हम इस प्रश्न को विलोपित कर देंगे तो दूसरा कोई विकल्प मुझे नहीं लगता कि हमारे पास है, जिसके माध्यम से

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हम मंत्री को आग्रह कर सकें, मंत्री को हम यहां पर बोल सकें और उस आग्रह को स्वीकार करके तुम्हारे यहां डॉक्टर को भेज दूंगा, तो यह महत्वपूर्ण विषय है। यदि आप जैसा निर्देश करेंगे आपके निर्देश से बाहर नहीं है।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- भाई, 15 साल बोले नहीं हैं, एक साल में थोड़ी होगा। 15 साल तो कर नहीं पाये।

श्री धरमलाल कौशिक :- लेकिन हमारे पास विकल्प क्या होगा ? मुझे लगता है कि हमारे सारे विकल्प, माननीय सदस्यों का खत्म हो जायेगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, आपने चिंता व्यक्त किया इसलिए मैंने अपनी बात में आपकी बातों को दोहराया। अध्यक्ष जी को माननीय सदस्य को प्रश्न नहीं पूछने जैसी कोई बात नहीं है। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, जो बातें कह रहे हैं, थोड़े दिन सरकार चलाने का आपका भी अनुभव है। इस प्रकार से प्रश्न आते हैं। उत्तर दिया जाता है। लेकिन आपने जैसे कहा न, जैसे डॉक्टर की पोस्टिंग नहीं है तो हम कैसे प्रश्न करें ? आखिर इसी को पूछने के लिये तो प्रश्नकाल है। उत्तर माननीय मंत्री जी दे रहे हैं। लेकिन आपने जो चिंता व्यक्त की कि इतना खर्च होता है, इतना समय लगता है, इसलिए माननीय सदस्य को जो जानकारी चाहिए, माननीय मंत्री जी उपलब्ध करा देंगे। कब पोस्टिंग होगी, यह सब नियत प्रक्रिया है, आप भी उस बात को जानते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे भी छोटे-छोटे प्रश्न लगे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल में रहने दीजिए न। प्रश्नकाल में क्यों कर रहे हैं?

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ट्राईबल क्षेत्रों की स्थिति लगभग ऐसी ही है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, मेरी यह चिंता नहीं है, मेरी चिंता यह है कि यदि माननीय सदस्य प्रश्न करेंगे इस माध्यम से हम लोग अपनी जो क्षेत्र की जनता है, उनकी जो आवश्यकता है, यह प्रश्न के माध्यम से हम लोग लगाते हैं कि कमीबेसी को पूरा कर सकें। यदि हम इस सबको विलोपित कर देंगे तो उसका हमारे पास क्या विकल्प रहेगा ?

अध्यक्ष महोदय :- मैं विलोपित करने की बात ही नहीं कर रहा हूं।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप आपसे कैसे आग्रह करेंगे और आपसे करके कैसे उसको रखेंगे ?

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय :- माननीय अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, चलिये। मंत्री जी, आपका उत्तर दे रहे हैं।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सहायक प्राध्यापक, ग्रंथपाल क्रीडा अधिकारी की भरने की प्रक्रिया अभी चल रही है। ग्रंथपाल और क्रीडा अधिकारी की परीक्षा भी पी.एस.सी.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के द्वारा हो चुकी है। उम्मीद है कि बहुत जल्दी उनकी नियुक्तियां भी हो जायेगी। इसी तरह से सहायक प्राध्यापक के लिये भी माननीय अदालत के द्वारा इसमें कुछ रोक लगी हुई थी, जो कि अब वह भी आगे बढ़ चुकी है। अब परीक्षा की तारीख भी डिक्लीयर हो चुकी है। इसलिए इन पदों को बहुत जल्दी भर लिया जायेगा, ऐसी उम्मीद है। साथ ही साथ जो और कई अलग पद हैं जो अभी तक नहीं भरे गये हैं, उनमें भी प्रक्रियाधीन है। उनका भी बहुत जल्दी काम किया जा रहा है। इसके अलावा जहां-जहां कमी है, वहां अभी फिलहाल अतिथि व्याख्याता के द्वारा यह काम चलाया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- हां जी, पूछिये।

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं भटगांव कॉलेज के बारे में बताना चाहूंगा। उस कॉलेज में अहाताविहीन है, वहां लफंगे लोग एनी टाईम घूमने जाते हैं, महिलाएं हैं, हमारी बहनें हैं। उस कॉलेज में अहाता बनवा देंगे और महाविद्यालय सोनाखान की है, वह भवनविहीन है। वहां किराये के भवन में चल रहा है। वहां भवन बनाने का कष्ट करेंगे, ऐसा मेरा आपसे आग्रह है।

श्री उमेश पटेल :- ये लिखकर दे देंगे और शासन उसके ऊपर विचार करेगी।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, एक प्रश्न पूछना चाहता हूं।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय :- कौन सा ऐसा प्रश्न है, जो आपको उद्वलित नहीं करता।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, बस दो मिनट में ये विषय मा बोले रतेव।

अध्यक्ष महोदय :- तै बोलना गा, तोला फ्री हे, छूट हे, बोल। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- माननीय मंत्री जी अऊ आपके माध्यम से, जैसे मोर पूरा सदन से मोर निवेदन हे, जैसे अभी शिक्षक के भर्ती होत हे ता पहली ट्राईबल में बस्तर अऊ सरगुजा ला देखे जाथे, प्राध्यापक के भी भर्ती हो, ग्रंथपाल के भी भर्ती हो, तो होथे लेकिन बड़े-बड़े शहर में आ करके ये मन पहली ऊंहे भर जथे, ऊंहा एक ठन विषय के दो-दो झन प्रोफेसर हे। अऊ अंतिम छोर में चाहे वो, मालखरौदा हो, चाहे नवागढ़ हो, चाहे अंतिम छोर में हो, वहां कॉलेज खुले हे, वहां नई रहे। मोर आपसे निवेदन है, आपके माध्यम से कि उही अनुसार जैसी भर्ती होत हे, ता पहली अंतिम छोर के कॉलेज में भर्ती हो, ओखर बाद बड़े-बड़े शहर नगर मा होय, काब ऊहां गरीब दुखी लईका मन ओखरे सेती पढ़ नई पात हे, इहें पढ़े बर आथे। ऐखर सेती मोर आपसे एक निवेदन हे, ऊही में पहली होय।

अध्यक्ष महोदय :- बढ़िया। माननीय मंत्री जी।

श्री उमेश पटेल :- नियुक्ति होने के बाद प्राथमिकता उन्हीं क्षेत्रों की पहली रहती है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये। आप प्रश्न पूछिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 69 स्वीकृत पद में 55 पद रिक्त हैं। वहां पर स्टाफ कुल 14 पदों पर कार्यरत हैं। माननीय मंत्री जी ने बताया कि सहायक प्राध्यापकों की नियुक्ति की

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रक्रिया जारी है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि वित्त विभाग ने सहायक प्राध्यापक पदों की भर्ती के लिए अनुमति कब प्रदान की और इसके लिए कब विकेंसी निकली, आप जरा बता दें?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वित्त विभाग ने लगभग सालभर पहले इसकी अनुमति दी थी।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लगभग नहीं।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी मेरे पास एक्जेक्ट डेट नहीं है, लेकिन मैं आपको इसकी जानकारी दे दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- पारसनाथ राजवाड़े। प्रश्न क्रमांक 04।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, डॉ. रमन सिंह जी की सरकार ने वित्त विभाग ने उस समय अनुमति दी थी और आपकी सरकार ने सरकार बनते ही घोषित किया कि हम एक हजार पद स्वीकृत कर रहे हैं और आप सवा सालों में भर्ती नहीं कर पाये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तें काबर नहीं करे, तेला बता।

अध्यक्ष महोदय :- कहां है, आप उधर से इधर आ गये। चलो, आप भी पहली बार पूछ रहे हैं जरा अच्छे से पूछिए।

सूरजपुर जिला में उद्योगों का निरीक्षण

4. (*क्र. 1621) श्री पारसनाथ राजवाड़े : क्या नगरीय प्रशासन मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि सूरजपुर जिला में श्रम विभाग द्वारा विगत 03 वर्षों में किन-किन उद्योग का निरीक्षण किया गया है ? निरीक्षण के दौरान क्या-क्या अनियमितताएं पायी गयी तथा क्या-क्या कार्यवाही उक्त उद्योग संचालकों के विरूद्ध की गयी ?

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) : विगत 3 वर्षों 2017 से 2019 में सूरजपुर जिला के उद्योगों के निरीक्षण, निरीक्षण के दोरान पायी गयी अनियमिततायें तथा की गई कार्यवाही की जानकारी पुस्तकालय में रखे परिशिष्ट अनुसार है.

श्री पारसनाथ राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने सूरजपुर जिले में उद्योगों के निरीक्षण के बारे में प्रश्न किया था। मंत्री जी के द्वारा जो जवाब दिया गया है उसमें वैध कारखाना लाईसेंस नहीं है, कर्त्तव्य पूर्ण नहीं पाये गये, श्रमिकों का स्वास्थ्य परीक्षण नहीं कराया गया, ये दिनांक 16.03.2017 को निरीक्षण में पाया गया, पर दिनांक 20.02.2019 को पुन: जांच कराया गया, उसमें पुन: वही चीज दोहराई गई कि आग लगने की दशा में सुरक्षा के उपाय नहीं है, श्रमिकों का स्वास्थ्य परीक्षण नहीं कराया गया, श्रमिकों की उपस्थिति पंजी नहीं है। मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूँ कि जब

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

एक बार निरीक्षण में गये और उद्योगों के द्वारा जो गल्तियां की गईं, जब दुबारा गये तो पुन: सुधार नहीं किया गया तो उसको दुबारा मौका क्यों दिया गया? उसमें कार्यवाही क्यों नहीं हुई?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सूरजपुर जिले में हमारे 43 छोटे-छोटे कारखाने हैं, छोटे-छोटे लघु और माइक्रो उद्योग हैं। माननीय सदस्य जी ने कहा था उन सारे जगहों में निरीक्षण कराया गया है जहां कमियां पायी गई थी, वहां उद्योगों को दुरूस्त करने कहा गया था। अधिकांश उद्योगों ने दुरूस्त कर दिया है और उसमें अब इस तरह की कोई दिक्कतें नहीं है, लेकिन जिन उद्योगों ने जानबूझकर बदमाशी की है, जिन उद्योगों ने जो सरकारी नियम है, उनके अनुरूप काम नहीं किया। उन सब के खिलाफ कार्यवाही की गई है। ऐसे 4 उद्योग थे जो नियमों का पालन ठीक से नहीं कर रहे थे। उन उद्योगों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किये गये हैं और मैं इनको बता देता हूँ कि चार उद्योग ऐसे हैं जो नियमों का पालन नहीं कर रहे थे। इंदिरा पॉवर जेन प्राईवेट लिमिटेड, नैनपुर, जो 5 मेगावाट का पॉवर प्लांट था, उन पर अभियोजन दर्ज करके, माननीय न्यायालय में प्रकरण दर्ज किया गया है। दूसरा विनायक इंटरप्राईजेस इण्डस्ट्रीयल एरिया नैनपुर, जो ऑक्सीजन सिलेण्डर बनाती है उनके खिलाफ न्यायालय में प्रकरण दर्ज किये गये हैं। एक यूवीवेंचर्स नैनपुर है उनके खिलाफ भी 31.08.2018 को माननीय श्रम न्यायालय द्वारा कारखाना प्रबंधन को दर्ज किया गया है। न्यायालय ने 3 लाख, 25 हजार रूपये का जुर्माना किया है, न्यायालय ने उसको दण्डित करने का काम किया है और एक मेसर्स मां महामाया सहकारी शक्कर कारखाना केरता प्रतापपुर है वहां भी प्रकरण दर्ज करके, न्यायालय में उनके खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है और माननीय सदस्य की जो चिंता है कि वहां पर जो उद्योग लगे हैं वह नियमों का पालन नहीं करते। हमारे यहां नियमित प्रक्रिया है कि जहां पर उद्योग लगे हैं हमारे कारखाना और श्रम निरीक्षकों द्वारा उन उद्योगों का निरक्षण किया जाता है और ये रूटिन के हिसाब से किये जाते हैं और कहीं कोई दिक्कत है तो माननीय सदस्य बता देंगे तो उन पर विचार करके, आगे कार्यवाही भी करेंगे।

श्री पारसनाथ राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूँ कि जो औद्योगिक क्षेत्र नैनपुर है, नैनपुर गांव के बीच में है और वहां पर 4 उद्योग लगे हैं चारों उद्योगों से जो डस्ट निकलता है उससे घर में जो खाना पकाते हैं वहां तक डस्ट जा रहा है। उसके लिए कुछ ऐसा उपाए करेंगे जिससे वे डस्ट से बचें, उन्हें बीमारियां न हों।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम निश्चित रूप से कार्यवाही करेंगे।

अशुद्धित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिला बालोद में स्टेडियम/मिनी स्टेडियम के निर्माण की स्वीकृति

5. (*क्र. 1499) श्री कुंवर सिंह निषाद : क्या उच्च शिक्षा मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) बालोद जिले में खेल एवं युवा कल्याण मद अंतर्गत वर्ष 2018-19 में कितनी राशि स्टेडियम, मिनी-स्टेडियम निर्माण हेतु स्वीकृत की गई है ? (ख) कंडिका "क" अनुसार विकासखंडवार जानकारी देवें ?

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) : (क) बालोद जिला में खेल एवं युवा कल्याण मद अंतर्गत वर्ष 2018-19 में राशि रुपये 50 लाख स्टेडियम मिनी-स्टेडियम निर्माण हेतु स्वीकृत की गई है. (ख) प्रश्नांश "ख" की जानकारी परिशिष्ट में †[3] संलग्न है.

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी से मेरा मेरा प्रश्न था कि बालोद जिले में खेल एवं युवा कल्याण मद अंतर्गत वर्ष 2018-19 में कितनी राशि स्टेडियम, मिनी-स्टेडियम निर्माण हेतु स्वीकृत की गई है और कहां पर निर्माण कार्य प्रारंभ है? माननीय मंत्री जी का जवाब आया है कि बालोद जिला के झलमला में 2018-19 में स्टेडियम मिनी-स्टेडियम निर्माण हेतु 50 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई है, लेकिन अभी तक कार्य अपूर्ण लिखा गया है। मैं माननीय मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि राशि को स्वीकृत हुए 2 वर्ष हो गये हैं, लेकिन अभी तक निर्माण कार्य नहीं हुआ है, निर्माण कार्य में देरी होने का क्या कारण है और निर्माण कार्य कब पूर्ण कर लिये जायेंगे?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 22.09.2018 को 50 लाख रुपये की स्वीकृति मिनी स्टेडियम के निर्माण के लिए मिली थी और टेन्डर 30.5.2019 को लोक निर्माण विभाग के द्वारा जारी किया गया था जो कि 20.06.2019 को पूर्ण हुआ है। कार्यादेश दिनांक 06.09.2019 को जारी किया गया था और उसके पश्चात आचार संहिता और चुनाव के कारण इसमें कुछ देरी हुई है। इसको हमने आपके प्रश्न लगाने के बाद और अध्ययन किया है और अब आगे इसमें त्वरित गति से कार्यवाही होगी।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक पूरक प्रश्न है। मैं माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करता हूं कि बालोद जिला खेल के नाम पर बहुत ही प्रसिद्ध है, यहां से राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी हुए हैं, लेकिन स्टेडियम के अभाव में बहुत से खिलाड़ी जिनको प्रतिभा दिखानी होती है, राष्ट्रीय स्तर तक नहीं पहुंच पाते हैं। मैं माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि विगत 2018-19 से 2020 तक बालोद जिला में चाहे वह विकासखंड डौन्डी, गुरूर, गुन्डरदेही, डौण्डीलोहारा में अभी तक एक भी मिनी स्टेडियम का निर्माण नहीं हुआ है, यदि स्टेडियम निर्माण के लिए नये प्रस्ताव जाते हैं तो उसमें आप स्वीकृति प्रदान करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :-देवेन्द्र बहादुर सिंह। आप जब तक हॉ कर दीजिए।

---

[3] † परिशिष्ट "पांच"

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, और भी प्रस्ताव हैं, लेकिन आपका जो प्रश्न था, वह मिनी स्टेडियम से स्पेसीफिक था, इसलिए सिर्फ झलमला का नाम आया है, आपके और भी प्रस्ताव हैं जिस पर कार्य चल रहा है। लेकिन चूंकि प्रश्न मिनी स्टेडियम से संबंधित था, इसलिए सिर्फ झलमला का आया है। आपके बाकी जगह और भी हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्योंकि बालोद जिला में 5 विकासखंड आते हैं, मैं निवेदन कर रहा हूं यदि और प्रस्ताव जाते हैं तो क्या आप स्वीकृत प्रदान करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव दीजिए न। आप अपना प्रस्ताव दीजिए, माननीय मंत्री जी स्वीकार करेंगे।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जी, धन्यवाद।

श्री रामकुमार यादव :- मंत्री जी, रायपुर में एक उतका बड़ा स्टेडियम बने हे, आज तक ओमा एको ठो खेल नई होय हे, आपसे निवेदन हे ओ स्टेडियम में खेत लो करवा दो।

<u>बसना एवं पिथौरा विकासखण्ड में संचालित शा. महाविद्यालयों में स्वीकृत/रिक्त पद</u>

6. (*क्र. 1234) श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह : क्या उच्च शिक्षा मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) महासमुंद जिले के विकासखण्ड बसना एवं पिथौरा में कितने शासकीय महाविद्यालय कहां-कहां संचालित हैं ? (ख) उक्त महाविद्यालयों में प्राध्यापक के कितने पद स्वीकृत हैं तथा कितने रिक्त हैं ?

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) : (क) जानकारी निम्नानुसार है :—

क्रमांक	विकासखण्ड	शासकीय महाविद्यालय का नाम
1.	बसना	1. शासकीय महाविद्यालय बसना
2.	पिथौरा	1. शासकीय महाविद्यालय, पिथौरा
		2. शासकीय महाविद्यालय, पिरदा

(ख) उक्त महाविद्यालयों में प्राध्यापक का 01 पद स्वीकृत एवं रिक्त है.

श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं बसना, पिथौरा, पिरदा में शासकीय महाविद्यालय हैं, यहां पर सिर्फ 01 ही प्राध्यापक का पद स्वीकत है और वह भी रिक्त है, इन महाविद्यालयों में कितने सहायक प्राध्यापक के पद हैं, कितने में कार्यरत हैं और कितने पद रिक्त हैं और रिक्त पद कब तक भर दिये जायेंगे ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने बसना और पिथौरा के बारे में पूछा है, उसमें शैक्षणिक पद टोटल 41 पद स्वीकृत हैं जिसमें से 14 पदों में कार्यरत हैं और 27 पद रिक्त हैं और अभी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अतिथि व्याख्याताओं के द्वारा शैक्षणिक काम किया जा रहा है। बाकी माननीय सदस्य का जो स्पेसीफिक प्रश्न था, वह प्राध्यापक से संबंधित था, जिसकी कार्यवाही अभी प्रक्रियाधीन है।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद दे दीजिए।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- नगरी में भी प्राचार्य का पद खाली है।

श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा पिरदा नवीन महाविद्यालय है, उसमें भवन भी नहीं है और वहां पर 235 छात्र हैं और सिर्फ 1 प्राध्यापक है मैं माननीय मंत्री जी से चाहता हूं कि वहां पर प्राध्यापक नियुक्त करने का कष्ट करें।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह आप भेज दीजियेगा, हम लोग देख लेंगे।

<u>प्रदेश में खेल एवं युवाओं को प्रोत्साहन हेतु संचालित योजनाएं</u>

7. (*क्र. 1535) श्री पुन्नूलाल मोहले : क्या उच्च शिक्षा मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) प्रदेश में खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा वर्तमान में खेल एवं युवाओं को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से कौन-कौन सी योजनाएं संचालित हैं ? (ख) प्रश्नांश "क" में संचालित योजनाओं हेतु विभाग द्वारा सन् 2017-18 से 2019-20 तक कौन-कौन से मद में कितनी-कितनी राशि आबंटित की गई है ? (ग) प्रश्नांश "ख" में प्राप्त राशि को किन-किन मदों में व्यय किया गया है?

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) : (क) खेल एवं युवाओं को प्रोत्साहन देने उद्देश्य से विभाग में, खिलाड़ियों को प्रोत्साहन, खिलाड़ियों को प्रशिक्षण, युवा कल्याण गतिविधियॉ, राज्य खेल पुरस्कार, महिला खेलकूद, प्रतियोगिता, ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता, राज्य स्तरीय संघो एवं अन्य संस्था को अनुदान, योजनाएं संचालित है. (ख) एवं (ग) जानकारी पुस्तकालय में रखे परिशिष्ट में है.

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी से जानना चाहा था कि प्रदेश में खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा वर्तमान में खेल एवं युवाओं को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से कौन-कौन सी योजनायें संचालित हैं, माननीय मंत्री जी ने जवाब में 3 योजनाओं का जिक्र किया है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि आपने जो आवंटन की जानकारी दी है वह जिलेवाईज दी है। वास्तव में ये आपको देना चाहिए था कि किस-किस महाविद्यालय को कितना दिया गया है, पर आपने जिलेवाईज सूची दी है। आप यह बता दीजिए कि आपके आवंटन का आधार क्या है ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनका जो प्रश्न है वह 03 वर्ष 2017-18, 2018-19, 2019-2020 के लिये है । इसमें आपने कोई स्पेसीफिक नहीं मांगा था कि एक कॉलेज के हिसाब से दीजिये कि जिले के हिसाब से दीजिये कि ब्लॉक के हिसाब से दीजिये तो हमने योजनाओं के हिसाब से,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

साल के हिसाब से...।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, ऐसा है कि महाविद्यालय का संचालन कभी भी जिले के हिसाब से नहीं होता है । आपको एक्चुअल में यह जानकारी देनी चाहिए थी कि किस महाविद्यालय को आपने कितना आवंटन दिया ? चूंकि आपने जिलेवाईज जानकारी दी है । मैं आपसे यह पूछ रहा हूं कि आपकी यह जो 03 योजनाएं संचालित हैं, राज्य खेल अलंकरण में पुरस्कार, नगद राशि पुरस्कार आयोजन पर व्यय, महाविद्यालय को या जिले को इसके आवंटन का आधार क्या है यह बता दीजिये ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह खेल एवं युवक कल्याण विभाग से जारी किया गया है और यह कभी भी महाविद्यालयों को नहीं दिया जाता है । आप महाविद्यालय से संबंधित क्या प्रश्न करना चाहते हैं, वह मुझे थोड़ा सा समझ नहीं आ रहा है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, मैंने आपसे सीधा प्रश्न किया है । मैंने आपसे आवंटन का आधार पूछा है ।

श्री उमेश पटेल :- नहीं, आपने कहा कि आवंटन महाविद्यालय को दिया जाता है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने तो आवंटन का आधार पूछा है । आप यह बता दीजिये कि आपके आवंटन का आधार क्या है ?

श्री उमेश पटेल :- नहीं, आपने कहा कि महाविद्यालय को क्यों दिया जाता है, आपका पहला प्रश्न यह है तो महाविद्यालय को नहीं दिया जाता है । यह खेल एवं युवक कल्याण विभाग है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, मैंने 3 बार रिपीट किया है । आप यह बता दीजिये कि आपके आवंटन का आधार क्या है ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आवंटन का आधार यह है कि इन योजनाओं पर जैसा बजट का प्रावधान है उसके हिसाब से इसमें व्यय किया जाता है । इसमें जैसे खेल कोई योजना है उसके आधार पर उसमें...।

अध्यक्ष महोदय :- क्या इसमें आपको परिशिष्ट मिल गया है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने परिशिष्ट ले लिया है, उसी आधार पर पूछ रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- सदन को जरा बता दीजिये कि कितना लंबा प्रश्न है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे यह परिशिष्ट मिल चुका है । मुझे यह जानकारी है कि आपने कहां, कितना दिया । कुछ जिलों में पैसा ज्यादा दिया है और कुछ जिलों में कम दिया है इसीलिये मैंने पूछा कि आपने इसके आवंटन का क्या आधार तय किया है ?

अध्यक्ष महोदय :- इतना लंबा परिशिष्ट है ।

श्री उमेश पटेल :- देखिये जो आयोजन होता है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, असल में बात यह है कि माननीय पुन्नूलाल मोहले जी का प्रश्न तो अधिग्रहित हो गया है लेकिन उनके सभी गुणों को समाहित करते हुए इनको प्रश्न करना चाहिए तब सही प्रश्न होगा ।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय मंत्री जी, गुणों की थोड़ी विवेचना कर देते ।

अध्यक्ष महोदय :- गुणों की विवेचना तो केवल मोहले जी को ही मालूम है । श्री ननकीराम कंवर ।

श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी से संबंधित मेरा भी एक प्रश्न है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उत्तर तो आया ही नहीं । माननीय मंत्री जी, आपने आवंटन का क्या आधार तय किया है इसका उत्तर नहीं आया । आप मेरे दूसरे प्रश्न का उत्तर दे दीजिए ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आवंटन खिलाड़ियों की आवश्यकता के अनुसार होता है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या ऑन डिमांड करते हैं, कोई चाहता है ?

श्री उमेश पटेल :- जहां जिस तरह से आयोजन होता है उसके हिसाब से वहां बजट एलोकेट होता है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक दूसरा विषय है कि इसमें आपने बहुत से जिलों में खर्च हरेली त्यौहार के लिये बताया है । यह प्रश्न खेल एवं युवाओं को प्रोत्साहन करने हेतु से संबंधित है, यह हरेली त्यौहार के लिये आपने जो पैसा दिया है इसमें युवा और खेल कैसे प्रोत्साहित हुए, जरा इसकी जानकारी बता दीजिए। (व्यवधान)

श्री ताम्रध्वज साहू :- गेंड़ी का है न, वह होगा ही होगा । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं तो कालि बोले हंओं गा । सुनना, मैं तो कल बोले हंओं कि मैं तो सी.एम. साहब के साथ प्रतियोगिता करे बर तैयार हंओं, गेंड़ी चढ़े बर गा । मैं तो गेंड़ी चढ़े बर प्रतियोगिता करे बर तैयार हंओं ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा इसी में एक छोटा सा प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, यदि प्रश्न उद्‌भुत होता है तो मैं अनुमति देता हूं । पहले श्रीमती साहू जी को पूछने दीजिये, महिला पूछ रही हैं ।

श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी से संबंधित माननीय मंत्री जी से मेरा भी प्रश्न लगा था किंतु वह नहीं आया इसलिये माननीय मंत्री जी से मेरा यह प्रश्न है कि व्यायाम शाला एवं जिम सामग्री योजना के लिये आपने धमतरी जिलों को कितना आवंटन दिया था, यह मेरा पहला प्रश्न है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, यह धमतरी जिले से संबंधित नहीं है । उद्भुत होना चाहिए । चलिये, आप बोलें ।

श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पूरे प्रदेश का प्रश्न है । पूरे प्रदेश का लिखा हुआ है, इसमें धमतरी जिला भी है ।

अध्यक्ष महोदय :- उन्होंने सुन लिया । आपका जवाब दे देंगे ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने गेंड़ी के खेल के लिये आवंटित किया है यह साबित हो गया । मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि क्या गेंड़ी खेल ओलंपिक संघ से मान्यता प्राप्त है, किस खेल संघ से मान्यता प्राप्त है ? (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- छत्तीसगढ़ के संस्कृति से है ।

श्री अजय चंद्राकर :- किसी गैर मान्यता प्राप्त खेलों के लिये ओलंपिक संघ के राशि आवंटित कर सकते हैं नियमों में एक ? या नहीं तो गेंड़ी को ओलंपिक संघ से मान्यता प्राप्त करवाने के लिये शासन क्या प्रयास कर रहा है ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गेंड़ी हमारा पारंपरिक खेल है और इस सरकार की मंशा है कि जो पारंपरिक खेल है उसको प्रोत्साहित किया जाये । (मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- सरकार के नियमों से बाहर है, सरकार के कानूनों से बाहर है । (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- अगर इसके लिये सरकार की यह मंशा है कि और जरूरत पड़ेगी तो इसके लिये बजट एलोकेट किया जायेगा, इसमें प्रोत्साहन राशि दी जायेगी और अगर छत्तीसगढ़ की संस्कृति को आगे बढ़ाना है तो इस तरह के खेलों को प्राप्त किया जायेगा । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- गैर मान्यता प्राप्त सरकार । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- गेड़ी हमर छत्तीसगढ़ के आन-बान-शान हे ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, चालिए आराम से पूछिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या सरकार के पास आंचलिक खेलों की सूची है, सरकार किस-किस खेल को आंचलिक खेल मानती है । उसके लिए क्या नियम बने हैं, यह बता दें ? किस आंचलिक खेल को कितना अनुदान दिया जाएगा, सरकार ने इसका कोई नियम बनाया है क्या ?

अध्यक्ष महोदय :- बना लेंगे ना, नियम नहीं बना है तो नियम बनाने में कितनी देर लगती है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- बिना नियम बनाए खर्च कर रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए ननकीराम जी प्रश्न करेंगे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, प्रश्न का उत्तर तो आने दीजिए ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न उद्भुत नहीं होता ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, यह सीधे भ्रष्टाचार से पैसा गया है, गेड़ी प्रतियोगिता के नाम पर शासकीय पैसे का दुरूपयोग है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह शासकीय पैसे का दुरूपयोग है अध्यक्ष महोदय बिना किसी मान्यता के, बिना किसी प्रक्रिया के शासकीय धन को लुटाया जा रहा है।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी, मुम्बई ले कलाकार बुलाए रहेव तो बढ़िया रिहिस हे, आज गेड़ी बर पइसा दिस तो फालतू खर्चा हो जात हे ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परम्परा का सवाल है, इस खेल से लाखों लोगों की भावनाएं जुड़ी हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया, प्रश्नकाल में आप सब भाषण देना चाहते हैं । ननकीराम जी कंवर जी के अलावा किसी की बात अंकित नहीं की जाएगी ।

वाणिज्यिक कर (आबकारी) से प्राप्त राजस्व

8. (*क्र. 1553) श्री ननकीराम कंवर : क्या वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष 2017-18, 2018-19 एवं 2019-20 में वाणिज्यिक कर (आबकारी) से कितनी-कितनी आमदनी हुई ? वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) : वर्ष 2017-18, 2018-19 एवं 2019-20 में (माह जनवरी 2020 तक) वाणिज्यिक कर (आबकारी) से प्राप्त राजस्व की जानकारी वर्षवार निम्नानुसार है :—

क्र.	वर्ष	प्राप्त आबकारी आय
1.	2017-18	4054.21
2.	2018-19	4491.35
3.	2019-20 (माह जनवरी 2020 तक)	4089.91

श्री ननकीराम कंवर :- 2019-20 में आय में कमी क्यों हुई है ?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में शराबबंदी का असर है पीने वाले थोड़ा कम हो रहे हैं, इसलिए आय में कमी है । हम लोग धीरे-धीरे बंदी की तरफ जा रहे हैं ।

श्री ननकीराम कंवर :- अध्यक्ष जी, बहुत गलत उत्तर आ रहा है । यह नहीं बता रहे हैं कि अवैध दारू की बिक्री होती है । आज भी कम से कम एक ट्रक दारू पकड़ी गई है, आपको मालूम है या नहीं ।

अध्यक्ष महोदय :- बताइए मंत्री जी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री ननकीराम कंवर :- यूपी से शराब आ रही थी, यह भी बता दूं कि टिकरापारा थाना में जप्त हुआ है, इस पर कंट्रोल कीजिए कि बाहर से न आए । कल भी इस विषय पर काफी चर्चा हुई थी । हर विषय में आप भी बोलने की कोशिश करते हैं, अपने विभाग को संभालिए ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में कानून का राज है । बीजेपी वाले बेचते थे, उसको बंद किया जा रहा है तो इनके पेट में दर्द क्यों हो रहा है और पकड़ेंगे । होली में भी जहां ऐसा धंधा होगा, यह हमारी सरकार का वचनपत्र है कि बाहर की दारू बेचने नहीं देंगे, उनको जेल भेजेंगे । कल पकड़ी गई है आगे और भी पकड़ेंगे ।

श्री ननकीराम कंवर :- अध्यक्ष महोदय, ये पकड़ने की बात कर रहे हैं, कल ही मेरे बाल्को थाने में अवैध दारू पकड़ी गई और आपके थानेदार के द्वारा 30 हजार रूपया लेकर छोड़ दिया गया । इस तरह आप अवैध दारू पकड़ रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- लखमा जी के विषय में आपको इतना ज्यादा इंट्रेस्ट क्यों है ?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, हमारी पुलिस इतनी बहादुर पुलिस है, कही भी पकड़ लेगी और जेल भेज देगी । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- जिस डिस्टलरी से दारू आ रही है, आप डिस्टलरी वालों के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं करते ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, उन्होंने पकड़ने नहीं, उन्होंने छोड़ने की बात कही । बाल्को थाना में पकड़ा और फिर 30 हजार लेकर छोड़ा, आपको जानकारी है तो ठीक, नहीं तो मंगा लीजिए ।

श्री कवासी लखमा :- 30 हजार वाली बात प्रश्न में तो नहीं है, अगर लिखकर देंगे तो जांच करेंगे, कार्रवाई कर देंगे, अगर कहीं ऐसा होगा तो ।

अध्यक्ष महोद :- ठीक है । माननीय नेता जी ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- अध्यक्ष महोदय, आज समाचार पत्रों में छपा है कि यूपी की दारू यहां तक पहुंच गई, रायपुर में पकड़ी गई । मध्यप्रदेश की दारू अभी 4 दिन पहले कोनी थाना बिलासपुर तक पहुंच गई, कोनी थाना वाले पकड़े । मंत्री जी का जवाब है कि दारू पीने वालों की संख्या कम हो गई, इसलिए राजस्व में कमी आई । मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि दारू पीने वालों की कमी हुई है तो ये उत्तरप्रदेश की दारू, मध्यप्रदेश की दारू, महाराष्ट्र की दारू ये सब आकर छत्तीसगढ़ में बिक रही है और इसके कारण छत्तीसगढ़ में राजस्व की कमी हो रही है । मंत्री जी अपनी अक्षमता को छिपाने के लिए दारू पीने वालों की कमी बता रहे हैं, मंत्री जी आपके कंट्रोल के बाहर हो गया है और आप केवल एजेंसी में वहां काम करने वाले लड़कों पर ही कार्रवाई करते हैं । अभी तक जो डिस्टलरी से दो नम्बर की दारू निकली, इसके अलावा मध्यप्रदेश और बाकी जगह की आप बात कर रहे हैं, आपने

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

दिखाने के लिए टोकन कार्रवाई की । आज तक किसी डिस्टलरी के खिलाफ आपने जांच की, कोई कार्रवाई की । आप डिस्टलरी वालों के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं करना चाहते ?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश में योगी बाबा की सरकार है, वे क्यों नहीं रोकते, इधर भेजते हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अरे तो प्लेसमेंट एजेंसी के आपके दुकान में दारू बिक रहा है। प्रश्न के जवाब में आया है और प्रश्न के जवाब में आने के बाद में आपके दुकान में दारू बिक रहा है, उसके लिए जवाबदार कौन हैं। दो नंबर का दारू आपके दुकान में रखा हुआ है। इसके जवाबदार कौन हैं? आप उनके ऊपर मात्र टोकन कार्यवाही करके जो उसके जो सप्लायर हैं, उस सप्लायर के खिलाफ आप कार्यवाही क्यों नहीं करना चाहते? मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता जी को मैं बोलना चाहता हूं कि अगर वे शिकायत करेंगे तो जरूर कार्यवाही करेंगे। हमारी सरकार हमेशा कहीं किसी को जेल भेज रही है और कहीं कार्रवाई कर रही है। अगर व्यक्तिगत शिकायत करेंगे तो जरूर कार्यवाही करेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं तो इसी में उस दिन आरोप लगाया था। इस सरकार के संरक्षण में अवैध दारू बेचवा रहे हैं और अवैध दारू के बिकने से प्रदेश के राजस्व की हानि हो रही है। इस हानि को रोकने के बजाय ये उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं। यह मंत्री जी और सरकार की स्थिति है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रमोद कुमार शर्मा।

<u>प्रदेश में राज्य कर्मचारी बीमा निगम (ESI) में बीमित श्रमिकों की संख्या</u>

9. (*क्र. 1522) श्री प्रमोद कुमार शर्मा : क्या नगरीय प्रशासन मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) क्या छत्तीसगढ़ में ESI द्वारा सर्वसुविधा युक्त हास्पिटल स्थापित किया गया है ? यदि हां, तो कितने हास्पिटल संचालित हैं ? (ख) छत्तीसगढ़ में ESI बीमित श्रमिकों की संख्या क्या है ? नियोजक एवं श्रमिकों से प्रतिवर्ष ESI को अंशदान के रूप में कितना राजस्व वसूला जाता है ?

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) : (क) छत्तीसगढ़ में कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा 2 सर्वसुविधायुक्त हॉस्पिटल का निर्माण कार्य लगभग पूर्णता की ओर है, जिसमें एक हॉस्पिटल रावांभाटा, बीरगॉव, जिला-रायपुर में तथा दूसरा हॉस्पिटल रामपुर, कोरबा में स्थित है. (ख) छत्तीसगढ़ राज्य में ई.एस.आई.सी. बीमित श्रमिकों की संख्या दिनांक 31.03.2019 के अनुसार 6,20,480 है. बीमित श्रमिक के कुल वेतन (अधिकतम सीमा रु. 21000 प्रतिमाह प्राप्त करने वाले बीमित इस योजना के अंतर्गत आते हैं) का 4.00 प्रतिशत अंशदान लिया जाता है, जिसमें नियोजन के अंशदान 3.25 प्रतिशत एवं श्रमिकों से

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

0.75 कुल 4 प्रतिशत प्रतिवर्ष ई.एस.आई.सी. को अंशदान के रूप में प्राप्त होता है. वित्तीय वर्ष 2018-19 में छ.ग. से कुल अंशदान रु. 274.44 करोड़ प्राप्त हुए हैं.

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि बलौदाबाजार जिले से प्रतिवर्ष कितनी राशि ई.आई.सी. से प्राप्त होती है और वहां श्रमिकों की संख्या क्या है ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बलौदाबाजार जिले में जो पंजीयन है।

अध्यक्ष महोदय :- उत्तर जल्दी दीजिए। मुझे एक प्रश्न संख्या 10 और लेना है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- जी, आप ले लीजिएगा। बलौदाबाजार जिले में 20 हजार 762 पंजीकृत हैं और इन सदस्यों में 21000 रूपये प्रतिमाह प्राप्त करने वाले को बीमित किया जाता है। इसमें 4 प्रतिशत अंशदान लिया जाता है। इसमें नियोजकों का अनुदान 3.25 प्रतिशत एवं श्रमिकों से 0.75 प्रतिशत कुल 4 प्रतिशत प्रतिवर्ष ई.आई.सी. को अंशदान के रूप में प्राप्त होता है। वर्ष 2018-19 में छत्तीसगढ़ से कुल 274.44 करोड़ रूपये प्राप्त हुए हैं।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- मैं माननीय मंत्री जी से प्रश्न भी करना चाहता हूं और एक निवेदन भी करना चाहता हूं कि जब उस जिले में 20 हजार श्रमिक हैं तो एक ई.आई.सी. हॉस्पिटल क्या वहां खोला जायेगा ? आपसे निवेदन और प्रश्न भी है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां पर 20 हजार से ज्यादा श्रमिक होते हैं, वहां पर 30 बिस्तर अस्पताल खोलने का प्रावधान है और माननीय सदस्य की चिंता के अनुरूप इसका प्रस्ताव हमने इसका प्रस्ताव केन्द्र सरकार को भेजा है। वहां से स्वीकृति मिलते ही निश्चित रूप से खोलने की कार्यवाही की जायेगी।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- धन्यवाद, मंत्री जी।

अध्यक्ष महोदय :- अरूण वोरा जी।

<u>प्रदेश में खेल एवं युवाओं के प्रोत्साहन हेतु आबंटित एवं व्यय राशि</u>

10. (*क्र. 1562) श्री अरूण वोरा : क्या उच्च शिक्षा मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश में खेल एवं युवा कल्याण विभाग के द्वारा वर्तमान में खेल एवं युवाओं को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से कौन-कौन सी योजनाएं संचालित हैं ? इन संचालित योजनाओं हेतु विभाग द्वारा वर्ष 2019-20 में कौन-कौन से मद में कितनी-कितनी राशि आबंटित की गई है एवं प्राप्त राशि को किन-किन मदों में व्यय किया गया है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) : खेल एवं युवाओं को प्रोत्साहन देने उद्देश्य से विभाग में, खिलाड़ियों को प्रोत्साहन, खिलाड़ियों को प्रशिक्षण, युवा कल्याण गतिविधियां, राज्य खेल पुरस्कार, महिला खेलकूद प्रतियोगिता, ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता, राज्य स्तरीय संघो एवं अन्य संस्था को अनुदान, योजनाएं संचालित है. विभाग द्वारा वर्ष 2019-20 में आबंटित राशि एवं व्यय के मदों की जानकारी पुस्तकालय में रखे परिशिष्ट में है.

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि आबंटित राशि का व्यय किस माध्यम से व किस आधार पर किया गया है?

श्री अजय चन्द्राकर :- उमेश जी, अरूण वोरा जी अपने बचपने में है। वे बचपने में खेल युवा आयोग के अध्यक्ष थे। बचपने में न।

श्री अरूण वोरा :- बचपने में भी व जवानी में भी। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- चन्द्राकर जी। चन्द्राकर जी।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अभी भी उनमें बचपना है। आप ऐसा क्यों सोच रहे हो?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी।

श्री कवासी लखमा :- अभी बुढ्ढे हो गये हैं क्या?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी आप जल्दी जवाब दीजिए। फिर मैं प्रश्न संख्या 11 डॉ. रमन सिंह का लूंगा। आप जल्दी जवाब दीजिए।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह खेल एवं युवा कल्याण विभाग से जारी होता है और अपने जिला अधिकारी के द्वारा इसे आबंटित किया जाता है।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ. रमन सिंह जी।

<u>प्रदेश में नए उद्योगों की स्थापना</u>

11. (*क्र. 1513) डॉ. रमन सिंह : क्या वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) विगत वित्तीय वर्ष में प्रदेश में कितने नए उद्योग लगाए गए ? (ख) यदि नए उद्योग लगाए गए तो प्रदेश के कितने युवाओं को नए रोजगार के अवसर उपलब्ध हुए ?

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) : (क) विगत वित्तीय वर्ष 2018-19 में प्रदेश में कुल 325 नये उद्योग स्थापित हुए हैं. (ख) नये उद्योगों में कुल 3717 व्यक्तियों को नये रोजगार को अवसर उपलब्ध हुये.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न यह है कि नये उद्योग जो लगे वे मध्यम उद्योग हैं, छोटे उद्योग हैं या लघु उद्योग हैं? किस-किस केटेगरी के उद्योग लगे हैं और जिन्हें रोजगार दिया गया है, वे स्किल्ड हैं या अनस्किल्ड हैं? एक छोटा सा प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- उत्तर देने वाले कौन हैं? कवासी लखमा जी छोटा सा उत्तर दे दीजिए।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं माननीय पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी का सम्मान करता हूं और मानता भी हूं।

अध्यक्ष महोदय :- वैरी गुड।

श्री कवासी लखमा :- क्योंकि इतना बड़ा आदमी ऐसा प्रश्न क्यों लगाया? ऐसे ही सुझाव देते तो हम लोग पालन करते । वे 15 साल मुख्यमंत्री थे। इनका सुझाव हम पहले ले लिये हैं। (हंसी)

डॉ. रमन सिंह :- जवाब तो आ जाए।

अध्यक्ष महोदय :- बस, धन्यवाद दे दीजिए। । आपके इशारे पर काम हो होगा।

डॉ. रमन सिंह :- उनसे जवाब बनता नहीं तो वे पास बोल दें। (हंसी) वे पास बोल दें तो भी मैं मान जाउंगा।

अध्यक्ष महोदय :- वे तो आपके इशारे में काम करना चाहते हैं।

डॉ. रमन सिंह :- कई बार होता क्या है कि पास बोल दिया जाता है। यदि आप पास बोल देंगे..।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, पास।

डॉ. रमन सिंह :- नहीं मेरा अभी पहला ही प्रश्न हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- आपके पड़ोसी (श्री धरमलाल कौशिक) का भी प्रश्न है। एक मिनट में इनका भी आ जाए।

डॉ. रमन सिंह :- बहुत छोटा- छोटा प्रश्न है। पहला जितने लोगों को रोजगार दिया गया, इसमें कांट्रेक्ट लेबर कितने हैं? आप इतना तो बता ही सकते हो कि स्किल्ड और अनस्किल्ड कितने हैं? प्रशिक्षित कितने हैं? आप विभाग से पूछ सकते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, आप ये फुसफुसाने की प्रकिया को बंद करवाईये।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं पहले भी सम्मान करता था और अभी भी बोल रहा हूं 325 उद्योग लगे हैं। हमने उसमें मीडियम,छोटे-बड़े सभी मिलाकर 325 उद्योग एक साल में लगाये हैं। जहां तक रोजगार देने का सवाल है, हम लोगों ने 3,700 लोगों को रोजगार दिए हैं। (मेजों की थपथपाहट) पहले इनके सरकार के समय किन्तु, परन्तु लगता था। हम सौ प्रतिशत रोजगार उन्हीं लोगों को देंगे।

अध्यक्ष महोदय :-चलिये, अब छोड़ दीजिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक दूसरा छोटा सा प्रश्न है। मैं उनका उत्तर समझ गया। (हंसी) आप जो कहना चाहते हैं, मैं समझ गया।

अध्यक्ष महोदय :- धरम लाल कौशिक जी को पूछने दीजिये।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उस प्रश्न को छोड़कर मैं दूसरे प्रश्न पर आ जाता हूं। वे कान्ट्रेक्ट लेबर हैं या रेग्युलर हैं, किस केटेगरी के हैं ? यह प्रश्न और छोटा है। बहुत छोटे-छोटे प्रश्न हैं, दो-तीन प्रश्न हैं। जिसमें जवाब नहीं देना है, आप बोल देना, मैं आगे बढ़ा जाऊंगा।

अध्यक्ष महोदय :- मैं कह रहा हूं कि 12 प्रश्न कौशिक जी का है। उनको भी प्रश्न करने दीजिये।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रम विभाग में जो नियम-कानून है, उसके आधार पर उद्योग विभाग लगायेगा। अगर उस पर पूछेंगे तो हम अलग से जानकारी दे देंगे।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं वहीं के प्रश्न में आ रहा हूं। क्या उन मजदूरों का श्रम विभाग में पंजीयन है या नहीं ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, जिसका-जिसका रजिस्ट्रेशन होता है, हम लोग उसकी का पालन करते हैं। इसलिए हम लोग उसको अनुदान भी देते हैं। बाहर के आदमी नहीं लगाते हैं।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आखिरी प्रश्न। मान लो कोई जवाब नहीं आयेगा तो मैं संतुष्ट हो जाऊंगा। मगर प्रश्न तो करूंगा। मुझे कम से कम यह संतोष रहेगा कि मैंने प्रश्न किया। जवाब न दे, सब चलेगा।

अध्यक्ष महोदय :- 3-4 मिनट बचे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपके हर प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं। पूरा-पूरा जवाब दे रहे हैं।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इनसे संतुष्ट हूं। इसमें राज्य और राज्य के बाहर कितने लोग हैं ? मैं आपको आकड़ें बता सकता हूं, यदि आपको याद नहीं होगा तो। आप चाहे तो विभाग से पूछ लो। राज्य और राज्य के बाहर का प्रतिशत बता दें। यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्योंकि इस प्रश्न को करने का कारण सिर्फ यही एक है। आप विभाग से पूछ लो। अध्यक्ष जी, इनको समय दे दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- आपको लिखित में जानकारी दे देंगे। प्लीज।

डॉ. रमन सिंह :- अब आप जवाब दे रहे हैं तो मैं क्या करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, प्लीज। श्री धरमलाल कौशिक।

डॉ. रमन सिंह :- ठीक है, मैं छोड़ता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नोवा आयरन एंड स्टील लिमि. दगौरी, बिलासपुर हेतु अधिग्रहित भूमि

12. (*क्र. 690) श्री धरमलाल कौशिक : क्या वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि (क) नोवा आयरन एंड स्टील लिमि. दगौरी, जिला-बिलासपुर में कब से स्थापित है ? इस उद्योग हेतु कितने किसानों को कितनी जमीन व कितनी शासकीय जमीन, किस दर पर अधिग्रहित की गयी है ? (ख) उद्योगों हेतु भूमि अधिग्रहित करने पर भूमि स्वामी/परिवार को रोजगार/नौकरी देने के क्या प्रावधान है? प्रश्नांक "क" के अनुसार इन प्रावधानों के अनुरूप अधिग्रहित भूमि स्वामी/परिवार के कितने सदस्य को नौकरी/रोजगार दिया जाना था व कितने लोगों को प्रदान किया गया है ? शेष लोगों को कब तक प्रदान किया जायेगा ? वर्तमान में उद्योग में कुल कितने स्थानीय एवं प्रदेश के बाहर के लोगों को रोजगार दिया गया है ? (ग) उद्योगों द्वारा अधिग्रहित शासकीय/निजी भूमि में स्थापित उद्योग को विक्रय करने के व अधिग्रहित शासकीय भूमि को क्या उद्योग द्वारा बेचा जा सकता है ? यदि हां, तो अधिग्रहित शासकीय भूमि को बेचने के क्या नियम हैं ?

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) : (क) नोवा आयरन एंड स्टील लिमि. दगौरी, जिला-बिलासपुर वर्ष 1994 से स्थापित है. इस उद्योग हेतु किसानों से कोई निजी भूमि शासन द्वारा अधिग्रहित नहीं की गई है. न्यायालय कलेक्टर बिलासपुर के रा.प्र.क्र. 03/अ-19/1990-91, आदेश दिनांक 08.10.1991 के अनुसार ग्राम-दगौरी स्थित शासकीय भूमि कुल खसरा नं. 04 कुल रकबा 237.84 एकड़ एवं ग्राम शक्तिघाट स्थित शासकीय भूमि खसरा नं. 03 कुल रकबा 44.57 एकड़ तथा आदेश दिनांक 16.07.1991 के अनुसार ग्राम अमेरी अकबरी की शासकीय भूमि कुल रकबा 101.21 एकड़, कुल रकबा 383.623 एकड़ भूमि उद्योग विभाग को हस्तांतरित किया गया है. चूंकि निजी भूमि का अधिग्रहण नहीं हुआ है, अतः अधिग्रहण दर का प्रश्न उद्भूत नहीं होता है.(ख) वर्तमान में प्रचलित च्च्भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम-2013ज्ज् के अनुसूची-2 के पैरा-4 में वार्षिकी या नियोजन का विकल्प प्रावधानित है. प्रश्नांश "क" में वर्णित उद्योग को वर्ष 1992 से 1994 में उद्योग स्थापना हेतु आबंटित की गई भूमि शासकीय होने के कारण प्रश्नांश "ख" में वर्णित प्रश्न के अनुसार भूमि अधिग्रहण से भूमि स्वामी/परिवार के प्रभावित होने का प्रश्न उपस्थित नहीं होता. तथापि, वर्तमान में इस उद्योग द्वारा कुल 281 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है. जिसमें राज्य के 175 एवं राज्य के बाहर के 106 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है. (ग) छत्तीसगढ़ औद्योगिक भूम एवं भवन प्रबंधन नियम 2015 के अध्याय-2 के बिन्दु 2.12 के अनुसार औद्योगिक प्रयोजन हेतु उद्योगों को पट्टाभिलेख के माध्यम से शासकीय/निजी भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ आबंटित किये जाने का प्रावधान है. पट्टाभिलेख पर आबंटित भूमि का विक्रय नहीं किया जा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सकता है. अपितु औद्योगिक प्रयोजन हेतु अन्य इकाई को शेष लीज अवधि हेतु छत्तीसगढ़ औद्योगिक भूमि एवं भवन प्रबंधन नियम 2015 के नियमानुसार हस्तांतरण किया जा सकता है.

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दगौरी में नोवा स्पंज प्लांट स्थित है। वहां पर 3 गांव, ग्राम दगौरी उसके साथ ग्राम अमेरी अकबरी और उड़नताल की 330 एकड़ जमीन गांव वालों ने ली गई है। उसके बदले उन्होंने लिखकर दिया है कि मैं इन लोगों को नौकरी दूंगा। उनको आज तक नौकरी नहीं मिली है। मंत्री जी, उनको कब तक नौकरी दी जायेगी, जिससे जिन्होंने जमीन दिया है, उनको रोजगार मिल सके। तो मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि उनको कब तक नौकरी दी जायेगी ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता जी जिस उद्योग के बारे में पूछ रहे हैं, इसमें गांव वालों की जमीन ली ही नहीं गई है तो नौकरी कैसे देंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिनकी जमीन ली गई है, उनकी रजिस्ट्री की कापी है, प्रमाणीकरण की कापी है। मैं उसको आज तो नहीं रखूंगा, लेकिन दूसरे दिन लाकर रख दूंगा। ऐसी स्थिति में जो जवाब दिए हैं, उनके ऊपर कार्रवाई करेंगे ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, फैक्ट्री में दो प्रकार के लोगों को रोजगार दिए हैं। 300 एकड़ सरकारी जमीन है और बाकी जमीन फैक्ट्री वाले ने डायरेक्ट लिया है। हमारे उद्योग विभाग से नहीं लिया है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जो प्रश्न किया है उसका जवाब दिया है कि गांव की जमीन नहीं ली गई है। मैंने कहा कि जो रजिस्ट्री हुई है, उसकी कापी लाकर रख दूंगा, जो गलत जवाब दिए हैं, आप उनके खिलाफ कार्रवाई करेंगे ? जिन्होंने गलत जवाब दिया है, उन अधिकारियों के खिलाफ खिलाफ कार्रवाई करेंगे ? जो गलत जानकारी दिए हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई करेंगे ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, सवाल ही नहीं उठता है। वहां पर दो प्रकार की जमीन ली गई है। पहले कम्पनी ने डायरेक्ट जमीन ली है। हमारी सरकार की तरफ से नहीं लिया है। 300 एकड़ जमीन के लिए कुछ लोगों ने आवेदन किया था कि हमारा कब्जा है। वे लोग हाईकोर्ट गये थे। हाईकोर्ट ने उस पर मार्गदर्शन दिया था कि कलेक्टर को ...।

श्री धरमलाल कौशिक :- जो गलत जानकारी दिए हैं, आप उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे ?

श्री कवासी लखमा :- कलेक्टर ने जांच किया। उनका कभी कब्जा नहीं रहा। इसलिए उसे निरस्त किया गया है। वे लोग दूसरे कोर्ट मे गये ही नहीं। वे लोग हार गये। इसलिए नौकरी देने का प्रश्न नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उद्योग के द्वारा जिन किसानों की जमीन ली गई है, उनकी रजिस्ट्री हुई है। यहां जो गलत जानकारी दिए हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई करेंगे क्या ?

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, वहां जो फैक्ट्री लगी है, वह 600 एकड़ जमीन में लगी है। 600 एकड़ में से 300 एकड़ जमीन फैक्ट्री वाले ने डायरेक्ट जमीन ली है। सरकार की तरफ से नहीं लिया है। उन लोगों ने व्यक्तिगत रजिस्ट्री की है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार की बात नहीं कर रहा हूं। जो फैक्ट्री वाले ने जमीन ली है, उसकी बात कर रहा हूं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, फैक्ट्री वाले ने जमीन डायरेक्ट लिया है। हमारे उद्योग विभाग से, सरकार से नहीं लिया है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने लिखकर दिया है कि इनको नौकरी दूंगा। नौकरी नहीं दिए हैं, आप उनको दिलवा दीजिये।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, जब शासन जमीन देगा, शासन इन्क्वारी करेगा, तब देगा। जो जमीन डायरेक्ट लिया है, उसमें वह कहां से देगा।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल समाप्त।

(प्रश्नकाल समाप्त)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :
12:00 बजे

पृच्छा

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्कूल शिक्षा विभाग के द्वारा एक आदेश जारी हुआ, जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूं । इसमें हिन्दी माध्यम के स्कूलों का चयन कर अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में प्रारंभ करना चाहती है । अंग्रेजी स्कूल को प्रारंभ करना अच्छी बात है, किन्तु हिन्दी माध्यम के छात्र-छात्राओं को अन्य स्कूलों में स्थानांतरित करना चाहते हैं, इस पर मुझे आपत्ति है । विशेषकर छात्राओं को अन्य स्कूलों में स्थानांतरित न किया जाए । अंग्रेजी आज की हमारी आवश्यकता हो सकती है, लेकिन हमारी जननी नहीं हो सकती इसलिए मेरा निवेदन है कि हिन्दी माध्यम के स्कूलों को बंद न किया जाए । हमारे धमतरी विधान सभा क्षेत्र में एक विषय आया कि नत्थू जी जगताप उच्चतर माध्यमिक शाला है, जो अध्ययन और अध्यापन की दृष्टि से बहुत ही अच्छा स्कूल है और इसकी दर्ज संख्या 575 विद्यार्थियों के आसपास है, जिसमें 225 छात्राएं हैं और यहां पर लगभग 16 से 17 वार्ड और 6 गांव के बच्चे आते हैं । मेरा निवेदन है कि इसे संरक्षित किया जाए । क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाम से यह स्कूल है और धमतरी के इतिहास में यह बहुत महत्वपूर्ण है ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है ।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश में लगभग 20 लाख टन धान जो समर्थन मूल्य में खरीदा गया है, वह सहकारी समितियों के उपार्जन केन्द्र में खुले में पड़ा हुआ है । 1 दिसम्बर को धान खरीदी शुरू हुई और अगर 1 दिसम्बर से आजतक जोड़ेंगे तो 20 से 25 दिन बेमौसम बारिश हुई है ।

अध्यक्ष महोदय :- इस में इतनी लंबी-चौड़ी चर्चा हो चुकी है । आने वाले समय में कोई बात होगी...।

श्री शिवरतन शर्मा :- और उस बारिश के चलते धान खराब हो रहा है, उसमें अंकुरण की स्थिति आ चुकी है और धान खरीदी पर भी चर्चा नहीं हुई । धान खराब हो रहा है, हमने इस विषय में स्थगन दिया है, आप स्थगन को ग्राहय कर चर्चा कराएं, आपसे मैं निवेदन करना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं विचार कर रहा हूं ।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे सोसायटियां में खुले आसमान के नीचे धान पड़ा है । उसके धान के लिए कैप कव्हर भी नहीं है । बेमौसम बारिश हुई है और उसके बाद उसके परिवहन की भी व्यवस्था नहीं है और इस महत्वपूर्ण विषय पर किसान का धान खराब हो रहा है, यहां का राजस्व कम हो रहा है । हम लोगों ने धान के विषय पर महत्वपूर्ण स्थगन दिया है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कृपया सदन की कार्यवाही रोककर उस पर चर्चा करायें ।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले तो आपसे निवेदन कर दूं कि जो पूरी चर्चा हुई है, वह हमने धान खरीदी पर की थी । सरकार ने 82 लाख टन के आसपास धान खरीदना स्वीकार किया है । इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संग्रहण केन्द्रों में, मैं अपने विधान सभा क्षेत्र का संग्रहण केन्द्र बता देता हूं, आप चलकर मेरे साथ दौरा कर लीजिए, धानों में जरई आ चुका है, पानी अभी भी भरा हुआ है, ढंका नहीं है । माननीय मुख्यमंत्री जी सुन रहे हैं । सबसे गंभीर बात यह है कि 2 तारीख से लेकर 20 तारीख तक राईस मिलर्स लोगों को डी.ओ. नहीं काटा गया, बिना कोई निर्देश के परिवहन स्थगित रहा और अरबों रूपयों की यह राष्ट्रीय क्षति हुई है । वह कहां जाएगा, किसके खाते में जाएगा, यह लापरवाही किसके कारण हुई..

अध्यक्ष महोदय :- अभी आप भाषण शुरू करने वाले हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने इस संबंध में स्थगन दिया है, यह राज्य हित का विषय है । इसको षडयंत्रपूर्वक नष्ट किया गया, ताकि आगे ऐसा होता रहे ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री अजीत जोगी ।

श्री अजीत जोगी (मरवाही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रायपुर से जगदलपुर जो राष्ट्रीय राज्य मार्ग है, वह बहुत महत्वपूर्ण है । कांकेर से लेकर केशकाल तक सड़क का नाम ही नहीं है, पर इस सड़क में तीन जगह टोल टैक्स वसूला जा रहा है। जब सड़क ही नहीं बनी है तो टोल टैक्स वसूलना बिल्कुल असंवैधानिक है । माननीय मुख्यमंत्री जी बैठे हैं । मैं आपके माध्यम से उनसे कहना चाहूंगा कि यह जो टोल टैक्स वसूला जा रहा है, वह खराब सड़क है, सड़क ही नहीं बनी है, फिर भी टोल टैक्स वसूला जा रहा है । इसको तत्काल बंद किया जाए ।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश में धान खरीदी केन्द्र से धान संग्रहण केन्द्र नहीं गया है और जो संग्रहण केन्द्र में धान गया है, उसकी बहुत बुरी स्थित है । राज्य शासन ने मार्कफेड को 13,500 करोड़ रूपए रिवालविंग फंड के लिए दिया है । सरकार ने किसानों की धान खरीदी कर ली और धान खरीदने के बाद धान का जो फाईनल डिस्पोज़ल होगा, उसमें जो नुकसान हो रहा है, वह राज्य की क्षति है, राष्ट्र की क्षति है । हमने उस पर स्थगन दिया है, कृपा पूर्वक ग्राह्य करके चर्चा कराएं ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री सौरभ सिंह ।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश में खुले संग्रहण केन्द्रों से धान, धान खरीदी केन्द्र से संग्रहण केन्द्र नहीं गया है, जो संग्रहण केन्द्र में धान गया है, उसकी बहुत बुरी स्थिति है । 13,500 करोड़ रूपये राज्य शासन ने मार्कफेड को रिवॉल्विंग फण्ड के लिए दिया है । किसानों की धान खरीदी के बाद फायनल डिस्पोजल होगा, उसमें जो नुकसान हो रहा है, वह राज्य की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

क्षति है, राष्ट्र की क्षति है । माननीय अध्यक्ष महोदय, उस पर हमने स्थगन दिया है, कृपापूर्वक ग्राह्य करके उस पर चर्चा करायें ।

अध्यक्ष महोदय :- आपके द्वारा प्रस्तुत स्थगन प्रस्ताव की सूचना को कक्ष में अग्राह्य कर दिया है । ध्यानाकर्षण की सूचना । श्री शैलेष पाण्डेय ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 18 लाख टन धान अभी भी घरों में पड़ा हुआ है । सरकार चिंता नहीं कर रही है, पानी गिर रहा है, बरसात है, ओले गिर रहे हैं, यह सरकार चिंता नहीं कर रही है । छत्तीसगढ़ की सरकार वैसे ही कंगाल हो गयी है । धान का नुकसान होगा तो और कितनी राशि का नुकसान होगा? यह गंभीर विषय है, सरकार बिल्कुल भी गंभीर नहीं है ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धान खरीदने के बाद में संग्रहण केन्द्र से धान के उठाव के लिए ट्रांसपोर्टर को आदेशित नहीं किया जा रहा है । डी.ओ. नहीं काटना, 4 फरवरी से लेकर पूरे प्रदेश में बंद है, बारिश के कारण उसमें जर्मनेशन हो गया है । जरई आ गे हावय, जरई आये के बाद भी अभी तक धान सोसायटी म परे हे, राष्ट्रीय संपत्ति के जो नुकसान होवथे, ये सरकार के कारन होवथे, ए काखर से वसूले जाहय? वोखर लिये जवाबदार कोन हावय? आखिर डी.ओ. काहे नई कटथे? आज भी वोखर कारन नई बताय जावथे। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत गंभीर विषय हरै । एखर लिये हमन स्थगन प्रस्ताव दिये हन, स्थगन प्रस्ताव ला स्वीकार करके एखर उपर चर्चा कराय जाय ।

श्री कवासी लखमा :- भागने के बाद स्थगन क्यों ला रहे हो ? (व्यवधान) काला कुर्ता पहन कर आये और भाग गये, स्थगन क्यो ला रहे हो भाई ?

श्री धरमलाल कौशिक :- धान आखिर तुंहर सोसायटी म मिलिंग म नई जावथे...(व्यवधान) एखर पीछे का कारन हे? ए कारन ला आज तक सरकार के द्वारा नई बताय गे हे । माननीय अध्यक्ष महोदय, ये राष्ट्रीय संपत्ति के जो नुकसान होवथे, एखर लिये जवाबदार आखिर कोन हरै ? एखर डी.ओ. काबर नई कटथे, ए महत्वपूर्ण चिंता के विषय हे । अभी उंहा धान सड़त पड़े हावय । जरई आवथे, वोखर बाद भी कुछ नइ होवथे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, डी.ओ.का पैसा ..(व्यवधान) नहीं हुआ है, आरोप लगाना पड़ेगा अध्यक्ष महोदय । जानबूझकर सड़ाया गया है । छत्तीसगढ़ के पास मिलिंग क्षमता है, उसको क्यों रोका गया है ? क्यों राष्ट्रीय नुकसान किया गया ? माननीय अध्यक्ष जी, इसमें चर्चा होनी चाहिये । यह आपसे आग्रह है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, हमारे स्थगन का आशय यह है कि सरकार ने 82.50 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा । अच्छी बात है । अध्यक्ष महोदय, उसकी सुरक्षा तो सरकार को ही करनी है । आज ही सुबह बिलासपुर में भयंकर बारिश हुई है। जब यहां धूप निकला है तो बिलासपुर में जबरदस्त

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बारिश हुई है । धान खरीदी केन्द्रों में कोई पक्का इंतजाम भी नहीं है । आप लोगों का कोई प्लान नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :-धर्मजीत सिंह जी, आप सीनियर सदस्य हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपका ध्यान आकृष्ट करा रहे हैं, कृपा करके उसे उठायें।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोगों के स्थगन प्रस्ताव को मैंने स्थगित कर दिया है । अभी बजट में, अनुदान में पूरी चर्चा होगी, शैलेष पाण्डेय जी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप अपने ..(व्यवधान) को बोलिये, उसको उठायें । व्यवधान धान सड़ने के लिए नहीं रखा गया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- बारिश से खरीदी केन्द्र बन गया तालाब, भगवान भरोसे छोड़ा करोड़ों का धान, माननीय अध्यक्ष जी, 18 लाख मीट्रिक टन धान खुले में पड़ा हुआ है । व्यवधान माननीय अध्यक्ष जी, इस पर चर्चा करायी जानी चाहिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- प्रदेश में जितने धान खरीदी केन्द्र है, सब खेत-खार में बना दिये हैं । इसलिए ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं । जनता के पैसे का करोड़ों रूपये का नुकसान हो रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपसे आग्रह है, यह बड़ी क्षति है (व्यवधान) जानबूझकर..(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- श्री शैलेष पाण्डेय, ध्यानाकर्षण की सूचना पढ़ें ।

समय :
12:04 बजे

<u>ध्यानाकर्षण सूचना</u>

<u>(1) बिलासपुर-रायपुर मार्ग अपूर्ण होने से दुर्घटना होना ।</u>

श्री शैलेष पाण्डेय (बिलासपुर) :- अध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यानाकर्षण सूचना का विषय इस प्रकार है :-

बिलासपुर से रायपुर निर्माणाधीन मार्ग आज तक नहीं बना है, उक्त मार्ग के समय पर पूर्ण नहीं होने से लोगों को समस्या का सामना करना पड़ रहा है । पिछला टेंडर जारी होने से अब तक मार्ग अपूर्ण हैं । न्यायधानी बिलासपुर में हाईकोर्ट, रेल्वे-जोन मुख्यालय, एस.ई.सी.एल. मुख्यालय और अनेक महत्वपूर्ण शासकीय कार्यालय स्थित है । इस मार्ग के पूर्ण होने से लोगों को आवागमन में सरलता होगी । मार्ग अपूर्ण होने से दुर्घटनाओं के कारण कई मौत हो रही हैं । बिलासपुर शहर के व्यापारी, नौकरी-पेशा, छात्र-छात्राओं को भी सदैव इस मार्ग पर यात्रा करना रहता है, मार्ग में कहीं से भी लेन बदल दिया जाता है, जिससे बहुत सारी दुर्घटना हो रही है, इस कारण आम लोगों में शासन के प्रति आक्रोश की स्थिति है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

लोक निर्माण मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- अध्यक्ष महोदय, प्राप्त जानकारी के अनुसार बिलासपुर-रायपुर राष्ट्रीय राजमार्ग का 4/6 लेन निर्माण कार्य भारत सरकार द्वारा भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के माध्यम से कराया जा रहा है ।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण से प्राप्त जानकारी के अनुसार सत्य यह है कि बिलासपुर से रायपुर राष्ट्रीय राजमार्ग को सडक निर्माण हेतु कुल 3 भाग बिलासपुर से सरगांव, सरगांव से सिमगा तथा सिमगा से रायपुर में बांटा गया है । बिलासपुर से सरगांव तक का मार्ग दिनांक 13.08.2018 को पूर्ण हो चुका है । सरगांव से सिमगा तक का मार्ग दिनांक 28.01.2020 को अनंतिम पूर्ण है । सिमगा से रायपुर तक का मार्ग जून-2020 तक पूर्ण होने की संभावना है । पूर्ण हुये मार्ग में वाहनों का सुगम आवागमन हो रहा है, जिससे लोगों को किसी प्रकार की समस्या नहीं है । निर्माणाधीन भाग में ही वाहनों का लेन परिवर्तन किया जा रहा है जिसमें उचित संकेतक बोर्ड आदि लगाये गये हैं, जिससे किसी प्रकार की दुर्घटना नहीं हो रही है। इससे व्यापारी, नौकरीपेशा, छात्र-छात्राओं, शासकीय कार्यालय के लोगों को सुविधा मिली है। नवीन मार्ग के निर्माण से दुर्घटनाओं में कमी आई है। उक्त मार्ग के निर्माण से आम लोगों में शासन के प्रति किसी प्रकार आक्रोश की स्थिति नहीं है।

श्री शैलेष पाण्डेय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रायपुर से बिलासपुर का जो मार्ग है इसमें 126 किलोमीटर सड़क बनाई जा रही है। 05 साल हो गये हैं, 05 सालों में आज तक सड़क नहीं बन पाई है। इसमें शासन ने 2000 करोड़ रूपये व्यय किया है। मैं इसमें मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि क्या आप बताना चाहेंगे कि इसमें 5 साल में कितनी दुर्घटनाएं हुई हैं और इन दुर्घटनाओं में कितनी मौतें हुई हैं?

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पांच साल की जानकारी तो इस समय उपलब्ध नहीं है पर 3 साल की मेरे पास उपलब्ध है, जिसकी जानकारी मैं दे देता हूं। वर्ष 2017 में बिलासपुर से सरगांव में 27 दुर्घटनाएं हुईं जिसमें 05 मौतें थीं, वर्ष 2018 में 16 दुर्घटना हुई जिसमें 02 मौतें थीं, वर्ष 2019 में 19 दुर्घटना हुई जिसमें 11 मौत थी। सरगांव से सिमगा में वर्ष 2017 में 95 दुर्घटनाएं हुईं जिसमें 16 मौतें थीं, वर्ष 2018 में 28 दुर्घटना हुई जिसमें 06 मौत थी, वर्ष 2019 में 89 दुर्घटना हुई जिसमें 32 मौत थी। सिमगा से रायपुर में वर्ष 2017 में 55 दुर्घटनाएं हुईं जिसमें 11 मौतें थीं, वर्ष 2018 में 53 दुर्घटना हुई जिसमें 17 मौत थी, वर्ष 2019 में 80 दुर्घटना हुई जिसमें 28 मौत थी।

श्री शैलेष पाण्डेय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये हाईवे है या मौत की सड़क है? यह सड़क सीधे यमलोक पहुंचा रही है। आपने इसमें तीन साल का डेटा देखा, अगर हम पांच साल का डेटा लेंगे तो न जाने यह कहां तक पहुंच जायेगा। मैं आपको बताना चाहता हूं कि एक गर्भवती महिला अपने पति के साथ डिलीवरी के लिए अस्पताल में भर्ती होने जा रही थी, उसका एक्सीडेंट हो गया और वह महिला भी खत्म हो गई और उसका बच्चा भी खत्म हो गया।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, यह चरौदा की घटना है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :
12.30 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री मनोज सिंह मण्डावी) पीठासीन हुए)**

श्री शैलेष पाण्डेय :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि कुछ दिन पहले हमारे जिला पंचायत का एक सदस्य चुनाव प्रचार में अपनी मां को लेकर जा रहा था, उसका दिन-दहाड़े सुबह 9.30 बजे एक्सीडेंट हुआ और वह भी खत्म हो गया। ये सड़क नहीं है बल्कि मौत की सड़क है। इसमें दूसरी सबसे बड़ी बात कि उसमें जो डायवर्सन है वह बहुत ही खतरनाक है। इसमें किसी को पता ही नहीं चलता है कि किस प्रकार कब और कहां से मुड़ना है। कब, कहां से रोड इधर हो जाती है और कब, कहां से रोड उधर हो जाती है। अभी रोड बनी नहीं है और रोड उखड़ने लगी है जिसके कारण और भी एक्सीडेंट हो रहे हैं। मैं इसमें एक और बात कहना चाहता हूं कि आपका बिलासपुर से सरगांव वाला जो मार्ग है उसमें टोल भी लिया जाने लगा है। जब रोड नहीं बनी है तो 80 रूपये किस बात का लिया जा रहा है, और आने जाने का 160 रूपये किस बात का लिया जा रहा है? वहां पर टोल वाले मारपीट कर रहे हैं, बिलासपुर के लोगों को मार रहे हैं। वहां पर रोज पेपर में छप रहा है। मैं दो बातें कहना चाहता हूं कि इसमें गड़बड़ी हुई है, पांच साल तक ये सड़क नहीं बन पाई है। मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि इसमें दो हजार करोड़ का मामला है, भ्रष्टाचार भी हुआ है, हमें सड़क की गुणवत्ता की भी जांच करनी चाहिए। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इसमें एक उच्च स्तरीय समिति या सदन की समिति से जांच कराने का कष्ट करें और दूसरी बात कि जो भोजपुरी टोल वहां पर लिया जा रहा है, जनता से अवैध वसूली की जा रही है क्योंकि जब रोड बनी नहीं है तो वह टोल टैक्स क्यों लिया जा रहा है? जनता क्यों पैसा देगी? मारपीट क्यों की जा रही है ये गलत बात है। उस टोल को बंद कराने का कष्ट करें।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जिस सड़क का उल्लेख माननीय सदस्य ने किया है वह मैंने पहले ही बताया कि एन.एच.ए.आई. की है। संपूर्ण जिम्मेदारी, संपूर्ण काम उनके द्वारा किया जाता है। छत्तीसगढ़ सरकार पी.डब्ल्यू.डी. विभाग द्वारा किसी भी प्रकार से उसमें कोई काम नहीं किया जाता। छत्तीसगढ़ सरकार की जिम्मेदारी एन.एच.ए.आई. में मात्र इतनी होती है कि जमीन अधिग्रहण की जो बात आती है, उसमें हम सहयोग करते हैं। यूटिलिटी में हम सहयोग करते हैं, जैसे बिजली खंभा हटाना है, पाईप लाईन हटाना है, टावर हटाना है, इसमें छत्तीसगढ़ सरकार केन्द्र सरकार को सहयोग करती है। इसलिए जो सड़क खराब हुई है, यहां उनका क्षेत्रीय कार्यालय अलग है, वह इसकी पूरी देखरेख करते हैं, पूरा काम उनके द्वारा होता है। माननीय सदस्य जो बात कह रहे हैं, पोल की बात अन्य बात कह रहे हैं, तो मैं पूरी बात को केन्द्र सरकार को भारतीय प्राधिकरण को इसमें लिखेंगे, इतना ही हम छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से कर सकते हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शैलेष पाण्डे :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी, यह रोड भले ही भारत सरकार के द्वारा बनाई जा रही है, लेकिन मौतें तो हमारे छत्तीसगढ़ के लोगों की हो रही है। मौतें तो हमारे लोगों की हो रही है, हमारी माताएं, बहनें, बच्चों की हो रही है। गाड़ियां तो भारत सरकार की नहीं चलती है, गाड़ियां आम नागरिकों की चलती है। यह हमारी आपकी जवाबदारी है, इस सदन की जवाबदारी है। उस रोड को जब तक कि वह कम्प्लीट न हो जाये तब तक उसमें टोल बंद कराना चाहिए। यह हमको निर्णय लेना होगा। अगर भारत सरकार निर्णय नहीं ले रही है, यहां मौतें हो रही है उसके लिए जिम्मेदार कौन हैं ? उसके लिये जिम्मेदार भारत सरकार नहीं है। दूसरी बात, जब रोड नहीं बन पाई है और जो मौतें हो रही है, क्या उसको मुआवजा दिया गया ? क्या इतने लोग मरे हैं उनको मुआवजा दिया जा रहा है ? यह हमारी जवाबदारी है। आज बिलासपुर में लोग वहां पर फेसबुक में लिख रहे हैं कि सांसद विधायक कुछ नहीं कर रहे हैं। सरकार आयी है कुछ नहीं कर रही है। ये सारी चीजें फेसबुक में हो रही है। वहां पर रोज मारपीट होती है, माननीय मंत्री जी बहुत बड़ा-बड़ा छपता है। आप तो वहां के प्रभारी मंत्री हैं। इसलिए आपको इस बात को बताना और भी मेरा कर्तव्य है। हमारी सरकार को मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इसमें स्पष्ट निर्देश देना चाहिए, टोल को बंद करना चाहिए। यह हमारी सरकार का निर्णय होना चाहिए। इससे पब्लिक को अच्छा लगेगा। दूसरी बात न्याय भी हो सकेगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी।

श्री धर्मजीत सिंह :- एक मिनट, इकट्ठे जवाब दे देंगे। मैं भी इसमें पूछना चाहता हूं, हमारे बिलासपुर सड़क का मामला है। उपाध्यक्ष महोदय, हम लोगों को रोज इस रोड से आना जाना पड़ता है। पूरी सड़क बहुत खराब बनी हुई है। कम से कम 400 से ज्यादा क्रेक्स हैं। 50 जगह जर्क है। अगर आप सोते आयेंगे तो अचानक ऐसा लगेगा कि जैसे कोई एक्सीडेंट हो गया। पुल और जो आड़ीवाल वाला रोड है, उसमें बहुत बड़ा झटका है। ये सड़क भी इतना जल्दी इसलिए बना, 10 साल को मैं बहुत जल्दी बोल रहा हूं, क्योंकि हाईकोर्ट ने इसमें हस्तक्षेप किया। आप बोल रहे हैं कि आपका इसमें कोई रोल नहीं है। भैया, छत्तीसगढ़ की धरती जमीन हम दिये, बिजली खंभा हम हटा रहे हैं। अगर छत्तीसगढ़ में एन.एच.ए.आई. के लोग उटपटांग चीज कोई बना के जायेंगे तो क्या छत्तीसगढ़ की सरकार चुप रहेगी ? आप उसको बुलवाईये न कि कौन अधिकारी है, उसको बोलिये कि वह आपके संग या आपके किसी अधिकारी के संग दौरे में जाये, देखे ? अच्छी सड़क बनना चाहिए, तब हमारे प्रदेश का नाम होगा। माननीय मंत्री जी, एन.एच.ए.आई. वाला है करके कुछ भी लिपा पोती करके जा रहा है, इस बात को हम लोग कई बार उठा चुके हैं। आप उनके जो भी उच्च अधिकारी हैं, उनको आप बुलवाईये, आप छत्तीसगढ़ के मंत्री हैं। इस छत्तीसगढ़ में होने वाले निर्माण कार्य की गुणवता ठीक हो, यह हम सबकी जिम्मेदारी है। दूसरी बात, आपने एक्सीडेंट का आंकड़ा पढ़ा, एक भी पी.सी.आर. वैन, पुलिस का कोई भी पेट्रोलिंग गस्त या कोई भी एम्बुलेंस वगैर: का कोई इंतजाम नहीं है। जब हाईवे बन रहा है तो स्वाभाविक है,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

स्पीड में गाड़ियां टकरायेंगी, एक्सीडेंट होगा। हेल्प के लिये क्या है ? उसको कराईये न। सड़क तो बना दिये, अब वह टोल टैक्स वाला मारपीट करता है। वहां कम से कम पुलिस का वैन तो भेजवाईये। जो जायज है वह ले, टाईम में ले, वे लोग बदतमीजी अलग करते हैं। आप ऐसी चीजों को संज्ञान में लीजिए और इस सड़क को अच्छा बनवा करके प्रदेश की जनता को दीजिए। आठ साल तो इनकी सरकार में बनता रहा, नहीं बन पाया। अगर वही काम इस सरकार में भी होगा तो फिर इनके में और आपमें अंतर कैसे महसूस करेंगे। इसलिए आप थोड़ा आगे बढिए और आगे बढ़ करके जो भी अधिकारी हैं, उसका आपके अधिकारियों से मीटिंग करवाईये। आप पुलिस विभाग के भी मंत्री हैं, पुलिस को आदेश करिये कि वहां पर एम्बुलेंस और जो पी.सी.आर. वैन वगैर: होता है वह सब वहां पर पूरे बिलासपुर से रायपुर के टुकड़े में जहां-जहां जरूरत हो, वहां करवाईये।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो भोजपुरी टोल प्लाजा है उससे केवल 40-50 फीट के पहले इतना बड़ा जर्क है कि उस जर्क से स्पॉन्डिलाइटिस हो जायेगा, ऐसा लगने लग गया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी ने अपने जवाब में बताया है कि तीन साल में इस रोड पर 351 दुर्घटनाएं हुई है और 128 मौतें हुई हैं। आपने जो आंकड़ा दिया है, उसको मैं जोड़ रहा था और आपने अपने जवाब में यह भी लिखा है कि निर्माणाधीन मार्ग, भाग में वाहनों का लेन परिवर्तन किया जा रहा है, जिसमें उचित सांकेतिक बोर्ड आदि लगाये गये हैं साथ में आपने यह भी कह दिया कि आपका नियंत्रण नहीं है। इसको भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण बना रहा है, ये आपने आप में विरोधाभाषी बातें हैं आप सांकेतिक बोर्ड लगाने की बात भी कर रहे हो और अपनी जिम्मेदारी को उधर भी डाल रहे हो।

देखिए, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ठीक है इसका निर्माण कार्य भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के माध्यम से किया जा रहा है, पर इस पूरे निर्माण कार्य की जो सुपर विजन करने वाली एजेंसी है या इसमें जो अधिकारी लगे हुए हैं वह हमारे छत्तीसगढ़ के ही पी.डब्ल्यू.डी. के अधिकारी लगे हुए हैं, आपने डेपुटेशन में दिये हैं। आप पता करवाईये। अगर आपने डेपुटेशन में दिये हैं तो आखिर वह अधिकारी हमारे छत्तीसगढ़ के हैं और दुर्घटनाओं से जो मृत्यु हो रही है, वह हमारे छत्तीसगढ़ के लोगों की हो रही है। छत्तीसगढ़ का नुकसान हो रहा है। हम यह कहकर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते कि यह भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण का है, वह जाने। मैं आपके माध्यम से दो बातें जानना चाहता हूँ कि एक तो इस पूरे कार्य के सुपरविजन के लिए पी.डब्ल्यू.डी. विभाग ने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को किस-किस स्तर के कितने अधिकारियों को डेपुटेशन में दिया ? मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि टोल टैक्स वसूली करने की प्रक्रिया है जैसे बिलासपुर रोड पर भोजपुरी के पास टोल टैक्स की वसूली शुरू हो गई। आप उस सड़क में भी जाएंगे तो उनने कई जगहों की लेन परिवर्तन किया है तो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

टोल टैक्स वसूली करने के क्या नियम है? ये आप बता दीजिए। तीसरा आपने उत्तर में एक बात लिखी है कि बिलासपुर से सरगांव मार्ग 13.08.2018 को पूरा हो गया और सरगांव से सिमगा तक का मार्ग 28.01.2020 को पूरा हो गया और तीसरा मार्ग आप जून में पूरा करने की बात कर रहे हैं। आप अपने अधिकारियों से ये तीनों मार्ग का सुपरविजन कराकर देखेंगे कि वास्तव में यह पूर्ण हुआ है या नहीं हुआ है?

श्री धर्मजीत सिंह :- जो कोरोना वॉयरस से मरते हैं, उससे ज्यादा मर गये और घटिया निर्माण हो रहा है। आप जांच भी करवा दें।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सभी सदस्यों ने जो अपनी बातें रखी हैं उसके विषय में मैं सामूहिक जानकारी दे देता हूँ। एक तो डेपुटेशन की बात आदरणीय शर्मा जी ने कही है तो हमारे यहां पी.डब्ल्यू.डी. विभाग से कोई भी अधिकारी वहां पर डेपुटेशन में नहीं गया है। दूसरी बात सुपरविजन के लिए कहा गया है मैंने जो आंकड़े दिये हैं जानकारी दी है वह जो घटनाएं हुईं हैं मैंने उनकी जानकारी दी है। माननीय सदस्यों ने कहा कि छत्तीसगढ़ के लोग मर रहे हैं यह बात सही है और सुपरविजन की जो बात कही गई है निश्चित तौर पर हम अपने विभाग के अधिकारियों को भेजकर दिखवा लेंगे कि कहां-कहां, क्या-क्या गल्तिंया लग रही हैं और टोल की जो बात कही गई है निश्चित तौर पर, एक कड़ा पत्र लिखेंगे। चूंकि ये छत्तीसगढ़ में बन रहा है गलत बन रहा है क्या हो रहा है कितनी गल्तियां हैं, उसको हम अपने अधिकारियों से दिखवा लेते हैं और दिखवाकर, केन्द्र सरकार को एक कड़ा पत्र लिखते हैं जहां-जहां क्रेक हो रहा है, उसको सुधारने, मौतों को रोकने, सुरक्षा और समय के अंदर पूरा करने के लिए लिखते हैं। सड़क नहीं बनी है तब तक टोल न लें, इसके लिए सभी बिन्दुओं को जितने बिन्दु उठाये गये हैं तत्काल आज ही करेंगे और माननीय धर्मजीत सिंह जी ने कहा कि अधिकारी को बुलाकर जानकारी लें, वैसे अभी अधिकारी को बुलाया गया था, उन्हीं से पूरी जानकारी ली गई है। जानकारी दी जा रही है फिर से उनको बुलाकर, समयबद्ध क्या, कैसे होगा, जानकारी लेंगे और उतने तक सीमित न रखकर, केन्द्र सरकार को कड़ा पत्र लिखेंगे और जाएंगे तो केन्द्रीय मंत्री माननीय गडकरी जी से भी मिलकर यहां की जो तकलीफ, समस्या है, नुकसान हो रहा है।

श्री धर्मजीत सिंह :- पुलिस की व्यवस्था करा दीजियेगा। आप घोषणा कर दीजियेगा।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हां।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटा सा प्रश्न करना चाहता हूँ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप सबने जो-जो बात कही है, माननीय मंत्री जी ने उत्तर दे दिया है।

श्री ताम्रध्वज साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पुलिस की व्यवस्था की जो बात कही है मैं निश्चित तौर पर पेट्रोलिंग की व्यवस्था कराऊंगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप सबने जो-जो बात उठायी है, माननीय मंत्री जी ने उत्तर दे दिया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ये टेक्निकल फॉल्ट से जो रोड बना है, जिसका परिणाम है कि 129 लोगों की मृत्यु हो गई क्योंकि वह टेक्निकल फॉल्ट से बना हुआ है। मैं आपसे शाम को मिल लूंगा।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय बांधी साहब, थोड़ा दिल्ली जाईये और बोलिए। वही तो नहीं कर रहे हैं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस रोड के टेक्नीकल फाल्ट के कारण 129 लोगों की मृत्यु हुई है, जो मेडम भी कह रही हैं। माननीय मंत्री जी जहां ब्रिज है, उसका जो ज्वाईन्ट पार्ट है, उसमें इतना टेक्नीकल फाल्ट है, पिछले समय धर्मजीत सिंह जी ने भी इन बातों का उल्लेख किया था, यह एकदम जरूरी है, अगर वहां से स्पीड में जाते हैं तो धड़ से गिर जाते हैं। इसके कारण मृत्यु दर बढ़ी हुई है।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- महोदय, शायद विधानसभा की तरफ से सूचना जाने पर आयें, क्योंकि एन.एच.आई. वाले लोग संभाग स्तरीय बैठक में भी कभी नहीं आते हैं।

श्री शैलेश पांडे (बिलासपुर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- आदरणीय, बहुत सारी चीज हो गई है।

श्री शैलेश पांडेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 5 साल हो गये हैं और इसमें 5 साल से अधिकारी, अधिकारी के बीच में ही बात चल रही है, यह मामला ज्वलंत हो गया है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि सदन की समिति बनाकर इसकी गुणवत्ता की जांच हमको करवा लेना चाहिए। जनता को जो परेशानी आ रही है, उसका हमको निराकरण कर देना चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्री नारायण चंदेल जी, अपनी ध्यानाकर्षण की सूचना पढ़ें।

(2) छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा ग्राम पुरैना में जनप्रतिनिधियों की आवासीय कॉलोनी के आवागमन रास्ते की जमीन को अवैधानिक तरीके से अदला-बदली किया जाना।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यानाकर्षण की सूचना का विषय इस प्रकार है :- छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के द्वारा ग्राम पुरैना में छत्तीसगढ़ राज्य के जनप्रतिनिधियों/लोकसेवकों/सांसदों/विधायकों के लिए विशेष आवासीय योजना के अंतर्गत शासन द्वारा कालोनी का निर्माण किया गया है। उक्त कॉलीनी को बने लगभग 10 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन जनप्रतिनिधियों के आने-जाने के लिए रास्ता उपलब्ध नहीं है एवं जो रास्ता वर्तमान मे है, वह छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के अधिकारियों की कारगुजारियों के कारण जमीन विवादास्पद होने से

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

निर्माण कार्य नहीं हो पा रहा है। छत्तीसगढ़ गृह निर्माण के अधिकारियों ने जमीन की अदली-बदली करने में किसी व्यक्ति विशेष को फायदा पहुंचाने के नीयत से अवैधानिक तरीके से एक तरफा जमीन की अदला-बदली कर दी, जिसके कारण जमीन के मालिकाना हक को लेकर विवाद की स्थिति उत्पन्न हो गयी। तत्कालीन संपदा अधिकारी, हाउसिंग बोर्ड के खिलाफ धारा 420, 34 के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया तथा थाना तेलीबांधा में अपराध क्रमांक 499/18 के तहत दिनांक 09.10.2018 को एफ.आई.आर. भी पंजीबद्ध किया गया है, लेकिन आज तक संबंधित दोषी लोगों के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुई है। वरन् दोषी अधिकारी गृह निर्माण मण्डल में प्रशासकीय अधिकारी जैसे महत्वपूर्ण पद पर पदस्थ है। अपराध पंजीबद्ध पश्चात् भी आज दिनांक तक दोषी अधिकारियों को गिरफ्तार न किये जाने तथा कोई कार्यवाही नहीं किए जाने से दोषी अधिकारियों के हौसले बुलंद हैं। इससे आमजन में असंतोष व्याप्त है।

आवास एवं पर्यावरण मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- यह सही है छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के द्वारा ग्राम पुरैना में छत्तीसगढ़ राज्य के जनप्रतिनिधियों/लोकसेवकों/सांसदों/विधायकों के लिए विशेष आवासीय योजना के अंतर्गत शासन द्वारा कालोनी का निर्माण किया गया है जिसे बने हुए लगभग 10 वर्ष हो चुके हैं। यह सही नहीं है कि जनप्रतिनिधियों के आने-जाने के लिए रास्ता उपलब्ध नहीं है, अपितु उक्त कॉलोनी में आवागमन हेतु व्ही.आई.पी. रोड से क्लब हाउस होते हुए एक मार्ग निर्मित है तथा राष्ट्रीय राजमार्ग की ओर से कॉलोनी तक वैकल्पिक पहुंच मार्ग है। यह भी सही नहीं है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण के अधिकारियों ने जमीन का अदला-बदली किसी व्यक्ति विशेश को फायदा पहुंचाने की नियत से अवैधानिक तरीके से एक तरफा जमीन की अदली-बदली कर दी है जिसके कारण जमीन के मालिकाना हक को लेकर विवाद की स्थिति उत्पन्न हो गई है। अपितु सच्चाई यह है कि भूमि की अदली-बदली अनुबंध में उल्लेखित शर्तों के अनुसार समस्त औपचारिकता पूर्ण करते हुए विनिमय विलेख किया गया है तथा मंडल द्वारा विनिमय में दी गई भूमि तीनों खातेदारों के नाम पर दर्ज एवं वर्तमान में रिक्त है। भूमि अदला-बदली के प्रस्ताव को मण्डल द्वारा अनुमोदित किया गया है तथा राज्य शासन द्वारा भी अनुमति प्राप्त है। छत्तीसगढ़ शासन आवास एवं पर्यावरण विभाग के पत्र क्रमांक 1001/1022/32/2005 रायपुर दिनांक 11.05.2006 के माध्यम से मण्डल को माननीय जनप्रतिनिधियों हेतु प्रस्तावित आवासीय कालोनी पर व्ही.आई.पी. मार्ग के बजाय अन्य वैकल्पिक मार्ग से जुड़ाव हेतु व्यवस्था किये जाने हेतु निर्देशित किया गया था। प्रस्तावित वैकल्पिक मार्ग की भूमि श्री जगदीश अरोरा के दिनांक 12.05.2006 के सहमति प्रस्ताव अनुसार भूमि अदला-बदली की कार्यवाही प्रारंभ की गई तथा अदला-बदली का प्रस्ताव हेतु दावा आपत्ति हेतु दैनिक भास्कर दिनांक 31.05.2006 के माध्यम से जारी किया गया। नियत तिथि तक कोई दावा आपत्ति नहीं होने के कारण कलेक्टर जिला रायपुर के द्वारा पत्र क्रमांक/क/वाचक/नजूल/2006 रायपुर दिनांक 19.09.2006 के माध्यम से राज्य शासन को अनुमति हेतु

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रस्ताव भेजा गया तथा शासन के आदेश क्रमांक एफ 4-82 दिनांक 28.12.2016 के माध्यम से अदला-बदली की अनुमति प्राप्त हुई । अदला-बदली संबंधी समस्त औपचारिकता पूर्ण करते हुए तथा अनुबंध की शर्तों के पालन करते हुए तत्कालीन संपदा अधिकारी द्वारा निजी भू-स्वामी श्री जगदीश अरोरा के नाम विनिमय विलेख किया गया । श्री जगदीश अरोरा द्वारा किये गये इकरारनामा में सड़क निर्माण हेतु 30 फीट अपनी निजी भूमि दान में दिये जाने हेतु अनुबंध किया तथा 30 फीट से अधिक चौड़ी सड़क बनने पर अतिरिक्त भूमि के लिये समतुल्य एवं सममूल्य भूमि देने की मांग की गई थी । इसी अनुक्रम में माननीय जनप्रतिनिधियों द्वारा 60 फीट चौड़ी सड़क की मांग अनुसार 60 फीट (18 मीटर) चौड़ी सड़क अनुमोदित कराया गया तथा वर्तमान में 60 फीट सड़क मास्टर प्लान में अंगीकृत है । पूर्व में मंडल के प्रयास से 30 फीट चौड़ी डब्ल्यू बी.एम. का निर्माण किया गया जो आज भी आवागमन हेतु उपयोग में है । माननीय विधायकों की कॉलोनी को वर्ष 2009 में नगर निगम रायपुर को हस्तांतरित कर दिया गया है । छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल के कार्यक्षेत्र के बाहर हो जाने से शासन द्वारा लोकनिर्माण विभाग के माध्यम से पहुंच मार्ग बनाये जाने हेतु स्वीकृति दी गई थी । कालांतर में श्री जगदीश अरोरा परिवार के हिस्सेदार द्वारा संबंधित खसरों पर अपना हक जताते हुए परिवाद दायर किया गया । जिसके कारण सड़क निर्माण की अग्रिम कार्यवाही नहीं की जा सकी । माननीय न्यायालय के आदेशानुसार भूमि का बंटवारानामा मामला वर्तमान में विवेचनाधीन है ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह विधायकों की कॉलोनी का प्रश्न है और उस विधायक कॉलोनी में सड़क की जो स्थिति है वह बद् से बद्तर है और वह विधायक जो इस सदन के माध्यम से...।

श्री अजय चंद्राकर :- बद् से बद्तर पर थोड़ा ठीक से प्रकाश डालिए न ।

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इतने तंदरूस्त विधायक होंगे तो रोड तो फटेगी न ।

श्री नारायण चंदेल :- सुनिए न, अभी शराब की बात नहीं हो रही है, अभी सड़क की बात हो रही है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह गंभीर विषय है और विधायकों को अपनी कॉलोनी के लिये ध्यानाकर्षण लगाना पड़ रहा है । (शेम-शेम की आवाज) यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है । हम सब लोग इस सदन के माध्यम से सरकार को पैसा देते हैं और छोटे-छोटे झुग्गी-झोपड़ी में भी सड़कों का निर्माण हो जाता है लेकिन मात्र 200 मीटर सड़क वहां पर है जो विधायक कॉलोनी के लिये पहुंच मार्ग है और आज उसके लिये हमको सरकार से गुहार लगानी पड़ती है । यह अत्यंत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है, लज्जाजनक बात है और शर्मनाक बात है ।

श्री कवासी लखमा :- हमें तो एक साल हुए हैं । ये 15 साल वहां क्या कर रहे थे ? क्या वहां पर उस समय रोड नहीं थी ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि इन्होंने कई प्रकार से विस्तार से उत्तर दिया है कि नगर-निगम को हस्तांतरित कर दिया गया है उसके बाद लोकनिर्माण विभाग द्वारा सड़क का निर्माण किया जायेगा, यह प्रश्न हम बाद में करेंगे लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूं कि जो जमीन की अदला-बदली की प्रक्रिया हुई उसमें नियमों का पालन नहीं किया गया इसके लिये कौन दोषी है और दोषी अधिकारी के विरूद्ध में सरकार द्वारा क्या-क्या कार्यवाही की गई है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो भूमि की अदला-बदली हुई है वह नियम-प्रक्रिया के तहत् हुई है । बकायदा राज्य सरकार तक जाने के बाद मंत्रिमंडल से मंजूरी के बाद इस प्रकार की अदला-बदली हुई है। समस्या कहां से उत्पन्न हुई इसे मैं आपको समझा देता हूं । श्री जगदीश अरोरा, श्री मोहन लाल अरोरा ये दोनों भाई, इनकी मॉ श्रीमती सोमवती अरोरा, श्री जगदीश अरोरा ने स्वयं उपस्थित होकर उन्होंने कहा कि पूरा परिवार मेरे साथ है और इंडीविजुअल केपेसिटी में उसने आवेदन लगाया । आवेदन लगाकर जितनी प्रक्रिया 3-4 साल तक चली, परिवार ने किसी ने आपत्ति नहीं की, सभी की जानकारी में था । बाद में ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई, कुछ पारिवारिक विवाद हुआ और उन्होंने सीधे एक आवेदन लगाकर यह मांग करनी शुरू कर दी कि हमसे सहमति बगैर यह जो आपसी तबादलानामा है यह कर दिया गया है तो यह पारिवारिक विवाद के कारण आगे जब मामला बढ़ा तो आगे मामला बढ़ने के बाद उन्होंने न्यायालय में परिवाद पेश किया और न्यायालय में परिवाद पेश करने के बाद, जो न्यायालय की तरफ से आदेश हुआ - राजस्व अभिलेखों में सोमबती अरोरा, मोहनलाल अरोरा और जगदीश अरोरा का नाम संयुक्त रूप से भूमि स्वामी के रूप में दर्ज है । तथा सोमवती अरोरा, तबादलानामा होने के बाद ऐसा नहीं है कि किसी एक व्यक्ति का नाम आ गया, संयुक्त रूप से तीन का नाम था तो तबादला नामा में एक तरफ हाऊसिंग बोर्ड और दूसरी तरफ बाकी तीनों का नाम था, इसमें कोई अनियमितता नहीं है । संयुक्त रूप से भूमिस्वामी के रूप में दर्ज है तथा सोमवती अरोरा की मृत्यु 09.04.2009 को हो चुकी है । फिर भी उत्तरवादी क्रमांक 2 जगदीश अरोरा के द्वारा उत्तरवादी क्रमांक 3 छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल संभाग 3, रायपुर के समक्ष स्वयं को एकल स्वामी बताते हुए विनिमय विलेख 11.12.2015 निष्पादित कराया गया । पाविारिक विवाद के कारण वे सामने आए और अपना करा लिए, इस तरीके का मामला है। अब इस प्रकार मृत व्यक्ति का नाम विलोपित किये बिना विनिमय विलेख निष्पादित किया गया है, जो कि छल-कपट है । न्यायालय ने परिवाद में आदेश किया है कि संबंधित थाने को भी, कि इसकी जांच करके प्रस्तुत किया जाए । आपकी मूल चिंता है कि रोड बननी चाहिए । रोड बनने के मामले में जो लोक निर्माण विभाग के बारे में आपको जानकारी दी गई है कि कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग का पत्र 11.02.2016 है । इसमें उन्होंने लिखा है कि कलेक्टर जिला रायपुर को जी.ई.रोड से एमएलए हाउसिंग बोर्ड कालोनी पुरेना पहुंच मार्ग हेतु भू-अर्जन बाबत ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

क्योंकि भू अर्जन के बगैर इसका विकल्प अब संभव नहीं है । पारिवारिक विवाद है और भूअर्जन के बाद जो मालिक होगा उसके खाते में पैसा चला जाएगा । इसमें लिखा गया है कि संदर्भित पत्र का अवलोकन करने का कष्ट करें, जी.ई.रोड से हाउसिंग बोर्ड कालोनी पुरेना पहुंच मार्ग 200 मीटर निर्माण हेतु छत्तीसगढ़ शासन लोक निर्माण विभाग मंत्रालय नया रायपुर, दिनांक 08.02.2016 द्वारा रूपया 851.14 लाख की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है । उक्त स्वीकृति पत्र में भू-अर्जन कार्य हेतु को 800 लाख एवं निर्माण हेतु 51.14 लाख की राशि सम्मिलित है। तो यह प्रक्रिया में है । इसके बाद चूंकि यह परिवार के लोगों से भी सम्पर्क करने का प्रयास किया जा रहा है, माननीय सदस्यों की बातें बार-बार सामने आती हैं कि इसको जल्दी बनाया जाए । अब उनसे सम्पर्क करके प्रयास किया जा रहा है कि कोई राजीनामा की स्थिति बन जाए, यदि ऐसा होगा तो फिर जल्दी से जल्दी कार्यवाही की जा सकेगी ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय मंत्री जी, उनके परिवार के लोगों को शासन का कोई सक्षम व्यक्ति बुला ले और उनसे चर्चा करके समस्या का निदान करे । नहीं तो फिर सख्ती से कार्रवाई हो । यदि बातचीत से समस्या का निदान नहीं होता तो प्रशासन को सख्ती से कार्रवाई करनी चाहिए, क्योंकि यह विधायकों से जुड़ा हुआ मामला है । माननीय वह सड़क मात्र 200 मीटर की है, वह कोई 25-50-100 किलोमीटर लम्बी सड़क नहीं है । मंत्री जी, मेरा अंतिम प्रश्न है और मूल प्रश्न है कि सड़क का निर्माण कब तक हो जाएगा, किस एजेंसी के द्वारा होगा, कृपया समय सीमा बताने का कष्ट करें ?

श्री मोहम्मद अकबर :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य की सभी बातों से सहमत हूं । उन्होंने कहा कि कोई सक्षम अधिकारी उनको बुलाए और बातचीत करे इसका भी प्रयास होगा और यदि नहीं होगा तो अंतिम विकल्प होता है कि उसका भू-अर्जन किया जाए । तीसरी बात समय सीमा बताना इसलिए संभव नहीं है कि मामला न्यायालय में लंबित है । लेकिन हम लोग जल्दी से जल्दी करने का प्रयास करेंगे ।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्री सौरभ सिंह ।

श्री नारायण चंदेल :- बड़ी विचित्र स्थिति है ।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने बताया है 31.05.2005 को विज्ञापन आया था । तब परिवार के लोगों ने लिखित में कोई आपत्ति नहीं की थी ।

श्री नारायण चंदेल :- हमने तो समय सीमा जानने के लिए ही प्रश्न लगाया है, पूरा उत्तर ही नहीं आया है ।

उपाध्यक्ष महोदय :- उन्होंने कहा कि मामला न्यायालय में है । मंत्री जी ने पूरी तरह उत्तर दिया है, उसमें कोई शक नहीं है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री नारायण चंदेल :- नगर निगम ने उस पर कब्जा कर लिया है, वह नगर निगम में चला गया है । इसमें लिखा है कि लोक निर्माण विभाग उस सड़क का निर्माण करेगा, तो कब करेगा यह बता दें ?

उपाध्यक्ष महोदय :- सौरभ सिंह ।

श्री अजय चन्द्राकर :- जनाब अकबर साहब, जिस समय यह योजना बनी उस समय मैं संसदीय कार्यमंत्री था । उसमें जो मूल समझौता विधान सभा के साथ अरोरा परिवार का हुआ है । यदि उनका कोई विवाद है तो वह सड़क इधर से भी खुलनी थी। आप विधान सभा से एग्रीमेंट की कॉपी लीजिए और इधर से उसको खुलवाइए तो वे लोग अपने-आप ही जमीन देंगे । दुर्भाग्य की बात है कि हम इधर की जमीन से सड़क नहीं खुलवा रहे हैं । जिसमें उनको देना है, उसमें वे बाधा पहुंचा रहे हैं और सरकार उसको 15 साल से देख रही हे, यह अजीब स्थिति है ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, क्वीन्स क्लब ऑफ इंडिया को हाउसिंग बोर्ड की जमीन दी गई है या तो उसी मार्ग को नियमित मार्ग बना दिया जाए। क्वीन्स क्लब की तरफ से जो प्रवेश है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह विधायकों का प्रश्न है । माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी एक तो क्वीन्स क्लब से ही रास्ता बंद कर देते हैं। क्वीन्स क्लब वाले आने-जाने नहीं देते। 36 मॉल वाले भी रास्त बंद कर दिये। मॉल वाले ने जो सरकारी जमीन है, उसमें भी कब्जा कर लिया है। कृपया, आप नपवा लें। आप उसकी जांच करवा लें। विधायकों के आने-जाने के लिए व्यवस्था होनी चाहिए।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- छ.ग. विधान सभा के सदस्यों की उस हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में अनदेखी हो रही है, यह दिखता है।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- एक मिनट। जब यह सरकार बनी तो पहले विधान सभा के दिन ही मैंने इस मामले को उठाया था। माननीय मंत्री जी और माननीय विधान सभा अध्यक्ष महोदय ने भी मंत्री महोदय से कहा था कि वे लोग खुद जाकर देखेंगे। मेरे ख्याल से 14 महीना हो गया। आप कृपा करके एक बार आ जाते। हम लोग आपको चाय पिलाएंगे। आप खुद देख लीजिए। हम लोग कितनी दुर्दशा में रहते हैं। अगर पानी गिर गया तो चलना मुसीबत है। अरे कौन अरोरा है ? अगर वे सीधे नहीं माने तो कलेक्टर को लगाओ। कलेक्टर की भाषा को मानेगा। अरोरा-मरोरा सब ठीक हो जायेगा। हम लोगों के लिए सड़क बनवाइए। उसे एक्वायर कर लीजिए। हिन्दुस्तान की किसी भी चीज को सरकार खरीद सकती है और ले सकती है। कोई भी नहीं रोक सकता। उसके लिए 14 साल तक की कोई स्कीम बनाने की कोई जरूरत नहीं है। उससे कोई बात मत करिए। सीधा कलेक्टर को आदेश करिए। सीधा कलेक्टर को आदेश करके कब्जा ले लीजिए। सड़क बनवा दीजिए। दूसरा आपने नगर-निगम को दे दिया। नगर-निगम में भी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आपकी सत्ता आ गयी है। आप रायपुर शहर में रहते हैं। हमारे कवर्धा के विधायक हैं, लेकिन आप यहां आदेश कीजिए कि वहां कॉलोनी में थोड़ा साफ-सफाई और जो सी.सी. सड़क जो पुराना बना हुआ है, वह सब जर्जर हो गया है। किसी को अगर अपने घर बुलाते हैं तो शर्म आती है। शर्म इसलिए आती है कि वह जादूगर टाइप रास्ते से आता है।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- नहीं-नहीं उसका एड्रेस यही बताते हैं कि जो खूब खराब सड़क है, उसी से आना है। यही एड्रेस बताते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- जादूगर आनंद जैसे डिब्बे में डाला और निकालता है। कुछ चीज डालता है और कुछ चीज निकालता है। तो क्वीन्स क्लब में घूसो तो सारी गाडियों का काफिला लगा रहता है। जैसे ही अंदर जाते हैं तो बहुत बड़ा जर्क है। उसके बाद एक झोपड़ी है। वहां पर बस्तर के विधायक रहते हैं। उस झोपड़ी में किसी का अंडर वियर, बनियान, चादर, कंबल ये सब सूखते रहता है। ये सब तोड़वाइये और विधायकों के स्टैण्डर्ड का कम से कम रोड आने-जाने का बनवा दीजिए। साफ-सफाई करवा दीजिए। इसमें हम कोई बुराई में नहीं बोल रहे हैं। हम तो अपनी जरूरत की मांग आपसे कर रहे हैं और आप जैसे सक्षम मंत्री हमें धारा, दफा, कानून बताते रहोगे तो हमें मालूम है। हम 15 साल से धारा, दफा सुनते-सुनते आ गये। 5 साल और बीत जायेगा, लेकिन इसमें धारा, दफा की बात नहीं है। आप निर्देश करिए कि उसे कलेक्टर एक्वॉयर करेगा। नगर-निगम को आदेश करिए कि वह वहां पर साफ-सफाई, फॉगिंग मशीन, नाली, पानी, सी.सी. रोड की व्यवस्था करे और हम सम्मान से ला सकें। उपाध्यक्ष महोदय, क्वीन्स क्लब में तो जरा पता करवाइए न कि क्वीन्स क्लब में यह भी है कि हर विधायकों को मेंबरशीप दी जाएगी। एक भी उस समय के जो मेंबर हैं, उसके बाद एक भी विधायकों को मेंबरशीन नहीं दिया है। वह प्रॉपर्टी प्राइवेट नहीं है। वह इसी हाउसिंग कॉलोनी का हिस्सा है। इसलिए आप उसमें विशेष रूचि लीजिए। आप अपने प्रभाव का प्रयोग करके हमारी मदद करिए। हम कीचड़ में जाते हैं। गाड़ी फंसती है। कपड़ा खराब होता है। किसी को बुलाने में शर्म महसूस होती है और जब वे बोलते हैं कि यहां तो इतने अच्छे-अच्छे बड़े-बड़े मंत्री हैं तो हमें बताना पड़ता है कि भई सालभर से तो हो गया, कोई सुन नहीं रहा है। तो आपकी भी बेइज्जती होती है। इसलिए उसको विधायकों के सम्मान के रूप में लीजिए। उस कॉलोनी को अगर आपने बनाया है, चाहे इन्होंने ने ही बनाया है तो उसे सुविधा देना इस सरकार का काम है। आप हमें सुविधा दीजिए। सड़क बनवाइए। सी.सी.रोड बनवाइए। सफाई कराइए और आप हमें अच्छे से वहां रहने का अवसर प्रदान करेंगे, यही हम आपसे हमारी मांग है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर दक्षिण) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, मंत्री जी अभी पूरे शहर में यह हल्ला है कि क्वीन्स क्लब बिक गयी है। उसके बाद तो विधायकों की पूरी सुविधाएं समाप्त हो जायेंगी। क्वीन्स क्लब को कोई खरीद नहीं सकता, क्योंकि उसे लीज पर विधायकों के लिए बनाया गया था। यह बहुत ही दुर्भाग्यजनक है। अगर इस सरकार की नाक के नीचे क्वीन्स क्लब बिक जाती है तो इससे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ज्यादा शर्मनाक बात और कोई नहीं हो सकती। यह मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ सदन में ला रहा हूं। आप उसे अभी से देख लीजिए। उसे कोई खरीद न ले और विधायकों का जो एक रास्ता बनना है, वह बंद न हो जाये। क्वीन्स क्लब सार्वजनिक है। सार्वजनिक बनी रहनी चाहिए। इसकी आप व्यवस्था सुदृढ़ करें, इस बात का आपसे आग्रह है।

उपाध्यक्ष महोदय :- सौरभ सिंह जी।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने अपने जवाब में दिया है कि 60 फुट की सड़क बनेगी। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि क्या 60 फुट की सड़क की जमीन मौके पर हमारे कब्जे में है या नहीं है शासन की तरफ से।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उस 60 फीट की सड़क से ही आवागमन हो रहा है। लेकिन वह हमारे स्वामित्व में नहीं है। इस कारण से ये सारी विसंगति आ रही है। आपने जो भी चिंता व्यक्त की है, मैं आपके सभी सुझाव से सहमत हूं। मैं जल्दी इसमें कुछ न कुछ करने का प्रयास करूंगा। लेकिन चूंकि यह न्यायालयीन मामला है, इसलिए इसमें पूरा क्लीयरकट कमीटमेंट नहीं किया जा सकता है। लेकिन मैं जल्दी से जल्दी करने का प्रयास करूंगा।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसमें जो संबंधित जगदीश अरोरा हैं, उनके खिलाफ एक एफ.आई.आर. भी दर्ज हुई थी। सभी माननीय सदस्यों की यही चिंता है, अगर आप उस एफ.आई.आर. पर कार्रवाई करेंगे तो सारा 60 फीट का रास्ता बराबर आ जायेगा। मेरा यही निवेदन है कि उस एफ.आई.आर. पर कार्रवाई करवा दें।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज जिस एफ.आई.आर. की बात कर रहे हैं, तो उनके भतीजे के द्वारा ही किया गया है और वही परिवाद है, जो न्यायालय में है। न्यायालय के आदेश से ही वह जांच में आया है। तो यह इनका पारिवारिक विवाद है। कोई दूसरा तरीका निकालना पड़ेगा, जिसके माध्यम से जल्दी से जल्दी कार्रवाई हो जाये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब आप अधिग्रहण करेंगे तो जो भी पटवारी रिकार्ड में होगा, उनको पैसा मिलेगा ही। आप कलेक्टर से अधिग्रहण करवा लीजिये न। काहे को कोर्ट कचहरी जाना है। उस परिवार में चाहे सौ लोगों का नाम हो, एक का हो या तीन लोगों का नाम हो, उनको मुआवजे का पैसा मिल जायेगा। उनसे काहे का गिड़गिड़ाना।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 36माल ने जमीन पर कब्जा करके रखा है। कृपा करके उसका अतिक्रमण हटायेंगे क्या ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, किसी प्रकार का कोई अतिक्रमण नहीं है। जो भूमि का एक्सचेंज हुआ है, जितनी जमीन दी गई है, उतनी जमीन ली गई है। लेकिन वह हमारे स्वामित्व में नहीं है। सबसे बड़ी समस्या कि वह हमारे स्वामित्व में नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सौरभ सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 36माल ने भी, जो विधायक कालोनी की रास्ते की जमीन पर अतिक्रमण करके रखा है। उस अतिक्रमण को हटायेंगे क्या? यही मेरा निवेदन है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह मेरी जानकारी में नहीं है। लेकिन आपने बताया है तो मैं दिखवा लूंगा।

श्री नारायण प्रसाद चंदेल :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह विधायकों का मामला है। संसदीय कार्यमंत्री जी कुछ बोल दें। यह विधायकों का भी मामला है। माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी का वक्तव्य आ जाये।

समय :
12:47 बजे **<u>नियम 267-क के अधीन शून्यकाल की सूचनाएं</u>**

उपाध्यक्ष महोदय :- निम्नलिखित सदस्यों की शून्यकाल की सूचनाएं पढ़ी हुई मानी जायेगी तथा इसे उत्तर के लिए संबंधित विभाग को भेजा जायेगा :-

1. श्री शिशुपाल सौरी,
2. श्री इन्द्रशाल मण्डावी,
3. श्री पारसनाथ राजवाड़े,
4. श्री द्वारिकाधीश यादव,
5. श्री धरमलाल कौशिक

समय :
12:48 बजे **<u>प्रतिवेदन की प्रस्तुति</u>**

<u>गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति का द्वितीय प्रतिवेदन</u>

श्री धनेन्द्र साहू, सभापति :- उपाध्यक्ष महोदय, मैं गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति का द्वितीय प्रतिवेदन प्रस्तुत करता हूं।

प्रतिवेदन इस प्रकार है :-

समिति ने सदन के समक्ष शुक्रवार दिनांक 06 मार्च, 2020 को चर्चा के लिए आने वाले गैर सरकारी सदस्यों के कार्य पर विचार किया तथा निम्नलिखित अशासकीय संकल्पों पर चर्चा के लिए निम्नानुसार समय निर्धारित करने की सिफारिश की है :-

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अशासकीय संकल्प क्रं.	सदस्य का नाम	समय
(क्रमांक-03)	श्री अजय चन्द्राकर	45 मिनिट
(क्रमांक-11)	श्री सौरभ सिंह	30 मिनिट
(क्रमांक-14)	श्री मोहन मरकाम	01 घंटा 15 मिनट

उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति के द्वितीय प्रतिवेदन से सहमत है।

उपाध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ।

उपाध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि- सदन गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति के द्वितीय प्रतिवेदन से सहमत है।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

समय :
12:50 बजे

वित्तीय वर्ष 2020-2021 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा (क्रमश:)

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बजट में जो बात कही है, उस लाईन से शुरू होती है, जो वृहदान्यक उपनिषद है, उसकी लाईन से शुरू हुई है-सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया: । पूरी जनता, पूरा छत्तीसगढ़ सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत्। आखरी में जो ओम शांति, शांति बोलते हैं, इस मंत्र के बाद छत्तीसगढ़ की यही स्थिति है । सब बोल रहे हैं ओम शांति, शांति । इतने दुखी हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ऐसा संस्कृत बोलना आपने शर्मा जी से सीखा है क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप बजट भाषण पढ़िए । इसी उपनिषद में एक और बहुत अच्छी लाईन है, जिसका उपयोग सब करते हैं । असतो मा, सदगमय । असत्य से सत्य की ओर चलें । इस सरकार की जो टैग लाईन है, वह सत्य से असत्य की ओर चलें । इसी में आगे है-तमसो मा ज्योतिर्गमय मतलब अंधकार से प्रकाश की ओर चलें । इनकी टैग लाईन है कि प्रकाश से अंधकार की ओर चलें । इसका मतलब यह है कि मध्ययुगीन दौर में छत्तीसगढ़ को अंधकार की ओर ले जाएं। अब मृत्योर्मामृतम गमय तो नहीं कहता । माननीय चौबे जी, आप अमर रहें। मैं तीन बातें कहूंगा । एक बात मैंने इस उपनिषद के बारे में कही । दूसरी बात यह है कि पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की एक कविता है । माननीय संसदीय

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कार्यमंत्री जी, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने शनिचरी में एक भाषण दिया, स्वतंत्रता के समय में वे छत्तीसगढ़ की जेल में रहे । उसकी एक पंक्ति है, वह आपको समर्पित कर देता हूं :-

बहुत बोल क्या बोलूं, ये सब सपने हैं उधार के राजा ।
बहुत बोल क्या बोलूं, ये सब सपने हैं उधार के राजा ।
बहुत भले लगते हैं गहने अपने, हैं उधार के राजा।

जितनी चीजें आप कह रहे हैं, जो अच्छी लग रही हैं, वह सब उधार के हैं । आपकी बाहुबल के, आपके परिश्रम के, आपके उपाय के, आपकी बुद्धिमत्ता की एक भी चीजें नहीं हैं, जो चीजें हैं, वह उधार के हैं । तीसरी बात, आपने अपनी जो टैग लाईन बनाई है, छत्तीसगढ़ की जनता उसको क्या समझती है ? गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ । तो उसको छत्तीसगढ़ की जनता समझती है बोरबो छत्तीसगढ़ ला । दूसरा, नरवा, घुरवा, गरूवा, बारी । हमने नरवा, घुरवा, गरूवा, बारी में एक लाईन और जोड़ा है, कल शिवरतन जी ने कहा कि पी के मस्त रहो संगवारी । आपकी सरकार के लिए उधार, चर्वाक दर्शन इस तरह की चीजें लागू होती हैं । कल विधान सभा में बजट के बारे में पूर्व मुख्यमंत्री जी ने बहुत अच्छा भाषण दिया । मैं बजट की बहुत सी चीजें बोलूंगा, उसके बाद फिर दूसरी चीजों में बात करूंगा । आपने पिछले साल पुनरीक्षित अनुमान में, बजट अनुमान में 11051.47 करोड़ का अनुमानित फायदा बताया था । सारे आंकड़े हैं, मैं ज्यादा आंकड़े नहीं पढ़ूंगा । उसका परिणाम क्या है ? जब अंतिम परिणाम आया तो 9429 करोड़ का घाटा दिखाया । चौबे जी, आप यह जरूर बताने का कष्ट करेंगे कि 9429 करोड़ का घाटा जो है, जो आपने मुख्य बजट में कहा है कि 3 प्रतिशत जो राजस्व घाटा है, वह किसी भी तरह से 3 प्रतिशत का है, वह 9429 करोड़ होता है, उसकी पूर्ति आप कैसे करेंगे, किस तरह से पूर्ति होगी । आपको यह स्वीकार करना चाहिए कि हम और कर्ज लेंगे । दूसरी महत्वपूर्ण बात-फिर इस वर्ष अनुमान लगाया कि लगभग 2431 करोड़ का आधिक्य होगा । जब ये पुनरीक्षित अनुमान आएगा, तब पता चलेगा कि 2431 करोड़ का आधिक्य होगा या नहीं होगा क्योंकि यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि पिछली बार बजट भाषण में मुख्यमंत्री जी ने कहा कि जो राजकोषीय घाटा बढ़ रहा है, जो राजकोषीय घाटा जी.एस.डी.पी. के प्रतिशत के रूप में सकल राजकोषीय घाटा बढ़ रहा है, जो राजकोषीय घाटा उत्तरदायित्व में लिखा है कि हम उसको मितव्ययिता से 3 प्रतिशत जो आई.बी.एफ.एम. एक्ट बोलते हैं, बजट प्रबंधन उत्तरदायित्व अधिनियम के तहत मितव्ययिता के तहत उसको लाने की कोशिश करेंगे । आप बजट में बोल रहे थे, आप भाषण निकलवाकर देख लीजिए। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने इतनी मितव्ययता बरती कि 6.41 परशेंट हो गया, इतनी शानदार मितव्ययता ? माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने अभी सकल घाटा में बातचीत की है । दूसरी जो महत्वपूर्ण बात है, दो-तीन चीजें मैंने पढ़ी, क्योंकि कल डॉ. रमन सिंह जी के बोलने के बाद मेरे पास बोलने के लिए अवसर रहा नहीं । माननीय अध्यक्ष महोदय, इस साल 14.44 परशेंट पूंजीगत व्यय है । मैं हास्यास्पद लाईन पढ़ रहा हूँ । आप यदि बजट बनाते हैं,

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बिल्कुल वैसा ही काम कीजिए, जैसे गेड़ी चढ़ने के लिए पैसा देते हैं ना, उसी तरह मन से दे दीजिए, बजट मत बनाईये ।बजट अनुमान की तुलना में पुनरीक्षित अनुमान में पूंजीगत व्यय में कुछ कमी का कारण विभागों में अनुमानित पूंजीगत व्यय में कमी होना है । जो सरकार अपने अधिकारियों से पूंजीगत व्यय को नहीं करवा सकती, उस सरकार को पद में रहने का अधिकार नहीं है ।_वह सीधा जनता के साथ अन्याय है । जनता के विकास के साथ अन्याय है और जो जवाबदार अधिकारी है, उसके ऊपर कार्यवाही होनी चाहिये, जो भी इस बात को देखता है । मैं नहीं बोल रहा हूँ, जो लिखा है, उसको पढ़ रहा हूँ । इस बात के लिए पुनरीक्षित में क्या लिखा है, उसको पढ़ देता हूँ । पूंजीगत व्यय के पुनरीक्षित अनुमान वर्ष 2019-2020 तथा बजट अनुमान वर्ष 2020-2021 में 17 प्रतिशत वृद्धि हो रही है । इसका मुख्य कारण विभागों में अनुमानित पूंजीगत व्यय वृद्धि होने का अनुमान है । अब कौन सी लाईन सही है ? पिछली बार आपने कहा कि मितव्ययता बरतेंगे तो 6.41 परशेंट हो गया, पिछले बार घाटे को फायदे में बताया तो 9000 करोड़ तक राजस्व व्यय पहुंच गया, आपकी कौन सी बात विश्वसनीय है ? आपका कौन सा अनुमान विश्वसनीय है ? ऐसा बजट बनाने के लिए आपको अभिजीत बनर्जी साहब नहीं बोले होंगे । हावर्ड आप नहीं गये थे । ऐसा असत्य कथन बजट में कहीं नहीं होता है, यह छत्तीसगढ़ में नई परम्परा बन रही है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप जितने का भी बजट बनाये होंगे, राज्य की तुलना में कुल 95,649.71 करोड़ रुपये अनुमानित है । अब एक महत्वपूर्ण सवाल है, जो आपके घाटे में है या फायदे में है । एक आर्थिक सर्वेक्षण पढ़ रहा था । छत्तीसगढ़ का जो आर्थिक सर्वेक्षण है, वह तो और घातक चीज है कि वर्ष 2011-2012 के स्थिर भाव में, जहां तक मेरी बजट की समझ है, यह 14-15 होना चाहिये, पूरे देश में पिछले पांच साल के स्थिर भाव में तुलना होती है । इसमें लिखा गया है कि 11-12 के स्थिर भाव में और आपको बता दूं कृषि मंत्री जी, आपकी फसलों की वृद्धि वर्ष 2019-2020 में 2.05 है जो आपका किताब बोल रहा है । 11-12 के लिए आप जो बोलते हैं आर्थिक वृद्धि 5.32 है । भारत सरकार का 14-15 में 5 का अनुमान है । यदि आपके पास थोड़ी भी नैतिकता होगी तो पिछले पांच साल के स्थिर भाव में बताना कि छत्तीसगढ़ का प्रोग्रेस कितना है ? आप नया नियम कैसे बना रहे हैं ? यह कौन सा 11-12 में स्थिर भाव पर बताने की कोशिश कर रहे हैं कि छत्तीसगढ़ में इतना ग्रोथ है, यह तो पूरे लोग समझते हैं । मैं तो ज्यादा अर्थशास्त्र नहीं जानता, इंटरनेट में आपका बजट दिखेगा, सब चीजें दिखेंगी, आपके आर्थिक सर्वेक्षण में 11-12 का जो आधार वर्ष है, वह दिखेगा कि आप वह नहीं कहना चाह रहे हैं, सच्चाई छत्तीसगढ़ की जनता के सामने छिपाना चाह रहे हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छोटा सा, किसानों की सरकार, इन लोगों का गला सूख गया, पानी पी-पी कर किसानों की सरकार, 42 लाख टन खरीदा, इतना ज्यादा सड़ा दिया, जो भी हो, पर बजट देखें, 16 परशेंट, साढ़े 16 परशेंट कम, आपकी कितनी हैसियत है, मुझको पता लग गया है / कितने किसान के बच्चे हैं, मुझको पता लग गया, छत्तीसगढ़ के लोगों को पता लग गया कि किसानों के लिए

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

क्या करने जा रहे हैं ? पंचायत और ग्रामीण विकास, आप पिछले बार के बजट भाषण को पढ़िये, 75 प्रतिशत लोग छत्तीसगढ़ के गांवों में रहते हैं, इसलिए इस साल का बजट हमने 5 प्रतिशत कम किया । वाह, वाह, वाह, जितनी बधाई आपको दी जाये, उतनी कम है । उसके बाद स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण में थोड़ा बढ़ा हुआ दिखता है लेकिन इसमें जो पूंजीगत व्यय है पिछले साल जो 690 करोड़ था इस साल 572 करोड़ रूपये पूंजीगत व्यय है। यह आपके लिए एक छोटा सा आईना है कि जो मुख्य घटक हैं उसमें आपका दृष्टिकोण क्या है। आपकी अनुमति हो तो मैं बजट में कुछ बोल देता हूं। आर्थिक स्थिति में हमारी बात हुई। कृषि क्षेत्र की वृद्धि आप इसमें 3.31 लिखे हैं। आपके आर्थिक सर्वेक्षण में लगभग 2 है इसलिए आपके बजट में उल्लेखित चीजें जनता से छिपाने की कोशिश है। इसमें कोई सत्यता नहीं है। आपके द्वारा जारी किए गए आंकड़े में भिन्नता है। आपके अनुमानों में भिन्नता पहले साल के बजट के बाद ही साबित हो गई। आप लिखे हैं कि गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। आदिवासी इलाकों में राज्य में 65 लाख 22 हजार लाभान्वित जनसंख्या 2 करोड़ 83 लाख। तो मेरे ख्याल से उसमें आपका भी कार्ड होगा। 2 करोड़ 83 लाख में तो आप हैं। ये तो कार्ड का है पर जनगणना में परिवार कितने हैं और कार्ड आपने कितने बनाये हैं इसे आप थोड़ा वेरीफाई कीजिए। इसके दूसरे भाग में है कि अनुसूचित जाति बाहुल्य इलाकों में दो किलो चना गुड़ के लिए 171 करोड़ का प्रावधान, बस्तर में प्रति परिवार दो किलो गुड़ के लिए 50 करोड़ रूपये का प्रावधान। यह तो बस्तर में एक घटक हो गया। अब एक दूसरा आगे आयेगा कि आपने मुख्यमंत्री कुपोषण अभियान शुरू किया है। ये घटक दूसरा है। मुख्यमंत्री कुपोषण अभियान किसके लिए चलेगा इसके बारे में आगे बातचीत करते हैं पर ये जब क्लब होता है, जहां पर स्पष्टता नहीं होती तो बिल्कुल वही होता है कि गेड़ी के लिए खेल मानकर पैसे दिये जाते हैं। यह बिल्कुल वैसे ही होता है। इसके बाद आता है मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान। इसमें 5 वर्ष से कम आयु के 4 लाख हितग्राही लाभान्वित हुए हैं यह बताये हैं। आपने पैसा नहीं बताया, अवधि नहीं बताई कि कब-कब करेंगे, भाषणों में नहीं लिखा। जो मैंने देखा है कि छत्तीसगढ़ के 5 वर्ष की आयु तक के 35.6 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं। दूसरा- महिलाओं में 15 से 49 वर्ष तक की जो महिलाएं हैं उसमें 40.5 प्रतिशत लोग एनीमिया से पीड़ित हैं। इसकी जनसंख्या यदि जोड़ लें तो यह लगभग डेढ़ करोड़ रूपये से ऊपर जाती है और डेढ़ करोड़ से ऊपर जाती है तो आप कहते हैं कि चार लाख लोग लाभान्वित हुए तो गुणा कर लो कि कितने साल में आप कुपोषण के लिए लड़ाई लड़ने जा रहे हैं और कौन सी बात करने जा रहे हैं। कुपोषण पहले भी चलते रहा है। अब यदि एक आदिवासियों के लिए आप गुड, चना देंगे, उसी क्षेत्र में आप एनीमिया के लिए चलायेंगे और चार लाख लाभान्वित हुए हैं, ये आंकड़ा देख लीजिए, कहीं पर गलत होगा तो मैं उसके लिए क्षमा मांग लूंगा लेकिन ये आपके द्वारा जारी किए गए आंकड़े हैं। अब उसके बाद विशेष पोषण आहार की बात होती है। अब ये विशेष पोषण आहार महतारी जतन योजना में है। एक कुपोषण अभियान एनीमिया के लिए चलेगा, महतारी जतन में गर्भवती महिलाओं के लिए चलेगा यह क्या है? तो एक के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ऊपर एक, एक के ऊपर एक। नॉन तो प्रदायकर्ता संस्था है, नॉन में तो ए.टी.एम. डालो, अभी पैसा उगल रहा है। जिसमें जहां पर भी घुसा दो उसमें पैसा निकल जायेगा। मैं ये कह सकता हूं कि ये ए.टी.एम. सरकार है।

श्री रामकुमार यादव :- नाना प्रकार के योजना चलत हे ना।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब आते हैं डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य योजना पर। उसमें 20 लाख रूपये देंगे और उसके लिए 50 करोड़ रूपये का प्रावधान है। आज आप एक अस्पताल में चल दीजिए। छत्तीसगढ़ में सुपरस्पेशियालिटी के जितने अस्पताल हैं सिर्फ रायपुर शहर का, दुर्ग-भिलाई छोड़ दीजिए उसमें पिछले साल का निकाल लीजिए कि गुर्दा, हार्ट के जितने ऑपरेशन हुए हैं, और 20 लाख रूपये आप देंगे, और कितने लोग हैं और कौन सी आर्थिक स्थिति के लोग हैं और आपका 50 करोड़ रूपये उसके लिए पर्याप्त है या कम है? दूसरी महत्वपूर्ण बात, इसी सदन में आपने कहा कि पूरे सालभर में आयुष्मान भारत के एक भी रूपये का भुगतान आपने किसी अस्पताल को नहीं किया है। आपने पाप किया है, इसलिए पाप किया है कि जो पंजीकृत अस्पताल हैं वह पैसा नहीं पाने के कारण गरीबों का इलाज नहीं कर रहे हैं। आप गरीबों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इसलिए हमने कहा कि बोरबो छत्तीसगढ़ ला।

श्री बृहस्पत सिंह :- ऐसा बोलकर क्या आप उन लोगों का दलाली कमीशन और बढ़वाना चाह रहे हैं ?

श्री अजय चंद्राकर :- हम तो दलाली कर रहे हैं, बोल दिये हैं। गरीबों की दलाली कर रहे हैं। अब यह भीड़ वाले की दलाली करेंगे थोड़ी बबाद। इससे पहले किसानों की दलाली कर रहे थे। बोलो, कितने का लाभ हुआ। दलाल की परिभाषा मुख्यमंत्री जी ने जो बोली थी। उसको आप बता दो। आप भी दलाल हो।

श्री बृहस्पत सिंह :- गरीबों की दलाली नहीं, प्राईवेट अस्पतालों की दलाली।

श्री रामकुमार यादव :- ओ पहली आंखी के आपरेशन करत हे कई झन अंधा होगे हे, अभी ओ मन हॉस्पिटल जाय बर डरावत हे। ऐस ईलाज करे हो सब मंधवा होग हे, कतका न कतका जीबो।

श्री अजय चंद्राकर :- देखिए साहब, मुख्यमंत्री जी ने दलाली की परिभाषा इस सदन में बता दी है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप कितने वरिष्ठ और ज्ञाता हैं, अच्छा भाषण दे रहे थे। लेकिन ये जो शब्द आपने कहा, आप भी, यह उचित है।

श्री अजय चंद्राकर :- चलिये ठीक है। मैंने आपकी बात मान लिया। मान लिया न। आप वरिष्ठ हैं, मैं आपकी सलाह जरूर मानता हूं आप तो जानते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप कितना अच्छा बोल रहे थे, कहां से आपका टैक चेंज हो गया ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लीनिक कोई बजट नहीं है। बजट पत्रिका में उल्लेख भर है। मुख्यमंत्री शहरी स्लम, कोई बजट नहीं है, बजट पत्रिका में उल्लेख है। ऐसा मैंने नहीं देखा कि कोई है जिसका उल्लेख किया जाये और उसके लिये बजट आयोजन नहीं किया जाये। यह भाषण यदि करवाना था तो राज्यपाल माननीय गवर्नर महोदय के भाषण में इसको लिखवाना था, इसमें लिखवाने की क्या जरूरत थी ? या अपनी डिमांड मांग में बोलते कि साहब हम विभागीय बजट से इस योजना को चलायेंगे। यदि किसी योजना को मुख्यमंत्री जी के नाम से चलाते हो और एक रूपया बजट नहीं करते हो, यही है, बोरबो छत्तीसगढ़ ला। अब मैं इसमें बात करता हूं, मैंने कुछ दिन पहले प्रश्न लगाया था, एम.सी.आई. के कितने कॉलेजों का जीरो ईयर हुआ। चंदूलाल चंद्राकर का दो साल हुआ, अंबिकापुर का दो साल हुआ, एक का एक साल हुआ। इसमें लिखा है कि एम.सी.आई. के अनुरूप चिकित्सा महाविद्यालय को मापदंड के अनुरूप बनाने के लिये 75 करोड़ रूपया रखा है। दो दशक लगेंगे 75 करोड़ रूपया के लिये। मैं आपको, विपक्ष आपको पूरा समर्थन करेगा राजस्व व्यय को पूंजीगत व्यय में घटाईये, आप स्कूल, अस्पताल को पैसा दीजिए, हम समर्थन करते हैं, सर्वसम्मति से पारित करते हैं। लेकिन दो दशक तक, अस्पताल तो एक अस्पताल के एक विभाग के लायक है, दो विभाग के लायक जितने में 75 करोड़ रूपये की मशीन मिलती है। आप इसमें पूंजीगत व्यय बढ़ाईये। छूत की उपहास की संस्कृति से दूर जाईये, इससे छत्तीसगढ़ का भला नहीं हो रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय अजय जी, 15 मिनट हो गया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- अभी तो शुरू हो हे गा।

श्री अजय चंद्राकर :- आप विवेकानंद संस्थान बनाने जा रहे हैं, उसके लिये क्या बजट है ? मैं कुछ दिन संस्कृति मंत्री था, डे भवन को अधिग्रहित करने के लिये पांच करोड़ रूपये बजट में रखा था। उस परिवार के लोगों से दो साल तक सहमति नहीं बनी, इसलिए वह लैप्स हुआ। ये उधारी छाप काम मत करो। टेप पाने की संस्कृति से बचिये और यही संस्कृति जो पैदा कर रहे हैं न वही है बोरबो छत्तीसगढ़ ला। माननीय सभापति महोदय, युवाओं को देखने के लिये लोग इसको तो मैं किसी दिन डिमांड मांग में बात कर लूंगा। आईआईटी, आईआईएम्स, इसके लिये आपने कुछ पैसा नहीं रखा है। पात्रता पैसा दी जायेगी, बोले हैं। साहब, ऐसी चीजों को जिसमें आपने पैसा आयोजन नहीं किया है, आपको बजट भाषण में नहीं छापना चाहिए। छत्तीसगढ़ में आटो मोबाईल सेक्टर में ग्रोथ दर्ज हो रही है। एक साल से यह नारा चल रहा है, आप बता रहे हैं। पिछली बार से पूरे देश भर में माननीय मुख्यमंत्री जी घूम घूमकर बताते हैं कि छत्तीसगढ़ में आटोमोबाईल में ग्रोथ चल रहा है। सरकार की यह पंच लाईन बन गयी है, जैसे, आबकारी मंत्री का एक पंच लाईन है। हम नोटबंदी की तरह शराबबंदी नहीं करेंगे। जहां पूछो शराबबंदी कैसे होगी ? छत्तीसगढ़ में घूमेंगे तो हम नोटबंदी की तरह शराबबंदी नहीं करेंगे। वैसी आटोमोबाईल सेक्टर में है। यह बताना चाहिए कि छत्तीसगढ़ में एक साल में 17 हजार करोड़ लेकर

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बाजार में हम दिये हैं, उपहार बांटे हैं। इसलिए यह थोड़ा बहुत दिखता है। छत्तीसगढ़ का जो आधिक्य राजस्व व्यय होता था, जब तक डॉ. रमनसिंह थे, आधा जो बजट आधिक्य होता था, वह पूंजीगत व्यय में अगले साल के लिये रिफारवर्ड होता था। 3 प्रतिशत का राजस्व घाटा कभी नहीं होता था। आप इसको नियंत्रित कीजिये। उसके बाद बोलिये कि आटोमोबाईल और उस सेक्टर में बढ़ोत्तरी है। दुर्भाग्य से वह बढ़ोत्तरी नकली है, अभाषी बढोत्तरी है, अभाषी वर्चुवल है। राजीव किसान न्याय योजना, साहब देखते हैं, आपकी घोषणा पत्र को हमने देखा है। रामचंद सिंहदेव जी को जैसे आप बोलते थे ना आपके कारण इधर आ गये हैं, कुछ दिन बाद आप राजा साहब को पार्टी से निकालोगे।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कृषक जीवन ज्योति योजना के संदर्भ में कहना चाहूंगा कि इसमें तो आजकल लक्ष्य हो गया है। जब डॉ. रमन सिंह जी थे तो वह 50 हजार से 4 लाख रूपये हो गया। भांटो, आप भी किसान नेता हैं, ऐसा बोलते हैं। आप जाईये और लेकर आईये। अब यह स्थिति नहीं है कि जाईये और लेकर आईये। हर जगर कोटा पहुँच गया है फिर वही दिन आ गये कि जिसके पास पैसा है वही कनेक्शन लेगा, आम आदमी उससे दूर हो जाएगा।

श्री धनेन्द्र साहू :- आपने तो विद्युतीकरण के लिए पैसा ही बंद कर दिया था। आप इतनी जल्दी भूल गये क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- 50 हजार से साढ़े 4 लाख रूपये हो गया था। गोठानों के संचालन हेतु गौठान समितियों को प्रतिमाह 10 हजार का अनुदान तथा पशुओं के चारे के लिए धान के पैरे की व्यवस्था की जायेगी। पैरा के रख-रखाव को सरल बनाने हेतु चौकोर बेलर क्रय करने के लिए नवीन मद में 6 करोड़ का प्रावधान है। गोठानों के संचालन हेतु समितियां और एक बेलर के लिए 6 करोड़ का प्रावधान है। ये समझ में नहीं आ रहा है कि गौठान समिति को प्रतिमाह देने के लिए 10 हजार रूपये है या चौकोर बेलर क्रय करने के लिए 6 करोड़ का प्रावधान है । यदि गौठान समिति को प्रतिमाह 10-10 हजार रूपये देंगे तो 1900 गौठान बन गये हैं ऐसा बोलते हैं। अब उसका क्या होगा? अब आप बताना। माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करना की ये चौकोर बेलर क्रय करने के लिए 6 करोड़ का प्रावधान है या दो-दो रूपया देंगे जैसे पिछली बार रूलर डेवलपमेंट में आपने घोषणा की थी कि 98 लाख रूपये मॉडल प्लान बनाने के लिए दिया है तो मैंने बताया था कि मॉडल प्लान बनाने के लिए एक-एक पंचायत को कितना रूपया पड़ेगा। वैसे ही एक-एक गोठान समिति को 10-10, 15 रूपया पड़ेगा। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में खाद्य प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना की जायेगी। आपने पिछली बार बजट में 5 प्रोसेसिंग यूनिट के लिए 50 करोड़ रूपये रखे थे। माननीय भांटो साहब, आप पिछले साल का बजट भाषण पढ़ लीजिये। माननीय कृषि मंत्री जी, चलिये, एक दिन हम लोगों को बस में ले जाईये और उन पांच में से एकाध ही दिखा देना कि कहीं पर होगा तो। बजट में छापने से क्या होता है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अजय जी, भांटो-भांटो कहात हस। भांटो मार्गदर्शक मण्डल के मेम्बर बन गे । अब ओ हा मौन रहना सीख गे हे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा, अब नये विषय की ओर बढ़ रहे हैं। मैं मान लिया। आपके नये विषय का स्वागत कर देता हूँ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भईया, 15 साल में का करेस तेला बताना। हमन तो कुछ करत हन।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं। ओकर बर अलग से सत्र कर लें। विशेष सत्र।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हव। ओति वाले भांटो तो सोवत हे।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन माननीय कृषि मंत्री जी आपको एक सलाह दे रहा हूँ, आपका पेज चल रहा है । डेयरी डिप्लोमा महाविद्यालय फिशरीज, पॉलिटेक्निक कॉलेज, माननीय बृजमोहन जी बैठे हैं रमन सिंह जी सुन रहे हैं मैं हमेशा बोलता था कि छत्तीसगढ़ के बच्चे कॉम्पिटिशन में प्रवेश नहीं ले पाएंगे। इसको समुदाय आधारित नियम बनाईये कि उसमें उस वर्ग के बच्चे एडमिशन पा सकें। नहीं तो आपके जो ये कॉलेज जो है शोभा की वस्तु रहेंगे, दूसरों के लिए रहेंगे। यहां उस आधार पर, उस समुदाय को मजबूती देनी है तो एक प्रतिशत निर्धारित कीजिये कि इतने प्रतिशत में ढीमर, निषाद, बाड़ी करने, मछली धरने वाले लोग आएंगे, ये जब तक आप नहीं करेंगे। छोटे-छोटे पटेल, मरार, निषाद, ढीमर लोगों के लिए नहीं करेंगे तब तक कुछ नहीं हो सकता। इसका कोई फायदा नहीं मिलेगा। आपने शायद कुछ सीट किया था।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सृजित सिंचाई क्षमता के विरूद्ध वास्तविक सिंचित क्षेत्र 13 लाख हेक्टेयर को वर्ष 2028 तक 32 लाख हेक्टेयर तक किये जाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कल बोधघाट में बात हो गई। आपका पैरी बांध में राजनीतिक दृष्टिकोण क्या है ? सबसे पहले इसमें बात हो जाए। वहां के कांग्रेस के नेताओं को पूछिए। माननीय अमितेष शुक्ल जी से पूछिये वह पैरी बांध के समर्थन में है, विरोध में है और निर्णय के लिए बोलेगे तो मैं बोलूंगा कि मैं हमेशा समर्थन में हूँ। ये भांटापारा, तिल्दा, नेवरा, बलौदाबाजार और आधे छत्तीसगढ़ को पेयजल महानदी एम.आर.पी. से मिल जायेगा और यदि आप बनाते तो सिंचाई दुगुनी हो जाएगी। आप इनसे पूछ लीजिए कि आप समर्थन में है या नहीं है। भांटो आप और बोल दीजिएगा।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य समय का ध्यान दें।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, देख लो ठीक से सुनिस नहीं।

श्री अजय चन्द्राकर:- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बाह्य यहायता प्राप्त परियोजना के अंतर्गत पैरी बांध एवं पैरी-महानदी इंटर लिकिंग नहर परियोजना लिए के 20 करोड़ का प्रावधान है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बड़े भौगोलिक क्षेत्रफल एवं अधिक जनसंख्या वाले ग्राम पंचायतों की मांग पर विचार करते हुए राज्य में 704 नयी ग्राम पंचायतों का गठन किया गया है। इसका बजट से

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

क्या मतलब है ? मतलब तब होता जब 704 नयी ग्राम पंचायतों के लिए हम एक मुश्त भवन बनाने के लिए पैसे दे रहे हैं। गिनाने के लिए कुछ नहीं है। स्थानीय निकायों एवं पंचायती राज संस्थाओं को वित्तीय आत्मनिर्भरता प्रदान करने की दृष्टि से राज्य के शुद्ध कर राजस्व में से 8 प्रतिशत के स्थान पर 9 प्रतिशत राशि देने संबंधी तृतीय राज्य वित्त आयोग की अनुशंसा मान्य की गयी है। आप 9 प्रतिशत कर रहे हैं चलिये आपने वित्त आयोग की अनुशंसा मान ली । मैं हर बार इसमें प्रश्न करता था। अब मनरेगा में आते हैं इसमें 1 हजार 900 गोठानों का निर्माण पूर्ण हो चुका है। आपके सारे अधिकारी बैठे हैं। मनरेगा के कामों में कहीं पर भी गोठान निर्माण नहीं है। केटल शेट है। दूसरी बात 14 वें वित्त आयोग में एक साल के पहले तक जो 14 वें वित्त आयोग के निर्देश थे उसके जी.पी.डी.पी. के अंदर जो पैसे है, उसमें आप गौठान बना सकते थे। मैं तो नेता प्रतिपक्ष से आग्रह करूंगा कि लोक धन, सरकारी पैसे का इससे बड़ा दुरूपयोग नहीं हुआ है। आपने कौन से मनरेगा के पैसे से 1 हजार 900 गोठानों बनाये। आप गलत काम किये हैं यदि उसको मनरेगा से अभिसरण किये हैं।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आदरणीय कहीं मनरेगा में लिखा था कि विकास यात्रा में मनरेगा का पैसा खर्च किया जायेगा। आप कहां जा रहे हो?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बिल्कुल सही जा रहा हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- गोठान निर्माण होगा, खुदाई होगी।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप बजट पर लाईये। यह मैं मनरेगा के कागजों की सूची रख देता हूं। यदि आप अनुमति दे दे तों इसको पटल पर रख देता हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- क्या पूर्व मुख्यमंत्री की विकास यात्रा शामिल थी ?

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल शामिल था।

श्री रविन्द्र चौबे :- क्या बात करते हैं ?

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय समाप्त करियेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बिना बजट आयोजन के राजकीय कोष का दुरूपयोग कर रहे हैं। 14वें वित्त आयोग के निर्देश में कहीं पर भी गोठान नहीं है, उसके पैसे में आप निर्देश नहीं दे सकते। ये दोनों मामले में मैं नेता जी को कहूंगा कि हम चलें या आपको गोठान बनाना है तो राज्य के बजट से आयोजना कीजिए। ये पैसे का दुरूपयोग नहीं चलेगा।

श्री रामकुमार यादव :- पहली ए पैसा से आप मन चना-मुर्रा खात रहे हौ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- विकास यात्रा में दे सकत हस, बाकी मा हमन नई दे सकन।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जांच करवा लो न। महाप्रसाद जांच करवा ले, बैठा जा बोलन दे।

श्री शिवरतन शर्मा :- ओखरो बर एक ठे एस.आई.टी. गठन कर दे न।

श्री अजय चन्द्राकर :- एस.आई.टी. बना लें। दूसरा ग्रामीण विकास मंत्री नहीं हैं, मंत्री बनते ही

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

एक आर्डर हुआ कि सब पैसे वापस बुलाये जायेंगे। उन्होंने आज ही मेरे प्रश्न के उत्तर में स्वीकार किया है कि अभी उस पैसे का निर्णय नहीं हुआ है, लेकिन सबसे ज्यादा पैसे सरगुजा में थे, उसको भर खर्च कर दिया गया, सिर्फ 56 लाख रुपये वापिस बुलाये गये। बाकी सब जगह के पैसे को कहां किया गया, क्या किया गया, कब खर्च होगा, अभी भी बोल रहे हैं कि वह विचाराधीन है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया:- गांव के मूलभूत सुविधा के पैसा आ रहिस हे ओहू ला स्काई योजना में लगाकर मोबाईल बांटे रहे।

श्री अजय चन्द्राकर :- सबके लिए एस.आई.टी. बना। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं बस खत्म कर रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- जल्दी।

श्री अजय चन्द्राकर :- महात संत गुरू घासीदास की जन्मस्थली ग्राम गिरौदपुरी में गुरूकुल विद्यालय की स्थापना की जायेगी। पिछले साल की सुपेबेड़ा में नलजल योजना अभी तक नहीं बनी है। राज्यपाल के अभिभाषण में था। वह 12-14 करोड़ की है, वह अभी तक जमीन में नहीं आई। साल भर हो गया है।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- वह टेन्डर की स्थिति में आ चुका है। आप जानकारी रखिये न, खाली हवाई बातें न करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, यह बताईये कि क्या कार्य शुरू हो गया है ? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नगरीय प्रशासन में एक लाईन में बता देता हूं। नगरीय निकायों में पौनी-पसारी योजना प्रारंभ की गई है। डॉ. रमन सिंह जी जब मुख्यमंत्री थे तो पंचायतों में सेवा केन्द्र बनाया, उस सेवा केन्द्र में स्पष्ट आदेश था।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- रमन सिंह जी थे नहीं, अभी बैठे हैं। ऐसा मत बोलिये न।

श्री अजय चन्द्राकर :- महाप्रसाद, तै फेर गड़बड़ शुरू करत हस। माननीय रविन्द्र चौबे जी पौनी-पसारी में पौनी-पसारी के गावों के लिए फंड की उपलब्धता के हिसाब से सेवा केन्द्र बनाया था और उनको आवंटित करने के निर्देश थे। शहरी क्षेत्र में पौनी-पसारी में दुकान किसको आवंटित होगी, यह परिभाषित नहीं करोगे तो वह माफिया को जायेगा। पौनी-पसारी को कौन परिभाषित करेगा, आप करोगे या उसको ग्रामीण विकास मंत्री परिभाषित करेगा या संस्कृति मंत्री परिभाषित करेगा, यह मैं नहीं जानता, लेकिन यह दुकान माफियाओं के कब्जे में जायेगी, यदि परिभाषित नहीं होगा कि किसको-किसको आवंटित होगी।

उपाध्यक्ष महोदय :- आदरणीय हो गया, अब समाप्त करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 5 मिनट में समाप्त कर देता हूं। अमृत मिशन और स्मार्ट शहर की 130 परियोजनायें समय से पीछे चल रही हैं। कल का मेरा प्रश्नोत्तर देख लीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

साल भर में आपका यह परफारमेन्स है, 130 परियोजनायें पीछे चल रही हैं। एक शब्द है, माननीय उमेश पटेल जी आप अन्यथा मत लीजिए, मैं इस लाईन को आपके पक्ष में बोलूंगा, भाभी जी नहीं हैं। नवा रायपुर में झीरम घाटी के शहीदों की स्मृति में स्मारक का निर्माण किया जायेगा। माननीय मुख्यमंत्री जी सामान्य प्रशासन मंत्री हैं, उन्होंने इसी सत्र में मेरे प्रश्न के उत्तर में कहा है कि शहीद किसको माना जाये, सामान्य प्रशासन विभाग के द्वारा इसके कोई निर्देश नहीं हैं। जब इसके निर्देश नहीं हैं तो आप अपमान क्यों कर रहे हैं। एक जनप्रतिनिधि यदि शहीद हुआ है तो उसको निर्देश दीजिए, उसको विधिवत शहीद माना जाये। आपके पास ये अधिकार है। आप जबरदस्ती बोल कर किसी का मजाक क्यों बना रहे हैं ? आप शासन में बैठे हैं। यदि करना है तो ये करिये, नहीं तो उस परिवार के आंसू आप नहीं पोछ रहे हैं, उसके गम में नहीं खड़े हैं, आप सिर्फ और सिर्फ मजाक कर रहे हैं। माननीय उपाध्यक्ष् महोदय, मैं एक लाईन बोलकर खत्म कर रहा हूं। माननीय चौबे जी मैं अभी बता किया, अरवा मिल फिर हम उसकी दलाली कर देते हैं, जैस हमारे लिए शब्द उपयोग होता है, मैं हमारे लिए कह रहा हूं, अरवा मिल की जो मिलिंग क्षमता है वह यहां 1 लाख 68,000 कुछ है या 16 लाख टन है फिर उसना की भी क्षमता है । 02 तारीख से 20 तारीख तक उसके डिओ नहीं काटे गये, पूरा धान सड़ गया । कोई कारण नहीं बताये गये, कुछ नहीं बताया गया । आसंदी ने अस्वीकार कर दिया लेकिन मैं आरोप लगा रहा हूं कि उसमें दर तय नहीं हुई इसलिए धान को सड़ने के लिये भगवान भरोसे छोड़ दिया गया इसीलिये मैंने कहा कि नान आपके लिये एटीएम बन गया है कि जहां डालो, वहां पर वह पैसा उगल रहा है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक शब्द । चूंकि मैं ज्यादा अंग्रेजी नहीं जानता ।

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- अंग्रेजी नइ जानस ता नान माने का होथे तेला बताना ?

श्री नारायण चंदेल :- नहीं-नहीं, इनका कहना है कि नान माने लान । (हंसी)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पहिली उही काम करत रहे ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कॉपरेटिव फेडरल एक शब्द का इस्तेमाल हुआ । प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखी गयी, किस बात पर चिट्ठी लिखी गयी ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नान मतलब 36,000 करोड़ ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कॉपरेटिव संघीय व्यवस्था के लिये चिट्ठी लिखी गयी । संविधान में यह शब्द नहीं है । भाषा ऐसी थी, आपको यदि बढ़ना है । उदारीकरण के बाद यह शब्द आया कि टकराव के लिये इस कॉपरेटिव फेडरेशन के लिये आप मत आईए । प्रतिस्पर्धी बनिए, प्रतिस्पर्धी संघवाद की ओर आईए जो उदारीकरण के बाद आया कि सरकारें विनिवेश को आमंत्रित करने के लिये केंद्र सरकार की ओर देखती है । किसान अब इसके लिये प्रतिस्पर्धा करेंगे तो आप किसके लिये प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं ? सी.आई.बी. बैन । फिर किसके लिये एक बयान आता है, यह मंत्री लोग जाते हैं ।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आयकर का छापा नहीं पड़ना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए । सरकार में स्थिरता आ रही है, दूसरे दिन प्रसन्नता के साथ, खिले चेहरे के साथ बयान आता है कि भाजपा वाले के यहां 1 करोड़ रूपये, कांग्रेस वाले के यहां 10 पैसा करके राजनीति का इतना नीचा स्तर मैंने नहीं देखा । संघवाद ने अनुसूचि-7 में जो हमारे विषय हैं वह भी मानेंगे, हम भी मानेंगे । यह कौन सा तरीका है कि साहब इस एजेंसी को नहीं आने दूंगा । क्या संघवाद यही है कि दिल्ली आपको 35,000 करोड़ रूपया पैसा दे ?

उपाध्यक्ष महोदय :- श्री धनेंद्र साहू । 5 मिनट हो गये हैं ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- श्री अजय जी, आप थोड़ा इसको सुधार लीजिये। संघीय व्यवस्था, संघीय ढांचा ऐसा कुछ बोलिए न । संघवाद-संघवाद तो नागपुर की तरफ लोगों का ईशारा जाता है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं केवल 2 विषय में बात करके अपनी बात समाप्त करता हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आधे घंटे हो गये हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज तक देश के किसी भी मुख्यमंत्री या मंत्रिमण्डल ने केंद्रीय एजेंसी की बात पर राज्यपाल या किसी संवैधानिक संस्था से मिलने नहीं गये । ये घोषित करें कि ये यहां आयकर को भी प्रतिबंधित करेंगे । आयकर से जो राज्य का हिस्सा है उसको भी नहीं लेंगे, यह दम से बोलना चाहिए । अगर 11 प्रतिशत की दर से इनका राजस्व बढ़ रहा है तो फिर बाकी की चिंता मत करें । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं दो छोटे-छोटे विषय बोलता हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय :- आधे घंटे हो गये हैं । श्री धनेंद्र साहू जी ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 14 महीने से प्रधानमंत्री आवास का काम एक भी आवास आपने पूरा नहीं किया है, एक मकान पूरा नहीं किया है । एक किस्त के बाद, दूसरा, तीसरा किस्त सवा साल में आपने नहीं दिया है। दूसरी बात इस सरकार ने परिवहन के लिये पैसा दिया है । छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा सड़क दुर्घटनाएं होती हैं, किसी सत्र के प्रश्न के उत्तर में है कि 6000 मौतें हुईं, कोई विभाग जवाबदारी लेने के लिये तैयार नहीं है । परिवहन पी.डब्ल्यू.डी. को बोलेगा, पी.डब्ल्यू.डी. नगरीय निकाय को बोलेगा, नगरीय निकाय और किसी को बोल देगा लेकिन तथाकथित कल्याणकारी राज्य अपने आपको कहने वाली यह सरकार ने समय अकाल मृत्यु के लिये लोगों को छोड़ दिया है इसीलिये मैंने इन तथ्यों के कारण यह कहा कि यह गढ़वो नवा छत्तीसगढ़ नहीं है बल्कि बोरबो नवा छत्तीसगढ़ है । इनको जनादेश शराबबंदी के लिये एक टीम बनाने के लिये नहीं हुआ है जो इसमें उल्लेख है, इनको शराबबंदी के लिये जनादेश मिला था । अवैध शराब आज पकड़ायी है । सरकारी संरक्षण में किसी राज्य में कोई काम जनता का इसलिये नहीं हो रहा है क्योंकि यदि कलेक्टर से दारू बेचवाया जायेगा तो वह राजनेता कलेक्टर से क्या आंख मिलाकर बात कर सकेंगे ? प्रशासन रसातल में चला

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

गया । यही बोरबो छत्तीसगढ़ है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सदन को सूचना

उपाध्यक्ष महोदय :- आज भोजनावकाश नहीं होगा, मैं समझता हूं कि सभा सहमत है ।

(सभा द्वारा सहमति प्रदान की गई)

उपाध्यक्ष महोदय :- भोजन की व्यवस्था माननीय मुख्यमंत्री जी की ओर से माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है । कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करने का कष्ट करेंगे ।

वित्तीय वर्ष 2020-2021 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा (क्रमश:)

श्री शिवरतन शर्मा :- धनेन्द्र भइया, बोलने के लिए खड़े हो रहे हो ना, तो भीष्म पितामह की तरह भूपेश जी का पर्दा न रहे । सत्य बोलना ।

श्री धनेन्द्र साहू (अभनपुर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने अपने बजट भाषण के प्रारंभ में जो पंक्तियां कही थी, मैं उन्हीं पंक्तियों के साथ अपनी बात प्रारंभ करना चाहूंगा । उन्होंने इस राज्य के समस्तजनों के कल्याण की भावनाएं इन पंक्तियों में उद्धृत की हैं - सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दु:ख भाग्भवेत । उपाध्यक्ष महोदय, यह हमारी सरकार है । कांग्रेस की सरकार है, हमारे मुख्यमंत्री जी ने इस प्रदेश की जनता के प्रति जो उनकी पवित्र भावनाओं को इन दो पंक्तियों के माध्यम से कही है । हम लोगों ने 15 साल देखा, यह सरकार 15 सालों तक 1 प्रतिशत लोगों के लिए काम कर रही थी । 99 प्रतिशत जनता शोषण का शिकार होती रही । लेकिन इन्हें समझ में नहीं आया, समझ में कब आया जब वे उधर से इधर बैठ गए, कि हां हम लोगों ने गलती की थी । कल मैं माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी का भाषण सुन रहा था, उन्होंने कहा कि यह सरकार वित्तीय रूप से वेंटीलेटर पर आ गई है, इस सरकार की आर्थिक स्थिति वेंटीलेटर पर है । उपाध्यक्ष महोदय, उनकी सरकार के कार्यकाल में क्या था । वेंटीलेटर पर नहीं थे, बल्कि हजारों किसान फांसी पर झूले, यह उनकी वित्तीय स्थिति का परिणाम था कि हजारों किसान आत्महत्या कर रहे थे, यह इनकी स्थिति थी । इनको किसानों की सुध नहीं थी, प्रदेश की जनता की सुध नहीं थी । चंद लोगों की हैसियत बनाने के लिए इनकी सरकार लगी हुई थी और उन्हीं की हैसियत में वृद्धि हुई, उन्हीं चंद लोगों के लिए सरकार का सारा राजस्व जाता रहा । उपाध्यक्ष महोदय, मीडिया हमारे प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

होता है । बजट प्रस्तुतिकरण के बाद कल सारी मीडिया ने इस बजट की सराहना की । मैं बहुत संक्षिप्त में कहना चाहूंगा कि नवभारत ने हेडलाईन बनाई कि भूपेश का संजीवनी बजट, नया टैक्स नहीं, किसानों के लिए न्याय योजना, गांव, ग्रामीण और किसानों पर फोकस, बजट में युवा, कर्मचारी, शिक्षा कर्मियों सभी को साधने की कोशिश की गई । स्वास्थ्य शिक्षा सभी में ध्यान रखा गया है । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, भास्कर ने लिखा है कि यह मितानी बजट है, केन्द्र सरकार के तकरार के बाद भी किसानों को 2500 रूपया धान की कीमत दी जा रही है । नई दुनिया ने लिखा है कि नवा छत्तीसगढ़ गढे बर, स्वास्थ्य और सुपोषित युवा पीढ़ी के निर्माण के साथ ग्रामीण अर्थव्यस्था को मजबूत करने और खुशियों के रंग हर वर्ग में भरने वाले बघेल के संजीवनी बजट में सभी को कल्याणकारी कहा । राज्य सरकार के बजट को कुपोषण पर वार करने वाला बताया। पत्रिका ने भी किसानों को न्याय, शहरों में कस्टमर सर्विस, नये कर का बोझ नहीं, सबके विकास से लिए आधुनिकीकरण पर जोर । हरिभूमि ने भी कहा गुरूओं का सम्मान, अन्नदाताओं को प्रणाम, भूपेश का संजीवनी बजट, युवाओं में जगाई आस, गांव में फूंकी सांस । इसी तरह से प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हनुमंत यादव जी ने कहा कि खेती को मिलेगी रफ्तार, गांव का होगा विकास । अर्थशास्त्र के प्रोफेसर डॉ. रविन्द्र ब्रम्हे ने भी कहा कि यह समावेशी विकास का मॉडल है । उपाध्यक्ष महोदय, यह हमारे प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ है । इन्होंने जो प्रतिक्रिया दी है वह आपके सामने है । लेकिन विपक्ष को यह दिखाई नहीं देता । पार्टी का घोषणा पत्र हमारे 5 साल के कार्यकाल का एक विजन है, हमारा एक दृष्टिकोण है और आज जो बजट प्रस्तुत हुआ, यह उसी तारतम्य में हुआ कि हमारे घोषणा पत्र के क्रियान्वयन की दिशा में किस मजबूती के साथ हमारी सरकार खड़ी है? यह हमारी सरकार की इच्छा-शक्ति को प्रदर्शित करती है। पिछले वर्ष भी कर्जा माफी की गई। धान की कीमत 2500 रूपये क्विंटल दिया गया। सिंचाई की बकाया कर माफ की गई। यह इसी दिशा में एक प्रयास था। और भी जितने भी किसानों के हक में, गांव के हक में, हमारे गरीब लोगों के पक्ष में फैसले लिये तो उसका परिणाम एक साल में यह मिला कि आज यहां पर जो किसान जो पिछली सरकार के कार्यकाल में हजारों लोग आत्महत्याएं करके मरते थे, हम इस सरकार में दावे के साथ कहेंगे कि इस 14 महीने के सरकार में एक भी कोई कोई किसान कर्ज के नाप पर आत्महत्या नहीं किया है। यह सबसे बड़ा प्रमाण है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में खेती जो कल तक घाटे का करोबार हुआ करता था, आज उसी खेती की ओर लोगों का रूझान बढ़ा है। आज ढाई लाख से अधिक लोगों ने अपना धान बेचा है, पंजीयन कराया है। उन्होने नई खेती की है। हमारी सरकार का जो पिछले साल जो काम हुआ, वह अपने आप में प्रमाणित होता है। आज हमारे युवा लोग खेती को छोड़कर शहर की ओर पलायन करते थे, रोजगार की तलाश में जाते थे। खेती घाटे का कारोबार बना हुआ था और आज हमारी सरकार के फैसलों से खेती-किसानी पुन: एक लाभ का और फायदे का काम हो गया और उसी का परिणाम है कि हमारे युवा खेती की ओर जा रहे हैं और उसके कारण खेती की रकबा बढ़ा है। उत्पादन बढ़ा है और आज हमारे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सहकारी समितियों के माध्यम से जो बिक्री हुई है, 82 लाख मीट्रिक टन धान यदि बेच रहे हैं, यही सबसे बड़ा प्रमाण है कि सरकार आज किसान के हित में काम कर रही है। इस वर्ष भी आज जो फैसले हुए हैं कि आज हमारा 2500 क्विंटल धान की बातें बार-बार हो रही है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने हमारे इस प्रदेश के किसान को विश्वास दिलाया है और यह केन्द्र सरकार आज जब हम 2500 रूपये क्विंटल धान देने की बात करते हैं तो उनको क्यों तकलीफ होती है। उन्हें क्यों पीड़ा हो रही है? उन्होंने आदेश जारी कर दिया कि यदि आप 2500 रूपये में धान खरीदी करोगे तो हम आपका चावल नहीं खरीदेंगे। राज्य सरकार अपने संसाधनों से यदि यहां के किसानों को 2500 रूपये क्विंटल दे रही है तो उसमें उन्हें तकलीफ क्यों है? लेकिन नहीं, यह इन्हें सहन नहीं हो रहा है। यहां किसानों की उन्नति उनसे नहीं देखी जा रही है। अड़ंगा लगाया जा रहा है। उसमें रूकावट डाली जा रही है, लेकिन आज विपक्ष में बैठे हुए लोग जो किसानों की बात तो करते हैं, परंतु ये ऊपरी बात करते हैं। यदि इनमें साहस होती, हिम्मत होती तो ये लोग भी केन्द्र सरकार के पास जाकर अनुरोध करते कि छत्तीसगढ़ में यदि सरकार दे रही है तो यहां का पूरा चावल खरीदा जाए। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी तरह से आज यहां पर माननीय मुख्यमंत्री जी ने आज इस 01 लाख 02 हजार करोड़ से अधिक के बजट में उन्होंने साबित किया है कि आज भी खेती-किसानी और किसान उनकी प्राथमिकता है। आज इस प्रदेश में इस बजट से लगभग कृषि और संबद्ध सेवाओं के लिए जहां 12 हजार 328 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है, वहीं सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण के लिए 2533 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। लगभग कुल बजट का 30 प्रतिशत हिस्सा सीधे गांव के लिए गया है। किसानों के लिए गया है। सामाजिक सेवा के लिए भी कुल बजट का लगभग 21 हजार 488 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। ये फैसले ही यह साबित करते हैं कि आज हमारी सरकार की जो प्राथमिकताएं हैं कि हमारा गांव, गरीब और किसान और खेती किसानी ही आज हमारी सरकार की प्राथमिकता है, लक्ष्य है। यदि किसान खुशहाल होगा तो प्रदेश खुशहाल होगा। यदि किसान समृद्ध होंगे तो हमारा प्रदेश समृद्ध होगा। यही आज हमारी मुख्यमंत्री जी की एक सोच है, हमारी सरकार की सोच है। इसी तरह से कृषि के क्षेत्र में किसानों को उनके धान का मूल्य 2500 रूपया क्विंटल देने के लिए 5,100 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। वहीं हमारे कृषि बाढ़ नियंत्रण में, जैसा कि मैंने अभी जानकारी दी है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 366 करोड़, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में 370 करोड़, एकीकृत बागवानी विकास में 205 करोड़, जैविक खेती मिशन में 20 करोड़, वाटर शेड प्रबंधन में 200 करोड़, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई में 110 करोड़ और पांच हार्स पावर के पंपों को नि:शुल्क बिजली देने के लिए लगभग 2300 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी तरह से सिंचाई के लिए भी बजट में प्रावधान किया गया है। खेती किसानी की उन्नति सबसे पहली प्राथमिकता होती है। हम सिंचाई के संसाधन को अधिक से अधिक बढ़ाये। पहली बार उस पर हमारी सरकार की सोच गई है कि 2028 तक लक्ष्य रखकर कि हम यहां

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अपने प्रदेश की सिंचाई की क्षमता को लगभग 32 लाख हैक्टेयर तक ले जाने का लक्ष्य रखकर काम कर रहे हैं। हमारे प्रदेश की 4 सबसे बड़ी महति परियोजना है, उधर झांकने की कोशिश की गई है। उधर सोचने की कोशिश की गई है, उस पर फैसला लेने की कोशिश की गई है। उनमें से सर्वाधिक प्रमुख बोधघाट परियोजना की बात है। कल मैं पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी बातें सुनी है। वे उस योजना के बारे में कह रहे थे कि यह असंभव है। 10 साल सर्वे करने में लगेंगे। उनको अनुभव नहीं है। ऊपरी बातें कर रहे हैं। आपको 10 साल सर्वे कराने में लगेगा ? किसी सिंचाई परियोजना का सर्वे कराने में 10 साल लगेगा ? इससे बड़ी हास्यास्पद बातें और क्या हो सकती हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- धनेन्द्र जी, पोलावरम का 25 साल में भी सर्वे नहीं हुआ है। पोलावरम को 25 साल हो गये हैं।

श्री धनेन्द्र साहू :-पोलावरम में तो कितना काम हो गया है।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- लेकिन आपका इतना नकारात्मक सोच क्यों है ? आप 15 साल हुकुमत में रहे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- रविन्द्र जी, मैं आपको चैलेंज करता हूं कि आप अपने कार्यकाल में बोधघाट को बनाकर दिखा दीजिये। आपको चैलेंज है। आपको चैलेंज है, आप बनाकर दिखा दीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप बैठिये न। मैं बोलता हूं। इतनी बड़ी परियोजना 5 साल में पूरा होगा, ऐसा करके आप चुनौती दे रहे हैं। लेकिन आप यह निश्चित जानिये कि सरकार की सोच इस बजट में दिखने लगा है। हम पैरी भी बनायेंगे, बोधघाट भी बनायेंगे, हम छपराटोला भी बनायेंगे और अहिरन खारंग भी बनायेंगे। आपको थोड़ी सकारात्मक बातें भी कहनी चाहिए कि सी.डब्ल्यू.सी. में कोई प्राब्लम आयेगा तो आप हमारी मदद करेंगे। दिल्ली में दूसरे की सरकार है, हमारी सरकार तो है नहीं।

श्री ननकीराम कंवर :- चांपा और कोरबा सड़क के लिए पैसा दिए हैं, आप उस पर काम नहीं कर पाये हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आदरणीय, अभी प्रधानमंत्री आवास योजना की बात कर रहे थे। प्रधानमंत्री आवास योजना में 4 लाख रूपये देते हैं। डेढ़ लाख केन्द्र सरकार और ढाई लाख राज्य सरकार देती है। केन्द्र का पैसा आया ही नहीं है। जाकर थोड़ा बोलो न। यहां बन नहीं रहा है और हल्ला करते हो।

श्री मोहन मरकाम :- जब सरकार जाती है तो सोच भी छोटी होती जाती है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप बेरोजगारों को 2500 रूपया बेरोजगारी भत्ता नहीं दे पा रहे हो और बोधघाट की बात करते हो। 32 लाख हैक्टेयर सिंचाई की बात करते हो, यह नहीं कर सकते हो।

श्री धनेन्द्र साहू :- अच्छा आप मुझे यह बताईये कि आप तो सिंचाई मंत्री थे। मैं उधर बोल रहा हूं, आपको क्यों तकलीफ हो रही है।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- चलो, एकाध बार इसका उत्तर दे देना।

श्री अरूण वोरा :- अग्रवाल जी, आप तो ऐसे नहीं थे।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बोधघाट परियोजना हमारी बस्तर की जीवन रेखा है। यदि आज बोधघाट परियोजना बन जाती तो मैं दावे के साथ कहता हूं कि संभवत: वहां पर नक्सलवाद पैदा नहीं हुआ होता। लगभग 02 लाख 66 हजार हैक्टेयर उससे सिंचाई संभावित है। 1979 में मोरार जी देसाई ने उसका भूमिपूजन किया था, शिलान्यास किया था। आप बोल रहे हैं कि 10 साल में सर्वे नहीं हो सकता तो मैं भी आज से 20 साल पहले वहां मौके में जाकर मौका स्थल का मुआयना करके आया हूं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वहां पर जो क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण होना है, वह भी हो चुका है । उसके लिए राज्य सरकार द्वारा पूरा क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण किया जा चुका है और वह योजना असंभव नहीं है, संभव है, तभी हमारी सरकार ने उस पर फैसला लिया है कि बोधघाट जैसे महती परियोजना जो आज हमारी सिंचाई की आवश्यकता है, जिसमें दक्षिण बस्तर की 2 लाख, 66 हजार हेक्टेअर में सिंचाई होनी है और वहां पर हाईडल प्रोजेक्ट, विद्युत उत्पादन होना है । ठीक है, वहां पर रूकावटें आ सकती हैं । अभी बहुत तरह की रूकावटें होंगी, पर्यावरण की रूकावटें होंगी, लेकिन हम यह मानकर चुप बैठ जाएं, हाथ पर हाथ धरे रहें तो पेयजल और सिंचाई की समस्या को हम कब हल कर सकेंगे । ठीक है, पैरी में भी वही दिक्कतें हैं, डूबान की दिक्कतें हैं, लेकिन यह भी आज मैं कहना चाहूंगा, आज नहीं तो कल आपको बनाना ही पड़ेगा । दुर्ग, रायपुर, बलौदाबाजार जिला, इधर जितना भी जिला है, यदि पानी की आवश्यकता है तो उसको बनाने के सिवाय आपके पास कोई विकल्प नहीं है । पैरी बांध, पैरी महानदी लिंक नहर आपको बनाना ही पड़ेगा । अगर आज नहीं बनोओगे तो कल बनाना पड़ेगा और आज हमारी सरकार ने उसको प्राथमिकता में लिया है । इस के लिए हम माननीय मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देंगे । इसी तरह से डांड पानी वृहद जलाशय के लिए 25 सौ करोड़ रूपए का प्रावधान, शिखरपुर सरगुजा की योजना भी 1080 करोड़ की लागत से बननी है और इन सभी योजनाओं को चिह्नित करके जो सबसे महती योजनाएं हैं, ये चारों बड़ी योजना है, वृहद जलाशय है । इसके माध्यम से प्रदेश में सिंचाई के व्यापक संसाधन यहां पर पैदा हो सकेंगे । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस विषय में कहना चाहूंगा कि पूरे हिन्दुस्तान में अकेला छत्तीसगढ़ है, जो सिंचाई के रकबे का हमारा पैमाना खरीफ फसल है, वह देश में और कहीं नहीं है । जो हमारे खरीफ फसल में जितना पानी हम सिंचाई के लिए देते हैं, वही हमारी उपलब्धियां है, वही हमारा आंकड़ा है । बाकी जगह रबी फसलों को ही देखा जाता है कि रबी फसल कितने एकड़ में सिंचाई होनी है, उसको माना जाता है कि इस प्रदेश सिंचाई का प्रतिशत कितना है । सिर्फ छत्तीसगढ़ में आप खरीफ के फसल....।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पैरी हाईडेम के बारे में मैंने आपको बोलने के लिए कहा था । पैरी हाईडेम के पक्ष में आपका स्पष्ट तौर पर मत क्या है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धनेन्द्र साहू :- मैं आपको बता रहा हूं कि आज नहीं तो कल आपको बनाना पड़ेगा । पानी की आवश्यकता की पूर्ति वहीं से हो सकती है । हमारी सरकार उसको बनाना शुरू कर रही है । हमारी सरकार ने शुरूआत तो की है, उसके लिए बजट में प्रावधान किया है । जब आप लोग सरकार में थे तो उसकी ओर 15 साल झांककर देखा ही नहीं ।

श्री कवासी लखमा :- हमारे जिले में डी.एम.एफ. का कुछ पैसा नहीं आता था, जो 3-4 हजार मिलता था, हमने उसको 8 हजार रूपए करवाया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके जिले के लिए आज 10 लाख की शराब उतरी है ।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी तरह से कृषि के क्षेत्र में और गांव के लोगों को रोजगार देने एवं और भी आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार ने बेमेतरा, जशपुर, धमतरी में और अर्जुंदा में उद्यानिकी महाविद्यालय खोलने के लिए फैसला लिया है । इसी तरह से लोरमी में कृषि महाविद्यालय की स्थापना और इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में खाद्य प्रौद्योगिकी की स्थापना के लिए भी बजट में प्रावधान किया गया है । डेयरी टेक्नालॉजी को बढ़ावा देने के लिए डेयरी डिप्लोमा पॉलीटेक्निक महाविद्यालय बेमेतरा और तखतपुर में भी खोलने का प्रावधान सरकार ने किया है । इसी तरह से मछली पालन के भी पॉलीटेक्निक डिप्लोमा कोर्स खोलने का प्रावधान राजपुर में किया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जहां आप देखकर पढ़ते हैं तो वहां गड़बड़ी होती है । आप एक्सटेम्पोर बोलिए, ये सरकारी कागज मत पढ़िए ।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पशु औषधालय का उन्नयन करके चिकित्सालय के रूप में 12 नवीन चिकित्सालय प्रारंभ करने एवं 5 विकासखण्डों में मोबाईल पशु चिकित्सालय के लिए भी प्रावधान किया गया है । इसी तरह से छत्तीसगढ़ का जो कान्सेप्ट है-नरवा, गरूवा, घुरूवा और बारी के बारे में भी बहुत संदेह पैदा कर रहे हैं । इसमें हमारे गांव के किसानों की समृद्धि और खुशहाली का पूरी विजन है । आज हमारा नरवा आज पूरे नाले को ही पुनर्जीवित नहीं कर रहा है, छत्तीसगढ़ में एक भी नदी बारहमासी नहीं है । यदि इन नालों को पुनर्जीवित कर दिया जाता है, निश्चित तौर पर हम लोग उस दिशा में बढ़ पायेंगे। हमारे नालों में तो पानी रहेंगे ही रहेंगे, नदियों में भी हमारे जो जल स्तर है, वह बराबर बना रहेगा । इसी तरह से खेती-किसानी में हमारी सबसे बड़ी संपत्ति होती थी, किसानों की यदि सबसे बड़ी पूंजी होती है, वह है गोधन, लेकिन वर्तमान में जो हालात पैदा हो गये हैं, आज गोधन जिस तरह से अपमानित हुआ है, लेकिन आज उसको संरक्षण देने की बात हो रही है, एक तरफ हम बोलते हैं कि हमारी गौ-माता है । गौ की पूजा करते हैं, लेकिन व्यवहार में हम लोग क्या देख रहे हैं, गांव के सारे मवेशियां हैं, सड़को पर, गांवों की गलियों में और फसलों को चर रही है । आज उसको संवर्धन देने के लिए सोच है, आज गोधन को संभालकर रखा जाये, सहेज कर रखा जाये, उनका सम्मान

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किया जाये, आज उन गौठानों के माध्यम से हमारे गौवंश को गौधन की परम्परा को और भी संरक्षित करने की बढ़ाने की इसमें जो सोच है कि इससे हमारे अच्छे जैविक खाद हो पायेंगे । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज देखरहे हैं कि गांव की हमारी जो महिला समूह है, आज जैविक खाद बनाने में लग गई है, तकनीकी रूप से भी आज उसको अपना रहे हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं किसान होने के नाते कहना चाहूंगा कि आज की जो हमारी खेती की पद्धति है, आज हम खूब रासायनिक खादों का उपयोग कर रहे हैं, कीटनाशक दवाईयों का उपयोग कर रहे हैं, उसका परिणाम यह हो रहा है कि पूरा भोजनशैली दूषित हो चुका है, जहरीला हो चुका है । हमारे गांव में बीमारियां नहीं होती थी, वह सारी बीमारियां, किडनी फेल, हार्ट फेल, जो गांवों में हो रहे हैं, इनके पीछे वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों का मत है कि हमारा भोजन जो है, वह दूषित हो चुका है । यह कब तक चलेगा । कई देशों ने तो रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाईयों के ऊपर प्रतिबंध लगा दिया है, यहां बड़ी मात्रा में कीटनाशक दवाईयों का और रासायनिक खाद का उपयोग कर रहे हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, उस दिशा में आगे कदम बढ़ा रहे हैं, हमारा गोठानों में और गोठान ही नहीं, मैं बताना चाहूंगा कि मेरे विधान सभा में बनचरौदा गांव है । जब हम लोगों ने गोठान शुरू किया, वहां पर लगभग 250-300 मवेशियां थी, तीन महीने बाद गये तो वहां पर मात्र 8-10 मवेशियां थी । हमने सरपंच जी को पूछा, बाकी जानवरों को कहां खिसका दिये, सरपंच ने जो जवाब दिया, उससे हम लोगों का भी आत्मविश्वास बढ़ा । उन्होंने कहा कि अब मेरे ही गांव के किसान लोग इस गौधन का, मवेशियों का महत्व समझ चुके हैं । बाहर से जो लावारिस पशु आये थे, उसको भी अपने घर ले जाकर रखना शुरू कर दिये हैं । अपने घर में ले जाकर उनको चारा-पानी दे रहे हैं, उसके गोबर को इकट्ठा करके अपने घरों में उन लोग जैविक खादबना रहे हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह आज आवश्यकता है कि हम लोगों को प्रेरित करें । यह तो एक सरकारी प्रयास है कि गांवों में गोठान बना रहे हैं, लेकिन उसको देखकर हमारे किसान उसको प्रेरणा लेकर घरों में जिस दिन उसका उपयोग करेंगे, हमारा रासायनिक खाद का जो निर्भरता है, वह हमारी धीरे-धीरे समाप्त होगी । हम सब जैविक खाद की ओर बढ़ पायेंगे । यह सरकार की सोच है ।

सभापति महोदय :- माननीय सदस्य 20 मिनट हो चुके हैं । कितना समय लेंगे ।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं जल्दी समाप्त कर देता हूँ। बात तो बहुत सारी थी ।

सभापति महोदय :- समय का ध्यान रखें ।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज नरवा के उपचार के लिए लगभग 912 नालों का 20,810 कार्य स्वीकृत किये हैं, 1900 गोठान का निर्माण, इसी तरह से घुरवा के लिए भी 3 लाख 16 हजार मीट्रिक टन जैविक खाद का उत्पादन हुआ है । बाड़ी के लिए भी 1 लाख 50 हजार बाड़ियों को पुनर्जीवित किया गया है । हमारे मनरेगा के तहत भी 603 करोड़ का इसमें प्रावधान किया गया है ।

Uncorrected and unedited/Not for Publication Thursday, March 05, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

इसी तरह से प्रधानमंत्री आवास योजना में भी आज 7 लाख 22 हजार आवास बनाये जा चुके हैं और इस वर्ष लगभग 1600 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। गोवर्धन योजना के तहत बायोगैस संयंत्र के लिए 1176 बायोगैस बनाने के लिए राशि प्रावधानित की गई है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के लिए भी 2070 करोड़ रूपये का प्रावधान इस बजट में किया गया है। इसी तरह से आज जो सार्वजनिक वितरण प्रणाली है, पिछली सरकार में उसमें भी कटौती कर दी गई थी। गरीब लोगों के राशन में कटौती कर दी गई थी और फर्जी लोगों को राशन देते रहे तथा फर्जी राशन कार्ड का कारोबार बड़े पैमाने पर चला। हमारी सरकार ने घोषणा पत्र के क्रियान्वयन में आज हर परिवार को राशन कार्ड की पात्रता दी है और आज हर परिवार को 35 किलो चावल उपलब्ध कराया जा रहा है। इसी तरह से सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो हमारी सरकार ने प्रारंभ किया है वह मुख्यमंत्री सुपोषण योजना है। आज कुपोषित बच्चे, खून की कमी, एनीमिया से ग्रस्त माताओं की संख्या के आंकड़े हम देखते हैं तो उसे देखकर काफी तकलीफ होती है। एक तरफ हम लोग खाली विकास की बात करते हैं लेकिन सिर्फ सड़कें, भवन ही विकास नहीं है। विकास व्यक्ति का होना चाहिए, परिवार का होना चाहिए कि हर परिवार आर्थिक दृष्टि से और स्वास्थ्य की दृष्टि से पूरी तरह से सक्षम हो। माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस विषय को प्राथमिकता देकर इस प्रदेश से कुपोषण को दूर करने के लिए जो मुख्यमंत्री सुपोषण योजना प्रारंभ की है, उसके लिए जो धनराशि उपलबध कराई है इसके लिए भी जितनी भी सराहना की जाए वह कम होगी, चूंकि आपका समाप्त करने का इशारा हो रहा है, आपने जो बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन में प्रस्तुत माननीय मुख्यमंत्री जी के बजट का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आंकड़े में नहीं जाना चाहता, भाई अजय चन्द्राकर जी विस्तार में बोले, डॉ. रमन सिंह जी ने बोला, मैं उतना ज्यादा गहराई में समझता भी नहीं, पर मैं देशी पद्धति में यह समझता हूं कि बजट वही अच्छा होता है बजट वह अच्छा होता है जिसमें सभी क्षेत्रों के लिए प्रावधान किए जाएं और समय पर वह पैसा ईमानदारी से जनता तक पहुंच जाए। लेकिन बहुत अफसोस है कि बजट में प्रावधान तो होता है, कल ही प्रश्न आया था कि साईकिल वितरण एक साल तक क्यों नहीं किया गया।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय धर्मजीत सिंह जी, माननीय रेणु जोगी जी सरकार और बजट की बहुत तारीफ कर रही थीं, पहली बार मेरे लिए जीवन में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आप लोग तय कर लीजिए कि विरोध करना है या नहीं।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं भी कुछ मामलों में तारीफ करूंगा लेकिन मैं तारीफ से ही शुरू नहीं कर सकता ना। साईकिल की खरीदी का मामला इस सदन में आया, माननीय मंत्री जी ने एक विभाग से दूसरे विभाग, दूसरे विभाग से तीसरे विभाग करके आपकी प्रक्रिया और व्यवस्था यदि आप सुनिश्चित

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नहीं कर सकेंगे तो बजट चाहे जितना भी हो, उसका फायदा आप गरीब बच्चों को नहीं पहुंचा सकते। बिलासपुर में एम.आर.आई. की मशीन खरीदना है उस एम.आर.आई. मशीन को खरीदने के लिए टेंडर की क्या प्रक्रिया है, कब तक होगा, आखिर टेंडर-टेंडर इसके नाम से अगर इस प्रदेश की विधानसभा के द्वारा दिये गये पैसे का खर्च आप नहीं कर पा रहे हैं तो यह सरकार की अक्षमता है और प्रशासनिक कमजोरी है। इसलिए मैं बोलता हूं कि यदि पैसा दिया गया है तो उस पैसे का समुचित और सही उपयोग हो और वह गांव तक पहुंचे यह बजट की मंशा होती है, लेकिन ऐसा हो नहीं रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं सर्वप्रथम माननीय कृषि मंत्री श्री रविन्द्र चौबे जी और माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी को बहुत ही हृदय की गहराईयों से धन्यवाद देता हूं, आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने किसानों के हित में लोरमी में एक एग्रीकल्चर कालेज खोलने की घोषणा की है। इस एग्रीकल्चर कालेज का महत्व मैं सिर्फ चार लकीर में समझाना चाहता हूं कि ये आम कालेज के समान नहीं है। आज ही एक बहुत अच्छे बड़े अखबार में यह छपा है कि एग्रीकल्चर कालेज के आधे ग्रेजुएट नौकरियों में जा रहे हैं, बाकी उच्च शिक्षा चुन रहे हैं। पांच साल का पिछला ट्रेंड यही रहा है। छत्तीसगढ़ में तीन साल में नये कालेज खुले जिसमें हार्टीकल्चर, एग्रीकल्चर और एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग के कालेज हैं। अब आपने ये दसवां कॉलेज खोला है, उसके लिये मैं बहुत हृदय की गहराई से आपको धन्यवाद देता हूं। आपने किसान और इस प्रदेश के बच्चों के लिये और यहां के किसानों के लिये कॉलेज खोल करके बड़ी कृपा की है। मैं आपका स्वयं स्वागत करने के लिये तैयार हूं। जब आप इसके सिलसिले में लोरमी आयेंगे, रवीन्द्र चौबे जी और आपका मैं हृदय की गहराईयों से स्वागत करूंगा। आपके इस बजट प्रावधान के लिये मैं आपका हृदय से आभार भी व्यक्त करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, अब मैं थोड़ी-थोड़ी इनके बजट के बारे में यह कहना चाहता हूं। यह सरकार एक साल से सिर्फ कदम ताल कर रही है, पुलिस में जैसे कदम ताल की व्यवस्था होती है, एक ही जगह खड़े होकर लेफ्ट राईट, लेफ्ट राईट, वह इस सरकार कर रही है। आप धान की खरीदी और किसानों की कर्जमाफी के बाद आगे बढ़ ही नहीं रहे हैं। आपके 36 वायदे जिसकी सूची हम सबके पास है। इसमें आप गौर करिये, इस बजट में मिलाईये। आपने अपना संकल्प दिया था, घर-घर रोजगार, हर घर रोजगार। राजीव मित्र योजना, न्यूनतम 2500 रूपये प्रतिमाह, बाबा साहब आप बनाये थे। इसमें एक रूपये का भी प्रावधान इन बच्चों के लिये नहीं किया गया है। जबकि 23 लाख रजिस्टर्ड पंजीकृत बेरोजगार हैं, अपंजीकृत बेरोजगार तो न जाने कितने होंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- आज प्रश्न के उत्तर में है। इसलिए उसमें कोई योजना नहीं है।

श्री धर्मजीत सिंह :- उपाध्यक्ष महोदय, आपने उनको नहीं दिया। आपके संकल्प में था, महिला सुरक्षा के लिये हम प्रतिबद्ध हैं। महिला उत्पीड़न, छेड़छाड़, दुष्कर्म, दुराचार, आदिवासी क्षेत्र के आश्रमों में मासूम बच्चियों के साथ अभद्र व्यवहार, अनाचार दुराचार की घटनाएं, हत्या। यह सब इस प्रदेश में माताओं, बहनों के साथ खुलेआम हो रही है। लेकिन आपकी पुलिस इनको सुरक्षा देने में असमर्थ है।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उपाध्यक्ष महोदय, आपने संकल्प 11 में लिखा है कि शासकीय कर्मचारियों का हम सम्मान करेंगे। क्रमोन्नति, पदोन्नति, चार स्तरीय वेतन, अनियमित एवं दैनिक वेतनभोगी कर्मियों का नियमितीकरण, पूरा साल बीत गया। आरक्षण नीति में फेरबदल, हाईकोर्ट का स्टे हो गया। विभागीय अधिकारी के अपरिपक्व नीति के कारण एक भी प्रमोशन किसी कर्मचारी को नहीं मिला।

समय :
1:57 बजे **(सभापति महोदय (श्री शिवरतन शर्मा) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय :- लोग रिटायर हो गये हैं और इस प्रदेश में संविदा और दैनिक वेतनभोगी कर्मियों की संख्या एक लाख अस्सी हजार है। आप यह कब करेंगे, कौन से बजट में रखेंगे ? दूसरा बजट हो गया, आपने इसका जिक्र भी नहीं किया। आपके संकल्प 13 में है, 35 हजार से अधिक समूह के 100 करोड़ से अधिक की ऋण को माफ करेंगे। उनको सशक्त बनायेंगे, लेकिन आपने कोई प्रावधान नहीं किया है। शराबबंदी के बारे में आपने संकल्प 14 में कहा है कि पूर्ण शराबबंदी करेंगे। लेकिन शराब कोचियाओं को खुली छूट है। हरियाणा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, बिहार से यहां शराब आ रही है, शराब की बिक्री हो रही है, बिना नंबर के गाड़ियों में परिवहन हो रहा है। अवैध अहाता को आपने बनाने के लिये, अहाता भवन बनाने के लिये आपने बजट में प्रावधान किया है। यह छत्तीसगढ़ के लोगों से आपकी वादा खिलाफी है। सभापति महोदय, अगर आप शराब को बंद नहीं कर सकते, तो आप एक लकीर में विधानसभा में बोल दीजिए कि हम शराब बेचेंगे। बार-बार हमको पूछने और आपको उसमें सफाई देने की कोई जरूरत नहीं है। अगर बंद करना है, तो आपकी नियत साफ नहीं है। आपने शराब बंद करने की दिशा में एक ऐसी कमेटी का निर्माण किया है, जिसकी आज तक के एक बैठक भी नहीं हो पाई है। शराब बंद करने के लिये, आखिर इस प्रदेश के लोगों से आपने जब वायदा किया। यहां की माताओं बहनों ने आपको वोट दिया। अब वोट लेने और सरकार में बैठने के बाद अचानक सरकार के प्रति आपका मोह आपका प्रेम कई प्रश्नवाचक चिन्ह खड़ा करता है। आखिर उस शराब में ऐसी क्या चीज है, जिससे आप अपना मोह खत्म नहीं कर पा रहे हैं।

सभापति महोदय, ये गौठान की बात हुई। बहुत अच्छी बात है। हमारे गांव में हम लोग भी गौठान देखें हैं, बाड़ी भी देखें हैं, नरवा भी देखें हैं, घुरवा भी देखे हैं। हमको उसमें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन उन गौठानों के निर्माण के लिये आपने सरपंचों को लगाया है। माननीय मंत्री जी, माननीय पंचायत मंत्री जी, चंद्राकर जी, दोनों कितने मगन हो।

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री जी।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं आपसे कह रहा था। आपने गौठान बनवा दिया। ऐसे बहुत से सरपंच हैं, जिन्हें गौठान का भुगतान नहीं हुआ है। वे लोग जितना पैसा लगाएं हैं, उसमें कटौती कर रहे हैं। वे लोग

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

फांसी लगने और आत्महत्या करने की स्थिति में पहुंच चुके हैं। आप बनवाईये। लेकिन उसका देखरेख भी ठीक से हो। वहां जानवर भी रहें। 10 हजार रूपये में 300 रूपये रोज में कोई क्या करेगा? 10 हजार रूपये महीने में क्या हो सकता है? गौठान समिति 300 रूपये महीने में क्या करेगी? आप भले कम बनायें, लेकिन उसको पूर्णसुविधा युक्त और पूर्ण आर्थिक रूप से मदद करके बनायें। अगर ये कॉन्सेप्ट क्लिक होता है तो निश्चित रूप से इससे हमारे ग्रामीण परिवेश की संस्कृति को जिंदा रखने का अवसर मिलेगा और वहां पर हमारे पशुधन की भी रक्षा हो सकेगी।

सभापति महोदय, आप नाले की बात करते हैं कि नाला बांधेंगे। आपने तो बता दिया कि बहुत से बांध लिये हैं। जरा मुझे बताईये कि कहां नाला बंधा है और कितना पानी रूका है, कैसे रूकेगा? कैसे नाला बंधेगा? एनीकट बनने के बाद एनीकट बह रहा है एक छोटे से नाले को रोकने के लिए आप स्टामडेम या चेकडेम बनायेंगे वह कितने का बनेगा, कैसे बनेगा उसकी ड्राईंग डिजाईन क्या है? पानी कब रूकेगा। कैसे रोकेंगे, कैसे छोड़ेंगे? इसका कोई ईलाज नहीं है। एक तरफ ये बात करते हैं कि हम नाले को रोकेंगे।

सभापति महोदय, दूसरी तरफ इस प्रदेश में वन विभाग का जो हाथी कॉरीडोर, एलीफेंट, लेमरू कॉरीडोर बन रहा है, उसके भी एरिया को बचाने की साजिश इस सरकार के द्वारा की जा रही है। हंसदेव नदी जहां से निकलती है उसके सारे डिस्ट्रीब्यूट्री जो पानी आने का होता है कैचमेंट एरिया, उसमें भा.ज.पा. शासन में वर्ष 2012 में उन सारे में कुछ कोल ब्लॉक्स प्रस्तावित थे, वह कोल ब्लॉक बड़े-बड़े उद्योगपतियों के लिए प्रस्तावित थे, लेकिन वर्ष 2014 में जब सुप्रीम कोर्ट ने रोक दिया कि वहां पर कोई कोल ब्लॉक नहीं बनेगा और उसके बाद जब लेमरू एलीफेंट कॉरीडोर बन रहा है तो उस केंदई एरिया के कई ऐसे ब्लॉक्स प्रस्तावित थे उसे इसमें शामिल नहीं किया गया। क्योंकि उस तमाम् जगहों पर बड़े-बड़े उद्योगपतियों के लिए रूमाल रखा गया, उसको रूमाल रखकर रोको गया है। इस प्रदेश में 50 हजार मिलियन मीट्रिक टन कोयले का भण्डार है और ए.सी.सी.एल. सिर्फ 125 मिलियन टन कोयले का उत्खनन करता है अगर उसको पूरी आजादी दे देंगे तो 300 सालों तक छत्तीसगढ़ के कोयले का उत्खनन करते रहने के बाद भी खत्म नहीं होगा, उसके बाद भी एकदम उद्योगपतियों के ईशारों पर चलने के लिए यह सरकार क्यों बेचैन है ? माननीय मुख्यमंत्री भी चाहते हैं कि सिर्फ दो खदान एक अडानी का है और एक प्रकाश इण्डस्ट्रीज चोटिया में है जो आऊट गोइंग खदान है, वह चलते रहे। बाकी खदानों को आपको एलीफेंट कॉरीडोर में शामिल करना होगा। मैं आपको चुनौती से बोल रहा हूँ। मेरे आदमी आकर आपको गुगल में बतायेंगे । आप देखिए कि हंसदेव की जो पतली-पतली नालियां पानी देने के लिए आती हैं और जहां पर हंसदेव बांध बना हुआ है वहां पानी दिख रहा है। वहां हरे-भरे जंगल दिख रहे हैं उस नदी की जिंदगी को खत्म मत करिये, मांड की जिंदगी को खत्म मत करिये। अगर आपको इन कोयला खदान वालों को देना है तो रायगढ़ की तरफ है। जब विभाग की चर्चा होगी तो मैं डिटेल, मैप, कागज आंकड़े

Uncorrected and unedited/Not for Publication Thursday, March 05, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सहित बात करूंगा। माननीय विधान सभा अध्यक्ष जी का क्षेत्र है, वह भी चिंतित है। वह भी सरकार से मांग कर रहे हैं और आप है कि 1900 की रट में पड़े हुए हैं। आप 1900 का एरिया बढ़ाईये। हाथी एक दिन में 25 से 30 किलोमीटर पैदल चलता है। 300 की संख्या में हाथी हैं। पिछले 10 सालों में 600 करोड़ रूपया खर्च हो गया है। सरकार के बजट का पैसा..।

सभापति महोदय :- थोड़ा संक्षेप करें।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूँ। सरकार के बजट का पैसा इस तरह से खराब नहीं किया जाना चाहिय।

सभापति महोदय, स्वास्थ्य विभाग की बात करूंगा तो माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी बैठे हैं। सुपेबेड़ा में कीडनी के मामले में मौत हो ही रही है। नशीली दवाईयों का खुलेआम बिक्री हो रही है मलेरिया न केवल बस्तर में बल्कि में पूरे प्रदेश के वनाचंल में फैला हुआ है। सरगुजा जिले में 12 महीनें में 400 से अधिक बच्चों की मौत हो गई है। डॉक्टर कहां है, कैसे आएंगे, कहां से लाएंगे ? यहां 1 हजार डॉक्टर पैदा होते हैं हर साल पढ़ते-लिखते हैं कहां चले जाते हैं कुछ ऐसा नियम क्यों नहीं बनाते कि ग्रामीण क्षेत्रों में उन डॉक्टरों को 2 साल काम करने के बाद डिग्री दी जायेगी। अगर वह हमारे पैसे से पढ़कर डॉक्टर बनते हैं तो हमारे छत्तीसगढ़ की सेवा क्यों नहीं करते हैं ? इन सब चीजों की ओर ध्यान देना चाहिए। यहां पर खुले आम चीट फण्ड कंपनियां लूट खसोट मचायी हुई हैं आपने उनकी संपत्ति कुर्क कर, राशि लौटाने का प्रावधान किया है। आपने कोई प्रावधान नहीं किया है। राजधानी और न्यायधानी में सड़क हादसे में बहुत मौत हो रही है, प्रतिदिन मौत हो रही है। रायपुर में ही सड़क हादसे में एक साल में 2168 मौते हुई हैं, बिलासपुर में एक साल में 400 से ज्यादा मौते हुई हैं और यह सब मौतें शराब के नशे के कारण हुई हैं।

माननीय सभापति महोदय, पूरे देश में प्रदेश के लोग अपने प्रदेश में मेट्रो बनाने के लिए प्रस्ताव दे रहे हैं। मध्यप्रदेश में दिया जा रहा है, राजस्थान वाले दे रहे हैं, दिल्ली वाले देते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि आपने मेट्रो बनाने के लिए प्रस्ताव क्यों नहीं रखा? नया रायपुर से लेकर राजनांदगांव तक, सिगमा से रायपुर आने के लिए आपको तकलीफ नहीं होगी, सिगमा से लेकर रायपुर तक मेट्रो की सर्विस शुरू कराने के लिए प्रयास करिये न। आप मेट्रो सर्विस छोड़ स्काई वाक बनाये हो, वह ताजमहल सरीखे खड़ा है, न उसमें कोई चल रहा है। आप उसको बनाओ, चलाओ या तोड़ो, उसको कुछ तो करो। आप उसका प्रावधान करो। उसको चलाना है या नहीं चलाना है, इसका फैसला आप साल भर में नहीं कर सके हैं तो कब करेंगे? दूसरा बजट पेश हो गया। अब यह जो 1 लाख 2 हजार 900 करोड़ रुपये का जो बजट आया है, यह बजट आते ही एन.जी.ओ. सक्रिय हो गये हैं। 1 हजार करोड़ का घपला एन.जी.ओ. ने किया है, हाईकोर्ट ने सबको जेल भेजने का आदेश दिया है। मंत्री जी, यह इनके शासनकाल का है। उसमें आपके विभाग का भी होगा और महिला बाल विकास विभाग की मंत्री जी के विभाग का है। जब ये भाजपा सरकार का 1 हजार करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार है और हाईकोर्ट ने कह दिया है कि इस पर कार्यवाई

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

करिये। आपको दिल्ली से बडे-बड़े वकील बुला करके पैरवी कराने की क्या जरूरत है? आप किस इंट्रेस्ट में पैरवी करा रहे हैं? आपके खिलाफ तो नहीं है, कोई मंत्री के खिलाफ नहीं है, कोई विधायक के खिलाफ नहीं है। दिल्ली से बडे-बड़े वकील सरकारी पैसे से आकर यहां पैरवी कर रहे हैं कि हाईकोर्ट के जज ने गलत फैसला दिया या गलत डायरेक्शन दिया है। यह एन.जी.ओ. सक्रिय होंगे। अगर आप एन.जी.ओ. से नहीं बचेंगे तो इस बजट का बहुत बड़ा हिस्सा एन.जी.ओ. को जायेगा। आप बोल रहे हैं न कि बांध, एनीकट बनेगा। एनीकट का हाल सुनिये। रायगढ़ के मंत्री बैठे हैं, एनीकट जहां बना है, उस एनीकट का पानी वहां के उद्योगपति लेते हैं। वहां के किसान को एक इंच जमीन की सिंचाई के लिए भी पानी नहीं मिलता है, उनकी एक इंच जमीन की भी सिंचाई नहीं होती। पीने के पानी का भी कोई प्रावधान नहीं है। अगर ऐसा एनीकट बनाना हो तो एनीकट बनाने की कोई जरूरत नहीं है। अगर किसानों के लिए एनीकट बनाना है तो जरूर बनाईये, हम आपका स्वागत करते हैं। लेकिन जिस रेशियो में आप बता रहे हैं, 18 साल में इतनी उपलब्धि नहीं हुई जो आप 5 साल में रकबा बढ़ाने की बात कर रहे हैं, लेकिन मैं अपनी शुभकामनाएं दे सकता हूं कि आप जरूर बढ़ाईये।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, दो बहुत महत्वपूर्ण बात और बोलूंगा, आप मौका दे दीजिए। बिलासपुर में हवाई सेवा के लिए आपने प्रावधान किया है। सभापति महोदय, बिलासपुर एक प्रमुख शहर है, अंबिकापुर तो और दुरस्थ है, अंबिकापुर जाना भी बहुत कठिन है। लेकिन मैं बिलासपुर के बारे में ये कहना चाहता हूं कि 3-सी लाईसेन्स देने के लिए आप प्रक्रिया क्यों शुरू नहीं कर रहे हैं? 3-सी देने के पहले जो भी फुलफिल नार्म्स हैं, उसको आप क्यों नहीं कर रहे हैं? सरकार ने पैसा दिया, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का आभारी हूं कि उन्होंने 26 करोड़ रुपये की घोषणा की, लेकिन इस 26 करोड़ रुपये को देख करके प्लेन नहीं चलेगा। इसके लिए निर्माण होना जरूरी है और निर्माण का काम आपको करना है। जब आप निर्माण का काम करके जो उनकी मूलभूत आवश्यकता है, उसकी पूर्ति करेंगे, तब हवाई जहाज यहां से उड़ेगा। यह बिलासपुर वालों का हक है। मैं सरकार से मांग करता हूं कि आप हवाई जहाज सेवा शुरू करने के लिए प्रयास करें। माननीय सभापति महोदय, दो बात कह कर खत्म कर रहा हूं। मंत्री जी, बाघों की संख्या को बढ़ाने के लिए दूर करें खामियॉ, माननीय मुख्यंमत्री जी ने केन्द्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर जी को एक पत्र लिखा था कि यहां बाघ की संख्या कम हो रही है। उन्होंने जो जवाब दिया वह मैं बता देता हूं। मुख्यमंत्री के पत्र का जवाब देते हुए केन्द्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर जी ने पत्र लिखा है कि मैं बहुत खुश हूं कि आपने ध्यान दिया, लेकिन आपके प्रदेश में कई खामियॉ हैं, उसे पहले दूर करें। सभापति महोदय, अब आंकड़ा भी सुन लीजिए । दो मिनट सुन लीजिये, यह बहुत महत्वपूर्ण है चूंकि टाईगर का मामला है । वर्ष 2006 में इस प्रदेश में 26 शेर, वर्ष 2010 में 26 शेर, वर्ष 2014 में बहुत तरक्की किये, बहुत जनसंख्या बढ़ी 46 शेर और वर्ष 2018 में 19 शेर और मैं यह कह रहा हूं कि

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

यह 19 भी नहीं है शायद 9 ही होगा और अचानकमार टाईगर रिजर्व में एक भी नहीं है । माननीय सभापति महोदय, इसका संवर्धन करने के लिये काम करिए। अचानकमार टाईगर रिजर्व में कोई फारेस्ट गार्ड, बीट गार्ड, रेंजर, डिप्टी रेंजर कोई नहीं है । वहां के सारे अधिकारी 2-3 लोग मनमर्जी से अचानकमार टाईगर रिजर्व का संचालन कर रहे हैं । मैं इस बजट में मांग करता हूं कि अगर जंगल में जानवरों को बचाना है, अगर शेर को बचाना है तो वहां के सारे अधिकारियों को जैसे टीवी में जो विज्ञापन आता है न कि सारे के सारे सिल्वेनिया बल्ब बदल डालूंगा वैसा कहीं सारे के सारे बदलकर वहां अच्छे अधिकारियों को लाईए ।

माननीय सभापति महोदय, मैं आखिरी बात कहकर समाप्त करना चाहता हूं । इस सदन की एक परंपरा है कि सदन में हम बहुत से मामले उठाते हैं । सदन में विधानसभा के अध्यक्ष महोदय निर्देश देते हैं, सदन में मंत्रियों की ओर से हमको आश्वासन मिलता है, जांच की बात की जाती है लेकिन मुझे बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आसंदी से दिये गये निर्देशों की भी अवहेलना सरकार कर रही है। विपक्ष के द्वारा पूछे गये प्रश्नों में दिये गये आश्वासन की पूर्ति में भी इस सरकार के मंत्री अक्षम साबित हुए हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- भाईसाहब, 2 मुख्यमंत्री लेबल के मंत्री यहां बैठे हैं जो मुख्यमंत्री की दौड़ में शामिल थे, वे चाहें तो कुछ बोल सकते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, यह हमारे संवैधानिक अधिकारों का हनन है । इस प्रजातंत्र के मंदिर के सर्वोच्च आसंदी का अपमान है इसलिए मैं माननीय दोनों वरिष्ठ मंत्री जो आगे बैठे हैं, उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि जब भी सदन में जनहित के मुद्दों पर कोई बात हो और जब आप कोई आश्वासन देते हों तो सोच-समझकर आश्वासन दीजिये और जब कुछ बोलते हों, जांच की बात कहते हों, दिखवा लेने की बात कहते हों तो आप उसे दिखवाकर, बुलाकर हमको सूचित भी करने का कष्ट करें अन्यथा आप बिल्कुल मत बोलिए और अगर आप सरकार के अधिकारियों का, गलत काम करने वालों का संरक्षण करना चाहते हैं तो आप आजाद हैं लेकिन एन.जी.ओ. में 1000 करोड़ रूपये के भ्रष्टाचार करने वालों के लिये वकील लाने के लिये सरकारी धन का प्रयोग करने की ईजाजत यह बजट नहीं देता है इसलिए मैं इसका विरोध करता हूं । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- श्री बृजमोहन अग्रवाल ।

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय सभापति महोदय, आदरणीय बृजमोहन जी बोल रहे हैं और पूरी कुर्सियां खाली हैं । प्रतिपक्ष नहीं है । हमारे सम्माननीय नेता बोल रहे हैं, वरिष्ठ विधायक बोल रहे हैं तो सभी को यहां पर रहना चाहिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- बजट पर सामान्य चर्चा पर चर्चा हेतु भारतीय जनता पार्टी के लिये 1 घंटे 25 मिनट का समय निर्धारित है तथा अभी तक 2 घंटे 25 मिनट का समय उपयोग किया गया है । विशेष परिस्थितियों में 10 मिनट में अपनी बात समाप्त करें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर दक्षिण) :- माननीय सभापति महोदय, इस सरकार का यह दूसरा बजट है । मैं सबसे पहले तो इस सरकार से यह पूछना चाहूंगा कि आपका पिछला बजट लगभग 1 लाख करोड़ तक पहुंच गया था । सर्वे भवन्तु सुखिन: से इस बजट की शुरूआत हुई है । सरकार के वरिष्ठ मंत्री बैठे हैं, श्री ताम्रध्वज साहू जी आप जरा बता दीजिये कि आपके विभाग का पिछले साल कितना बजट था और अभी तक कितना खर्च हुआ है ? मेरी जानकारी में आपका 50 प्रतिशत पैसा भी रिलीज नहीं हुआ है । (शेम-शेम की आवाज) माननीय सिंह साहब आपका कितना बजट था, कितना स्वीकृत हुआ है ? मेरी जानकारी में 40 प्रतिशत बजट पर अभी तक एडमिनिस्ट्रेटिव एप्रूवल नहीं मिला है, वरिष्ठ मंत्री रविन्द्र चौबे जी उनके विभाग में 44 प्रतिशत बजट में अभी तक एडमिनिस्ट्रेटिव एप्रूवल नहीं मिला है तो यह बजट क्या है ? जगलरी है । यह प्रदेश की जनता को गुमराह करने वाला बजट है । पूरे प्रदेश को गुमराह करके मैं यह कहना चाहता हूं कि 1 लाख करोड़ रूपये के बजट में 60,000 करोड़ रूपये भी यह सरकार खर्च नहीं कर पायी है फिर हमसे क्यों पैसा मांग रही है ? क्यों मांग रहे हैं पैसा ? तीन सप्लीमेंट्री बजट के साथ 1 लाख करोड़ से ज्यादा का बजट था । लखटकिया बजट की लिस्ट में छत्तीसगढ़ आ गया है । इस साल के बजट में 1 लाख, 2 हजार करोड़ ।

श्री मोहन मरकाम :- अग्रवाल साहब, आरबीआई ने आंकड़े जारी किये हैं । पूरे देश में हमारी सरकार ने ही 78 प्रतिशत बजट खर्च किया है । यह मेरे आंकड़े नहीं हैं, आरबीआई के आंकड़े हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, बजट में बहुत सारी चीजें होती हैं, जिसे वित्तमंत्री जी पढ़ते हैं, राजकोषीय प्रबंधन, सकल घरेलू उत्पाद, कृषि विकास दर, औद्योगिक विकास दर, प्रति व्यक्ति आय, अनुमानित सकल आय, अनुमानित शुद्ध आय, राजस्व आय, पूंजीगत व्यय, जीएसडीपी..। कुछ समझ में आया कवासी जी?

श्री कवासी लखमा :- थोड़ा थोड़ा आ रहा है (हंसी) सभापति जी, इनके कार्यकाल में एमएलए फंड 1 करोड़ था, हमने उसको 2 करोड़ कर दिया, फिर भी बधाई नहीं दोगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति महोदय, कृषि आय में गिरावट । बहुत सारे तकनीकी शब्दों का उपयोग बजट में होता है । हमारे पूर्व वित्त मंत्री और मुख्यमंत्री रमन सिंह जी ने और भूपेश बघेल जी ने एक दूसरे को जवाब दिया है, मैं उसका जवाब नहीं देना चाहता ।

श्री कवासी लखमा :- वैसे भी आपकी, उनसे बनती नहीं है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सबसे आश्चर्यजनक तो यह है कि जो सरकार बड़ी बड़ी बात कर रही है कि हमने 20 हजार करोड़ का कर्जा माफ कर दिया । हम 2500 रूपए में धान खरीद रहे हैं । उसके बाद

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

भी कृषि की विकास दर क्यों कम हो गई ? जो कृषि की विकास दर पूर्व के वर्षों में लगभग 4 प्रतिशत थी वह लगभग 3.3 प्रतिशत क्यों हो गई ? आप सर्वे भवन्तु सुखिन: की बात कर रहे हैं । किसान दर-दर की ठोकरें खा रहा है, किसानों के घर में छापे पड़ रहे हैं । किसानों का धान जप्त हो रहा है । किसानों को पीटा गया है । युवा बेरोजगार इंतजार कर रहे हैं, महिलाएं स्व-सहायता समूह अपने ऋण मुक्ति का इंतजार कर रहे हैं, बेरोजगार, बेरोजगारी भत्ते का इंतजार कर रहा है । स्कूल की छात्राएं सायकिल का इंतजार कर रही हैं, जो बीमार हैं वे यूनिवर्सल हेल्थ स्कीम का इंतजार कर रहे हैं । कहां गईं सब स्कीमें? फिर आप बोलते हैं कि सर्वे भवन्तु सुखिन:, कौन सुखी है प्रदेश में । प्रदेश में अगर कोई सुखी है तो शराब के सप्लायर सुखी हैं और रेत माफिया सुखी हैं । उनके अलावा कोई सुखी नहीं है । कभी कभी तो ऐसा लगता है कि ये पूरी की पूरी सरकार केवल शराब माफिया और रेत माफिया के लिए काम कर रही है । शराब को बंद करने की बात करने वाली सरकार के राज में आज घर पहुंच शराब सेवा हो रही है ।

श्री कवासी लखमा :- आप तो सेवन नहीं करते, उसके बाद भी बोल रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं बोलूंगा तो कवासी लखमा कैसे खड़ा होगा ? सभापति महोदय, मैं पिछले 32 साल से विधायक हूं और पिछले 40 सालों से राजनीति में हूं । धान की खरीदी को लेकर समाचार पत्रों में इतने समाचार आज तक नहीं छपे होंगे, आज तक । 75 दिनों की धान खरीदी में ऐसा कोई दिन नहीं है जब धान खरीदी के बारे में न छपा हो । घोषणा पत्र में बोलते हैं कि दाना-दाना धान खरीदेंगे । फिर 15 क्विंटल की बाध्यता होती है, फिर 3 टोकन की बाध्यता होती है, फिर टोकन लेकर भटकने की बाध्यता होती है, फिर प्रतिदिन धान खरीदने की बाध्यता होती है । बोरे का कृत्रिम अभाव पैदा किया जाता है, धान खरीदी पर सीलिंग लगाई जाती है । किसानों के घर में छापा मारा जाता है, कोठार-खलिहानों से धान जप्त किया जाता है । किसानों के धान की जप्ती कर पुलिस केस बनाया जाता है । किसानों के कृषि रकबे में कटौती की जाती है, सोसायटियों में धान जाम हो जाता है, ट्रान्सपोर्टेशन नहीं होता, धान खरीदी बंद कर दी जाती है । मेरे पास पत्र है, मैं आपको पढ़कर बता सकता हूं प्राथमिक कृषि सहकारी समिति मर्यादित बया बलौदाबाजार, भाटापारा धान खरीदी आदि समस्या के संबंध में जिलाधीश महोदय, हमारे द्वारा किसानों को समझाइश दिया गया है कि शासन 15 फरवरी के बाद भी धान खरीदेगा, लेकिन किसानों को अब यह लिखित में चाहिए। समिति अगर लिमिट को बढ़ाती है तो उच्चाधिकारियों द्वारा मौखिक रूप से आदेशित किया जा रहा है कि आप कम लिमिट में धान खरीदी करें। नहीं तो आपके विरूद्ध एफ.आई.आर. किया जायेगा, जिससे समिति कर्मचारी सहमे हुए हैं। यह आदेश जारी होता है।

श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- बृजमोहन भैया।

सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी इसके बाद आपको ही बोलना है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- भारत देश में या छत्तीसगढ़ में आजकल आप सोने की तस्करी सुने हैं क्या? आजकल तो सोने की तस्करी नहीं होता न? तस्करी तब होती थी जब सोने का रेट बाहर में कम होता था और यहां पर ज्यादा होता था। अब यहां धान का रेट बहुत ज्यादा है, इस कारण उड़ीसा से या अलग-अलग लगे हुए प्रांतों से तस्करी हो रही है।

सभापति महोदय :- विनोद जी बृजमोहन जी के बाद आपको ही बोलना है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, यह आश्चर्यजनक है। छत्तीसगढ़ के किसानों को कोचिया बना दिया गया। छत्तीसगढ़ के किसानों को दलाल बना दिया गया। छत्तीसगढ़ के किसानों को चोर बना दिया गया। छत्तीसगढ़ के किसानों को धान माफिया बना दिया गया। आप कौन सी बड़ी भारी बात कर रहे हैं कि हमने सबसे ज्यादा धान खरीदा है। पहले 12 लाख किसान रजिस्टर्ड होते थे। 70 लाख टन धान खरीदा जाता था। पहले 14 लाख किसाने रजिस्टर्ड होते थे। 80 लाख टन धान खरीदा जाता था। आपके 19 लाख किसानों के रजिस्ट्रेशन में आपने 82 लाख टन खरीद लिया तो कौन सी बड़ी बात कर दी? कौन सी पीठ थपथपा रहे हैं? आप तो पूरे छत्तीसगढ़ को रसातल में ले जा रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- नहीं देना था क्या?

श्री ननकीराम कंवर :- बोल-बोल।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अगर छत्तीसगढ़ में यहां का किसान दलहन पैदा नहीं करेगा। तिलहन पैदा नहीं करेगा। यहां का किसान अगर हार्टिकल्चर सब्जी-भाजी पैदा नहीं करेगा। अगर यहां का किसान मछली पालन नहीं करेगा। अगर यहां का किसान गौ पालन नहीं करेगा, अगर यहां का किसान मुर्गी पालन नहीं करेगा तो यहां के किसान की आय कैसे बढ़ेगी? आज आपने 2500 रूपये कीमत देकर सब किसानों को बाकी फैसलों को पैदा करने से विमुक्त कर दिया है। यहां का हर किसान आज धान पैदा कर रहा है।

श्री कवासी लखमा :- नहीं देना था?

श्री ननकीराम कंवर :- दिये ही कहां हो? 2500 रूपये तो मिले नहीं है?

श्री कवासी लखमा :- लेना है या नहीं लेना है?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप कहते हैं कि 64 लाख से ज्यादा जमीन के रकबे का रजिस्ट्रेशन हुआ। अगर 64 लाख रकबे का रजिस्ट्रेशन हुआ और 15 क्विंटल धान एक एकड़ में तो कितना होगा भैया। सवा लाख करोड़ क्विंटल धान होगा। सवा लाख करोड़ क्विंटल में आपने केवल 82 लाख क्विंटल खरीदा है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति जी, हमारे वरिष्ठ नेता हम और पूरा विधान सभा सम्मान करता है, लेकिन यह 19 लाख किसान कहां से आया ? उस समय कहां दबे हुए थे? इनकी डर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

के नाम से ये रजिस्ट्रेशन नहीं करते थे। इसलिए हमारी सरकार ने किसानों को इतनी खुली छूट दी, सम्मान करता है, इसलिए इतने लाख का आया।

श्री ननकीराम कंवर :- कवासी सी, आपको जवाब नहीं मिला क्या?

श्री मोहन मरकाम :- सभापति जी..।

सभापति महोदय :- समय बहुत कम है। बैठिए-बैठिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, बस एक शब्द कहना चाहूंगा। माननीय बृजमोहन भैया ने बहुत बड़ी बात की है। मछली पालन के लिए किसानों को दिया जाता है। मैं बताउं कि जितना बड़ा जलाशय है, एकाध किसान को दिया है तो मुझे लिखित में बता दीजिए। इतने बड़े-बड़े जलाशय की आप बात करते हैं और किसानों के हित की बात करते हैं तो आप मुझे बता दीजिए कि आप 11 बड़े-बड़े जलाशय कितने दिये हैं?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, अग्रवाल साहब खूब तारीफ करते हैं। जब किसानों के हित की बात होती है तो अपनी सरकार की खूब तारीफ करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके प्रदेश अध्यक्ष बोल रहे हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- नहीं मैंने निवेदन किया है। ये बहुत बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- आप बैठिए।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं। वे कई बार विधायक रहे हैं। उन्होंने कहा। मैं दो चीजों पर बात करूंगा। एक इन्होंने कहा कि 2500 रूपये आपने दिया तो बाकी चीजों पर कमी हो गयी। यही तो कुछ दिन पहले बोल रहे थे कि आपने 2500 का वायदा किया है, क्यों नहीं दे रहे हो? इससे पहले आपने कुछ दिन पहले कहा था या नहीं ? दूसरी चीज इनका कहना है कि जितने किसानों का पंजीयन हुआ है, उसमें एक लाख क्विंटन से ऊपर धान की खरीदी होनी चाहिए। प्रेक्टिकल बात यह है। आप भी कृषि मंत्री रहे हैं। हम भी जानते हैं। जितना पंजीयन होता है, उसमें सबका धान नहीं खरीदा जाता है। आपकी सरकार में भी ऐसा हुआ है। तो यह प्रेक्टिकल बात है। आप इसे जबर्दस्ती दूसरे रास्ते पर न ले जाएं।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय मंत्री जी, मैं आपको बतलाना चाहूंगा। हो सकता है कि आप मंत्री हैं तो आपके क्षेत्र में धान की जब्ती नहीं हुई होगी। यह सबसे शर्मनाक घटना है कि इस प्रदेश में किसानों के घर से जब्ती हुई है और हाईकोर्ट ने कहा है कि इसे जब्त क्यों किया गया? आपके चीफ सेक्रेटरी इसका उत्तर नहीं दे पा रहे हैं।

सभापति महोदय :- चलिए, बृजमोहन जी।

श्री ननकीराम कंवर :- नहीं-नहीं, मैं बता रहा हूं। यह किसानों की दुर्दशा है। मेरे क्षेत्र में अभी गर्मी में फसल लेते हैं। ऐलान कर दिये थे कि कोई दूसरा फसल नहीं लेगा।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- चलिए, बृजमोहन जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, यह पूरे छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था धार के ऊपर है। मैं आपकी बातों का विरोध नहीं कर रहा हूं। परन्तु आप जो बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं, उससे छत्तीसगढ़ को कितना नुकसान हो रहा है? हमने मेहनत की थी कि छत्तीसगढ़ का किसान दलहन पैदा करे, छत्तीसगढ़ का किसान तिलहन पैदा करे, छत्तीसगढ़ का किसान सोयाबीन पैदा करे और वे गौ-पालन करें। हमने गौ पालन की योजना के लिए 6 लाख रूपये सब्सिडी की योजना प्रारंभ की थी। पूरे छत्तीसगढ़ में 400 डेयरी खुलीं। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि पिछले एक साल में कितनी डेयरी खुली, जरा बताईये। आपने क्या किया ? आज हमको पूरे छत्तीसगढ़ के बारे में चिंता करने की जरूरत है। हम छत्तीसगढ़ को कहां ले जा रहे है ? हम छत्तीसगढ़ को कौन से विकास का माडल बनाना चाहते हैं ? क्या हम छत्तीसगढ़ के लोगों को जगलरी करके बोधघाट परियोजना से 2 लाख 62 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होगी, ऐसा बताना चाहते हैं ? भैय्या, मोहन मरकाम जी, आप बस्तर के हो, आप जरा मुझे बता दो कि बोधघाट की नहर कहां से आयेगी और वहां पर 02 लाख 62 हजार हैक्टेयर है या नहीं है ? कितना जंगल है ? क्या जंगल को काटकर सिंचाई करवाओगे ? वह हायड्रल प्रोजेक्ट है, पनबिजली योजना है। उससे सिंचाई नहीं होना है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, हमन के रतनजोत जैसे योजना नइ हे। हमन के सित्तो-सित्तो वाला रहथे।

सभापति महोदय :- बैठ जा, बैठ जा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह पनबिजली परियोजना है। बस्तर में अभी भी हमारी जितनी भी सिंचाई योजना है, उससे 10 प्रतिशत ही सिंचाई होती है। बाकी की सिंचाई नहीं होती है। लोगों को खाली गुमराह करने की कोशिश क्यों कर रहे हो ? जो मैंने बहुत कोशिश की कि बस्तर में सिंचाई का रकबा बढ़ना चाहिए तो बताया गया कि वहां के किसान डिमाण्ड नहीं करते कि हमको पानी चाहिए। वहां पर बरसात का पानी पर्याप्त मिल जाता है। यदि हम उस परियोजना को बनायेंगे तो कितना पैसा लगेगा ? वह पैसा कहां से आयेगा ? फिर बोलते हैं कि वास्तविक सिंचाई 19 लाख हैक्टेयर है, परन्तु 13 लाख हैक्टेयर में हो रही है और हम उसको 32 लाख हैक्टेयर करेंगे। 32 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई करने के लिए 1 लाख करोड़ रूपये चाहिए। यह सरकार कंगाल है। इस सरकार के पास बेरोजगारों को भत्ता देने के लिए पैसा नहीं है। जो संविदा नियुक्त कर्मचारी हैं, उनको रेग्युलर करने के लिए पैसा नहीं है। पिछले डेढ़ साल से जितनी विकास की योजनाएं हैं, वे ठप्प पड़ी हुई हैं। आप कहां से करोगे ? खाली बजट भाषण में लिख देने से काम चलेगा क्या ?

समय :

2:28 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले बजट में अहिरन-खारंग को जोड़ने की बात थी, लेकिन आज वह गायब हो गई। आज अहिरन-खारंग को जोड़ने की बात इस बजट से गायब हो गई। गंगरेल-तांदुला को जोड़ने की बात थी, वह बजट से गायब हो गया। पैरी और महानदी को जोड़ने की बात थी, वह बजट से गायब हो गया। आखिर आप क्या करना चाहते हैं ? आप छत्तीसगढ़ को किधर ले जाना चाहते हैं ? अगर हम छत्तीसगढ़ में सिंचाई की सुविधाओं को नहीं बढ़ायेंगे, हमने तय किया था कि भागीरथी गंगा योजना, जिसमें हर साल एक लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई बढ़ायेंगे। हमने दो साल तक बढ़ाया। पिछले साल 30 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई बढ़ी है। एक लाख से घटकर 30 हजार हैक्टेयर हो गई और आप 32 लाख हैक्टेयर तक सिंचाई बढ़ाने की बात कर रहे हैं ? आप कहां से बढ़ायेंगे ? कैसे बढ़ायेंगे ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अग्रवाल साहब, आप कृषि मंत्री रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- मरकाम जी, माननीय जल्दी समाप्त करना है।

श्री मोहन मरकाम :- 2003 तक सिंचाई का रकबा 23 प्रतिशत था। 15 साल के बाद मात्र 31 प्रतिशत हुआ। बस्तर में तो 3 प्रतिशत, 4 प्रतिशत और जीरो प्रतिशत है। आपकी 15 साल सरकार रही और आपने क्या कार्ययोजना बनाया, आप बता दीजिये?

श्री सौरभ सिंह :- मरकाम जी, सी.एन.एन. पर कुछ चल रहा है।

श्री मोहन मरकाम :- 4 प्रतिशत मेरे जिले में रहा है। जीरो प्रतिशत बीजापुर और 13 प्रतिशत जगदलपुर का रहा है। तब आपने 15 साल में क्या किया, आप बता सकते हैं क्या ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार की कोई सोच नहीं है। खाली बड़ी-बड़ी बातें लिख देते हैं। छात्रों को जो छात्रवृत्ति मिलती है, उसमें 40 करोड़ की कमी कर दी है। लघु निर्माण मरम्मत में 90 करोड़ रूपये की कमी कर दी है। भवन निर्माण में 30 करोड़ की कमी कर दी है। पंचायत विभाग, ग्रामीण विकास विभाग का बजट 9,222 करोड़ रूपये का था, उसका बजट 9 हजार करोड़ कर दिया है। 222 करोड़ की कमी कर दी है। ग्रामीण क्षेत्रों की हालत क्या हो रही है ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे जानना चाहता हूं कि माननीय मरकाम जी, आप तो कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप इधर मुंह करके बोलिए न, वे डर जाते हैं । (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- उनकी आंखों के सामने इधर का परदा पड़ा हुआ रहता है न ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, मेरे पास 19-20 के बजट की कापी है । 2019-20 के बजट में आपने कहा था कि सौर ऊर्जा के सहयोग से सिंचाई हेतु 20 हजार नये पम्पों की स्थापना के लिए 467 करोड़ का प्रावधान है । आप मुझे बताईए कि 20 हजार में 20 भी सोलर पम्प लगे हैं क्या ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

एक सोलर पम्प नहीं लगा है । आपने लिखा है कि गोबर गैस प्लांट के कम्पोजिट इकाइयों के निर्माण, संधारण एवं संचालन हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया जाकर प्रत्येक ग्राम से 10 युवाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा । उक्त कार्य के लिए कौशल विकास योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण मद में उपलब्ध राशि का उपयोग किया जाएगा । प्रशिक्षण के उपरांत लगभग 2 लाख युवाओं को इसमें रोजगार प्राप्त होगा । 2 लाख नहीं, आपने 14 महीनों में 2 युवाओं को भी रोजगार दिया है क्या ? आपकी सरकार बने 14-15 महीना हो गए, आप बताईए कि आपने दो युवाओं को भी रोजगार दिया है क्या ?

श्री शिवरतन शर्मा :- बृजमोहन जी, नरवा, घुरवा, गरूवा, बारी के दो विशेषज्ञ माननीय मुख्यमंत्री जी और संसदीय कार्यमंत्री जी हैं । दुर्भाग्य से आपके भाषण के समय दोनों गायब हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्रामीण क्षेत्रों में बी.पी.एल. उपभोक्ताओं को नि:शुल्क घरेलू जल कनेक्शन देने के लिए मिनी माता अमृत नल-जल योजना शुरू की जाएगी । योजना के तहत 5 लाख, 30 हजार ग्रामीण बी.पी.एल. परिवारों को घरेलू कनेक्शन देने के लक्ष के लिए पैसे का प्रावधान किया है । जरा बताईए तो मिनीमाता अमृत नल-जल योजना में कितने लोगों को नल का कनेक्शन दिया गया है ?

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरू रूद्रकुमार) :- बृजमोहन जी, जब मैं अपने बजट भाषण का उत्तर दूंगा तो पूरे आंकड़ों के साथ आपको बताऊंगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बजट में लिख देने से कुछ नहीं होता । आज बजट की स्थिति यह है, इन्होंने बजट तो प्रस्तुत कर दिया है, परन्तु खर्च करने के लिए इनके पास पैसे नहीं हैं । पूरे प्रदेश में विकास के काम अवरूद्ध पड़े हुए हैं । माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपसे ही जानना चाहता हूं कि कर्जमाफी किसको बोलते हैं । 10 साल, 15 साल, 20 साल, 25 साल से जिन लोगों ने कर्ज नहीं पटाया, उनका कर्ज माफ होना चाहिए, तब वे ऋणमुक्त होंगे । इस सरकार ने कर्जमाफी का नया तरीका निकाल लिया कि पिछले वर्ष जिन्होंने कर्ज लिया, उनका कर्ज माफ कर दिया । सुन्दरलाल पटवा जी ने 1990 में कर्ज माफ किया था । उसके बाद 30 साल तक कर्ज माफ नहीं हुआ । जिन्होंने 30 साल में कर्ज लिया, उनके कर्ज माफी के लिए सरकार की कोई योजना नहीं है । कभी बोलते हैं कि उसका 50 प्रतिशत माफ होगा, कभी बोलते हैं कि 25 प्रतिशत माफ होगा । कर्जमाफी के लिए आधी-अधूरी योजना इस सरकार की है । क्या हुआ भैया दो साल के बोनस का ?

श्री रामकुमार यादव :- आप लोगों ने 15 साल में ठूठी बीड़ी भी माफ करे हव तो बतावव तो । 15 साल में किसान के तो एको पैसा माफ नहीं करे हवव ।

डा. शिवकुमार डहरिया :- आप लोगों ने 2008 और 2013 के चुनाव में घोषणा किया था, उसका क्या हुआ ? आप लोगों ने कितना बोनस दिया है, उसको भी बताईए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी आप सरकार में हो, आप जवाब दो, हमको जवाब नहीं देना है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डा. शिवकुमार डहरिया :- आप लोगों ने कितना लोन माफ किया है, यह तो बताओ । हमने किसानों का धान 25 सौ रूपए प्रति क्विंटल में खरीदा, उसमें भी बोल रहे हो, हमने कर्ज माफ किया, उसमें भी बोल रहे हो । कर्जमाफी नहीं होनी चाहिए क्या ? किसानों को 25 सौ रूपया नहीं मिलना चाहिए क्या, वह भी बताओ न ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों का कर्जमाफी भी होनी चाहिए, किसानों को 25 सौ रूपए भी मिलना चाहिए, परन्तु किसानों के साथ धोखाधड़ी नहीं होनी चाहिए । किसानों का पुराना कर्ज माफ होना चाहिए । इन्होंने कहा था कि हम बिजली बिल आधा करेंगे । 400 यूनिट का बिजली बिल आधा कर दिया, बाकी का नहीं किया । घर-घर रोजगार, हर घर रोजगार का नारा दिया, 10 लाख बेरोजगारों को 25 सौ रूपए दिये जाएंगे । एक युवा को भी रोजगार नहीं दिया गया । मैं कांग्रेस के घोषणा-पत्र की बात कर रहा हूं । यूनिवर्सल हैल्थ कार्ड का आजतक पता नहीं है । शिक्षा का अधिकार, पोस्ट ग्रेजुएट तक नि:शुल्क शिक्षा दी जाएगी, उसके लिए कोई व्यवस्था नहीं की गई है । ग्रामीण आवास का अधिकार, जरा बता दो भईया । पांच सदस्यीय परिवार को घर और बाड़ी हेतु जमीन दी जायेगी । एक को भी जमीन दी गई है क्या ? शहरी आवासहीन परिवारों को दो कमरे का मकान दिया जायेगा, सरकार ने कोई योजना बनाई है ? जो केन्द्र सरकार की योजना है, उसको भी लागू नहीं कर पा रहे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ी दुर्भाग्यजनक बात तो यह है कि आप बुजुर्गों के साथ वृद्धों के साथ धोखाधड़ी कर रहे हैं, विधवाओं के साथ आप धोखाधड़ी कर रहे हैं, विकलांगों के साथ धोखाधड़ी कर रहे हैं । आपने कहा था कि वृद्धों को, 60 साल वालों को 1000 रूपये पेंशन दी जायेगी, 75 साल वालों को 1500 रूपये पेंशन दी जायेगी, विधवाओं को 1000 रूपये पेंशन दी जायेगी, जो दिव्यांग है, उनको 1500 रूपये पेंशन दी जायेगी । कम से कम एक ऐसा वंचित वर्ग है, उस वंचित वर्ग के साथ तो अन्याय मत करिये ? उसके लिए आपने इस बजट में कुछ नहीं कहा है । आपने घोषणा पत्र में कहा है कि महिला स्व-सहायता समूहों का ऋण माफ किया जायेगा । माफ कब करोगे ? यह कोई पैसा वाले हैं, यह सब गांव की बेचारी गरीब महिलायें हैं, इनका ऋण माफ होना चाहिये । माननीय अध्यक्ष महोदय, फुड पार्क खोलने की बात की थी । 200 ब्लॉक में फुड पार्क खोलेंगे, एक भी फुड पार्क नहीं खोला है, कामधेनु सुरक्षा केन्द्र की बात की, गौशालों की बात की थी, अब ये नरवा, गरूवा, घुरवा के नाम से गायों के साथ में क्या हो रहा है ? कितना गरूवा वहां पर मर रहे हैं, उनके लिए चारे की व्यवस्था नहीं है, इसके बारे में हमको विचार करने की जरूरत है । माननीय अध्यक्ष महोदय, 1 लाख रिक्त पदों पर भर्ती की जायेगी । कोई रिक्त पदों पर भर्ती नहीं की जा रही है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके इशारे को समझ रहा हूँ । मैं आपसे इसी बात का आग्रह करना चाहूंगा कि इन्होंने बहुत बड़ी बात की थी कि किसानों को एक हजार रूपये पेंशन दी जायेगी, यदि 60 साल से ज्यादा उम्र के होंगे । किसानों के पेंशन का क्या हुआ ? वह तो 6 हजार रूपये दे रहे हैं, आपने एक हजार रूपये

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

महीने देने की बात की थी, 75 साल वालों को 1500 रूपये देने की बात की थी, परंतु उन्होंने आज तक नहीं दिया । जो उत्कृष्ट खिलाड़ी हैं, उनको नौकरी देने की बात की थी, आज तक उत्कृष्ट खिलाड़ी को नौकरी नहीं दी गई है । आपने कहा था कि एक साल में 1 लाख चिकित्सक भर्ती किये जायेंगे, 200 विशेषज्ञ डॉक्टर भर्ती किये जायेंगे, परंतु आज तक एक भी डॉक्टर की भर्ती नहीं हुई है, पूरा छत्तीसगढ़ परेशान है ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, जगदलपुर जैसे जगह पर कम डॉक्टर हैं, लेकिन बीजापुर जैसे जगहों पर देख लो तो वहां बड़े-बड़े विशेषज्ञ डॉक्टर भर्ती हो गये हैं । आपको कुछ पता नहीं है । डॉक्टर को कुछ पता नहीं है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मेरे को भी पता नहीं है, डॉक्टर को भी पता नहीं है। खाली इनको पता है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, 25 मिनट से आपको ज्यादा हो गये हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, 15 मिनट हुआ है । माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो बजट है, यह केवल जगलरी है, आंकड़ों का खेल है, बार-बार इस सदन में चर्चा होती है, बृजमोहन जी स्काईवॉक का क्या हुआ...।

श्री अमरजीत भगत :- स्काईवॉक की चर्चा मत करिये, क्योंकि राजेश मूणत अब नहीं रहे । उनके बारे में क्या चर्चा करना ।

श्री सौरभ सिंह :- अमरजीत जी, टी.वी. में दिल्ली से कुछ-कुछ चल रहा है । उसको देख लीजिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह किंकर्तव्यमुढ़ सरकार है कि सवा साल में यह निर्णय नहीं कर पाई है कि स्काईवॉक का क्या करना है, सबसे ज्यादा दुर्भाग्यजनक बात यह है । मैं भी रायपुर का एम.एल.ए. हूँ । उस कमेटी में तीनों एम.एल.ए. को रखा गया, मुझे नहीं रखा गया ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- रखे हैं, आप आते नहीं है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मंत्री जी, गलतबयानी मत करो । मेरे पास में सर्कुलर है । उस कमेटी में मुझे नहीं रखा गया है, रखने की आवश्यकता भी नहीं है।

श्री अमरजीत भगत :- जान रहे थे, जो नये नार्म्स आ रहे हैं, उसको आप तोड़वा देते ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसा है, तोड़वाने की हिम्मत आपमें नहीं है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- विधान सभा के प्रश्न का उत्तर अभी आ चुका है । एक और आने वाला है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- तोड़ने की आवश्यकता नहीं है । मैं इस सदन में सुझाव देता हूँ । अगर आप स्काईवॉक को चलने के लिए नहीं बनाना चाहते हैं तो उस स्काईवॉक के ऊपर में छोटी-छोटी दुकाने बना दीजिए । दुकानों में लोग जायेंगे, खरीदी करेंगे, उसका उपयोग हो जायेगा ।

श्री अमरजीत भगत :- स्काईवॉक में दुकान आप लोग कहां-कहां देखे हैं । स्काईवॉक में आज तक दुकान नहीं देखे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- भैय्या, दिल्ली में स्ट्रीट मार्केट चले जाओ, जितने अंडरपास बने हैं, उसमें दुकानें लगती हैं। आप बंबई चले जाओ।

श्री विकास उपाध्याय :- स्काई वॉक का पैसा जनता और सरकार का पैसा है, हमको उसका दुख है, इसलिए हम तोड़ने का निर्णय नहीं ले रहे हैं। स्काई वॉक, एक्सप्रेस-वे बनाकर आपने जनता के पैसे का दुरूपयोग किया, हम उसका दुरूपयोग नहीं करना चाहते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- क्या करोगे, निर्णय तो करो।

श्री ननकीराम कंवर :- सरकार में ताकत है तो कार्रवाई करो ना। कौन रोका है? जो गलत किया है उसे जेल भेजो।

श्री विकास उपाध्याय :- यह जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा है, इसे देखकर दुख होता है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ननकीराम जी, आप तो अपने अधिकारियों के लिए लिख-लिखकर देते थे कि इस पर कार्रवाई कर दो लेकिन आपकी सरकार में आप मंत्री थे और सिपाही पर कार्रवाई नहीं होती थी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ये सरकार नहीं है, ये चू-चू का मुरब्‍बा है। यहां कोई निर्णय नहीं होता है। ये चोचोबोरो है।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, ये चू-चू का मुरब्‍बा क्या होता है?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, ये चू-चू, चू-चू को निकाल दो। अध्यक्ष जी, थोड़ा डांट दो क्योंकि इतने वरिष्ठ विधायक हैं, विद्वान व्यक्ति हैं और चू-चू-चू-चू बोलते हैं। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सवा साल में सरकार कुछ नहीं कर पाई। आप उसको बनाना है तो बनाओ, तोड़ना है तो तोड़ो लेकिन उससे पूरा रायपुर परेशान है। कोई सरकार सवा साल में निर्णय नहीं ले पाती ऐसी सरकार को हम क्या कहेंगे?

श्री विकास उपाध्याय :- इतने दिन रायपुर के लोग परेशान थे आपको पता नहीं लगा और अभी तो 15 महीने ही हुए हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सवा साल में नगरीय निकायों में इतना काम हुआ है जितना 15 सालों में नहीं हुआ इसीलिए नगरीय निकाय की जनता ने हमको जनादेश दिया है कि हमने अच्छा काम किया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, क्या हुआ कि एक्सप्रेस हाईवे को सवा साल में क्यों पूरा नहीं कर रहे हैं? ये बहुत अजीब बात है। जांच करा दो, सस्पेंड कर दो, कोई काम पूरा नहीं हुआ है।

श्री विकास उपाध्याय :- लोगों की जान को खतरे में डाल दें? एक्सप्रेस वे की गुणवत्ता को देखा है? जो दोषी हैं, जिन्होंने नियम को ताक पर रखकर काम किया उनके बारे में तो आप नहीं बोलते।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, सवा साल से खाली जांच चल रही है। अरे भाई कार्रवाई करो, निर्माण करो, शहर की जनता को सुविधा पहुंचाओ। अध्यक्ष महोदय, आप भी रायपुर में रहते हैं आज शहर की सबसे बड़ी कोई समस्या है तो वह यातायात की समस्या है।

श्री देवेन्द्र यादव :- अध्यक्ष महोदय, हम लोग रात भर जागकर तैयारी करके आये हैं, हम लोगों को बोलने का अवसर नहीं मिलेगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपका समय अध्यक्ष जी के पास है, ये नहीं ले रहे हैं। ये अध्यक्ष जी से समय लिये हैं। माननीय सदस्य, अध्यक्ष जी से समय लिये हैं, आपका समय अध्यक्ष जी के पास है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तब मूणत जी से पटती नहीं थी, इसलिए मूणत जी का पूरा खुन्नश निकाल रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो इस सदन में इस बात का भी विरोध करना चाहता हूं कि सरकार के पास पैसे नहीं हैं तो क्या जरूरत है कि नई राजधानी में आप मुख्यमंत्री और मंत्रियों के निवास बनायें। अभी आप लोग मंत्रालय कितने दिन जाते हो, जरा बताओ तो? अभी रायपुर में मकान हैं, रायपुर में लोग रह रहे हैं, जबरदस्ती सैकड़ों करोड़ रूपये वहां खर्च किये जा रहे हैं।

श्री विकास उपाध्याय :- छः हजार करोड़ रूपये तो आप लोगों ने खर्च किया है।

श्री रामकुमार यादव :- बिजली लगा दे हो बरत रथे, कोनो रहय नहीं। पहिली ले ओ खंभा लगा देह, लाईट लगा दे ह, बिजली लगा दे ह।

श्री देवेन्द्र यादव :- हम लोग बसाहट को बढ़ाने का काम कर रहे हैं। इन्होंने केवल कमीशन के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया। हम तो वहां बसाने के लिए काम कर रहे हैं।

श्री विकास उपाध्याय :- हम तो वहां बस्ती बसाने की सोच रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, पहले रमन सिंह जी इनकी बात बिल्कुल नहीं सुनते थे, अभी बोलने से क्या होगा? जनता का छः हजार करोड़ रूपये लगा है उसका उपयोग करना है या नहीं करना है? पहले तो डॉ. रमन सिंह आपकी एक बात नहीं सुनते थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कवासी जी, मंत्री बने 14 महीने हो गये ना। चौदह बार भी मंत्रालय गये हो ?

श्री कवासी लखमा :- गया हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- हमारे लोग बजट पर बोलना चाहते हैं, उनका समय जाते जा रहा है। मेरा निवेदन है।

अध्यक्ष महोदय :- जो डिस्टर्ब करेगा उसे समय नहीं मिलेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, मेरा कहना है कि अभी आप लोगों ने विधायकों का भी स्थान बदल दिया। छेरीखेड़ी जो विधायकों के लिए जगह तय की गई थी वह सबसे उपयुक्त है। विधायक महासमुंद से आ सकता है, राजनांदगांव से आ सकता है, रायपुर से जा सकता है लेकिन उसको आप फिर से बीच में ले जा रहे हो। अध्यक्ष महोदय, ये उपयुक्त नहीं है। यदि सरकार के पास अतिरिक्त पैसे हों तो वह खर्च करें पर जब पैसों की कमी है तो सरकार को बचत करना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं इस बजट का विरोध करता हूं। ये बजट खाली आंकड़ों का खेल है, खाली जगलरी है। इसमें पूंजीगत व्यय बहुत कम है, इसमें राजस्व व्यय ज्यादा है और इससे छत्तीसगढ़ का विकास नहीं होने वाला है, ये दिशाहीन बजट है इसलिए मैं इसका विरोध करता हूं। आपने समय दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

श्री विनोद सेवलाल चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, टोके नई हो, ओखर सेती थोड़ा ज्यादा समय दे देहू।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं-नहीं। आप बात करिये।

श्री विनोद सेवनलाल चंद्राकर (महासमुंद) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी के 2020-21 के बजट के समर्थन में खड़े होय हों। जब 2018 में विधानसभा चुनाव होत रिहिस ता हमर आज केबिनेट में बैठे हुए मंत्री मन हा हमर कांग्रेस के नेता मन हा, जगह-जगह घूम के घोषणा पत्र तैयार करत रिहिस अऊ उही घोषणा ला अमल करते हुए आज उही मा काम करत हे। आज भी जो बजट तैयार होय हाबे, ओ बजट हा आम आदमी से राय ले के बजट तैयार होय हे। सर्वे भवन्तु सुखिन: । आदरणीय मुख्यमंत्री जी हा, अपन बजट भाषण ला, इहि शब्द के साथ शुरू करे रिहिस। ये बजट में हमन देखेन की गरीब मन के उत्थान के बात होत हे, सुपोषण अभियान बर 766 करोड़ रूपया के प्रावधान रखे गेहे। चूंकि अभी हमर अजय भैया, धर्मजीत भैया, मोहन भैया बतात रिहिस कि 75 प्रतिशत आबादी गांव में रथे। ओ 75 प्रतिशत आबादी के उत्थान बर आर राजीव गांधी न्याय योजना चलाथे। जेखर बर 5100 करोड़ रूपया प्रावधान करे गेहे। हमन बहुत अकन बात सुने हन। बोलत रिहिस कि आप कर्ज ले रेहेव। ता हमन कर्ज काबर लेवथन, हमन कर्ज हमर आम अंतिम व्यक्ति के उत्थान बर लेवथन। हमर किसान भाई मन के उत्थान बर लेवथन। आज अगर 75 प्रतिशत आबादी गांव में रथे तो ओमे किसान रथे, एक गरीब रथे। ओमन ला सुपोषित करे बर, माता मन ला सुपोषित करे बर, लईका मन ला सुपोषित करे बर अऊ किसान मन के उत्थान करे बर उधार लेवथन। दाना-दाना धान खरीदथन। हमर नारायण भैया कहात रिहिस कि विजन नई दिखत हे। स्पष्ट विजन हे कि सर्वहारा वर्ग के उत्थान के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

लिये ये बजट आए हुए हे। आदरणीय हमर मुख्यमंत्री महोदय हा, नरवा, गरवा, घुरूवा, बाड़ी बर 1603 करोड़ के प्रावधान करे हे। ये दिखावा ओला नई होय, कुछ दल मन हा गौमाता के सेवक बन के कैसे दादागिरी करथे, ओ काखरो से छिपे नई हे। पेपर के माध्यम से रोज सुनत रथन, लेकिन हमर मुख्यमंत्री महोदय, हा, आज गौमाता के सेवा करे बर, गौमाता के रक्षा करे बर एक ठन गौठान बनाय के फैसला ले हे। जेखर से हमर गौमाता मन के रक्षा होवत हे, अऊ ओखर से हमर जो आम जनजाति मन ला आम व्यक्ति मन ला, ओखर से फायदा होने वाला हे। जगह-जगह पानी के जो समस्या आवत हे, हम अगर पानी के संरक्षण नई करबो हमर 80 प्रतिशत पानी हा बह जथे। समुद्र में जा के बह जथे। ओला संरक्षित करे बर नरवा के प्रोग्राम रखे गेहे। महोदय, ये छोटे मोटे प्रोग्राम नई होय। अगर येखर ऊपर हम लगातार काम करते रबो ता छत्तीसगढ़ हा विश्व में एक आईकान रही, जेमे पानी संरक्षण के काम होत हे करके। सार्व भौम पी.डी.एस. के बात करबो, ऐखर पहली के सरकार ह, चुनाव के पहली 65 लाख कार्ड बनाथे। अऊ जैसे चुनाव निपटथे, 22 लाख कार्ड में आ जथे। आज हमर मुख्यमंत्री महोदय, हा पी.डी.एस. के माध्यम से आम व्यक्ति तक चावल पहुंचावत हाबे, अऊ 10 रूपये किलों में तलोक चावल हमन ह, ए.पी.एल. कार्डधारी मन ला देवत हन। कृषक जीवन ज्योति योजना बर 2,300 करोड़ रूपया के प्रावधान करे गेहे। ओमे पांच लाख छब्बीस हजार किसान लाभान्वित होत हे। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, एखर पहली हमन देखन, रबी फसल में जतका हमन कमातेन नहीं ओतका ले लगभग बरोबर के बिजली बिल आ जावय। ये बहुत बड़े योजना हरे। किसान हित में ये फैसला हरे। मैं वनोपज के बार करत हों, ओमे 50 करोड़ रूपया के प्रावधान करे गेहे। एखर पहली जब मोदी सरकार जब आईस ता कुसली लाख अऊ रंगिनी लाख में सौ सौ रूपया के कमी कर दिस। लेकिन छत्तीसगढ़ के सरकार, भूपेश बघेल जी के सरकार हा समर्थन मूल्य मन में वृद्धि करिस। वनोपज से जेखर हमर वनवासी भाई मन के आर्थिक उत्थान होने वाला हे। 2500 रूपया के पत्ता ला 4 हजार रूपया मा खरीदत हे। 15 लाख तेंदूपत्ता के संग्राहक मन जेखर 15 लाख अगर एक परिवार में लेबे ता 8 लाख आदिवासी वनवासी भाई मन के उत्थान होत हे। मैं एक अऊ निवेदन करत हों। अभी प्रशिक्षण चलत हावय। जेमे अनावश्यक रूप से वही काम ला करे बर सिखाए जथे जे काम बर ओ मन हा परम्परागत रूप से सक्षम हावए। जेकर ओला प्रशिक्षण दे के जरूरत नई हावए। आज करोड़ों रूपया के व्यर्थ में बहाए जावत हे, ऐला बंद किया जाये। अउ पत्ता तोड़ाई के समय फड़ प्रभारी के नियुक्ति करथे जेकर कोई औचित्य नहीं हे, ओ मन कहीं पर देखे ला नई जाये। यहू ला बंद करे जाए।

अध्यक्ष महोदय, मैं आदरणीय मुख्यमंत्री महोदय के डॉ. खूबंचद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना के लिए भी धन्यवाद् देना चाहत हों कि ओमे 550 करोड़ के प्रावधान करे गे हे। जेमे हमर जो बी.पी.एल. के परिवार हावए, ओकर बर 5 लाख रूपये के चिकित्सा सहायता मिलही अउ ए.पी.एल. परिवार बर तको 50 हजार रूपये रखे गे हावए।

Uncorrected and unedited/Not for Publication Thursday, March 05, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आरणीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री विशेष सहायता स्वास्थ्य सहायता योजना बहुत बड़े योजना हे। कई झन के घर हा इलाज करा-करा के बर्बाद हो जथे। ओकर मन के थोड़ा सा उत्थान हो जही। अगर ये पइसा मिल जही तो। मैं दो मिनट में अपन बात समाप्त करत हौं। में अपन क्षेत्र के बात रख लेथो बस। महासमुंद विधान सभा में नवीन कृषि महाविद्यालय के एक भवन के आवश्यकता हे, ओला भी थोड़ा से ध्यान दे देतेव। एक चिरको में कॉलेज खुले हावए। जेमे अभी भी भवनविहीन हावए, लगभग अभी 300 छात्र पढ़े बर जावत हे। ओकर व्यवस्था हो जतिस अउ बरनाबजर लाफिनखुर्द में एक पुल के निर्माण होना हे, ओकर भी प्रावधान करवा देतेव। साथ मोर क्षेत्र में बहुत अकन रोड के स्वीकृति मिल हे अउ नहर नाली के स्वीकृति मिले हे, ओकर बर बहुत-बहुत धन्यवाद् देवत हों। ये बजट के समर्थन में अपन बात रखेव। आप मोला मौका देव, ओकर बर धन्यवाद्।

श्री इन्द्रशाह मण्डावी (मोहला-मानपुर) :- आरणीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा बजट प्रस्तुत किया गया है। मैं उसका समर्थन करता हूँ । आज मैं सिर्फ अपने क्षेत्र की बात करूंगा। मेरे क्षेत्र में बहुत सारी समस्याएं हैं और मेरा मुख्य उद्देश्य यह है कि चार जो मोटो बनाकर चल रहा हूँ स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क और सिंचाई। शिक्षा में हमारे क्षेत्र में दो कॉलेज हैं उन दो कॉलेज में भवन नहीं है और वहां पर बैठने की व्यवस्था नहीं है, जिससे बहुत ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता है। वह कॉलेज औंधी और मानपुर है। वहां हॉस्टल की भी व्यवस्था नहीं है। माननीय मुख्यमंत्री जी और समस्त हमारे आदणीय मंत्रिगणों से निवेदन करना चाहता हूँ कि वहां हॉस्टल की समस्या दूर करें।

अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरा अपने क्षेत्र की सड़कों के संदर्भ में कहना चाहूंगा। मेरे क्षेत्र में अभी भी 72 साल हो गये, उसके बाद भी आज तक सड़क की व्यवस्था बहुत सारे गांवों में नहीं है, कनेक्टिविटी का साधन नहीं है और जिससे बहुत ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। मानपुर ब्लॉक में अबूझमाड़ से भी बदतर स्थिति है। वैसे ही सिंचाई में भी हमारे क्षेत्र में ...।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने क्षेत्र की समस्याओं को अलग-अलग रख लीजिए। जब अनुदान मांगों पर चर्चा होगी, उस समय चर्चा करियेगा। द्वारिकाधीश यादव जी।

श्री इन्द्रशाह मण्डावी:- अध्यक्ष महोदय, सभी तो बजट पर चर्चा कर रहे हैं। मैं अपने क्षेत्र की समस्या को रख रहा हूॅ।

अध्यक्ष महोदय :- आपको 10 दिनों तक अपने क्षेत्र की समस्याओं को अलग-अलग रखने का समय मिलेगा।

श्री इन्द्रशाह मण्डावी:- माननीय अध्यक्ष महोदय, जी। बजट में मेरे क्षेत्र में मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लिनिक खालेने की योजना है, वह ठीक है जहां पर हमको पूरी सहायता मिल रही है डॉक्टर भी जा रहे हैं मैं इसका समर्थन करता हूँ और जो धान को 2500 रूपये समर्थन मूल्य देने का वादा किये थे और 5 हजार, 300 करोड़ रूपये बजट में रखे हैं, जो दो किस्तों में देंगे, मैं उसका भी समर्थन करता हूँ जिसमें

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हमारे क्षेत्र के किसानों को फायदा मिलेगा। वहां पर सभी लोग भारी खुश है कि हमको पैसा मिल रहा है। आपके मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री द्वारिकाधीश यादव (खल्लारी) :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा प्रस्तुत वर्ष 2020-21 के बजट के समर्थन में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा प्रस्तुत 2020-21 का बजट बहुत ही सराहनीय बजट है। किसानों की कर्ज माफी के बाद इस बजट में राजीव गांधी न्याय योजना के तहत किसानों के लिए जो 5 हजार से ऊपर का प्रावधान रखा गया है जिससे किसान बहुत गदगद है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी और सभी मंत्रियों को धन्यवाद देना चाहता हूं। एक तरफ किसानों के लिए व्यापक रूप से उनके हित में कर्जमाफी की गई है और 2500 रुपये क्विंटल में धान खरीदी की गई है। इसके पूर्व की 15 साल की सरकार में छत्तीसगढ़ की उन गरीब माताओं को हॉस्पिटल में अपने बीमार बच्चे के इलाज कराने के लिए पैसा नहीं हुआ करता था तो उनके पास ऑसू बहाने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। अपनी बुजुर्ग माता के इलाज के लिए जब युवा साथी इलाज के लिए दर-दर भटकते थे, मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहातया योजना के तहत गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए 20 लाख के उपचार हेतु 50 करोड़ का प्रावधान माननीय मुख्यमंत्री जी ने बजट में किया है। इसके कारण ग्रामीण अंचल में गरीब भाईयों में खुशी व्याप्त है। 2 वर्ष की सेवा पूर्ण कर चुके शिक्षाकर्मियों का 1 जुलाई 2020 से संविलियन किया जायेगा, जिससे शिक्षा कर्मी भाईयों में भी काफी खुशी व्याप्त है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को, सिंचाई मंत्री जी को और सभी माननीय मंत्रियों को मैं बहुत धन्यवाद देता हूं कि मेरे क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा के लिए भी ध्यान दिये हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती छन्नी चंदू साहू (खुज्जी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत 2020-21 के बजट के समर्थन में बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि वास्तविक भारत गावों में बसता है। यदि गांव नहीं बचे तो देश भी नहीं बचेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात आज भी सार्थक प्रतीत हो रही है कि छत्तीसगढ़ में 75 फीसदी आबादी गावों में निवास करती है, उसी दिशा में हमारी सरकार तेजी से काम कर रही है। मैं बताना चाहूंगी कि हम सबके लिए एक महत्वपूर्ण योजना नरवा, गरवा, घुरूवा, बारी कार्यक्रम के तहत 912 नालों पर नरवा उपचार के लिए 20 हजार 810 काम स्वीकृत किये गये हैं। हम सब जनप्रतिनिधियों के लिए नरवा एक महत्वपूर्ण योजना है। हम सब हमारे क्षेत्रों में जाते हैं तो सबसे बड़ी समस्या पानी के लिए आती है, चाहे पेयजल के लिए हो या निस्तारी के लिए हो। जल स्तर तेजी से नीचे गिर रहा है। नरवा योजना के तहत हम नरवा को बंधान करेंगे। अगर नरवा में पानी रूकेगा तो निश्चित रूप से जमीन का जल स्तर ऊपर उठेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्य के 1 लाख 31 हजार शिक्षाकर्मियों का संविलियन हो चुका है। शेष बचे 16 हजार शिक्षाकर्मियों में से 2 वर्ष की सेवा पूर्ण कर चुके शिक्षाकर्मियों को 1 जुलाई 2020 से संविलियन किया जायेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कहा गया है कि- ''गुरू गोविन्द दोऊ खड़े और काके लागूं पांय, बलिहारी गुरू आपने, गोविंद दियो बताय।'' गुरू से बड़ा कोई नहीं होता है। मैं जिस जगह में खड़ी हूं, गुरू की बदौलत से बोलने के काबिल बनी हूं और उसी शिक्षाकर्मियों को हमारी सरकार ने संविलियन किया है। हमारी सरकार को शिक्षाकर्मियों की दुआ मिलेगी।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्रीमती छन्नी चंदू साहू :-माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगी कि सिंचाई व्यवस्था को देखते हुए नहरों की मरम्मत एवं लाईनिंग कार्य के लिए 20 करोड़ रुपये की सौगात खुज्जी विधानसभा में मिली है। मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना के तहत गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए 20 लाख तक के व्यय हेतु 50 करोड़ का प्रावधान है। कई गरीब परिवार ऐसे रहते हैं जो गंभीर बीमारी हो जाने के बाद उसका इलाज कराने के लिए उनको अपनी जमीन एवं गहनों को बेचना पड़ता है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगी कि ऐसे बीमारियों के लिए इलाज के लिए बजट में 50 करोड़ का प्रावधान किया गया है। अध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटी सी बात बोलना चाहती हूं -

हरे भरे चमन को, मुरझाकर सूख जाते देखा,
आबाद घर को श्मसान में बदलते देखा,
माली ने जो बाग लगाया,
तुम क्यों उसे उजाड़ते हो,
अमृत से न सींच सके,
क्यों जहर की वर्षा करते हो। (मेजों की थपथपाहट)

जो जहर का प्याला, पिओ तुम अमृत की प्याली, सदा खिलते रहे हमारी मुख्यंमत्री जी की सुंदर फुलवारी। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का मौका दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शिवरतन शर्मा :- आदरणीया छन्नी साहू, जी वह जहर की प्याली बांटने वाले उधर बांटे हैं । (हंसी)

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- वह उधर से आता है, वह उधर से ही निकलता है इसीलिये वह बोल रही हैं ।

श्री रामकुमार यादव (चंद्रपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम आपने मुझे बोलने का अवसर दिया है इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं वर्ष 2020-21 के बजट के समर्थन में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं । जब मुख्यमंत्री जी बजट के बारे में बोलत

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रहिस हे, हम सब सुनत रहेन ता महूं चेत लगा के सुनत रहेओं । मैं सुनत रहेओं, मैं सोचत रहेओं अऊ समर्थन एकर लिये भी मैं खड़े हंओं कि मैं ए बजट में गुनेओं अऊ देखेओं कि ऐमा गरीब के लिये कॉर्ड में व्यवस्था बनाए गे हावए । वो गांव में रहने वाला, झोपड़पट्टी में रहने वाला एक आस लगा के रखे हे ओकर लिये एमा का प्रावधान रखे गिस हे ? ओ शिक्षक ओकर लिये का व्यवस्था बनाकर रखे गे हे ? आज बजट में ए जम्मो व्यवस्था ला देखेन ता मोला आज रविदास जी के ओ बात याद आवत हे कि - ऐसा राज चाहूं मैं मिले सबन को अन्न, छोट-बड़े सब बसे रविदास प्रसंग ।

मानननीय अध्यक्ष महोदय, आज 2 करोड़ 80 लाख इस जनता की भावना के अनुरूप यह बजट बना है । आज गांव-गांव में जाकर फट्टका फूटत हे एखर खातिर कि आज किसान खुशहाल हे एखर खातिर आज 2500 रूपया समर्थन मूल्य है । माननीय अध्यक्ष महोदय, हम देखत रहेन, सुनत रहेन कि सही चीज ला भी विरोध करना । यह जन्मसिद्ध अधिकार है । कोई सही काम करत हे तेकरो लिये खड़ा होना चाहिए । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी ला धन्यवाद देना चाहूं कि आज इस प्रकार के व्यवस्था बनाये हे कि नरवा, गरूआ, घुरवा, बाड़ी । आज ऐमन ओकर मजाक बनाथे। मैं ओ दिन ला याद करथओं जब हमन नान-नान लइका रहेन तो हमर दाई मन जब गांव गौतिर जावय तो उंहा ले आतिस तो ओमन के ओटि मन भरे रहए । ओमा तिंवरा भाजी, राहेर जम्मो ला धरे रहेए, हमन कूदत-कूदत जावन, दई बेटा फर-फर ला खावे, भाजी ला झन खावय कहए लेकिन एमन के 15 साल के सरकार में ओ भाजी, कोदो, तिंवरा, राहेर सबला नांद दे रिहिस हावए लेकिन धन्यवाद दिंहा माननीय मुख्यमंत्री जी ला, जतका केबिनेट मन ला कि आज फिर से ये छत्तीसगढ़ हरियर भाजी खाय के लिये फिर से योजना बनाए हे । (मेजों की थपथपाहट) आज इस अवसर पर मैं कहना चाहत हंओं- जल में रहकर मीन प्यासी अऊ मोला सुन-सुन आवय हांसी । छत्तीसगढ़ ला धान के कटोरा कहे जावय लेकिन यहां पर किसान दुखी रिहिस हे जिस प्रकार से अगर मछली हा समुद्र के पानी मा हे अऊ मैं प्यासा हंओं कइही ता हांसही उसी प्रकार ए छत्तीसगढ़ के भोला-भाला किसान इंहां पर दुखी रिहिस हे लेकिन आज कर्जा माफी हुईस, एमन कर्जा माफी, कर्जा माफी कहिथे ऐमन 15 साल में हमर छत्तीसगढ़ी में कहिथे कि एक नया के एमन ठूठी-बिड़ही अगर 15 साल में माफ करे होही तो रामकुमार यादव तुमन ला मान जाही, अंतिम छोर के व्यक्ति हर हे । (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, आज अतेक कन कर्जा माफी होय हे, मैं तुंहरे जिला के हंओं, तुंहरे तीर के हंओ मोला थोकन तो बोले बर अऊ समय दे देवअ। मैं आज हमर छत्तीसगढ़ के सरकार ला धन्यवाद दिंहा यहां पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग पहिली बार यहां पर छत्तीसगढ़ में अन्य पिछड़ा वर्ग जेमन के 48 परसेंट से ऊपर एमन के जनसंख्या है अर्थात् 2 करोड़ 80 लाख भी माना जाये तो 1 करोड पिछड़ा वर्ग के ऐमा रहिथे । आज ओमन के लिये व्यवस्था पहली बार बने हे । जंगल के भीतरी में जाहा अऊ आदिवासी समाज जो गरीब हे ओकर लिये हमन ला तकलीफ जरूर है, ओमन बर योजना बनिस हमन ला खुशी लागथे लेकिन ओकरे

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

तीर में एक पिछड़ा वर्ग चाहे साहू हो, बरेठ हो, चंद्रा हो, धोबी हो, निषाद हो ओ दुखी रहिस हे, मैं धन्यवाद दिहूं जेन आज ओमन के लिये...।

श्री शिवरतन शर्मा :- यादव जी, पिछड़ा वर्ग ला सबले बड़े आरक्षण के नाम पर धोखा देवईया ए सरकार हे ता इही सरकार हे । 27 परसेंट आरक्षण घोषणा करके स्वागत करइस अऊ विधानसभा में पास नइ करईस ओकर चलते ओहा स्टे होगे । (व्यवधान)

श्री चंद्रदेव प्रसाद राय :- शर्मा जी, सतनामी समाज का अनुसूचित जाति का 4 परसेंट काटा था, आपने उस दिन याद नहीं किया ।

श्री रामकुमार यादव :- महाराज, मोला माननीय अध्यक्ष महोदय हा बोले बर समय दे देवए ता मैं ओला भी गोठिया लुहूं । ए पहली सरकार हे जहां मंडल कमीशन लागू करने वाला पिछड़ा वर्ग के कोई हित मा हे ता छत्तीसगढ़ के भूपेश बघेल सरकार हर हे । आज ए हा मंडल कमीशन लागू करने वाला है, आज जनसंख्या के अनुपात में आज वैसे तो पिछड़ा वर्ग ला 48 परसेंट आरक्षण मिलना चाहिए लेकिन कम से कम 27 परसेंट आरक्षण बर कोई व्यवस्था बनाये हे तो श्री भूपेश बघेल जी के सरकार है आज इस अवसर पर मैं कहना चाहत हंऔं कि आज पिछड़ा वर्ग ला, गरीब लइका मन जम्मू काश्मीर जाथे कमाय बर तो अपन लोग लइका ला कहां छोड़ कथे, लेकिन आज पिछड़ा वर्ग के हास्टल बनही तो पिछड़ा वर्ग के लइका मन भी हास्टल मा पढ़ लिखकर डॉक्टर, इंजीनियर अउ कलेक्टर बनही । एखर लिए बजट के समर्थन मा मैं खड़े हौं । महोदय, मैं मोर क्षेत्र के बार लो गोठियाहूं । अड़भार मा नवीन महाविद्यालय खोल दिया जाए, काबर कि दूर के क्षेत्र हय, गरिबहा क्षेत्र हय । सुखदा मा हाईस्कूल नइ हे, उहां हाईस्कूल खेल दिया जाए, सिरियागढ़ मा नदिया के तीर मा गांव में मरार, माही रहइया हे, उहां हायर सेकेंडरी स्कूल, सिंघीतराई मा एक हायर सेकेंडरी स्कूल, डभरा मा जेन हा जिला ले बड़ दूर पडथै उहां 100 बिस्तर के हास्पीटल अउ मालखरौदा मा 50 बिस्तर के हास्पीटल बर निवेदन करते हुए आप अंतिम छोर के व्यक्ति ला बोले के मउका दे हौ तेखर लिए सरकार ला गाड़ा गाड़ा बधई । अउ जुग जुग जिहा, ए राम कुमार यादव आपसे निवेदन हे, सरकार बहुत आगे जाही, अतका बढ़िया बजट बनाए तेखर बर बहुत बहुत धन्यवाद् ।

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय (बिलाईगढ़) :- माननीय अध्यक्ष जी, आप बोल के मउका दे हव ओखर लिए धन्यवाद । मुख्यमंत्री जी ला बहुत बहुत बधाई देत हौं, वित्तीय वर्ष 2020-21 में अब तक के छत्तीसगढ़ के सबसे संतुलित बजट, छत्तीसगढ़ के कायाकल्प बदल देने वाला, संजीवनी जैसे बजट, पहली बार छत्तीसगढ़ में 19 बरस बाद अतका सुंदर बजट प्रस्तुत करिस हे, मैं ओखर बर मुख्यमंत्री जी ला अउ पूरा सरकार ला साधुवाद देवत हौं । किसान मन के चिंता करे वाला सरकार छत्तीसगढ़ के रहइया के चिंता करे वाला सरकार, यहां के महिला मन के, यहां के युवा मन के, यहां के व्यापारी मन के चिंता करने वाली पहली सरकार है । अध्यक्ष महोदय, मोला बतात हुए हर्ष ज्ञात होते है कि छत्तीसगढ़

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

के किसान की चिंता करने वाली यह पहली सरकार है । सेंट्रल गवर्नमेंट के इतना दबाव कि 2500 रूपए में धान खरीदबे तो तोर चांउर सेंट्रल पूल मा नइ खरीदे जाही । ओखर बार भी माननीय मुख्यमंत्री जी हा छत्तीसगढ़ के जनता ला, छत्तीसगढ़ के किसान ला कहिए कि तुम्हर धान ला हम 2500 रूपया मा खरीदबो अउ ओखर बर राजीव गांधी न्याय योजना के तहत 5100 करोड़ के बजट रखकर ओखर धान ला खरीदी के व्यवस्था करिस । छत्तीसगढ़ में 20-22 साल तक मैं शिक्षक के रूप मा काम करे हौं । अउ ए सरकार हा शिक्षा कर्मी के कलंक जैसे शब्द ला सदा सदा के लिए खतम कर दिस अउ शिक्षा जगत मा सम्मान दिस हे । मैं तहेदिल से सदन के माध्यम से साधुवाद अउ धन्यवाद करत हौं कि छत्तीसगढ़ के 2 करोड़ 70 लाख जनता के तरफ से धन्यवाद ज्ञापित करत हौं । 1 लाख 48 हजार शिक्षक साथी की ओर से मैं माननीय मुख्यमंत्री जी ला, पूरा मंत्रिमंडल ला, विधान सभा अध्यक्ष जी ला अउ आप सब ला साधुवाद करत हौं अउ अंत मा एक लाइन कहत हौं -

गुरूर्बम्हा , गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वर: ।
गुरू: साक्षात परम् ब्रम्ह तस्मै श्री गुरूवै नम: ।

जेन गुरू के सम्मान करथे ओखर तरक्की उन्नति का कोई नइ रोक सकय । जेन गुरू के अपमान करथे ओखर इही हाल होथे । 15साल मा 14 बचे हे, एमन दंश ला झेलत हे, मास्टर मन के शराप हे । मोर विधान सभा मा गिरौदपुरी में गुरूकुल इजुकेशन हब खोले के घोषणा करिस हे, ओखर लिए मुख्यमंत्री जी जा बहुत बहुत धन्यवाद देत हौं । मोर विधान सभा मा भटगांव मा तहसील बनाइए हे, ओखर लिए भी मुख्यमंत्री जी ला धन्यवाद देत हौं । आप ला भी धन्यवाद देत हौं आप मोला माउका दे हौ । बहुत बहुत धन्यवाद, जय सतनाम ।

श्री भुनेश्वर शोभराम बघेल (डोंगरगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वित्तीय वर्ष 2020-21 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा और बजट के समर्थन में खड़ा हुआ हूं । बाबा घासीदास जी को प्रणाम करते हुए मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दूंगा, जिन्होंने गिरौदपुरी धाम में गुरूकुल विद्यालय की घोषणा की है । छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद पहली बार ऐसा लगा कि छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ियों का राज आया है । साथियों हमने 15 सालों में ऐसा मुख्यमंत्री पहली बार देखा जो मुख्यमंत्री भंवरा भी चलाता है, बांटी भी चलाता है और गेड़ी भी खेलता है । जो पूर्व में मुख्यमंत्री थे वे ऐसा कभी नहीं कर पाए थे, गांव में यह चर्चा का विषय है कि पहली बार ऐसा मुख्यमंत्री हम लोगों को मिला है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अउ रैचूली को भूल गये। वो खेल गिनाये, उसमें फुगड़ी और रैचूली को भूल गये।

श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल :- मैं मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दूंगा, जिन्होंने राजीव गांधी किसान न्याय योजना के लिए 5 हजार 100 करोड़ का प्रावधान किया है।

Uncorrected and unedited/Not for Publication Thursday, March 05, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- फुगड़ी तोर बर छोड़े हे।

श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल :- किसानों की समस्या पूर्व सरकार के समय बहुत ही चर्चा का विषय रहता था। मैं जिला पंचायत का सदस्य था। उस समय जब हम राजनांदगांव में धरना प्रदर्शन करते थे तो धारा-144 लगाकर किसानों को जेल में डालने का काम किया। साथियों, उसमें मैं भी 3 दिन तक रहा। ऐसी सरकार को उखाड़ फेंकने का काम हमारे सभी सम्माननीय मतदाताओं ने किया है। साथियों, मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद करूंगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, अभी किसानों को जेल नहीं भेजा जा रहा है, यह हम स्वीकार करते हैं। पर अभी लाठी से पीटा जा रहा है। बस अभी जेल तक नहीं पहुंचे हैं।

श्री कवासी लखमा :- आपके समय में क्या हुआ था?

श्री भुनेश्वर शोभाराम बघेल :- आपके समय में बिना सूचना दिये धारा 144 लगा दी जाती थी और सोये हुए किसानों को घर से ले जाकर जेल में डाल दिया जाता था। इस चीज को आप याद रखें। मैं मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने उद्यानिकी महाविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, खाद्य प्रौद्योगिकी संस्थान, डेयरी डिप्लोमा महाविद्यालय, फिसरिज पॉलिटेक्नीक जैसे उन्होंने सौगात दी, जिसमें युवाओं को मौका मिलेगा। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आदरणीय आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। राजमन बेंजाम।

श्री राजमन बेंजाम (चित्रकोट) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2020 के आय-व्ययक बजट के समर्थन के संबंध में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। दे दिये प्राण मेरे बस्तर के प्राणदायिनी को ऐसा कमाल का बजट है। बस्तर के लिए माननीय ने इतना सोचा, यह मेरे बस्तर का सौभाग्य है। जैसा कि आप सभी जानते हैं सुंदर साल से सजी हुई विधान सभा चित्रकोट से हूं, जिसे छत्तीसगढ़ को सबसे बड़े पर्यटन का रीढ़ माना जाता है। आपके द्वारा बजट 2020 में इसके लिए 300 करोड़ 50 लाख का प्रावधान कर 75 प्रतिशत की जो बढ़ोत्तरी आपने की है, उसकी मैं प्रशंसा करता हूं। महोदय जी, आपने बजट में कला और संस्कृति को जिस तरह से ध्यान में रखकर संग्राहलयों का उन्नयन तथा रामवन पथगमन के निर्माण का जो निर्णय लिया है, यह छत्तीसगढ़ राज्य की संस्कृति को विभूषित करता है। महोदय जी, आपने 16 हजार शिक्षाकर्मियों को शिक्षा विभाग में संविलियन कर 25 वर्ष से आ रही शिक्षाकर्मी प्रथा को पूर्ण रूप से खत्म कर दिया। शिक्षकों के सम्मान में शिक्षा विभाग में संविलियन की जो घोषणाएं कीं, वह एक ऐतिहासिक निर्णय है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप छापा मरवाते हैं। हम प्रदेश संवारते हैं। यह जनता के विश्वास का बजट है। जनता को राहत पहुंचाता बजट है। जो युवा आई.आई.टी. एवं आई.आई.एम. जैसे राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में प्रवेश लेते हैं, उनके प्रशिक्षण का भार उठाने का जो निर्णय आपने लिया है, वह युवा वर्ग के लिए शोचनीय पहल है। इससे हमारे बस्तर के क्षेत्र

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

के युवा आगे बढ़कर नये आयाम को छूएंगे। मेरे बस्तर के आदिवासी का जो चित्र देश के पटल पर अंकित है। गले में मांदर डाले हुए जो मीथक अब तक टुटेगा, अब मेरे बस्तर के युवाओं के हाथ में पेन और गले में स्टेथेरिस्कोप होगा।

अध्यक्ष महोदय :- कृष्णमूर्ति बांधी।

श्री राजमन बेंजाम :- बस्तर की शान में नयी इबादद लिखेंगे। अध्यक्ष महोदय, फूडपार्क की स्थापना होने से किसानों को बड़ी राहत मिलेगी। इससे उनके द्‌वारा उत्पादित सभी चीजों का उचित मूल्य मिल पायेगा तथा रोजगार के अवसर मिलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करिए।

श्री राजमन बेंजाम :- मैं थोड़ा सा बोलूंगा। आधा मिनट लगेगा। बजट में बहनों की सुरक्षा को लेकर आपने जो कदम उठाये, इससे बहनों का आत्मविश्वास लौटता नजर आयेगा। आदरणीय हमारे किसान मुख्यमंत्री जी आपने किसानों को समझा, इसके लिए आपका आभार। राजीव गांधी किसान न्याय योजना का हम स्वागत करते हैं। जय जवान, जय किसान। गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। जय जौहार। इन्हीं वक्तव्यों के साथ मैं समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने विशेष रूप से सभी नये सदस्यों को बोलने का अवसर दिया है। आप लोगों से अनुरोध है कि हमने जो किताब दिया है, उसको थोड़ा-थोड़ा पढ़ा करें। आने वाले दिनों में अनुदान मांगों पर चर्चा होगी। आप उसके लिए भी अध्ययन करके आये। यहां विधायक बनना ही सब कुछ नहीं है। विधायिका का काम सीखना ज्यादा जरूरी है। तो बजट पर बजट की बात करें। कृषि अनुदान की बात पर कृषि की बात करें, सड़क अनुदान पर सड़क की बात करें, यह ज्यादा जरूरी है। श्री नाग, आप बोलिये, फिर बांधी जी बोलेंगे, फिर नेता प्रतिपक्ष।

श्री अनूप नाग (अंतागढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के द्‌वारा विधान सभा में प्रस्तुत किए गए बजट 2020-21 के समर्थन में अपनी बात सदन में रखना चाहता हूं। इस बात की मुझे प्रसन्नता है कि छत्तीसगढ़ के किसान बाहुल्य वाले इस राज्य के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी के द्‌वारा राजीव गांधी किसान न्याय योजना का गठन करे हुए 5,100 करोड़ रूपये का प्रावधान रखा गया है। इस बजट से प्रदेश की जनता में सरकार के प्रति विश्वास का भाव जागृत हुआ है। विश्वास इस बात का कि जनता के बीच जो वादा कर सरकार बनी थी, लगातार उस वादे को पूरा करने में यह सरकार अग्रसर है। पूर्व के वर्षों में हमारी सरकार ने किसानों का ऋण माफ किया है, जिसकी प्रदेश ही नहीं, विदेशों में भी इस सरकार की सराहना की गई है। इस वर्ष के बजट में प्रमुख रूप से शिक्षाकर्मियों के हजारों-हजारों साथियों तथा उनके परिवारों के उम्मीदों को सरकार ने संविलियन के मांग को पूरा करते हुए उनके बीच एक विश्वास पैदा किया है। जो निश्चित ही एक ऐतिहासिक कदम है। जिसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार ज्ञापित करता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मानननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2020-21 के बजट में हमारे कांकेर जिले के मुख्यालय में प्रवाहित दूध नदी में बाढ़ नियंत्रण के लिए रिटेनिंग वाल एवं जिला मुख्यालय में ही 750 सीटर आडिटोरियम के लिए 22 करोड़ रूपये की सौगात दी गई है। जिसके निर्माण से शहर स्वच्छ एवं एक निश्चित स्थान पर शासकीय एवं अशासकीय कार्यक्रम के आयोजनों की सुविधा प्राप्त होगी। अध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में मुझे यह कहते हुए बड़ी प्रसन्नता एवं गर्व हो रहा है कि जिस ऐतिहासिक नरहरदेव हाईस्कूल में पढ़कर कई प्रशासनिक अधिकारी एवं राजनेता हुए तथा वर्तमान हम तीनों विधायक सदस्यों ने अध्ययन किया है, उस संस्था को एक माडल स्कूल के रूप में सरकार ने चिन्हांकित किया है। इसी प्रकार सुर्खियों में रहने वाला अंतागढ़ विधान सभा क्षेत्र जो विकास के नाम से पूर्ववर्ती सरकार ने उपेक्षित कर रखा था, आज हमारी सरकार होने के बाद हमारे सम्माननीय मुख्यमंत्री इस उपेक्षित एवं संवेदनशील क्षेत्र के विकास के लिए बड़े ही सजकता दिखाते हुए विभिन्न विकास कार्यों की सौगात प्रदान की है।

अध्यक्ष महोदय :- नाग जी, आप तो डी.एस.पी थे।

श्री अनूप नाग :- जी।

अध्यक्ष महोदय :- तो आप बिना पढ़े बोलने की आदत डालिये। आज आपको माफ करता हूं।

श्री अनूप नाग :- जी। जिसमें प्रमुख रूप से पी.वी. 112 से देवादा मार्ग नाला पर पुल निर्माण 6 करोड़ रूपये, पी.वी. 44 से पी.वी. 45 अंजाड़ी नाला जो कि ग्रामीणों द्वारा लकड़ी के सहारे लेकर उक्त मार्ग से आवागमन करते थे, उसमें 7 करोड़ के पुल की स्वीकृति देकर दुर्गम अंचल के आदिवासी, वनवासियों को सौगात माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा दी गई है। जिसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूं। इसी प्रकार माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा मेरे विधान सभा क्षेत्र के अति दुर्ग क्षेत्र जैताल, गोडरी कामता तथा मंडागांव, भैंसासुर मार्ग पर 2-2 करोड़ की लागत से पुल के निर्माण के संबंध में जो प्रावधान रखा है, वह निश्चित रूप से मेरे व क्षेत्रवासियों के लिए बड़ी सौगात है। क्योंकि पूर्व में इस क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों के द्वारा केवल वोट की राजनीति करने के लिए क्षेत्रवासियों को आश्वासन का झुनझुना थमाया जाता था। लेकिन माननीय मुख्यमंत्री जी मेरी मांग पर उक्त बहुप्रतीक्षित कार्य को पूर्ण करने के लिए जो प्रावधान किया है, उसके लिए आभार व्यक्त करता हूं। अध्यक्ष महोदय, परलकोट क्षेत्रवासियों के लिए जहां हमारे बंग बंधू निवास करते हैं और बड़े ही आधुनिक पद्धति से उन्नत कृषि का कार्य कर रहे हैं। धान, मक्का एवं हरी सब्जियों का उत्पादन कर आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं। उनके इस पद्धति को हमारे आदिवासी समाज के किसान भी अपनाते हुए आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं।

समय :
3:19 बजे

(सभापति महोदय(श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह) पीठासीन हुए)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय, इस क्षेत्र में कृषि प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना के संबंध में बजट में प्रावधान होने से इसके दूरगामी अच्छे परिणाम आयेंगे, जो कि छत्तीसगढ़ के मुखिया हमारे मुख्यमंत्री जी के किसानों के प्रति अच्छी सोच को दर्शाता है। जिसकी प्रशंसा मेरे क्षेत्रवासियों के द्वारा माननीय मुख्यमंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त कर रहे हैं। और तो और मेरे क्षेत्र के भारतीय जनता पार्टी के लोग भी इस बजट में दिए गए सौगात की प्रशंसा कर रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इस सदन में बोलने के लिए पहली बार मौका मिला, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी (मस्तूरी) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा वर्ष 2020-21 का जो बजट प्रस्तुत किया गया है, मैं उसका विरोध करता हूं । इसलिए विरोध कर रहा हूं कि 2019-20 का जो बजट प्रस्तुत किया गया था, उस बजट में 33 घोषणा में से 20-25 घोषणा का क्रियान्वयन आज भी नहीं हुआ, जनता को उसका कोई लाभ नहीं मिला । यह जो बजट प्रस्तुत किया गया है, वह लगभग 1 लाख करोड़ का है । इसका भी लाभ जनता को नहीं मिलने वाला है । इसलिए लाभ नहीं मिलने वाला है क्योंकि ये पैसा वेतन में बांट दिया जाएगा । राजस्व व्यय है, केवल 1 लाख करोड़ में से 13,800 करोड़ रूपए ही पूंजीगत व्यय हो रहे हैं और जिस राज्य में पूंजीगत व्यय राजस्व के बजट से कम हो, उस राज्य के विकास का भगवान ही मालिक है ।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- बांधी जी, सिर्फ छत्तीसगढ़ ही नहीं, पूरे विश्व का मालिक भगवान ही है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, शिक्षा में प्राईमरी शिक्षा, मीडिल स्कूल की ड्राप आउट संख्या पर बेहतर शिक्षा व्यवस्था छत्तीसगढ़ में बने, उसके लिए इनकी कोई सोच नहीं है और बजट में नहीं दिख रहा है । मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि अनुसूचित जाति, जनजाति के विकास के लिए एक ऐसा बजट होता है, जिस बजट से अनुसूचित जाति के लिए विशेष घटक के भी बजट उनको प्रदान किए जाते हैं । जब बजट आएगा, तब उस पर चर्चा करेंगे, पर इस बजट में अनुसूचित जाति के विकास के लिए, आर्थिक विकास के लिए कोई भी प्रावधान नहीं है, जिससे अनुसूचित जाति के लोगों को फायदा पहुंचे । अनुसूचित जाति के लोग बड़े वर्ग के साथ कांग्रेस के साथ रहते हैं, लेकिन कांग्रेस के लोग सत्ता में आने के बाद अनुसूचित जाति के सर्वांगीण विकास के लिए उसकी नीयत क्या है, यह उनका बजट है इसलिए मैं इस बजट का विरोध करता हूं ।

डा. शिवकुमार डहरिया :- बांधी जी, आरक्षण के परसेंट घटाए वाले पत्र में तोरो दस्तखत रिहीसे का ? 16 प्रतिशत ले 12 प्रतिशत करे में तोरो योगदान रिहिसे।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, आप दोनों अनुसूचित जाति से मंत्री हैं, आपने क्या व्यवस्था की ? आप लोग अनुसूचित जाति को धोखा देने का काम कर रहे हैं, उनके विश्वास के साथ धोखा देने का काम किया है ।

डा. शिवकुमार डहरिया :- 15 साल में अनुसूचित जाति के लोगों के लिए आपने विकास नहीं किया, उसको यह सरकार कर रही है । उनको भाजपा की सरकार ने धोखा दिया है । 16 प्रतिशत आरक्षण को आपने 12 प्रतिशत कर दिया ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, मुझे बोलने का समय दिया जाए, नहीं तो वे जितना बोलेंगे, फिर उतना समय मुझे अतिरिक्त दिया जाए ।

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, आपकी सरकार ने 3 हजार स्कूलों को बंद कर दिया । आप शिक्षा के प्रति कितने गंभीर थे, यह पता चलता है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, मेरे क्षेत्र में मीडिल स्कूल नहीं खोले हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- जिस अनुसूचित जाति की बात करते हो । आदिवासी उपयोजना की पूरी राशि केन्द्र की मोदी जी की सरकार ने बंद कर दी है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, आप भी बंद कर दीजिए न, क्या फर्क पड़ता है । सभापति महोदय, जिस गिरौधपुरी की कल्पना को भारतीय जनता पार्टी ने, डॉ. रमन सिंह जी ने किया और वहां के अधोसंरचना का निर्माण किया, आज उसकी व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- बांधी जी, अभी आप मेले में दर्शन करने आये थे? नहीं आए थे । तो फिर आपको कैसे पता कि वहां कोई व्यवस्था नहीं की जा रही है। अभी लेटेस्ट की जानकारी बता रहा हूं । आप आये होते तो पता चलता न। हमारी सरकार ने सबसे बड़ी व्यवस्था की है । गिरौधपुरी अधोसंरचना योजना के अंतर्गत की है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, उसके निर्माण में जो भूमि रचना है, कभी आपने देखा है कि उसकी कल्पना किसने की थी ? उसकी कल्पना हमारी सरकार ने की थी । जैतखाम को आपकी सरकार ने बनाया, उसके लिए बजट का क्या प्रावधान किया ? वहां पानी की व्यवस्था आपने की ?

श्री गुरू रूद्र कुमार :- बाकी व्यवस्था आप जाकर देख लीजिएगा, जो हमारी सरकार ने अच्छी व्यवस्था की है । यहां पर बैठकर हवाई फायरिंग करने से कुछ नहीं होता है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी, आप वहां पर पानी की बढ़िया व्यवस्था बनाकर लोगों को लाभ मिले, ऐसा काम करिए। वहां की पानी की व्यवस्था की चिन्ता कर लीजिए । आज वहां की व्यवस्था पर और न ही उस व्यवस्था को बनाने में इनका कोई सहयोग है और न ही आने वाले समय में जो गुरू घासीदास बाबा की जो योजना बनी है, उस योजना को आगे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बढ़ाने का काम कर रहे हैं । सभापति महोदय, शिक्षा के क्षेत्र में अनुसूचित जाति के लिए यू.पी.एस.सी. के माध्यम से आई.ए.एस. बने, उसके लिए दिल्ली में संस्थान है । वहां की व्यवस्था को मजबूत करने के लिए इस सरकार के पास कोई नजरिया नहीं है । सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो पंथी नृत्य को अनुसूचित जनजाति के लोक नृत्य के रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है, उसी प्रकार अनुसूचित जाति के लिए पंथी नृत्य को लोक नृत्य के रूप में सरकारी योजनाओं के माध्यम से अधिकाधिक प्रचारित किया जाये तो बेहतर होगा । इसकी कल्पना करिये, चुपचाप बैठने से कोई फायदा नहीं है । सभापति महोदय, जो शिक्षक हैं, अनुसूचित जाति के पोस्ट ग्रेजुएट हॉस्टल हैं, उसकी संख्या ज्यों का त्यों बना हुआ है, उनकी संख्या में वृद्धि नहीं हो रही है, वहां पर सीटों की संख्या नहीं बढ़ी है । वहां की व्यवस्था को मजबूत करने के लिए कोई प्रावधान नहीं बना है । यह स्थिति अनुसूचित जाति और जनजाति दोनों में ही है । माननीय सभापति महोदय, अनुसूचित जाति के लिए इस बजट में कोई भी प्रावधान नहीं है । मैं इसलिए इनका विरोध करता हूँ । आपने मुझे समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- श्री धरमलाल कौशिक जी । श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- माननीय सभापति महोदय जी, मैं हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री और छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता स्व. श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के इन पंक्तियों से अपनी बात की शुरूवात करती हूँ ।

सत्य का संघर्ष सत्ता से
और न्याय लड़ता निरंकुशता से
अंधकार ने दी चुनौती
किरणें अंतिम अस्त होती
किन्तु फिर भी जूझने का प्रण है,
अंगद ने बढ़ाया कदम है,
प्राण प्रण से करेंगे प्रतिकार
समर्पण की मांग, अस्वीकार
समर्पण की मांग, अस्वीकार (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, सरकार ने सदन के पटल पर जो अपना बजट रखा है। वास्तव में यह जो बजट है, कहीं पर भी छत्तीसगढ़ महतारी को समर्पित करने वाला बजट नहीं है । यह केवल प्रक्रियाओं का अनुसरण करते हुये खानापूर्ति करने वाला बजट है । माननीय सभापति जी, इस बजट में सरकार का विजन कहीं भी स्पष्ट नहीं है । यहां पर जिस प्रकार से सरकार ने बजट में आर्थिक स्थिति की जो चर्चा की है, वहां पर सरकार ने 4 कंडिकाओं में अपनी आर्थिक स्थिति को बताई है । वर्ष 2019-2020 में स्थिर भाव कृषि में और औद्योगिक क्षेत्र में निम्न बिन्दुओं पर वर्णन किया है । माननीय

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय, मैं इस विषय को आपके समक्ष इस सदन में रखना चाहती हूँ । सरकार का ध्यान केवल और केवल आंकड़ों के मायाजाल में फंस कर रह गया है । धरातल पर वास्तविक स्थिति कुछ और है । यहां पर सरकार का ध्यान इस ओर नहीं है कि छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है । आज कृषि का रकबा कम होते जा रहा है । जो अवैध प्लाटिंग करने वाले लोग हैं, इन गरीब किसानों के उपजाऊ जमीन को खरीदकर बंजर भूमि बनाने का प्रयास कर रहे हैं । भू-माफियाओं की बाढ़ लग गई है । इस पर सरकार का ध्यान नहीं है, आज सरकार की आवश्यकता है कि ऐसे जमीनों का संरक्षण करें, यदि सरकार ने ऐसा नहीं किया तो आने वाली पीढ़ी कभी हमें माफ नहीं करेगी । माननीय सभापति महोदय, सरकार ने कहा कि गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ । उन्होंने नई पीढ़ी के निर्माण की बात इस बजट में कही तो मैं सरकार से पूछना चाहती हूँ कि पिछले 14 महीने से मुख्यमंत्री स्किल डेवलमेंट कौशल उन्नयन की सरकार की योजना थी । पिछले 14 महीने से यह योजना क्यों बंद पड़ी है ? क्यों किसी युवा साथी को रोजगार नहीं मिला ? क्यों इनके स्किल को निखारने के लिए उन्हें विभिन्न 400 से अधिक विधायें, कौशल उन्नयन में 400 से अधिक विधायें हैं, उसमें बेरोजगार साथियों को रोजगार दिया जा सकता था, लेकिन पिछले 14 महीनों से सरकार ने कुछ नहीं किया, यह योजना बंद पड़ी है ।

तकनीकी शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- माननीय सभापति महोदय, रंजना जी, ऐसा है....।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, आपने कहा था कि उनके समय में कटौती करेंगे, यदि उन्होंने बोला तो ।

श्री उमेश पटेल :- सभापति महोदय, पिछले 15 साल में या जब से चालू हुआ है, कौशल विकास में क्या होता था, एक सेकण्ड मैं बता देता हूँ । कौशल विकास में पिछले 7 साल में क्या हुआ, आप सब लोग जानते हैं, कितने बेरोजगारों को नौकरी दिया गया, यहां इस सदन में रखा गया

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, आपने कहा है कि यदि उन्होंने बोला तो उनके समय में कटौती करेंगे।

श्री उमेश पटेल :- सभापति महोदय, एक सेकेंड मैं उसको बता देता हूं। कौशल विकास में पिछले 07 सालों में क्या हुआ, आप सब लोग जानते हैं। कितने बेरोजगारों को नौकरी दी गई? यहां इस सदन में रखा गया और कहा गया कि इतने लोगों को नौकरी दी लेकिन वह सिर्फ रिकार्डों में रहा। आप इसको जान रही हैं। आप जो बोल रही हैं मैं उसी बात को कह रहा हूं कि पिछले 5-7 साल में क्या हुआ। जब से यह सरकार आई है तब से यह कोशिश कर रही है कि उस ट्रेनिंग की क्वालिटी सुधरे। और मैं आपको बता दूं कि उस पूरे गाईड लाईन को बदलने के बाद राजनांदगांव में पहला बैच बना और जो पहला बैच निकला है उसमें सौ प्रतिशत प्लेसमेंट है और यह पहली बार हुआ है। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, मैं मंत्री जी को बताना चाहती हूं कि किसी योजना को बदलने के लिए 14 महीने नहीं लगते। आपने जब नरवा, गरवा की शुरूआत कर दी तो आप

Uncorrected and unedited/Not for Publication Thursday, March 05, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

एक महीने में उस योजना को बदलकर आपकी स्किल में निखार ला सकते थे, आप सरकार की स्किल में निखार ला सकते थे। सरकार ने सभी परिवारों को सार्वभौमिक सार्वजनिक वितरण प्रणाली की जो बात कही इस विषय में सरकार ने एक तुगलकी फरमान जारी किया जिसमें यह था कि इसका जो संचालन महिलाओं के समूह द्वारा किया जाता था उनको इस संचालन से हटाने का फरमान सरकार ने जारी किया जो कि महिलाओं के साथ अन्याय है। सरकार ने फिर कहा है कि आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों की ऊंचाई एवं भारमापक यंत्रों की व्यवस्था करने जा रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं है। हर आंगनबाड़ी केन्द्र में बच्चों के लिए ऊँचाई और भारमापक यंत्रों की व्यवस्था की जाती है और सरकार इतने प्रमुख बजट में यह छापकर क्या सिद्ध करना चाहती है? यदि सरकार को कुछ करना है तो हमारी आंगनबाड़ी बहनों के लिए, कार्यकर्ताओं के लिए, सहायिकाओं के लिए उनके विकास का कोई कार्य करे जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो, ऐसा काम सरकार को करना चाहिए। मैं इस सदन से केन्द्र सरकार को धन्यवाद देना चाहती हूं कि इन बहनों के लिए उन्होंने पेंशन योजना का सूत्रपात किया है।

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंड़िया) :- सभापति महोदय, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को आपकी सरकार मृत्युपरांत 10 हजार रूपये देती थी, हमारी सरकार ने 50 हजार रूपये कर दिया। ये तो किए ना? (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू:- सभापति महोदय, इस सरकार ने आयुष्मान योजना को बंद किया और डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य योजना की शुरूआत की। ठीक है हमने उसका स्वागत और सम्मान किया लेकिन मैं इस सरकार से पूछना चाहती हूं कि निजी अस्पतालों में 150 प्रकार की बीमारियों का इलाज सरकार ने क्यों बंद किया। जब स्वास्थ्य योजना की शुरूआत की तो सरकार ने उसी समय स्पष्ट रूप से यह कहा कि निजी अस्पतालों से 150 प्रकार के इलाज को बंद कर दिया जायेगा। मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि ये 150 प्रकार की बीमारियों का इलाज क्या सरकारी अस्पताल में होता है? सरकार स्वयं इस बात को स्वीकार करती है कि चिकित्सक की व्यवस्था हर जगह पूर्ण नहीं की जा सकती। यदि 15 पद स्वीकृत हैं तो उसमें केवल 03 चिकित्सक कार्यरत हैं। यदि तीन में से 02 सर्जन हैं तो क्या एक चिकित्सक पूरी व्यवस्था को संभाल सकता है? सरकार ने इस योजना को लाकर कोई बड़ा काम नहीं किया है। उन्होंने फिर कहा है कि मुख्यमंत्री विशेष सहायता योजना लाई जायेगी। मैं पूछना चाहती हूं कि इसमें गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए सरकार 20 लाख रूपये तक व्यय करेगी और उसके लिए केवल और केवल 50 करोड़ रूपये का प्रावधान है। चूंकि मुख्यमंत्री जी यहां उपस्थित हैं इसलिए मैं उनसे भी पूछना चाहती हूं कि छत्तीसगढ़ की जनसंख्या कितनी है और आप केवल 50 करोड़ रूपये में से यदि 20-20 लाख रूपये देते हैं तो इससे केवल 250 लोगों का ही उपचार आप कर पायेंगे और बाकी लोग क्या करेंगे जिन्हें ये गंभीर बीमारी है?

सभापति महोदय :- समाप्त करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू:- सभापति महोदय, मुख्यमंत्री महोदय बैठे हैं और मुझे भी बोलने का अवसर मिल रहा है। सभापति महोदय, मैं अपने दल की एकमात्र महिला हूं, इसलिए मुझे भी आपका संरक्षण चाहिए।

श्री भूपेश बघेल :- रंजना जी, आप मुझे थोड़ा समय देंगी। माननीय सभापति महोदय, गणित का एक बहुत अच्छा विद्यार्थी था और राजा के दरवाजे में बैठा हुआ था। हुआ ये कि उँट में कपास का गट्ठा लेकर एक उँट गया, दो उँट गया, तीन ऊंट गया और इस प्रकार से दर्जनों ऊंट चले गये। वह गणित का विद्यार्थी था, बहुत सोचता था। वह सोचने लगा कि इतने उँट हैं, इतने गट्ठे हैं, फिर इतना कपास है, इतना बुनने वाले लगेंगे, इतना धुनने वाले लगेंगे, इतने बनाने वाले लगेंगे, इतने रंगने वाले लगेंगे। वह छोटा बालक था, उसके दिमाग में कुछ समझ में नहीं आया। वह बड़बड़ाते रहा, नींद नहीं आई, बीमार पड़ गया। गांव का बहुत प्यारा लड़का था, सब लोग चिन्तित हो गये। चिंतित होने के बाद सब वैध बुलाने लगे, डॉक्टर बुलाने लगे। किसी को समझ में नहीं आया। गांव में एक साधु आया। उसको बुलाया गया, शायद यह ठीक कर ले। लड़का तो बड़बड़ा ही रहा था। साधु वह समझ गया, इसको क्या समस्या है ? उन्होंने कहा, बेटा वह जो कपास रखा था ना उसमें आग लग गयी। आग लग गई, तुरंत वह लड़का ठीक हो गया। ये 50 करोड़ ओरल ढाई सौ लोगों का ईलाज होगा। ये अभी ज्यादा मत समझिये। अभी आप नया-नया आये हैं। अर्थव्यवस्था समझना पड़ेगा। ये टोकन है।

समय :
3:35 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

श्रीमती रजंना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको भी बताना चाहती हूं मैं भी अर्थशास्त्र इकोनामिक्स पी.जी. में मैंने फर्स्ट क्लास पास किया है।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, तब तो यह गंभीर बात है। (मेजों की थपथपाहट) बजट में प्रावधान टोकन किया जाता है। सरकार फिर उसकी आवश्यकतानुसार वह राशि बढ़ा लेती है, है ना। यह 85 करोड़ तक होगा उसके बाद नहीं होगा, आप ऐसा मत पढ़ाईये ना।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अब तक पी.जी. करेस। अब एम.डी. करेल लागही। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- वह इतना अच्छा बोल रही थी। उसके लिये आप तीन मंत्री खड़े हो गये। मुख्यमंत्री भी खड़े हो गये।

श्री अमरजीत भगत :- सुन भी नहीं पा रहे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- यह बात तो सही है कि आपसे भी अच्छे हैं, तभी मुख्यमंत्री खड़े होकर उनको जवाब दे रहे हैं। (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- उससे बड़ी बात तो और है। यह अच्छी बात है कि मेरे से सौ गुना अच्छा बोले हैं। आपकी कहानी पूरी नहीं हुई थी और तीन लोग मुस्कुराना शुरू कर दिये थे। (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, रंजना जी को यह बताना चाह रहा था कि इस सरकार में तो ईलाज की व्यवस्था भी की जा रही है। पिछली सरकार में तो झाड़ फूक कराने के लिये कंबल वाले बाबा को बुलाये थे। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- रंजना जी, खत्म करिये।

श्री भूपेश बघेल :- भाई, विधानसभा में आ गये थे। (हंसी)

श्री कवासी लखमा :- क्या कहा कि 14 सीट में आ गये ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये-चलिये प्लीज।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, सरकार ने अपने बजट में कृषि पशुपालन मत्स्य पालन की बात कही। मैं अपने क्षेत्र की ओर आपका ध्यान आकर्षण करना चाहती हूं। सदन का ध्यान आकर्षण करना चाहती हूं। मेरे धमतरी विधानसभा में सिर्फ तीन किलोमीटर दूर ग्राम डेमार है। जहां पर पूरे एशिया का पहले नंबर का संजय गांधी फिसहेचरी है। मेरा इस सदन से निवेदन है कि संजय गांधी फिसहेचरी 1984 में इसकी स्थापना हुई थी और यह सबसे बड़ा यह शीर्ष उत्पादन का केन्द्र है। यदि मत्स्य पालन के क्षेत्र में सरकार कुछ करना चाहती है तो ऐसी जगहों का चुनाव करें जहां पर उन्हें राजस्व का भी फायदा हो और कुछ छत्तीसगढ़ के लिये हम कुछ अच्छा कर सकें।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। देवेन्द्र यादव।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सिर्फ एक विषय मेरे क्षेत्र का है। यहां पर पुस्तक में कंडिका 52 में जो उल्लेख है। यहां पर जो विषय है उसमें लिखा है कि दिव्यांगों के लिये नि:शक्तजन पुनर्वास केन्द्र की स्थापना। माननीय महोदय जी, मेरा निवेदन है कि नि:शक्तजन पुनर्वास केन्द्र न हो, वह दिव्यांगजन पुनर्वास केन्द्र हो तो ज्यादा बेहतर रहेगा।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। पांच मिनट।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सिर्फ एक और विषय है। चूंकि यह बजट का विषय है, बहुत महत्वपूर्ण विषय है, इसलिए मुझे बोलने दीजिए। यहां पर नगरीय एवं प्रशासन के विषय में मुख्यमंत्री मितान योजना की प्रारंभ की जा रही है। माननीय मुख्यमंत्री जी ने अपने बजट में पढ़ा है। माननीय महोदय जी, यहां पर हर वार्ड में कम से कम दो से तीन मितानिन होती है और एक आरोग्य समिति होती है। आरोग्य समिति के अध्यक्ष और उसके विभिन्न सदस्यगण होते हैं। मुख्यमंत्री मितान योजना प्रारंभ करके सरकार इन मितानिनों को हटाने के लिये कुछ सडयंत्र तो नहीं कर रही है। क्योंकि यहां पर मुख्यमंत्री मितान योजना और जितनी योजना प्रारंभ होगी मितानीन बहनें आरोग्य समिति की बहनें कहां जायेगी ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- मुख्यमंत्री मितान योजना यह बहुत अच्छी योजना है। सरकार के बहुत सारे आवेदन आप लेकर घूमते हो, अब उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। वह सारे प्रमाण पत्र घर पहुंचाकर सेवा के तहत दिया जायेगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अफवाह फैलाने की आदत पहले से संगियों को रही है। इसलिए इनकी बातों को नजरनोट न किया जाये, मेरा यही निवेदन है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, चूंकि हर वार्ड में दो-दो, तीन-तीन मितानीन हैं और मितानिनों को यह भय है कि सरकार मितानिनों को हटाने के लिये, आरोग्य समिति की महिलाओं को हटाने के लिये कोई सड़यंत्र तो नहीं कर रही है। इसलिए मैंने इस विषय को यहां पर रखा।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये।धन्यवाद।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा आखिरी विषय है। यहां पर मुख्यमंत्री वार्ड कार्यालय की योजना प्रांरभ की जा रही है। यहां पर जो मुख्यमंत्री वार्ड कार्यालय है। यहां पर पहली बार खुद निगम अपनी राजस्व की वसूली नहीं कर पाता है। दूसरी बात, केवल यहां पर निगम में स्टाफ की कमी है, नगरपालिका में स्टाफ की कमी है। यदि स्टाफ की कमी रही तो वार्ड कार्यालय कहीं भी सक्सेस नहीं होगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया इसलिए आपको धन्यवाद।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप व्यवस्था देंगे तो मैं आगे कह पाऊंगा।

अध्यक्ष महोदय :- अब समझ में आया कि दूसरों को डिस्टर्ब करने में क्या फर्क पड़ता है ? (मेजों की थपथपाहट)

श्री देवेन्द्र यादव (भिलाई नगर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय चन्द्रकार :- माननीय किसान नेता, आप ठीक से बोलिएगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं खड़ा हुआ हूँ तो अब इनको सब समस्या चालू हो जाएगी।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गणित-वणित का सुन रहा था कि वह क्या है कि गणित के संग समस्या है ही। गणित के गुरूजी थे हर बात में मान लो कहते थे। गणित के गुरूजी लोग बोलते हैं कि मान लीजिए। एक दिन बहुत ठण्डी पड़ रही थी भयंकर ठण्ड थी माईनस 2-3 डिग्री थी तो उन्होंने कहा कि मान लीजिए ठण्डी नहीं पड़ रही है और गुरूजी जिद्द में बैठ गये। वे सुबह साफ हो गये। गणित खतरनाक चीज तो है। (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के बजट भाषण के पक्ष में अपनी बातों की रखूंगा। स्वामी विवेकानंद जी की इन दो पंक्तियों के साथ अपने भाषण की शुरूआत करना चाहूंगा। :-

''कुछ लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं,

हारा वही है जो लड़ा नहीं।''

माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले यहां पर उपस्थित सभी लोग इस बात को जानते हैं कि हमेशा चुनाव के समय घोषणापत्र आते थे और घोषणा पत्र जनता भी पढ़ती थी और घोषणापत्र पर कितने लोग भरोसा करते थे, इसकी सच्चाई सभी जानते हैं, लेकिन जिस तरीके से सरकार बनते ही साथ 6 घण्टों में जो घोषणा पत्र का इम्लीमेंटेशन होना चालू हुआ, पूरे प्रदेश की जनता ने उस घोषणापत्र को पढ़ा और एक-एक करके देखा कि कैसे, हमारी सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी के नेतृत्व की सरकार अपनी कही गई बातों को इम्लीमेंट करती है। अक्सर ये होता था कि..।

अध्यक्ष महोदय :- आप बजट में आईये।

श्री देवेन्द्र यादव :- जब चुनाव आता था तब जो घोषणा की जाती थी उसको याद किया जाता है। मैंने अपनी पंक्तियों में कहा है कि ''मनुज के साहस से बड़ा कोई लक्ष्य नहीं है'' साहस किस चीज का होना चाहिए? मैं आपके सामने ये बात रखना चाहता हूँ कि साहस है दबे हुए किसानों का, जो कर्ज से दबे हुए किसान थे, उनका कर्जा माफ करने का साहस, उनको 2500 रूपये समर्थन मूल्य देने का साहस, जो 38 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं उनको सुपोषित करने का साहस, जो 40 प्रतिशत माताएं हैं जो कहीं न कहीं एनीमिया से पीड़ित है उनको उस बीमारी से बाहर लाने का साहस किया है। हमारी सरकार ने ये साहस किया है कि छत्तीसगढ़ के सभी परिवारों को वो सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत सम्मिलित करे। हर परिवार को राशन दें। हमारी सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी ने साहस किया है कि अति पिछड़ा जिला दंतेवाड़ा में गरीबी के प्रतिशत को राष्ट्रीय गरीबी औसत 22 प्रतिशत के बराबर लाने की मुहिम शुरू हो चुकी है। यह हमारी सरकार का साहस है। यह हमारा साहस है कि डॉ. खूबंचद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना के नाम से हम लोगों ने घोषणा की है कि छत्तीसगढ़ में निवासरत प्रत्येक परिवार जिसके पास राशनकार्ड है, उसका 50 हजार रूपये से लेकर 5 लाख तक का राशन कार्ड के माध्यम से इलाज करवाने का साहस हमारे अंदर है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूँ कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो 20 लाख रूपये तक की बात कही है, जिससे सैकड़ों-हजारों परिवारों को लाभ होगा। जो कहीं न कहीं गंभीर बीमारियों से पीड़ित होकर अपना जीवन खो देते हैं। साहस है आईआईटी, आईआईएम एवं एम्स के जो बच्चे हैं जो यहां से उसमें सलेक्ट हो गये हैं उनको प्रोत्साहन करने का साहस है खिलाड़ियों को प्रोत्साहन करने का साहस है छत्तीसगढ़ खेल विकास प्राधिकरण बनाकर खिलाड़ियों को नया अवसर देने का साहस हमारी सरकार के अंदर है।

अशोधित/अप्रकाशित के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जानते हैं इस प्रदेश में करोड़ों पशु घूम रहे हैं पशुधन को केवल राजनीतिक उपयोग के लिए राजनीतिक दल रखते थे, लेकिन ये साहस माननीय भूपेश बघेल जी के अंदर है जो उन्होंने ये संकल्प लिया कि गौठान बनायेंगे और गौठान में हमारी गौ माता को वहां रखेंगे और जो आर्गेनिक खाद हो या जो उनके गौ मूत्र या गोबर से जैविक चीजें बन सकती है उसको बनाने का काम किया है, ये बड़ा काम किया है, हमने ये बड़ा बेड़ा उठाया है हमारी सरकार के मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी ने साहस का काम किया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूँ कि घोषणा किये कि पूरे छत्तीसगढ़ को टैंकर मुक्त करेंगे, यह एक साहस का काम है जो हम लोगों ने संकल्प किया और हम लोग उसको पूरा कर रहे हैं। मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ कि हमारी सरकार ने घोषणा की है कि माननीय मुख्यमंत्री, शहरों में हर वार्ड में वार्ड कार्यालय बना रहे हैं। शहरों में वार्ड कार्यालय बनने से जनता से डायरेक्ट संवाद, रूबरू होने का साहस किया है ये साहस किसी ने किसा है तो ये कांग्रेस की सरकार ने किया है। ये छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री जी भूपेश बघेल जी ने कहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय विकास उपाध्याय जी।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे दो मिनट और चाहता हूं। मेरे क्षेत्र के बहुत सारे साथी आये हुए हैं और वह मुझे यहां पर बोलते हुए देख रहे हैं। मैं कल माननीय पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी की बात सुन रहा था। वह कह रहे थे कि पहले जब बजट भाषण होता था तो सबको कुछ न कुछ मिल जाता था, सब संतुष्ट होकर जाते थे। सब विधायक कहते थे कि मेरे यहां पर स्कूल, कॉलेज मिल गया, मेरे यहां ये मिल गया, मेरे यहां वो मिल गया। मुझे भी लगा कि दाऊ जी ने लगता है कि हमको नहीं दिया। यहां पर सुविधा है, हमने बजट भाषण की प्रतियों के लिए आवेदन लिखा और हमें पिछली सरकार की पुराने बजट भाषण की प्रतियॉं मिली। मैंने उसका अध्ययन किया। मैंने पढ़ा कि खुर्सीपार छावनी में 100 बिस्तर का अस्पताल बनाया जायेगा। मेरे यहां तो 100 बिस्तरीय अस्पताल नहीं बना है। इसमें लिखा था कि गुढियारी, कुरूद में 100 बिस्तर का अस्पताल बनाया जायेगा। मैं माननीय चन्द्राकर जी से पूछना चाहता हूं कि क्या आपके यहां बना? मेरे यहां घोषणा हुई थी, लेकिन नहीं बना। यह पहले की सरकार के मुख्यमंत्री जी जो बजट भाषण देते थे, उसका इम्प्लीमेंटेशन नहीं जानते थे। हमारी सरकार के माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी जो कहते हैं वह करके दिखाते हैं और समय पर करके दिखाते हैं, यह हमारी सरकार की नीति, नीयत है। (मेंजों की थपथपाहट) इनकी नीयत, नीति में दिक्कत है। केवल और केवल घुमाना इनकी नीयत है। कमीशन खाना इनकी नीयत थी। ये इन्फ्रास्ट्रक्चर की बात करते थे और उस इन्फ्रास्ट्रक्चर को जिंदा रखने का काम नहीं करते थे। हमारी सरकार वह सारा काम कर रही है। राम के नाम पर इन्होंने लोगों को ठगा है। हमारी

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

संस्कृति में भगवान राम भांजे हैं, आज हमारी सरकार राम वन गमन पर्यटन परिपथ के सौन्दर्यीकरण का काम कर रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि इनकी योजनाओं, नीयत, नीति में स्काई वाक आता है, हमारी योजनाओं, नीति में हमारे खेल, खिलाड़ी, कुपोषित बच्चे, एनीमिया से पीडित बच्चों के जीवन स्तर सुधारने का काम आता हैं। यह स्वामी विवेकानंद जी का नाम लेते हैं। हम लोग स्वामी विवेकानंद स्मृति संस्थान बना रहे हैं। मैं आखिरी दो लाईनों के साथ अपनी बात को खत्म करूंगा। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, यही बहुत बड़ी बात है। believing other easily but believing in yourself that the real challenge. अपने आप में भरोसा करना सबसे बड़ा चेलेन्ज रहता था। यह पिछली सरकार जो चल रही थी, खुद के भरोसे पर नहीं चल रही थी, उनके कुछ अधिकारी, ठेकेदार थे, उनके भरोसे पर चल रही थी। हमारी सरकार, हमारे मुख्यमंत्री, हमारी मंत्री खुद के भरोसे पर राजनीति करते हैं और छत्तीसगढ़ में ''गढ़बो नवा छत्तीसगढ़'' का नारा बुलंद कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, अंत में मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं हमारे शहर भिलाई, खुर्सीपार, वैशालीनगर के कैम्प क्षेत्र में बिजली सप्लाई बी.एस.पी. के द्वारा होती है और पिछले 40 वर्षों से हर रोज लगातार 6 बजे से 10 बजे तक बिजली गुल होती है। यह बिजली हस्तांतरण का काम राज्य शासन इसमें जोड़ ले तो वैशालीनगर और भिलाईनगर दोनों विधानसभा के लोगों को बहुत राहत होगी। इस पर शुरूआती औपचारिक चर्चा भी हुई है। बी.एस.पी. ने 50 करोड़ रुपये देने की बात भी कही है, अगर आप इसको सम्मिलित कर लेंगे तो यह एक बड़ा काम हो जायेगा। माननीय मुख्यमंत्री जी पूरे प्रदेश को बिजली बिल हाफ योजना का लाभ मिल रहा है, लेकिन हमारे घर में नहीं मिल रहा है। अगर इसकी कृपा कर देंगे तो हम लोगों को भी इसका लाभ मिल जायेगा। इन्हीं बातों के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- पहली बार पढ़ लिखकर आये हो और बोल रहे हो, अच्छा बोले हो। चलिये विकास उपाध्याय जी, उन्हीं की तर्ज पर आप भी अच्छा बोलिये।

श्री विकास उपाध्याय (रायपुर नगर पश्चिम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा वित्त मंत्री के तौर पर प्रस्तुत बजट का समर्थन करता हूं और इसके समर्थन पर इन पंक्तियों के साथ बात करने के लिए खड़ा हुआ हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरा देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं पुण्यतिथि मना रहा है और यह पूरा बजट महात्मा गांधी जी के आदर्श, सोच और विचारों पर आधारित है। मैं इन पंक्तियों के साथ अपने भाषण की शुरूआत करना चाहता हूं - काम करो ऐसा कि पहचान बन जाये, कदम चलो ऐसा कि निशान बन जाये, जिंदगी तो सब जीते हैं, जिंदगी जिओ ऐसा कि मिसाल बन जाये । (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी उसी मिसाल पर कायम हैं और पिछले 14 माह के कार्यकाल में जो मील का पत्थर इस बजट को प्रस्तुत करके साबित किया यह अपने आप में ऐतिहासिक काम है। यह बजट कोई 5-10, 15-20 दिनों में नहीं बना है, यह बजट 15 सालों की सोच है, 15 सालों का संघर्ष है, 15 सालों की जनता की लड़ाई है । इस बजट में जनता को शामिल किया गया । हमने चुनाव के पहले जनघोषणा पत्र तैयार किया, उस जनघोषणा पत्र में हमारे नेता हर वर्ग के लोगों के पास गये, किसानों के पास गये, मजदूरों के पास गये, प्रोफेशनल्स के पास गये, डॉक्टर्स के पास गये, इंजीनियर्स के पास गये, छात्रों के पास गये, मजदूरों के पास गये, महिला-बहनों के पास गये, आंगनबाड़ी बहनों के पास गये, मितानिन बहनों के पास गये इस प्रदेश में किसी भी वर्ग को छोड़ने का काम हमारे नेताओं ने नहीं किया । माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल की सरकार, जनादेश 15 साल भारतीय जनता पार्टी को विपक्ष के नेताओं को मिला । 15 साल का विश्वास हमने 15 सालों के संघर्ष में और जन घोषणा पत्र के माध्यम से लोगों की मन की भावनाओं को, उनके अधिकारों को जानने का काम किया और जब संकल्प पत्र तैयार किया उस संकल्प पत्र में जो लिखा उसको पूरा करने का काम भी हम लोगों ने किया । यह शुरूआत है, अभी तो 14 महीने हुए हैं और इन 14 महीनों में किसानों के कर्जे को माफ करने की बात हम लोगों ने कही थी, किसानों का कर्जा माफ हुआ, विपक्ष इस बात के लिये सोच रहा था कि 2500 रूपये का बाकी पैसा कहां से मिलेगा, कैसे दिया जायेगा ? राजीव गांधी न्याय योजना के माध्यम से जिस प्रकार से बाउंसर मारने का काम किसी ने किया है तो इस प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने इस विधानसभा में किया है । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सोच रहा था कि चर्चा में क्या बात करनी है लेकिन विपक्ष के नेताओं ने इतनी बातें निकालकर दे दीं कि मुझे डाटा की आवश्यकता नहीं है, पेपर की आवश्यकता नहीं है । स्काईवाक की बात करते हैं, एक्सप्रेस वे की बात करते हैं । उन तमाम चीजों की लड़ाई लड़ने का काम यदि किसी ने किया है तो वह कांग्रेस पार्टी और हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने किया है और उसी का बजट में प्रावधान । आज स्काईवाक की क्या स्थिति है ? माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी बहुत सीनियर सदस्य हैं, रायपुर राजधानी के बहुत वरिष्ठ विधायक हैं । वे इस बात को यहां कह रहे थे । जब स्काईवाक के निर्माण की परिकल्पना की गयी थी, पूरा शहर उसका विरोध कर रहा था तो उस समय आप कहां पर थे ? आप उसमें शामिल थे । आपने कभी विरोध नहीं किया । स्काईवाक, एक्सप्रेस वे को नियम-कानून को ताक में रखकर आचार-संहिता के पहले उसको बनाने का निर्णय लिया गया । जो जनप्रतिनिधि उसमें शामिल थे उसका विरोध आपने उस समय क्यों नहीं किया ? आज जब हमारे मुखिया, हमारी सरकार किसानों को, हर व्यक्ति को अधोसंरचना में, सड़क, नाली जिसकी जरूरत है । हमने कभी यह बजट प्रस्तुत नहीं किया, यह सोच नहीं रखी कि पहले सी.सी. रोड, उसके ऊपर डामर की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रोड और फिर सी.सी. रोड यह निर्माण कार्य कभी हमारी सरकार ने सोचने का काम नहीं किया । यह अगर किसी ने सोचा है तो विपक्ष की सरकार जब 15 साल उन्होंने काम किया, इस बात को सोचने का काम किया है ।

मानननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षाकर्मियों का संविलियन किया । हमने इसी रायपुर राजधानी में देखा है कि 38-38 दिन हमारी वह बहनें जो शिक्षाकर्मी थीं वे बेचारी अपने छोटे-छोटे बच्चों को लेकर 38-38 दिन यहां धरना-प्रदर्शन, आंदोलन में बैठतीं थीं । इस बजट में उनके लिये प्रावधान किया गया है, उनको मदद करने का काम किया गया है । बिजली बिल पर बात कर रहे हैं । पहले बिजली बिल की क्या स्थिति थी उसे पूरा प्रदेश जानता है । लोगों को अपना घर, दुकान, मकान गिरवी रखना पडता था, लोगों ने आत्महत्या भी की क्योंकि बिजली का बिल उनके बजट से ऊपर आ रहा था । उसमें इस बजट में प्रावधान है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं, बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि जब माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी बजट प्रस्तुत कर रहे थे तो उनकी बात को सुनकर यह बात समझ में आ गयी । मुझे माननीय मुख्यमंत्री जी के साथ जनदर्शन में उनके घर में 2-3 बार कार्यक्रम में जाने का अवार मिला, हर बार जाने का अवसर मिला । जनदर्शन के दौरान इस प्रदेश में जो खेल को आगे बढ़ाने वाले हमारे लोग, हमारे साथी हैं, खिलाड़ी साथी हैं, जो प्रतिभावान हैं उनको आगे बढ़ने के लिये, दूसरे प्रदेशों में जाकर प्रतिस्पर्धा करने के लिये, दूसरे देशों में प्रतिस्पर्धा करने जाने के लिये पैसा नहीं होता था । मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी को देखा है, माननीय मुख्यमंत्री जी अपनी तरफ से सहायता करके उनको मदद करके आगे भेजने का काम करते थे । अब उसको बजट प्रावधान में लिया गया है तो यहां की क्वालिटी को, यहां की क्षमता को आगे बढ़ाने का काम किसी ने किया है तो इस प्रदेश माननीय भूपेश बघेल जी ने किया है । लोक कला, संस्कृति के क्षेत्र में 19 साल बाद लोगों को लगता है कि हमारे सपनों का छत्तीसगढ़ अब बना है । गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ की रचना जो की है, हर व्यक्ति की जुबान पर गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ की बात क्यों आ रही है ? यह बात 19 सालों में पहले कभी नहीं आई । अध्यक्ष जी, हम लोग जनप्रतिनिधि हैं, जनता की बातों को सुनते हैं और जनता की समस्याओं को समाधान करने का प्रयास करते हैं और यह पूरा बजट उसी पर आधारित है । मैं इस पूरे बजट को परिभाषित करते हुए महात्मा गांधी जी के भजन की एक पंक्ति रखना चाहता हूं फिर अपनी वाणी को विराम दूंगा ।

"वैष्णव जन तो तेने कहिए, पीर पराई जाने रे ।"

माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस बजट के माध्यम से सभी के दुख-दर्द को समझने का काम किया है । आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद् ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा 2020-21 का आय-व्ययक पेश किया गया है । मैं उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वास्तव में हमारे प्रदेश के बजट की बात करते हैं तो यह बजट विकास का आईना होता है । इसमें यह पता चलता है कि हम आगे बढ़ रहे हैं या पीछे जा रहे हैं । इस बजट के द्वारा आपने जो आंकड़े प्रस्तुत किये हैं निश्चित रूप से विचार करने का प्रश्न है कि हम कहां पर खड़े हैं । इसीलिए सारे सदस्यों ने जिस बात पर जोर दिया है । मुख्य रूप से कृषि का क्षेत्र है, उद्योग का क्षेत्र है, सेवा का क्षेत्र है । जिसके आधार पर हम तय करते हैं कि हम आगे बढ़ रहे हैं या पीछे जा रहे हैं । इस बजट के माध्यम से मुझे कहने में कोई संदेह या संशय नहीं है कि जहां हमारी वृद्धि होनी चाहिए और हमें लगातार आगे बढ़ना चाहिए । निश्चित रूप से हमारा प्रदेश पीछे जा रहा है । पिछले वर्ष इस सरकार के द्वारा जो अनुमान लगाया गया था, उस अनुमान के आधार पर बजट में 79 हजार करोड़ का राजस्व मिलना अपेक्षित था, लेकिन कितना मिला । अनुमान से कम 75 हजार करोड़ में आकर हम रूक गए । हमारा व्यय 90 हजार करोड़ का व्यय होना चाहिए था, हमारा वास्तविक व्यय 97 हजार करोड़ पर जाकर खड़ा हुआ । यदि दोनों अंतर को देखेंगे तो लगभग 22 हजार करोड़ का अंतर आ रहा है । इस अंतर को प्रतिशत में निकालेंगे तो लगभग 94 प्रतिशत का अंतर आय-व्ययक में दिया गया है । अब इस बार 1 लाख 2 हजार 997 करोड़ का जो बजट प्रस्तुत किया गया है । उसमें देखेंगे तो 2020-21 का अनुमानित राजस्व 83 हजार करोड़ रखा गया है । अध्यक्ष महोदय, पिछले बजट की तुलना में और इस बजट में देखेंगे तो हमारे जो विकास के लक्ष्य रखे गये हैं । मुझे नहीं लगता कि इस लक्ष्य को, इस बजट के माध्यम से हम प्राप्त कर सकते हैं । उसके साथ ही साथ यदि हम पूंजीगत व्यय जिससे हमारी परिसम्पत्तियों का निर्माण होता है, हमारी पुल-पुलिया बनती हैं, स्कूलें बनती हैं । यह हमारी परिसम्पत्तियों का निर्माण होता है तो उसके लिए कितना प्रावधान है । आप देखेंगे कि लगभग 14 प्रतिशत है । राजस्व व्यय और पूंजीगत व्यय इन दोनों के आधार पर जब हम इसमें जाएंगे । तो वास्तव में भविष्य के जो हमारे आधार हैं, भविष्य में जिन परिसम्पत्तियों के निर्माण से लोगों का लाभ मिलना है ।

समय :
4:00 बजे

प्रदेश को विकास की दिशा में आगे ले जाना है, परंतु हमारा पूंजीगत व्यय इतना कम है कि इससे नहीं लगता कि आने वाले समय में हम विकास के लक्ष्यों को उसके अनुरूप हम प्राप्त कर सकें। जब तक हमारा पूंजीगत व्यय नहीं बढ़ेगा और जब तक उस दिशा में हम लोग आगे नहीं बढ़ेंगे, तब तक इस प्रदेश को आगे ले जाने की जो कल्पना है, वह कोरी होगी। जिस प्रकार से पिछला जो अनुमान लगाया गया था और अनुमान के आधार पर हम काफी पीछे रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को हम मजबूत करने की बात करते हैं कि हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। हम लोगों की आय को दोगुनी करने की बात करते हैं। आपके आंकड़े बता रहे हैं। आपकी प्रति व्यक्ति आय कितनी है? आपकी प्रति व्यक्ति आय केवल 6.32 प्रतिशत है। राष्ट्रीय स्तर का यदि हम देखेंगे तो 6.8

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रतिशत अनुमानित है। पिछले वर्ष की यदि हम बात करेंगे तो प्रति व्यक्ति आय 7.9 प्रतिशत जो देखी गयी थी, इस बार का उससे भी कम यह 6.32 प्रतिशत जो अनुमानित जो बता रही है तो आपके की कथनानुसार आपके ही बजट में हम पिछले वर्ष की तुलना में पीछे जा रहे हैं। आप बजट में जो प्रति व्यक्ति आय के बारे में बता रहे हैं, उसके अनुसार हम आगे नहीं जा रहे हैं। इसमें केन्द्रीय बजट के बारे में जो बात की थी, उसके अनुसार से हमारे राज्य की तुलना की गई है कि हम केन्द्रीय स्तर से अच्छे हैं और हमारा बजट ठीक है और हम सही दिशा में जा रहे हैं। मैं आपको बताना चाहूंगा कि वर्ष 2009-10 से वर्ष 2013-14 का केन्द्र सरकार का बजट घटा था। यदि हम वर्ष 2009-10 से वर्ष 2013-14 का यदि बजट देखेंगे तो 5.4 प्रतिशत था। वर्ष 2018-19 में 3.4 प्रतिशत हुआ और उसके बाद वर्ष 2019 में 3.3 प्रतिशत था। ये जो केन्द्र सरकार को बता रहे हैं कि हम आपसे अच्छा चला रहे हैं तो मोदी जी ने बता दिया है कि कुशल आर्थिक नीति कैसी होनी चाहिए। यह मोदी जी ने करके दिखाया है। वर्ष 2013-14 तक 5.4 प्रतिशत घाटे को 3.2 प्रतिशत में उन्होंने लाकर खड़ा किया है। यह केन्द्र सरकार में मोदी जी ने इस बात को प्रदर्शित किया है और भारत का जी.डी.पी. उसके बाद भी पूरे विश्व का यदि देखेंगे तो भी भारत का जो जी.डी.पी. है, वह 5 प्रतिशत की वृद्धि है। हमारे छत्तीसगढ़ का जो सकल घरेलू उत्पाद है, वह पिछले वर्ष 7.06 प्रतिशत अनुमानित था। अब घटकर 5.32 प्रतिशत अनुमानित किया गया है। पिछले साल से भी हमारा कम आंकलन आ रहा है जो निश्चित रूप से इस बात को बता रहा है कि हम पीछे चल रहे हैं। हम अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की बात करते हैं तो आंकड़े बता रहे हैं कि हम आगे जा रहे हैं या पीछे जा रहे हैं। इस बात को प्रमाणित कर रहा है। कृषि वृद्धि दर वर्ष 2018-19 में 10.28 प्रतिशत था। वर्ष 2019-20 का अगर हम देखेंगे तो कृषि वृद्धि दर 3.31 प्रतिशत पर आ गयी है। अगर आप वर्ष 2018-19 और वर्ष 2019-20 की तुलना करेंगे तो हम आगे बढ़ने के बजाय पीछे जा रहे हैं। कृषि फसलों में भी उसका अनुमान लगायें तो वर्ष 2018-19 में 16 प्रतिशत थी जो वर्ष 2019-20 में दो प्रतिशत अनुमानित है। इतना उत्पादन करने के बाद भी आखिर हम 2 प्रतिशत में क्यों आ रहे हैं? निश्चित रूप से यह चिंता का विषय है। चिंता का विषय होने के साथ ही साथ हम इसमें आगे कैसे बढ़े, इस पर विचार करने की आवश्यकता पड़ेगी। माननीय अध्यक्ष महोदय, उद्योग क्षेत्र में विनिर्माण खनन ऊर्जा की यदि हम बात करेंगे तो वर्ष 2018-19 में जो वृद्धि दर 5.32 प्रतिशत थी और वर्ष 2019-20 में देखेंगे तो 4.94 प्रतिशत रहा है। हम उद्योग के क्षेत्र में भी आगे नहीं बढ़े हैं । हम उस क्षेत्र में भी लगातार पीछे जा रहे हैं। इसके बाद यदि हम सेवा क्षेत्र की बात करेंगे तो 2018-19 में हमारा वृद्धि दर 7.76 प्रतिशत था, वह 2019-20 में यह घटकर 6.62 प्रतिशत अनुमानित है। इस तरह हम तीनों सेक्टरों में देखेंगे तो हमारा जो वृद्धि बढ़ना चाहिए था, उसमें आप खुद बता रहे हैं कि हम वृद्धि दर में पीछे जा रहे हैं। यदि हम पीछे जा रहे हैं तो इस प्रदेश को आगे लाने जाने की जो बात करते हैं, वह निश्चित रूप से कहीं न कहीं वह असत्य है। आगे जो आकड़ें बताये गये हैं, उस आकड़ों के मायाजाल में वृद्धि तो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बताया है। लेकिन जब हम एक-एक बात की चर्चा करेंगे तो निश्चित रूप से हम पीछे की तरफ जा रहे हैं और इस बात से यह स्पष्ट हो रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही साथ हम लोगों के लिए इस प्रदेश के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय राज्य के राजस्व के बारे में है। यदि हम राज्य के राजस्व के बारे में बात करेंगे 2018-19 में 65,094 करोड़ रूपये, 2019-20 में 75,696 करोड़ अनुमानित है। यदि 2020-21 के लिए देखेंगे तो 82,831 करोड़ रूपये राजस्व प्राप्तियां अनुमानित है। यदि आप देखेंगे तो इस वर्ष 11 प्रतिशत की वृद्धि दर दिखा रहे हैं। लेकिन यदि पिछले साल से तुलना करेंगे तो जो 15 प्रतिशत की राजस्व वृद्धि थी, उस राजस्व वृद्धि में कमी आई है, ये आपके आकड़ें बता रहे हैं।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, आपको यह भाषण कौन लिखकर दिया है ? क्योंकि आप इसमें जो आकड़ें बता रहे हैं न...।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह आपके बजट पुस्तक में है।

श्री अमरजीत भगत :- आप आकड़ें में अंतर बता रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- क्योंकि आपको तो पढ़ना है नहीं। यह पुस्तक आपने छपवाई है, मैंने नहीं छपवाया है।

श्री अमरजीत भगत :- आपने वर्ष 2018-19 का सकल घरेलू उत्पाद बता रहे हैं, वह 6.08 प्रतिशत था, जो बढ़कर 7.06 प्रतिशत हुआ है। मैं वही बोल रहा हूं कि आपको कोई दूसरा लिखकर दिया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी, क्या है कि भाषण हमेशा इधर लिखा हुआ मिलता है, इधर वालों को स्वयं तैयार करना पड़ता है।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी को पढ़ने में भी दिक्कत हो रहा है, इसलिए पूछा हूं कि कोई लिखकर दे दिया है क्या ?

श्री धरमलाल कौशिक :- नहीं-नहीं, मुझे दिक्कत नहीं हो रहा है।

श्री कवासी लखमा :- हमेशा उधर पढ़ने के लिए नागपुर से आता है भाई। यहां से थोड़ी न आता है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब हम हमारे राज्य का कर राजस्व कितना है ? तो आप देखेंगे कि वर्ष 2018-19 में 11 प्रतिशत बढ़ा और वर्ष 2019-20 में मात्र 3 प्रतिशत वृद्धि अनुमानित है। यदि आप राशि के रूप में देखेंगे तो क्रमश: 2245 करोड़ रूपये एवं 790 करोड़ रूपये की वृद्धि दिखाई दे रही है। राज्य का गैर कर राजस्व, जिससे प्राप्ति होती है, उसमें 2018-19 में 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई लेकिन 2019-20 में देखेंगे तो मात्र 7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। राशि के रूप में क्रमश: 1800 करोड़ और 600 करोड़ रूपये है। अमरजीत जी, आप एक बार मिलान कर लेना।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, इससे भी गंभीर मामला कि जो ब्याज की अदायगी है और ब्याज का भुगतान होना है, हम कितनी राशि ब्याज के रूप में भुगतान कर रहे हैं, तो वर्ष 2018-19 में 3816 करोड़ था, जो कुल राजस्व का 5.15 प्रतिशत था। वर्ष 2019-20 में देखेंगे तो 4489 करोड़, जो कुल राजस्व का 5.6 प्रतिशत है। तो हम यह देख रहे हैं कि हमारे ब्याज भुगतान की राशि लगातार बढ़ रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ सरकार ने पिछले 14 महीनें में 17,700 करोड़ रूपये का ऋण लिया है। प्रतिमाह लगभग 1264 करोड़ होता है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय, टोटल 9 हजार करोड़ रूपये का तो ऋण है तो कहां 17 हजार करोड़ पर पहुंच गये?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि आप प्रतिदिन के हिसाब से देखेंगे तो 42 करोड़ रूपया होता है। यदि हम प्रति मिनट का देखेंगे तो लगभग 3 लाख रूपया होता है। सरकार में आने के बाद आपकी यह स्थिति है।

श्री अमरजीत भगत :- अब मान लीजिये कि रमन सिंह जी पहले लोन लिये हैं तो हम लोग उसको नहीं पटाये क्या ? हम लोगों को पटाना तो पड़ेगा न।

श्री धरमलाल कौशिक :- यदि आप सरकार के ऊपर लोन 83 हजार करोड़ रूपये से अधिक हो गया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रति व्यक्ति आय के बारे में बताना चाहूंगा कि प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय 92413 से बढ़कर 98281 हो गई, 6.35 प्रतिशत की वृद्धि हुई । भारत की प्रति व्यक्ति आय 1,26,406 से बढ़कर 1,35,450 लगभग 6.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई । यदि हम इसके बाद में देखेंगे तो प्रति व्यक्ति आय देश में 9 हजार से ज्यादा बढ़ी है और हमारे प्रदेश में 5500 से ज्यादा बढ़ी है । ये आंकड़े बता रहे हैं कि हम कहां पर खड़े हुए हैं और कहां जा रहे हैं ? इस प्रदेश में सबसे बड़ा तबका जिसकी हम लोग बात करते हैं और उनके चिन्ता की जरूरत है, फिर चाहे हम सरगुजा की बात करें या बस्तर की बात करें, जहां सबसे ज्यादा वनवासी क्षेत्र है और आदिवासी बंधु निवासरत् हैं । वास्तव में प्रदेश के विकास का बजट उनके लिए सबसे ज्यादा होना चाहिए और उनके विकास के लिए कार्य योजना बननी चाहिए ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पिछली बार एक प्रश्न लगाया था, उस समय आदिवासी उप योजना क्षेत्र में 2018-19 में 22 हजार करोड़ का बजट रखा गया था और 2019-20 में यह बजट 18 हजार करोड़ कर दिया गया । उसमें लगभग 4 हजार करोड़ की कटौती की गई है । हम यह भी जानते हैं कि जितना बजट रखेंगे, उतना खर्च भी नहीं होगा और यदि खर्च का आंकड़ा देखेंगे तो पिछले समय 77 प्रतिशत राशि खर्च हुई थी और अभी हम देखेंगे तो जनवरी तक लगभग 67 प्रतिशत राशि खर्च हुई है । वास्तव में यदि हम वनवासी क्षेत्र के चिन्ता की बात करते हैं तो वहां अनेक प्रकार की जो समस्याएं

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हैं, उन समस्याओं को लेकर उन क्षेत्रों का ज्यादा से ज्यादा विकास हो और उनके लिए निर्माण कार्य से लेकर अन्य कार्यों के लिए बजट में राशि बढ़ायी जाने की आवश्यकता है, वह राशि बढ़नी चाहिए ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय नेता जी, आपको मालूम होगा कि भारत सरकार आदिवासी उप योजना में जो राशि आवंटित करती थी, वह राशि छत्तीसगढ़ के लिए आना बंद हो गया है, कटौती कर दी तो उसमें प्रतिकूल असर तो पड़ेगा ही न।

श्री धरमलाल कौशिक :- अमरजीत जी, आप यह देख लें कि कुल बजट में आपका कितना हिस्सा है और राष्ट्र का हिस्सा कितना है ? आपको स्पष्ट हो जाएगा कि प्रदेश के विकास की आपकी भागीदारी कितनी है और केन्द्र की भागीदारी कितनी है ? ये तो दिया गया है ।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, यह कोई नई बात तो नहीं है । वह जो केन्द्र से एलाट होता है, वह आता ही है । वह राज्य का अंश है, वह तो मिलना ही है।

श्री धरमलाल कौशिक :- ये तो दिया गया है इसलिए आपको बताने की जरूरत नहीं है कि उसमें राज्य का हिस्सा कितना है और केन्द्र का हिस्सा कितना है।

श्री अमरजीत भगत :- आदिवासी उप योजना में केन्द्र ने पैसा देना बंद कर दिया है । कृपा करके आप भी एकाध चिट्ठी लिख दें कि उसमें आवंटन जारी करें ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसे जिलों को विशेष रूप से चिह्नांकित करके जो पिछले समय कार्य हुआ । माननीय अमरजीत जी, पोटा केबिन के लिए उस समय जो व्यवस्था की गई, खासकर नक्सल प्रभावित क्षेत्र में रह रहे बच्चों के लिए, जिनको भर्ती करके पढ़ायी जाये, उनके लिए छात्रावास की व्यवस्था हो, उनके लिए भोजन की व्यवस्था हो, कपड़े, आवास की व्यवस्था हो, लेकिन आप उसको जाकर देखेंगे कि पोटा केबिन की क्या स्थिति है ? उसकी स्थिति लगातार खराब हो रही है, पोटा केबिन बंद हो रहे हैं । बच्चों के भोजन की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, वह नहीं हो पा रही है ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, पोटा केबिन के लिए दिल्ली से मदद मिलती रही । अभी जो दिल्ली से पोटा केबिन के लिए कम राशि मिल रही है और वे रूचि नहीं ले रहे हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने तो इसीलिए कहा कि जिस बात को लखमा जी बोल रहे हैं कि हम वहां कम व्यवस्था कर पा रहे हैं । आदिवासी क्षेत्र की ऐसे 7-8 जिलों में यदि आप व्यवस्था कम करेंगे और वहां की चिंता नहीं करेंगे तो प्रदेश में और कहां की चिंता करेंगे । हमारा जो प्रदेश है, वह अनुसूचित जनजाति बाहुल्य प्रदेश है और ऐसे प्रदेश के जो बच्चे हैं, खासकर जो नक्सल प्रभावित क्षेत्र हैं और ऐसे जिलों को चिह्नांकित करके जो कार्य पूर्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा शुरू किया गया था, ऐसे कार्यों को भी प्राथमिकता में देने की बजाय उन कार्यों को आप बंद कर रहे हैं, वहां पर जो कमी आ रही है और इसका सीधा-सीधा प्रभाव वहां पर पढ़ने वाले बच्चे हैं,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

वहां जो रहने वाले लोग हैं, वहां रोजगार के साधन उपलब्ध होना चाहिए, इन सारी चीजों पर जब तक उन क्षेत्रों में आप बजट नहीं बढ़ाएंगे, आप उन क्षेत्रों का विशेष प्रावधान नहीं करेंगे तो हमारी पहचान छत्तीसगढ़ की है, कहीं न कहीं वहां के लोग सफर करेंगे । मैंने इसलिए कहा कि वहां की बजट बढ़नी चाहिये । बजट बढ़ाकर विशेष रूप से जिलों में काम हो, यह हम लोगों को चिंता करने की आवश्यकता है । बड़े कर्जे की जो बात आई, अभी बहुत सारे सदस्य जो बोल रहे थे, यह जो घोषणा पत्र की बात करते हैं, घोषणा पत्र में इन्होंने क्या किया ।

वादे से मुकर आप अपनी पीठ क्यों थपथपा रहे हो
तड़प रहा है छत्तीसगढ़ और आप मुस्कुरा रहे हो ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो कर्जे की बात किसानों की आई है, किसानों के कर्जे के बारे में बात कही है, जो सहकारी बैंक और सहकारी बैंक के बाद में आपके व्यावसायिक बैंक में एक लाईन में कहा कि कांग्रेस का कहना साफ, हर किसान का कर्जा माफ । मुख्यमंत्री जी, मुझे तो अभी भी उम्मीद था कि आपने सहकारी बैंक का कर्ज माफ किया, हमने आपको धन्यवाद दिया । आपको पिछले समय धन्यवाद दिया है, हम उसमें कोताही नहीं बरतते हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- नेताजी, एक बार मुख्यमंत्री जी धन्यवाद देते हैं, बगल में देखते हैं कि नाराज तो नहीं हो रहे हैं । (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- ऐसा है अमरजीत जी, आपको चिंता करनी है, हमें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है । लेकिन व्यावसायिक बैंक में जो कर्जा लिए, आपने उस समय कहा था, जो लोग पैसा पटा देंगे, उसका पैसा भी वापस किया जायेगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, हरिशंकर साहू, चंदूलाल साहू, ऐसे अनेक उदाहरण मेरे पास में है, वह आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं । घोषणा पत्र, जिसमें आपने कहा कि 1 नवम्बर 2018 से 30 नवम्बर 2018 के बीच जिन किसानों ने सार्वजनिक बैंको से ऋण लिया है, वह उस अवधि का ऋण पटायेंगे, उन्हें वापस किया जायेगा । आपने एक आदेश भी जारी किया कि जिन्होंने सहकारी बैंक में कर्जा लिया, सहकारी बैंक में कर्जा लेने के बाद में जो पटाये हैं, उसके लिए सरकार के द्वारा एक आदेश जारी हुआ है, मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूँ कि जिस प्रकार से सहकारी बैंक में जिन लोगों ने कर्जा पटाया है, उनका वापस किये हैं, व्यावसायिक बैंक में जो लोग कर्जा लिये हैं, शेम आदेश उनके लिए भी जारी हो जाये तो ऐसे किसान आज जो परेशान है, जो ब्याज और पेनाल्टी के साथ जिनका भुगतान हो रहा है, ऐसे लाखों किसान, हजारों किसान है, जो आपके एक आदेश से इनके जीवन में खुशियां आ जायेंगी, इनके जीवन में हरियाली आ जायेगी । मैं समझता हूँ कि आप अपने भाषण में मुख्यमंत्री जी थोड़ा बड़ा मन बनाकर और बड़ा दिल करके घोषणा करेंगे तो ऐसे किसान भी आपको धन्यवाद देंगे । माननीय अध्यक्ष महोदय, धान खरीदी की बात बहुत लोगों ने की है, इसलिए विस्तार में नहीं जाना चाहता हूँ । आपने जो पंजीयन किया है, पंजीयन में स्पष्ट है कि आपने 19 लाख

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

55 हजार से अधिक किसानों का पंजीयन किया । 1 एकड़ में 15 क्विंटल धान की खरीदी करेंगे, 1 लाख 5 क्विंटल धान की खरीदी आपको करनी थी । आपने लक्ष्य कितना रखा, 85 लाख मीट्रिक टन, जब आपको मालूम है कि हमको 1 लाख से अधिक मीट्रिक टन धान की खरीदी करनी है तो आपने लक्ष्य 85 लाख क्यों रखा ? मुख्यमंत्री जी ने शुरू दिन से ही जो निर्देश जारी किये, मुझे बहुत ही दु:ख के साथ इस विषय को रखना पड़ रहा है, 15 साल में डॉ.रमन सिंह जी ने धान खरीदा, 15 बार प्रेस में नहीं बोले, एक आदेश से ही धान की खरीदी शुरू हो गयी । मुख्यमंत्री जी जब रात को सोते थे, सुबह उठकर धान के लिए रोज एक नई व्यवस्था धान के लिए बनाते थे ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- नेताजी, आप लोगों ने धान खरीदा । आपका औसत धान खरीदी 15 साल में कितना है, यह तो बतायें ? माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 लाख से 50 लाख मीट्रिक टन इनका था, हम लोग तो 83 लाख मीट्रिक टन खरीदे हैं, किसानों का और बचा है, जिनको टोकन दिये हैं, उसको भी खरीदेंगे । आप लोगों ने 20 बोरा खरीदने का था, उसे 15 बोरा कर दिया । 15 क्यों किया, 20 बोरा आप लोगों ने क्यों नहीं खरीदा ? मैं तो 15 के हिसाब से आपको बता दिया कि 15 के हिसाब से 19 लाख 55 किसानों का यदि आप खरीदेंगे तो आपका कितना लगेगा?

श्री कवासी लखमा :- पूरे 19 लाख किसान नहीं बेचते हैं। हम लोग थोड़ी बेचेंगे।

श्री धरम लाल कौशिक :- लखमा जी आपके यहां का उत्पादन मुझे नहीं मालूम लेकिन जहां मुख्यमंत्री जी रहते हैं, जहां अजय चन्द्राकर जी रहते हैं, जिस क्षेत्र में हम लोग रहते हैं, रविन्द्र चौबे जी रहते हैं उस क्षेत्र का औसत जो उत्पादन है वह 20 और 25 क्विंटल प्रति एकड़ का है, 15 क्विंटल का नहीं है।

श्री अजय चंद्राकर :- नेता जी, माननीय रविन्द्र चौबे जी जिस इलाके में रहते हैं वह नगद फसल वाला इलाका है और अभी ओला वृष्टि में वह कुछ बोलवा नहीं रहे हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- तो लखमा जी, जिस बात को आप बोल रहे हैं कि घर में रखेंगे तो घर में रखने के बाद भी आप तो 15 क्विंटल भी खरीदने में हॉफ गये। और आप पहले ही बार में हॉफ गये। आपको तो हंसते-हंसते खरीदना था। 1 नवंबर की जगह आप 1 दिसंबर ले आये और उसके बाद सोसायटियों में क्या व्यवस्था रही कि बारदाना नहीं है, तराजू नहीं है। मैंने उस दिन कहा था कि धान बेचने के लिए 5.30 बजे तक का नियम है और दारू के लिए लखमा जी ने रात के 12.00 बजे तक खोल दिया। ये दारू में आपने किसानों के साथ न्याय किया है।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, जितना किसानों के लिए आप बोल रहे हैं अगर उस समय आप थोड़ी सी मदद कर दिये होते, एकाध बार दिल्ली में जाकर बात कर लिये होते, साथ दे दिये होते, एकाध चिट्ठी लिख दिये होते तो शायद दिल्ली मान गई होती लेकिन आप लोगों ने तो ऐसा कुछ किया ही नहीं। सांप मर गया अब लाठी पीटने से क्या फायदा।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरम लाल कौशिक :- अमरजीत जी, ये आपको मालूम है कि हमने राजनीति नहीं की है। मुख्यमंत्री जी को मालूम है कि डॉक्टर साहब जब मुख्यमंत्री थे, हम लोग बोनस नहीं दे पाये, और बोनस नहीं देने के कारण आप लोगों ने घोषणा की कि हम अपने दम पर घोषणा करते हैं, हम दिल्ली को नहीं जानते, हम बोनस देंगे और कहां गया आपका जो सीना चौड़ा किए थे वह? इसमें आपका बोनस कहां है? वह दिखना चाहिए या नहीं दिखना चाहिए, किसानों का बोनस मिलना चाहिए या नहीं मिलना चाहिए? हम लोगों ने राजनीति नहीं की,राजनीति आप लोगों ने की।

श्री अमरजीत भगत :- आपके क्षेत्र में धान का 2500 रूपये प्रति क्विंटल मिला या नहीं मिला यह बताईये?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय खाद्य मंत्री जी अभी कस्टम मिलिंग में व्यस्त हैं उसके बाद फिर उसमें आयेंगे।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी,

अच्छे दिन पाछे गये और गुरू से किये ना भेद।
अब पछताये होत का जब चिड़िया चुग गई खेत।।

श्री धरम लाल कौशिक :- न यहां कोई चिड़िया चुगने का है और न कोई पछताने का है। जनता ने आपको जनादेश दिया है जनता का आप सम्मान करो। किसान ने जनादेश दिया है किसान का सम्मान करो और उसी सम्मान की बात मैं यहां पर कर रहा हूं कि हम बोनस नहीं दे पाये थे, हमने राजनीति नहीं की। खाद्य मंत्री जी बोल रहे हैं, खाद्य मंत्री जी आपने कहा कि हम बोनस देंगे और अपने भरोसे में देंगे। अब काहे इधर-उधर की बात कर रहे हो? पहले साल जितना धान खरीदना था उसी में सरकार हॉफ गई और हॉफते-हॉफते एक महीना डिले किए और एक महीना डिले करने के बाद क्या स्थिति बनी कि धान को जप्त करना शुरू किए। मैं इसके विस्तार में नहीं जाऊंगा लेकिन एक बात चिंता का विषय है जिस बात को आज हम लोग उठाये थे कि जितनी खरीदी किए, खरीदी हो गई लेकिन खरीदी होने के बाद 4 फरवरी के बाद डी.ओ. नहीं कट रहा है। डी.ओ. नहीं कटने के कारण धान सोसायटियों में जाम है।

श्री अमरजीत भगत :- 43 लाख क्विंटल का डी.ओ.कट चुका है और लगातार धान का उठाव जारी है ।

श्री धरम लाल कौशिक:- मैं आपके सरगुजा की सोसायटी में गया हूं और वहां पर 4 फरवरी से डी.ओ. नहीं कटा। पूरी सोसायटियों में जाम है। बारिश हो रही है और कैपिंग की व्यवस्था नहीं है। आखिर ये सरकार, इसे अमरजीत जी क्या बतायेंगे ? मुख्यमंत्री जी बतायेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज स्थिति यह है। आपने 82 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा और आज सोसायटी में कितना है ? 18 लाख मीट्रिक टन धान आपकी सोसायटी में पड़ा हुआ है। उसको न तो मिलिंग के लिये भेज रहे हैं, न

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उसको स्टेकिंग प्वाईंट में भेज रहे हैं। बारिश लगातार हो रही है, आखिर चार फरवरी के बाद ऐसी कौन सी परिस्थिति आ गयी कि उस धान को मिलिंग में भेजने के लिये डी.ओ. नहीं काट रहे हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- 43 लाख मीट्रिक टन का कट चुका है और उठाव रोज हो रहा है। आपको कहां से पता चल गया। टोटल जो है....।

श्री शिवरतन शर्मा :- ये कल जो रिपोर्ट है, वह आनलाईन रिपोर्ट 4 तारीख की रात की है। 18 लाख मीट्रिक टन से ज्यादा धान आपके उपार्जन केन्द्रों में पड़ा हुआ है। यह आनलाईन रिपोर्ट कल रात की है।

श्री अमरजीत भगत :- लगातार डी.ओ. कट रहा है और 43 लाख मीट्रिक टन का डी.ओ. कट चुका है। जहां-जहां है, वहां से उठाव हो रहा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं आरोप लगा रहा हूं न। 4 फरवरी का तो बोला हूं। आप पता कर लो डी.ओ. कटा है कि नहीं कटा है। अभी कटना शुरू हुआ है। 4 फरवरी के बाद में एक महीने तक क्या कर रहे थे ? यही तो प्रश्न है। यही तो संदेह है। आखिर एक महीने तक डी.ओ. नहीं काटने का और धान को खुले आसमान के नीचे छोड़ने का क्या कारण है ? इसी बात को तो बोल रहे हैं, सेटिंग नहीं हुआ क्या करते हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- आपको जो भी जानकारी दे रहे हैं, गलत जानकारी दे रहे हैं। लगातार डी.ओ. कट रहा है। 43 लाख मीट्रिक टन का कट चुका है।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं सोसायटी में जा करके अधिकारियों से बात करके आया हूं। आपके सोसायटी के अधिकारी हैं, उस अधिकारी से मैं बात करके आया हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप अपनी चर्चा जारी रखिये।

श्री अमरजीत भगत :- चावल भी 21 लाख मीट्रिक टन जमा हा चुका है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरे जिले की बात नहीं कर रहा हूं, जहां अमरजीत भगत हैं, वहीं की बात कर रहा हूं। आपके जिले की बात कर रहा हूं। आपकी सोसायटी की बात कर रहा हूं। उस सोसायटी में जा करके मैंने अधिकारियों से बात करके आया है। उन्होंने कहा कि 4 फरवरी के बाद डी.ओ. नहीं कट रहा है। सोसायटी जाम है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके पहले भी धान खरीदी होती थी। लेकिन धान खरीदी के बाद में सामान्यत: सोसायटी से ट्रांसपोर्टर धान ले जाते हैं और ले जा करके जहां भी कस्टम मिलिंग है, सीधे राईस मिल में चले जाते हैं। स्टेकिंग प्वाईंट में चले जाते हैं। यह बरसात में अभी जो धान खराब हो रही है, उसका जो जर्मनेशन आ रहा है। इससे तो बचाया जा सकता था। यह जो राष्ट्रीय क्षति हो रही है, उससे तो बच सकते थे।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, कहां पर जरई हो रहा है, कहां पर भीग रहा है। चलिये, मैं साथ में चलने के लिये तैयार हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- चलो न मैं आपको लेकर चलता हूं। मैं दिखा देता हूं। मैं आपको ले के चलकर दिखा देता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- एकदम भ्रामक वाली बात करते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- एक नहीं अनेक सोसायटी में दिखा देता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- सब जगह व्यवस्था है। त्रिपाल की व्यवस्था है। प्लास्टिक की व्यवस्था है। रखने की जगह है, धान खरीदी तो हो नहीं रही है। हर जगह व्यवस्था है। मैं आपके साथ चलने के लिये तैयार हूं। चलिये कहां पर भीग रहा है दिखा दो। आप एकदम भ्रामक बात कर रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- हम आप लोग जैसे नहीं हैं। चौबे जी को दस बार अजय चंद्राकर जी बोल चुके हैं। पांच घुरूवा का बता दो, लाट निकालकर गौठान का बता दो, पांच गौठान का लाड निकालकर बता दो, जो गौठान लाट में आ जाये हमको दिखा दो। हम वह नहीं हैं। आप देखना चाहते हैं, मैं आपको ले जाना चाहता हूं। मैं आपको ले जाकर दिखा दूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी, क्या है, जितना नंबर मिलना था उतना नंबर मिल गया। अब नंबर नहीं बढ़ेगा। अब माईनस मार्किंग शुरू हो गयी। अब मुख्यमंत्री जी से आपकी माईनस मार्किंग शुरू हो गयी। इसलिए बोलने से कोई फायदा नहीं है।

श्री अजय चंद्राकर :- आप सफाई देकर इस भ्रम में मत रहो कि माननीय मुख्यमंत्री जी कुछ नहीं जानते हैं। वह सब जानते हैं। शुरू से आखिरी तक जिन-जिन चीजों में जो-जो दर है।

श्री अमरजीत भगत :- मेरे को आप लोगों की सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है। कौन, क्या, कैसा है ? आप अपने लोगों को देखो।

श्री अजय चंद्राकर :- वह सब जानते हैं, स्पष्टीकरण से कोई फर्क नहीं पड़ना है। हर चीज को रेट वह जानते हैं। छत्तीसगढ़ का देखो।

श्री देवेन्द्र यादव :- वह जैसे आपने इस्तीफा देने का वादा किया था, क्या यह भी ऐसी वाली बात है।

श्री अजय चंद्राकर :- किसान नेता, स्वारी, वह समय निकल गया।

श्री देवेन्द्र यादव :- आपने जब वादा किया था तो हम लोग सोचें कि ये जो जो किये हैं, चलिये दिखा देंगे।

श्री रामकुमार यादव :- 15 लाख जइसने केहे, तइसने उहू बइठ गे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बैठिये-बैठिये। कितना समय और लेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक किसान..।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, इस सदन के नेता प्रतिपक्ष जी का ढाई घंटे का

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

भाषण का रिकार्ड है। पिछले नेता प्रतिपक्ष का पौने तीन घंटे का है। पिछले नेता प्रतिपक्ष का पौने दो घंटे का है।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं ढाई घंटा नहीं बोलूंगा।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सिंहदेव साहब का यहां बैठे थे, दो घंटा 57 मिनट का रिकार्ड है। माननीय मुख्यमंत्री जी को मालूम है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक किसान को अपना धान बेचने के लिये कोर्ट जाना पड़ा। कोर्ट से आदेशित हुआ कि सरकार को धान खरीदना पड़ेगा।

श्री अजय चंद्राकर :- चौबे जी, बिना टोकन कांटे लिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- मुख्यमंत्री जी उस दिन घोषणा किये। जिनको टोकन दिया है, उनके धान को खरीदेंगे। लेकिन टोकन वाले का धान खरीदना बंद कर दिया है और एक किसान फिर हाईकोर्ट में गया है। जाने के बाद में अभी हाईकोर्ट में पेंडिंग है। माननीय मुख्यमंत्री जी मैं आपकी नियत पर शक नहीं कर रहा हूं। लेकिन अधिकारियों ने उनको मना कर दिया, उनको हाईकोर्ट जाना पड़ा। आपने सदन में घोषणा की कि जिनको टोकन दिया है, उनका धान खरीदेंगे। मैं कहता हूं कि आप उनका धान खरीदेंगे। मैं कहता हूँ कि आप उनका धान खरीदेंगे, लेकिन मैं आपसे एक आग्रह और करना चाहता हूँ कि जो किसान अभी भी धान लेकर रखे हुए हैं, जो किसान धान बेच नहीं पाये हैं मान लीजिए ऐसे किसानों का धान खरीद लेंगे तो 10-5 हजार करोड़ रूपये और लग जाएगा। आप 2-4 करोड़ रूपये लग जाएंगे, ऐसा बोल दीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय नेता जी, कृपापूर्वक एक मिनट सुन लीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप 50 करोड़ बोल दीजिये।

श्री अमरजीत भगत :- वह जो किसान लोग आन्दोलन कर रहे थे।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं आन्दोलन में नहीं जा रहा हूँ।

श्री अमरजीत भगत :- आप सुन तो लीजिये। राजनांदगांव का किसान, आप जिन लोगों को बोल रहे थे कि इच्छामृत्यु मांग रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप उस दिन बता दिये थे। वह आ गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह रिकॉर्ड में आ गया है, पुरानी बात है।

श्री अमरजीत भगत :- ये दो तरह की बात है। यदि आप बोल हैं तो चलिये, मान जाता हूँ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम बजट पारित ही कर रहे हैं। मुख्यमंत्री मंत्री है तो आप टोकन वाले का धान खरीद रहे हैं और भी कुछ किसान बचे हुए हैं उनका भी आप धान खरीद लेंगे । आपका बजट वैसी पारित कर देंगे। उन किसानों का भला हो जाएगा तो मैं आपसे आग्रह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

करना चाहूंगा कि जो किसान परेशान, दु:खी हैं ऐसे किसानों का धान और खरीद लीजिए। इससे छत्तीसगढ़ का कोई नुकसान नहीं होगा। छत्तीसगढ़ का भला होगा और आपको भी धन्यवाद् देंगे।

श्री ननकीकराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपना बटन क्यों नहीं दबाते हैं।

श्री ननकीकराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जिन किसानों का धान जप्ती किया है और उसके बारे में आपने कलेक्टर को भी आदेश दिया था कि उसको छोड़ दें, लेकिन उसको छोड़ा नहीं गया। हाईकोर्ट में रिट पीटिशन किया। मैं बता रहा हूँ आप उस धान को खरीदेंगे क्या ? मेरे ख्याल से खरीदना भी चाहिए क्योंकि आपने किसानों का धान गलत जप्ती किया था। ठीक है धन्यवाद्।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अमरजीत जी बोल रहे थे कि हमने ज्यादा धान खरीदा। ये बात तय है कि आने वाले समय में आपको इससे और ज्यादा धान खरीदना पड़ेगा और उसका कारण है 2500 रूपये समर्थन मूल्य। आपने गन्ने का समर्थन मूल्य 355 रूपये घोषित किया है। आपने गन्ना 261 रूपये में खरीदा। उनको जो बोनस 50 रूपये दिया जाना चाहिए, वह भी आपने नहीं दिया। अभी भी 84 करोड़ रूपये बचा हुआ है। बाकी पैसा दिये थे। सरगुजा का भी बचा हुआ है यहां का भी पैसा बचा हुआ है। 50 रूपये बचा हुआ है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आप गन्ने के समर्थन मूल्य में नहीं बढ़ायेंगे, उसको समर्थन मूलय में नहीं खरीदेंगे। आप मक्के, सोयाबीन को समर्थन मूल्य में नहीं खरीदेंगे तो लोग धान की तरफ आएंगे। ये जो रिकॉर्ड आप बता रहे हैं कि हम ज्यादा धान खरीदे हैं तो आने वाले समय में इससे ज्यादा धान खरीदने के लिए आपको तैयार रहना चाहिए, क्योंकि जब तक समर्थन मूल्य के आधार पर अन्य जिंस को नहीं खरीदेंगे, उनको प्रोत्साहन राशि नहीं देंगे तो लोग धान की तरफ में आएंगे। अगर लोग धान की तरफ आएंगे तो वह आपके लिये इस साल की ही समस्या नहीं है। आपको आने वाले समय में इससे ज्यादा तैयारी करके रखने की आवश्यकता पड़ेगी और इसमें बाकी जिन्सों के ऊपर भी हमको विचार करने की आवश्यकता पड़ेगी कि हम उनको कैसे समर्थन मूल्य देकर आगे बढ़ा सकते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कल डॉक्टर साहब जिस बात का उल्लेख किये। मैंने कहा कि आदिवासी क्षेत्र की चिंता नहीं हुई। आपने बहुत बड़ी चिंता की। बोधघाट परियोजना, आपने पैरी डाट पानी जशपुर, शेखरपुर सरगुजा की चिंता की और आपने उसमें 20-20 करोड़ रूपये का प्रावधान भी रखा। ये मालूम है कि ये परियोजना अभी कहीं आने वाली नहीं है तो आपको तो टोकन रखना था आप नये मद में 5 लाख भी रख सकते थे और उसके बाद में उसकी क्या स्थितियां बनेंगी, यह सुनने में बहुत अच्छा लग रहा है कि 21 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट के लिए 20 करोड़ रूपये रखा गया। आप 5 लाख भी रख सकते थे, सवाल यह है कि 20-20 करोड़ रूपये रखने की बात नहीं है। आपने 21 हजार करोड़ के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रोजेक्ट के लिए आपकी जो योजना है आपको मालूम है कि अभी प्रिंट करवा दिये हैं और यह आने वाले नहीं है।

समय :
4:34 बजे **(उपाध्यक्ष महोदय (श्री मनोज सिंह मण्डावी) पीठासीन हुए)**

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, केवल यह कह सकते हैं कि हम आदिवासी क्षेत्र में बढ़ाये हैं, वहां पर वृद्धि किये हैं। हम उनकी चिंता कर रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी, केवल इतना ही संदेश देने का काम कर रहे हैं। माननीय बृजमोहन जी और डॉक्टर साहब भी जिस बात को रखें। पहले भी उसका परीक्षण करवाएं हैं उसमें क्या-क्या दिक्कतें आ रही हैं और क्या-क्या दिक्कतें आने वाली हैं। आप बजट में रखे हैं, मेरी आपको शुभकामना है, आप उसमें सफल हों, यह भी मेरी शुभकामना है, जिससे किसानों का भला हो सके। लेकिन मैं आपको बता रहा हूं कि यह परियोजना अभी आने वाली नहीं है। जो आपने गणना किया, मैं उसमें एक बात कहना चाहता हूं। इसके पहले राज्य बनने के समय छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार थी, उस समय का जो प्रतिशत आपके पुस्तक में अंकित है, उसमें लगभग 27-28 प्रतिशत रकबा सिंचित एरिया है। उसके बाद 15 साल डॉक्टर साहब के कार्यकाल में लगभग 35-36 प्रतिशत सिंचाई का रकबा है। हमे देखेंगे कि मुख्यमंत्री जी ने कहा कि वह जो रकबा है, उस योजना के हिसाब से है, लेकिन वास्तविक रकबा 13 लाख हेक्टेयर है और 13 लाख हेक्टेयर को आने वाले समय में 32 लाख हेक्टेयर तक किये जाने की योजना बना रहे हैं। अब 32 लाख हेक्टेयर की आपकी योजना बन गई, यह 4 परियोजना तो आपकी आने वाली नहीं है। आप देख लेंगे, आप भी यहीं बैठे हैं, हम भी यहीं बैठे हैं। बोधघाट से लेकर के जशपुर की परियोजना आने वाली नहीं है, लेकिन उसके बाद में आपने बजट में सिंचाई में कितना प्रावधान रखा है ? आपने जितना सिंचाई में प्रावधान रखा है, इस साल 1 लाख हेक्टेयर, 50 लाख हेक्टेयर, कितने प्रतिशत रकबा में सिंचाई क्षमता बढ़ा लेंगे? सिंचाई के क्षेत्र में आपने जो बजट रखा है, उससे इस साल आप कितना रकबा बढ़ा लेंगे? वह रकबा बढ़ने वाला नहीं है। इसलिए आपको भी मालूम है, आपने ये जोड़ दिया है कि 2 लाख 66 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में केवल हम सिंचित करेंगे और 2 लाख 66 हजार के लिए भी इस साल के बजट में कोई प्रावधान नहीं है, जिसको आप आने वाले समय में जब 2021-22 का बजट प्रस्तुत करेंगे, उस समय बता सकें कि 13 लाख हेक्टेयर से मैंने 14 लाख हेक्टेयर किया है। इसलिए मैं उस दिन माननीय चौबे जी से आग्रह कर रहा था हमारा अरपा-भैसाझार प्रोजेक्ट है, इस समय प्रदेश में वह सबसे बड़ी सिंचाई योजना का प्रोजेक्ट है। उसके बाद हमारे क्षेत्र में मनियारी बैराज का है, मैंने पथरिया बैराज की बात कही। प्रदेश में ऐसी बहुत सारी महत्पूर्ण योजनायें हैं जिनका काम चल रहा है और लगभग किसी का 50, 60, 70 प्रतिशत तक काम हो गया है, वह काम न रूके। बल्कि उसमें राशि दे करके बढ़ायेंगे तो मुझे लगता है कि जो हमारा लक्ष्य है उसमें

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हम कुछ न कुछ प्राप्त करेंगे। लक्ष्य को प्राप्त नहीं करेंगे, कुछ न कुछ आगे बढ़ेंगे। क्योकि जो अधूरी योजनायें हैं, उन योजनाओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। लेकिन आपकी जो नई योजना है, हाथी के दांत दिखाने के अलग और खाने के अलग, यही रहेगी। वह जो आपका प्रोजेक्ट है, जिसकी बात करके आदिवासी क्षेत्र के बजट बढ़ाने की बात कर रहे हैं, इससे कोई लाभ नहीं होने वाला है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में हम आज भी यह कह सकते हैं 70 प्रतिशत आबादी कृषि के ऊपर निर्भर है। मैं आज भी कह सकता हूं कि कितना भी औद्योगिकीकरण कर लो, यदि लोगों के रोजगार का जरिया है तो वह कृषि है और कृषि से ही हम उनको इस प्रदेश में सबसे ज्यादा रोजगार मुहैया कराते हैं। जब हम उनको कृषि से रोजगार मुहैया कराते हैं, मैं कृषि का बजट देख रहा था कि आपने सीधा-सीधा 27 प्रतिशत कम कर दिया है। कृषि के बजट में तो आपको बढ़ाना चाहिए। कृषि के क्षेत्र में हम बजट बढ़ा करके कैसे किसानों को मजबूत कर सकते हैं, उस दिशा में जाने की आवश्यकता है। हमारे किसान यदि आत्मनिर्भर होंगे, समर्थ होंगे तो इस प्रदेश का विकास होगा। इस प्रदेश का विकास होगा तो हिन्दुस्तान का विकास होगा। इसलिए कृषि के क्षेत्र में कोताही बरतने की जरूरत नहीं है। ये प्रदेश के अन्नदाता हैं। केवल अपनी चिंता नहीं करते, बल्कि जो उपार्जन करते हैं, अपने परिवार के अलावा जो अन्य लोग कृषि के क्षेत्र में काम करने वाले लोग नहीं हैं, उनके भी पेट की यदि कोई चिंता करने वाले हैं तो यह किसान हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी को कृषि के क्षेत्र में खुले हाथ से बजट देना चाहिए। उससे ज्यादा से ज्यादा सब्सिडी किसानों को मिले, उससे उनको लाभ मिलेगा ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आप सारी बातें अच्छी बोल रहे हैं लेकिन किसी ने आपको आंकड़े गलत दे दिये, 27 परसेंट कृषि का बजट कम हो गया ऐसा बताया न, बस यह है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार पंचायत में शहरी आबादी और ग्रामीण आबादी । आज भी हम देखेंगे तो हमारी ग्रामीण आबादी की संख्या ज्यादा है और यह जो आबादी है । पहले मुख्यमंत्री गौरवपथ योजना हम लोग देखते थे कि गांव में सड़कें बनतीं थीं, मुख्यमंत्री सड़क योजना के अंतर्गत सड़कें बनतीं थीं और आजकल बजट में इतनी कटौती हो गयी है कि गांव में गौरवपथ दिखना भी बंद हो गया है । गांव में आजकल जो मुख्यमंत्री सड़क योजना है वह नहीं के बराबर है । आपने घोषणा पत्र में कहा है कि गांव के जितने मोहल्ले हैं, गांव के जितने पारा हैं, ऐसे सभी को हम बारहमासी पक्की सड़कों से जोड़ेंगे लेकिन यहां की जितनी आबादी जुड़ी हुई है उसके बाद में उसमें जो जोड़ने वाली बात है । पिछली बार भी हम लोगों ने देखा है और हम लोग इस बार का बजट भी देख रहे हैं कि यह योजनाएं नहीं के बराबर हो गयी हैं, क्या इससे गांव का विकास होगा ? आज भी जो मोहल्ले और बाड़ी क्षेत्र है, जहां पर सड़कें नहीं बनी हैं, बारहमासी सड़कों से जुड़ेंगे और निश्चित रूप से उसमें जो बजट बढ़ना चाहिए, कहीं न कहीं जो बजट उसमें दिखना चाहिए उसमें कमी आयी है और

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

इससे जो गांव का विकास होना चाहिए निश्चित रूप से उसका प्रभाव पड़ेगा । जो गांव विकास की दिशा में आगे हैं उसमें कहीं न कहीं उसके कारण पिछड़ापन आयेगा ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही साथ में हमारे ऊर्जा के क्षेत्र में 15 सालों में कभी यह स्थिति नहीं आयी कि किसानों को पंप के कनेक्शन के लिये लाईन में बैठना पड़े । आज स्थिति यह है कि किसानों ने ट्यूबवेल करवा लिया, बिजली आफिस में आवेदन पत्र लगा दिया और आवेदन पत्र लगाने के बाद लगभग 30-40,000 किसान लाईन में बैठे हुए हैं, पैसा लगाकर, पूंजी लगाकर बैठे हुए हैं । मध्यप्रदेश में लक्ष्य निर्धारित होता था लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद कभी लक्ष्य निर्धारित नहीं हुआ । जब भी किसानों को आवश्यकता पड़ी, जब भी किसानों ने बोर कराया और बोर कराने के बाद सीधा जाकर बिजली कनेक्शन के लिये आवेदन लगाते थे और उनको लाईन मिल जाती थी । आज आखिर ऐसी स्थिति का सामना क्यों करना पड़ रहा है ? किसानों को लाईन क्यों नहीं मिल रही है और उनका लक्ष्य निर्धारित करेंगे तो वे किसान साल, 2 साल, 3 साल इंतजार करें । क्या यही किसानों की सरकार है जो अपने पंप के कनेक्शन के लिये खुद पैसा लगाये उनको जाकर लाईन में बैठना पड़े, ऐसे किसान जो अभी प्रतीक्षा सूची में हैं उनको तत्काल लाईन मिलनी चाहिए और ऐसे किसानों को जो पंप कराकर सिंचाई करना चाहते हैं उनको इसका लाभ मिलना चाहिए ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी के साथ ही साथ आप देखेंगे कि आजीविका मिशन । लगभग इस प्रदेश में 1 लाख 20,000 स्वसहायता समूह हैं और 1 लाख 20,000 स्वसहायता समूहों ने जो कर्जा लिया । उनके ऊपर लगभग 1200 करोड़ रूपये का कर्जा है । आपने कहा कि हम उनका कर्जा माफ करेंगे, माननीय मुख्यमंत्री जी आप 1200 करोड़ रूपये का कर्जा माफ मत करते, आप उनके लिये कोई नवीन मद में ला देते कि चलो कुछ न कुछ तो कर्जा माफ करेंगे और कुछ न कुछ, कहीं न कहीं से आप शुरूआत करते तो निश्चित रूप से उनको लाभ मिलता । इस सरकार के आने के बाद एक और विडंबना है कि 14वें वित्त आयोग की राशि वास्तव में केंद्र के द्वारा पंचायतों को दी जाती है लेकिन पिछली बार हमने देखा कि पंचायतों के अधिकारों का इस सरकार के द्वारा हनन किया गया है । जो 14वें वित्त आयोग की राशि का उपयोग पंचायत को करना चाहिए, इस सरकार के द्वारा पूरे प्रदेश में उस पर बेन लगा दिया गया । जो राशि पंचायतों में गयी थी, उस राशि को पंचायतों से वापस बुला लिया गया और वापस बुलाने के बाद आज तक उसका आहरण नहीं हुआ है । पंचायत मंत्री जी ने कहा था कि विचार करेंगे, लेकिन एक साल हो गया, एक साल में भी आपका विचार नहीं हुआ । पंचायतों में 14वें वित्त आयोग की कितनी बड़ी राशि है ? सरपंचों को बहुत से काम करने हैं, उन्हें पंचायतों का बिल पटाना है, पंचायत की बहुत सारी समस्याओं का निराकरण करना है । जिस सरपंच के समय में पैसा आया था पंचायत चुनाव के बाद सरपंच बदल गए लेकिन 14वें वित्त आयोग के पैसे आ निराकरण आज तक नहीं

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हो सका । छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद यह प्रथम अवसर आया है जब 14वें वित्त आयोग के पैसे से पंचायतों को काम करने से रोका गया है । ऐसी सरकार प्रदेश में चल रही है।

श्री अमरजीत भगत :- नेताजी, आपकी सरकार में भी ऐसा हुआ था । 14वें वित्त का पैसा आप लोगों ने काट लिया था, हमारे नेता प्रतिपक्ष और मुख्यमंत्री जी ने जब विधान सभा में आपत्ति की तब पैसा वापस किया गया । टावर लगाने के लिए लिया गया था ।

श्री बृहस्पत सिंह :- 108 करोड़ रूपए बिना पंचायतों की जानकारी के, एकतरफा ले लिया था ।

श्री अमरजीत भगत :- अपना भी देखिए आप ।

श्री धरमलाल कौशिक :- ये जिसका जिक्र कर रहे हैं, उसका सारा पैसा वापस कर दिया गया था, आप लोगों ने तो आज तक नहीं किया, अभी तक वापस नहीं हुआ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपकी बातों से डॉक्टर साहब सहमत नहीं है पूछ लीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- डॉक्टर साहब सहमत हों या नहीं हों, आप तो सहमत हैं ना मेरी बातों से कि आपकी सरकार ने पंचायतों का गला घोंटा, उनके अधिकारों का हनन किया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- हमने जो किया तो जनता ने हमको देख लिया । अब आप जो कर रहे हो, उसको भी जनता देख रही है, आपको भी यहीं लाकर बैठाएगी ।

श्री अमरजीत भगत :- हमने 15-15 हजार करोड़ किसानों के लिए दिया है ।

श्री मोहन मरकाम :- शर्माजी, 20 सालों के लिए इधर सुरक्षित हो गए अब आप अपनी चिंता कीजिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- जब माननीय मुख्यमंत्री जी, राजस्व मंत्री के रूप में बैठा करते थे तो वे बोलते थे कि अगली बार मान्यता प्राप्त विपक्षी दल नहीं बनोगे, उसके बाद हम 15 साल सत्ता पक्ष में बैठे हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप कितने साल बैठने का संकल्प लेकर गए हैं ?

श्री धरमलाल कौशिक :- उपाध्यक्ष महोदय, आयुष्मान योजना को आपने डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य योजना में परिवर्तित किया, उसके बाद उसमें राशन कार्ड के माध्यम से इलाज कर रहे हैं । पहले जो व्यवस्था थी उमें आपने कटौती की और कटौती करके आपने लगभग 3-4 बीमारियों को हटा दिया । लेकिन आज कोई प्रायवेट अस्पताल इलाज करने को तैयार नहीं है । जिस दिन से आपने डॉ. खूबचंद बघेल योजना क्रियान्वित की है, उसमें जितने लोगों ने इलाज कराया है, उसमें एक पैसे का भुगतान आज तक नहीं हुआ है । यह आपकी योजना है मुख्यमंत्री जी, एक पैसे का भुगतान नहीं हुआ है । अब जब गरीब लोग वहां जा रहे हैं तो अस्पताल वाले बोल रहे हैं कि सरकार ने पैसा नहीं दिया इसके कारण हम इलाज नहीं करेंगे । वे जिस राशन कार्ड को लेकर जा रहे हैं उस राशन कार्ड को घर में लाकर पटक रहे हैं । क्या इसीलिए आपने योजना को परिवर्तित किया है ? आपने पंजीकृत अस्पतालों

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

में इलाज की सुविधा दी है, उनका भुगतान करेंगे, तभी वे अस्पताल लोगों का इलाज करेंगे । केवल भुगतान नहीं किए जाने के कारण आज इस प्रदेश में हजारों लोग इलाज से वंचित हो रहे हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज और कल प्रश्न में यह आया कि एनआरसी के अंतर्गत जो 20 हजार बच्चे भर्ती किये गये । उसमें से 14 हजार बच्चे वापस आए और 6 हजार बच्चे कहां हैं, किस स्थिति में हैं ? ये केवल दो जगहों रायपुर और बिलासपुर की बात है । पूरे प्रदेश का आंकलन करेंगे तो क्या स्थिति होगी ? वास्तव में इस पर गंभीर चिंता करने की आवश्यकता है । पिछले समय चना दिया जा रहा था, मुख्यमंत्री जी ने आते ही उसे बंद कर दिया । अभी जो गुड़ दे रहे हैं पता नहीं उसको कहां से लाया गया, लोग गुड़ को खाने के बजाय उसे फैंक रहे हैं, उसकी क्वालिटी चेक कराना पड़ेगा । मुख्यमंत्री जी जो गुड़ बांट रहे हैं वह गुड़ जानवरों को खिलाने के काम भी नहीं आ रहा है । पता नहीं किसके कहने से, कहां से उसे खरीदा गया है ।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, असत्य बयान क्यों करते हैं ? आदिवासी क्षेत्र के लोग अगर गुड़ खा रहे हैं तो आपको अच्छा नहीं लग रहा है क्या ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप 5 किलो की जगह 2 किलो दें, लेकिन अच्छी क्वालिटी का गुड़ दें ।

श्री रामकुमार यादव :- पहली के तुम्हर नून हा बासी में घूरत नहीं रहिस हावे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय नेता जी, आप आदिवासियों के पीछे ही क्यों हाथ धोकर पड़े हो? कुछ तो मिल रहा है। आपके समय में तो कुछ मिल ही नहीं रहा था।

श्री धरमलाल कौशिक :- हमारे समय में मिल रहा था तो आपके मंत्री ने कहा कि वह चखना है। उन्हें चखना याद आ गई कि वह कैसे चखना है। चखना है या चना है और उसका पोषण क्या है? वह पता लग गया, फिर चालू किये।

उपाध्यक्ष महोदय :- आप कितना समय लेंगे?

श्री अमरजीत भगत :- चलिए, साथ में चलकर उसका टेस्ट लेते हैं। (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- हां चले चलेंगे। आप तो सब जगह जाने को तैयार हो और जाना कहीं नहीं है। केवल यहां पर बोलना है।

श्री अमरजीत भगत :- चलेंगे न।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर रोजगार बढ़ाने के लिए फूड पार्क की व्यवस्था की गई। 200 फूड पार्क बनाने की आपकी योजना थी और 200 फूड पार्क बनाने की दिशा में आप कहां पर खड़े हुए हैं, यह दूसरे साल का बजट है। कुल 50 करोड़ रूपये का प्रावधान है। एक साल में यदि 2 फूड पार्क बनायेंगे तो 5 साल में कितना बना लेंगे? 10 बनायेंगे। आपने कहा कि ब्लॉक में 1 फूड पार्क कंपलसरी बनायेंगे। तो प्रदेश में जितने ब्लॉक हैं, उस ब्लॉक में भी आप नहीं पहुंच पा रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आप 200 की तो बात छोड़ दीजिए। ऐसे घोषणा करने का क्या औचित्य, जिस घोषणा को आप पूरा न कर सको। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नरवा, घुरवा, बाड़ी मुख्यमंत्री का बिल्कुल ड्रीम प्रोजेक्ट है। मैं उस दिन 5 रूपये शीशी देख रहा था । यह 5 रूपये शीशी किसके लिए है ? तो शीशी मिल थे घर-घर दुआरी-दुआरी, जम्मो ला 5 रूपया देना है संगवारी, तभे चलही नरवा, घुरवा, गरूवा, बाड़ी। यह स्थिति है। ये 5 रूपये की शीशी से नरवा, घुरूवा चलायेंगे। इनका ड्रीम प्रोजेक्ट है। केन्द्र सरकार का जो रोजगार गारंटी योजना का पैसा है, जिस पैसे का सरपंच लोग गांव के विकास के लिए उपयोग करते थे, उस पैसे के आधार पर आप नरवा, घुरूवा चलाना चाहते हैं। आप उसमें अच्छा सा बजट करिए। आप उसमें अच्छा प्रावधान करिए। आप जो मॉडल की बात बोले हैं कि एक मॉडल बनायेंगे। पता नहीं उसका कितना मॉडल बना रहे हैं ? एक प्रकार, दो प्रकार, तीन प्रकार और इतने प्रकार बनाने के बाद भी आज क्या स्थिति है ? आज गौ माता इनका गौठान छोड़कर सड़कों पर बैठी हुई है। इनके गौठान में डर के मारे नहीं जा रही हैं। अभी आपने कोरबा लूमेरा का देखा था। 59 गाय मर गयीं। मुख्यमंत्री जी हमर यहां तखतपुर क्षेत्र म बेलपान हावे। तो जब कोई के हाथ म बछिया के हत्या हो जाये, कोई गाय मर जाये तो 21 दिन तक ओकर बेलपान में रहेला पड़े और मुंडन करवा के आवत रहिस हावय। ओ हिसाब से आप प्रदेश के मुखिया हो, अउ जेतका कन मरे हे तो कय दिन आप ला बाहर रहेला पड़ही अउ कय बार मुंडन कराय ला पड़ही।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- नेता जी, हमर इहां बांध बनथे। (व्यवधान)

श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- नेता जी, पिछले समय गे रहो या नहीं गे रहो ग।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी हा गे रहिसे।

श्री धरमलाल कौशिक :- उही ला तो कहाथव कि प्रदेश के मुखिया के बार करायेला पड़ही।

श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- देखव गा। गौ माता के रक्षा बर माननीय मुख्यमंत्री जी जो काम करथे, ओ काम आप मन नहीं करेहो।

श्री धरमलाल कौशिक :- अउ के बार जाकर के त्रिवेणी में डुबकी लगायेला पड़ही। जेतका प्रकार के गांव के गरवा मरथे, आखिर ओहा काकर जवाबदारी हे। ओकर पाप के भागी कोन होही।

श्री अमरजीत भगत :- कल पुलिस ग्राउंड में गये थे न राजू श्रीवास्तव को सुनने। गय्या कइसी कर रही थी, उसको तो आप देखे और सुने होंगे न। कल का हास्य कार्यक्रम देखें।

श्री धरमलाल कौशिक :- हां, गया था न। बताओ न। (हंसी) माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी बहुत से सदस्यों ने कहा कि जो घोषणा करते हैं, पूरा करते हैं, ऐसे मुख्यमंत्री का कसीदा अभी पढ़ रहे थे। जो अनियमित कर्मचारी हैं। एक काम तो आपने अच्छा किया कि मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह थे तो लगभग 1 लाख से ऊपर शिक्षाकर्मियों का नियमितिकरण किया। एक लाख 31 हजार। नहीं आपको (श्री भूपेश बघेल) को पता नहीं होगा। उसे आप पता करवा लीजिए। उन्होंने एक लाख 31 हजार शिक्षाकर्मियों का

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नियमितिकरण किया, उसे आगे बढ़ाते हुए जो 16 हजार बचे हुए हैं, उनके नियमितिकरण के लिए आपने कहा है। यह आपने अच्छा किया है।

श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- एक मिनट नेता जी, जब-जब चुनावी वर्ष रहिसे, तब-तब आप करत रहव। अभी हमर करा कोई चुनावी वर्ष नहीं हे। हमर मुख्यमंत्री महोदय ल धन्यवाद देना चाहिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- अरे, मैंने तो कहा कि आपने अच्छा काम किया, लेकिन जो बचे हुए अनियमित कर्मचारी हैं, उनका क्या होगा ? जो संविदा में हैं, उनका क्या होगा ? जो कलेक्टर रेट पर काम कर रहे हैं, उनका क्या होगा ? आपने कहा कि हम सबको नियमित । आपने कहा कि हम मितानीन को 5 हजार रूपया महीना देंगे, लेकिन आज वे सड़कों में बैठी हुई हैं। जो अनियमित कर्मचारी हैं, वे धरने में बैठे हुए हैं। आपने जितने लोगों की घोषणा की, उन लोगों के लिए कम से कम इस बजट में चिंता कर लेते। यदि आप इस बजट में चिंता नहीं कर रहे हैं। आपके दो साल का बजट निकल गया। फिर कोई मंत्री जी खड़े होकर बोलेंगे कि हमारी यह सरकार 5 साल के लिए है। तो माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके 2 साल बजट के हो गए। तो अनियमित कर्मचारी को रेग्युलर करने के बजाय निकाल रहे हैं। बड़ी लंबी चर्चा होती थी कि आऊटसोर्सिंग बंद कर देंगे। जैसे हम सत्ता में आयेंगे एक लाख लोगों की भर्ती करेंगे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरकार में आये दो साल हो गए, लेकिन आऊट सोर्सिंग बंद नहीं हुआ है। आज भी हमारे प्रदेश के स्कूलों में आऊट सोर्सिंग और बाची चीजें चल रही है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, नेता जी मैं आपको आऊटसोर्सिंग के बारे में बताना चाहूंगा। क्या आपको आऊटसोर्सिंग के बारे में डिटेल में जानकारी है? आऊट सोर्सिंग में सरकार, कम्पनी को 28 हजार रूपया महीना देती थी और छत्तीसगढ़ में ही जो आऊटसोर्सिंग के शिक्षक हैं, उनको सरकार 15 हजार रूपया देती थी। क्या यह 14 हजार, 15 हजार प्रति शिक्षक कमीशन खाना अच्छा था ? जरा इसको भी बता दीजिये ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आऊटसोर्सिंग का मतलब ही यह है कि जो पद खाली हैं, उसकी पूर्ति होनी चाहिए। उसमें रेग्युलर नियुक्ति होनी चाहिए। ये बड़ी-बड़ी बात करते रहे। उसके बाद भी आऊटसोर्सिंग बढ़ा रहे हैं, खत्म नहीं कर रहे हैं। लोग उम्मीद लगाये बैठे हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- कमीशन खाना बंद हुआ, वह सही हुआ या गलत हु, यह बताईये न ?

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं पिछले दिनों प्रश्न लगाया था, उसमें जवाब आया कि जिनको अतिथि शिक्षक के रूप में लेना था, ऐसे लोगों को निकाल दिया गया।

श्री कवासी लखमा :- नेता जी, पिछले 15 सालों में एक भी गुरूजी की भर्ती नहीं किये। हम लोग अभी 15 हजार शिक्षकों की भर्ती करने वाले हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी के साथ-साथ बड़ी-बड़ी योजनाओं की घोषणा करने वाली सरकार है। इस सरकार की जो हालत दिखाई दे रही है, दो बजट के बाद आपने

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

घोषणा क्या किया ? आपके कथनी और करनी में अंतर दिखाई दे रहा है। वोट लेने के लिए अलग बात करना और सत्ता में आने के बाद मुकरना और मुकरकर के उनको धक्का दिखाना है। इसलिए मैं मुख्यमंत्री जी से कहना चाहता हूं कि :-

"वादों को भूलने वाली सरकार है,
किसानों को छलने वाली सरकार है,
यह गरीबों को लूटने वाली सरकार है,
युवाओं को मारने वाली सरकार है,
यह कमीशन से कमाने वाली सरकार है,
व्यवस्था जहां पूरी बीमार है, वह छत्तीसगढ़ की ही सरकार है।"

श्री कवासी लखमा :- यह भा.ज.पा. को भगाने वाली सरकार है। पंचायत चुनाव, नगर पंचायत में सबको भगा दिए। नेता जी, आपको पता नहीं चल रहा है क्या ?

श्री धरमलाल कौशिक :- उपाध्यक्ष महोदय, एक बात और कहना चाहता हूं। जो संघीय व्यवस्था की बात आती है। मैं पूछना चाहता हूं कि आई.टी. के जो अधिकारी हैं, उन्होंने रायपुर के पुलिस अधीक्षक या यहां के अधिकारियों को पत्र लिखा या नहीं लिखा ? पत्र लिखा तो कितनी बार लिखा ? नहीं लिखा तो नहीं लिखा, मैं यह भी जरूर जानना चाहूंगा। आज एक टी.व्ही. चैनल सी.एन.एन. में चल रहा है कि एक अधिकारी दूसरे को बता रहा है कि पैसा पहुंच गया है, यह छत्तीसगढ़ के लिए बहुत शर्मनाक स्थिति है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ है, जिस प्रकार से अभी छत्तीसगढ़ में स्थिति बन रही है। वास्तव में यदि छत्तीसगढ़ को बचाना है, तो साफ-सुथरी और जिस नीयत से सरकार में आये हैं, उस नीयत के साथ पूरी सरकार चलायें, तो निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ बढ़ेगा। नहीं तो केवल आपके घोषणा के थोथे वादे रह जायेंगे। इसलिए मैं इसका विरोध करते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी। (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वित्तीय वर्ष 2020-21 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा में भाग लेने वाले आदरणीय डॉ. रमन सिंह जी, आदरणीय श्री सत्यनारायण शर्मा जी, श्री नारायण चंदेल जी, श्री दलेश्वर साहू जी, श्री प्रमोद शर्मा जी, श्री शैलेश पाण्डेय जी, श्री शिवरतन शर्मा जी, श्री मोहन मरकाम जी, श्री केशव प्रसाद चन्द्रा जी, डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी, डॉ. रेणु जोगी जी, श्री सौरभ सिंह जी, डॉ. रश्मि आशिष सिंह जी, अजय जी, धनेन्द्र साहू जी, धर्मजीत जी, बृजमोहन अग्रवाल जी, विनोद चन्द्राकर जी, इन्द्रशाह मण्डावी जी, द्वारिकाधीश यादव जी, छन्नी चन्दू साहू जी, रामकुमार यादव जी, चन्द्रदेव प्रसाद राय जी, भुनेश्वर शोभाराम बघेल जी, राजमन वेंजाम जी, अनूप नाग जी, डॉ.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बांधी जी, श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू जी, देवेन्द्र यादव जी, विकास उपाध्याय जी और धरमलाल कौशिक जी ने चर्चा में भाग लिया ।

समय :
5:00 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

मैं सभी के प्रति आभारी हूं कि उन्होंने इस सदन के माध्यम से अपने क्षेत्र की, अनुसूचित जाति, जनजाति, किसानों, मजदूरों, नौजवानों, महिलाओं के विकास के लिए एवं प्रदेश के विकास के संदर्भ में अपनी राय रखी, मैं उन सभी को धन्यवाद देता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय साथियों ने जो चिन्ता जाहिर की और बहुत सारे सुझाव भी आये । विशेष रूप से हमारे नेता जी ने सुझाव दिया, उनके प्रति मैं विशेष रूप से उन्हें धन्यवाद देता हूं । उन्होंने चिन्ता जाहिर की कि हम लोग धान को 25 सौ रूपए क्विंटल में खरीद रहे हैं, इस कारण से दूसरे रकबे कम होते जा रहे हैं । आपने बिल्कुल सही कहा और इसके लिए मैं विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात भी सही है कि हमारे साथियों ने चूंकि अजय जी का वक्तव्य मैं बड़े ध्यान से सुन रहा था, जब वे यहां बैठते थे (सत्ता पक्ष की ओर इशारा करते हुए) तो एक बात जरूर कहते थे, पिछले कार्यकाल में धर्मजीत सिंह जी नहीं थे, तब अजय जी कहते थे कि अभी यहां तक हो, यहां तक दो लाईन में घट जाओगे। डॉ. रमन सिंह जी भी यही कहते थे, उनका आखरी भाषण वही था, वे कहते थे कि बस दो लाईन में सिमट जाओगे, लेकिन जनता का आशीर्वाद देखिए, इनकी वाणी में सरस्वती बैठी हुई थी, ये अपने लिए बोल रहे थे और दो लाईन में भी समा नहीं पाए। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब हम लोगों ने कहा कि हम ऋणमाफी करेंगे, 25 सौ रूपए क्विंटल में धान की खरीदी करेंगे, तब हमारे विपक्ष के साथी कहते थे कि हम लोग सरकार में हैं, हमको पता है, 25 सौ रूपए कहां से दे देंगे, कहां से ले आएंगे। ये बात लगातार कहते रहे, लेकिन छत्तीसगढ़ की जनता के आशीर्वाद और सभी साथियों का समर्थन से हमने दूसरे साल भी किसानों के धान को 1815 रूपए में खरीदा है और अंतर की राशि राजीव गांधी किसान न्याय योजना के माध्यम से 25 सौ रूपए प्रति क्विंटल दिये जा रहे हैं (मेजों की थपथपाहट) यही पवित्र सदन पास करेगा । यह बात बिल्कुल सही है कि धान का मूल्य 25 सौ रूपए प्रति क्विंटल होने के बाद बहुत सारे किसानों ने गन्ने, मक्के की खेती छोड़ दी है क्योंकि धान की खेती लाभदायक है और यही कारण है, आंकड़े बता रहे हैं कि ढाई लाख से अधिक किसान खेती की तरफ लौटे हैं, जो खेती छोड़ चुके थे, जो रेगहा देते थे, जो अधिया देते थे, अब वे खुद खेती कर रहे हैं, खेती लाभकारी हो गया है और यह उदाहरण केवल छत्तीसगढ़ में है, दूसरी जगह आपको नहीं मिलेगा । (मेजों की थपथपाहट) हमें सभी किसानों की चिन्ता है । गन्ना किसानो के लिए

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हमारे घोषणा पत्र में है, 50 रूपया हम बोनस देंगे और इस साल दिये भी हैं । अध्यक्ष महोदय, हमने यह बात भी कही थी कि हम 355 रूपया देंगे । मैं पवित्र सदन के माध्यम से घोषणा करता हूँ कि आने वाले इस वर्ष में 355 रूपये में किसानों का गन्ना हम खरीदेंगे । (मेजों की थपथपाहट) गन्ना से एथेनॉल बनाने, क्योंकि आपने कैप लगा दिया है, आपके साथ दिक्कत क्या है, एक तरफ आप हल्ला करते हैं, 2500 रूपये में खरीदो, एक-एक दाना खरीदो, दूसरी तरफ वहां जाकर मिलकर क्या बोलते हैं, बिल्कुल अनुमति मत देना ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कल भी जा रहे हैं, कल भी बोलेंगे ।

<u>सदन को सूचना</u>

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी का उत्तर होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाये, मैं समझता हूँ कि सभा सहमत है ।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पहले भी इस बात को कह चुका हूँ । राज्य सरकारें अनाज के मामले में भारत सरकार के एजेंसी के रूप में काम करती है । अनाज संग्रहण करके एफ.सी.आई. के माध्यम से जमा करती है, लेकिन भारत के किसानों ने इंदिरा जी के आव्हान पर हरित क्रांति की शुरूआत की, आज इतना उत्पादन कर दिया है, तीन साल भी अनाज न हो तो भी भारत का आदमी भूखा नहीं रहेगा । यह हमारे अन्नदाता है । (मेजों की थपथपाहट) सवाल इस बात का है कि उस अन्नदाता को दाम कैसे मिले ? इस मामले में हमने पहल की है, भारत सरकार को कितनी बार चिट्ठी लिखी है कि आप केवल अनुमति तो दे दें, हम धान से एथेनॉल बनाना चाहते हैं, आपसे कुछ मांग नहीं रहे हैं, आपने तो वर्ष 2014 के बाद से नियम बदल दिया है कि आप अपने प्रदेश के लिए पी.डी.एस. के लिए अनाज रखें, सेंट्रल पुल में हम तभी अनाज लेंगे, जब आप बोनस नहीं दोगे । अध्यक्ष महोदय, आपने नियम बना दिया है, सारी परेशानी का जड़ वही है । हमने तो रिक्वेस्ट किया कि 32 लाख मीट्रिक टन चावल हमारा खरीद लें, लेकिन उसकी सहमति बन ही नहीं रही है । 24 लाख मीट्रिक टन धान को तब माना जब हमने कहा कि समर्थन मूल्य में धान खरीदेंगे । चूंकि हम किसान से वादा किये थे, छत्तीसगढ़ के किसानों की स्थिति हम जानते हैं, अध्यक्ष महोदय मैं खुद किसान हूँ, उनकी स्थिति क्या है, हममे से अधिकांश किसान है, खेती किसानी से जुड़े हुये हैं, सब उसका दर्द समझते हैं । उस दौर से सब गुजर कर आये हैं । उनको आप मजबूत नहीं करेंगे तो गांव मजबूत नहीं होगा, प्रदेश मजबूत नहीं होगा, देश मजबूत नही होगा, बेरोजगारी बढ़ती जायेगी, शहर में दबाव बढ़ता जायेगा । आज स्थिति

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

यह है कि शहर से गांव की ओर लोग जाने लगे हैं, यह छत्तीसगढ़ सरकार की नीति है, इसलिए हम बार-बार आग्रह करते हैं, आपसे भी निवेदन करते हैं कि भारत सरकार से केवल अनुमति दिला दीजिए, हम अपना साल भर का चावल रख लेंगे, उसके बाद जो अनाज बचेगा, उसका हम एथेनॉल बनायेंगे । आपको जो पेट्रोल डॉलर लग रहा है, विदेशी धन जो आपको लग रहा है, उसको कम करने में हमारा योगदान होगा । उससे सबसे बड़ा फायदा क्या होगा, बरसात के बाद निश्चित रूप से एक-एक दाना धान हम किसानों का खरीद लेंगे । गर्मी के फसल को खरीदने की स्थिति में रहेंगे, हमारे पास प्लाण्ट रहेगा, एथेनॉल बनायेंगे, गर्मी के फसल का भी धान खरीद लेंगे । किसान धान को 1200-1400 रूपये में बेचने के लिए बाध्य होता है । आपको अनुमति देने में तकलीफ क्यों हो रही है, आप कहते हैं कि केवल एक साल के लिए, एक साल में कौन प्लाण्ट लगायेगा ? प्लाण्ट लगेगा तो 5 साल के लिए, 10 साल के लिए, अनुमति दे दें, हम तो इतना ही गुजारिश कर रहे हैं, इसमें भी आप जाकर रोक लगवा दोगे । थोड़ा कहिये कि अनुमति दे दें, आपसे पैसा भी नहीं मांग रहे हैं, आपसे छूट भी नहीं मांग रहे हैं, आपसे अनुदान भी नहीं मांग रहे हैं, हम तो केवल अनुमति चाह रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ जो है, यह पूरे देश के किसानों के लिए नजीर बनेगा । दूसरी बात, गन्ना किसानों की बात किए। आपने कैप लगा दिया है जबकि आप कहते हैं कि गन्ना नहीं खरीद रहे हो, सूख रहा है, उत्पादन कम हो रहा है और गन्ना किसानों के खेती का रकबा घट रहा है। भाई, क्यों नहीं घटेगा? आपने तो आदेश कर दिया है कि इस प्लांट से इतना ही शक्कर खरीदा जायेगा और आप इतना ही उत्पादन कर सकते हो तो वह क्या करेगा? यदि भारत सरकार ये कैप न लगाये तो जितना चाहे उतना उत्पादन करो, भारत सरकार खरीदेगी तो ऐसा क्यों नहीं कर रहे हो? आप कहां किसान के हितैषी हो? आप राजनीति कर रहे हो, हम राजनीति नहीं कर रहे हैं। हम तो किसान की बात कह रहे हैं। आप उस कैप को हटा दीजिए या फिर एथेनॉल बनाने के लिए अनुमति दीजिए। एथेनॉल प्लांट लग जायेगा तो गन्ने के रस से सीधे एथेनॉल बनेगा, इससे किसानों को लाभ मिलेगा और विदेशी धन बचेगा। उससे नये-नये उद्योग खुल जायेंगे। आपने तो सब उद्योगों को चौपट कर दिया। भारत सरकार की नीति के कारण कोई उद्योग लग रहा है? आप औद्योगिक वृद्धि की बात कह रहे हैं। छत्तीसगढ़ की औद्योगिक वृद्धि केवल छत्तीसगढ़ के भरोसे नहीं है, वह तो राष्ट्रीय परिदृश्य के हिसाब से होगा। हमारे प्रधानमंत्री जी पूरी दुनिया घूम आये, एकाध उद्योग लगा है क्या? एकाध उद्योगपति आये हैं क्या? किसी नये उद्योग का शिलान्यास या उद्घाटन किये हैं क्या? जितने हैं उन्हें बेचने की तैयारी है। सब कुछ बेच दो, एरोप्लेन बेच दो, खदान बेच दो, प्लांट बेच दो, रेल बेच दो। आप कहते हैं कि कांग्रेस ने 70 साल में कुछ नहीं किया। अरे, 70 साल में कांग्रेस ने जो बनाया उसी को तो आप बेच रहे हो नहीं तो आप तो सुलभ शौचालय बनाये हो उसी भर का आप उद्घाटन करते रहते। (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, नरवा, गरवा की बात होती है। अध्यक्ष महोदय, इनको अवसर मिला था तो गौशाला के लिए पैसा दिये। इसके बारे में अनेक बार चर्चा हुई। यह इनका प्रिय विषय हो गया है। धर्मजीत भैय्या, आज तक ये लोग गाय, गंगा, राम मंदिर यही बोलते रहे हैं। अब इनसे गाय छूट गई, ये गाय की सेवा तो कर नहीं पाये थे, जो गौशाला चलाने वाले हैं ये उनकी सेवा करते थे। गौशाला चलाने वाला मोटा हो जाता था और मवेशी कमजोर। इनके शासनकाल में क्या हुआ सब जानते हैं। अध्यक्ष महोदय, सभी सरकारों की यह नीति रही है कि वे गौशाला के लिए पैसा देते थे लेकिन आज पशुपालन अनार्थिक हो गया है। और ये केवल छत्तीसगढ़ के लिए नहीं बल्कि पूरे राष्ट्रीय स्तर पर आप देखें तब भी स्थिति यह है। आज सबसे ज्यादा परेशान तो उत्तर प्रदेश के किसान हैं। आप वहां चल दीजिए वे रात-रात भर रखवाली करते हैं। वहां भी आंदोलन चल रहा है। मैं किसी की आलोचना के हिसाब से नहीं कह रहा हूं लेकिन समस्या का निदान क्या है। समस्या का निदान हमारे छत्तीसगढ़ में है। हमारे पुरखों ने जो परंपरा चलाई है उसी परंपरा को हमको पुनर्जीवित करना है और उसी को व्यवस्थित करना है। छत्तीसगढ़ में हमारी सबसे बड़ी कमजोरी क्या है? ये फाल्गुन त्यौहार आ रहा है और सारे मवेशी खुले हो जाते हैं क्योंकि पुरानी व्यवस्था ये थी कि धान बोये, धान के बाद उन्हारी लिये और फाल्गुन तक सब एकत्रित हो जाता था चाहे वह उतेरा करें या उन्हारी बोयें। लेकिन अब परिस्थिति बदली है। अब सबके पास ट्यूबवेल हो गया है, नहरें बनी हैं, सिंचाई की योजनाएं बढ़ी हैं, 5 लाख किसानों के पास ट्यूबवेल है, उनको गर्मी की फसल लेना है। तो आज हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि हम फाल्गुन त्यौहार के बाद मवेशी को खुला कर देते हैं। आप दूसरे प्रदेशों में चल दें वहां आपको कोई तार घेरा नहीं मिलेगा, कोई फेंसिंग नहीं मिलेगा। साऊथ के किसी प्रदेश में चल दें तो कोई फेंसिंग आपको नहीं दिखेगा लेकिन छत्तीसगढ़ में फेंसिंग करना पड़ता है। तो जितने का उत्पादन होता है उससे ज्यादा फेंसिंग, उससे ज्यादा रखवाली और जो किसान यदि गर्मी फसल का धान बो दे तो वह अपने रिश्तेदारी में कहीं नहीं जा पाता और वह अपने खेत की रखवाली के भरोसे हो जाता है। आज यदि इसको परिवर्तित करना है, मैं आपसे सुझाव मांग रहा हूं। उसमें कुछ सुधार किया जा सकता है तो आप सब आमंत्रित हैं, इसमें कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि ये नया प्रयोग है।

श्री मनोज सिंह मंडावी :- अजय चन्द्राकर से मांग लीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- मैं उससे भी लूंगा, वे भी किसान पुत्र हैं। क्यों नहीं लेना चाहिए ? पूरे प्रदेश और देश के लिये यह नजीर बनेगा। हम गांव में तीन एकड़ से पांच एकड़ जमीन सुरक्षित करें। पांच से दस एकड़ जमीन चारा के लिये सुरक्षित करें। ट्यूबवेल रखें, वहां उसके लिये सेड बना दें और सेड बनाकर उसके चारे की व्यवस्था करें। अध्यक्ष महोदय, गर्मी का दिन आ रहा है, हमारे यहां 45 डिग्री टेंपरेचर रहता है। लेकिन टपका कांग्रीट कर देंगे तो वह जानवर वैसी ही खत्म हो जायेगा। घास फूस के ही रखें, ताकि हर साल मेंटनेस करें, मेंटनेस करने में खर्चा न आये। उसमें पैरा भर तो डालना है। इस प्रकार से

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

व्यवस्था कर दें, तो हमारा खेत सुरक्षित हो जायेगा। जब वहीं रहेगा तो हम नस्ल सुधार भी कर सकते हैं। हम दूसरा फसल भी आसानी से रख सकते हैं। हमें फैंसिंग का खर्चा नहीं आयेगा, रखवाली का खर्चा नहीं आयेगा। यह सोच है। दूसरी बात, आज यह जो पशु है, वह अनार्थिक हो चुका है। एक समय था, जब पशुपालन युग था, उसी के भरोसे पूरा व्यापार चलता था। लेकिन आज का जो युग है, वह पशु पालना सबसे कठिन काम है। हम गौमाता तो कहते हैं, उसे प्रणाम करते हैं, केवल दीपावली के दिन खिचड़ी खिला देते हैं। बचत दिन क्या स्थिति है ? शहरों में प्लास्टिक खाती घूम रही है। ये स्थिति है। यदि धार्मिक भावना भी सोचते हैं तो आप उसके लिये क्या कर रहे हैं ? कुछ नहीं कर पा रहे हैं। यदि आप आर्थिक रूप से जोड़ें तो सीधी सी बात है। हमने इसमें बहुत सोचा, सरकारें अनुदान देती है, उसका हिसाब रखती है, सब खा जाते हैं। मवेशी को कुछ नहीं मिलता है। चूंकि वह खुद की गाय नहीं है तो उसको प्रेम भी नहीं है। अध्यक्ष महोदय, तो हमने यह सोचा कि यदि गोबर से पैसा निकाला जाये। गोबर से पैसा मिलेगा तो फिर किसी मवेशी को चारे की कमी नहीं होगी। डॉ. साहब अपने भाषण में बोल रहे थे, एक गौठान के लिये दस हजार रूपये रख दें। डॉ. साहब वह चारा के लिये नहीं है, जो 10 हजार रूपये गौठान के लिये दे रहे हैं न वह चारा के लिये नहीं है। आप एक रूपया, एक जानवर को, एक दिन का पैरा पड़ेगा। फिर आप उसी हिसाब से उलझ गये कि उसमें कितना कमीशन आयेगा ? उस चक्कर में नहीं हैं। वह चरवाहे के लिये है। जो गौठान समिति रहेगी।

श्री बृहस्पत सिंह :- यह कमीशन फ्री वाला आईटम है। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, वह जो चरवाहे हैं, आज गाय क्यों नहीं चराते हैं ? गांव में हमारे यादव समाज के लोग हैं, बस्तर में कोई यादव नहीं है तो आदिवासी लोग चराते हैं। दूसरे समाज के लोग भी चराते हैं। हमारा सबसे बड़ा उदाहरण तो वह है।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- जेवर देना पड़ता है।

श्री भूपेश बघेल :- गाय चराने वाला है। वह ठेठवार है, वह यादव राऊत है।

श्री देवेन्द्र यादव :- भैया, बस्तर में भी बहुत यादव है।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, आज क्यों चरवाहा नहीं लगता है ? इसलिए उसे रोजी नहीं मिल पाती है। जितना बरवाही में मिल पाती है या जो गांव के किसान देते हैं, उसको पड़ता नहीं है। वह अपना परिवार नहीं चला सकता। इसलिए यदि कोई कमी आये, गांव वाले देंगे उसके बाद भी कुछ होगा तो उस दस हजार में से उसको दे सकें। उस चरवाहे को तो सकें ताकि बारह महीने हमारा मवेशी का प्रबंध हो सके। इसलिए गौठान समिति को दस हजार रूपया दिया जाये। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी शराब के मामले में बड़ी चर्चा हुई है। सारा सदन चिंतित था, खासकर हमारे विपक्ष के साथी लोग बड़े चिंतित हैं। शराब, शराब, शराब, आज भी पकड़ा गया, उसका भी उल्लेख हुआ। पकड़ी तो हमारी पुलिस ना। वह कहां से आया, अलीगढ़ उत्तरप्रदेश से आया। ड्राईवर कहां

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

का है, वह हरियाणा का है। अध्यक्ष महोदय, मैं किसी पर आरोप नहीं लगा रहा हूं। दूसरे प्रदेश से आ रहे हैं। लेकिन पकड़ने की कार्यवाही भी हो रही है। डॉ. साहब लेकिन मैं कहना चाहता हूं, ये नीति तो आपने बनाई है ना। प्लेसमेंट एजेंसी आपने तय किया। अधिकारी तो आपके ही थे। आप ही के समय की है। फिर हल्ला किस बात की है ? हमने तो उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया। सारी व्यवस्था आपकी है। आप कहते हैं ना कि आपने नीति बदल दी। 14 वें वित्त आयोग का पैसा रोक लिया। भाजपा शासन के जितने कार्य थे सबको रोक लिया। यह तो आपकी योजना है। यह योजना हमारी नहीं है। हम तो शराब बंद कराना चाहते हैं। लेकिन जो परिस्थिति है, उसमें तत्काल तो बंद नहीं किया जा सकता । जब यहां शराब बिकने की व्यवस्था है। सरकारी दुकानें चल रही हैं। तब यहां उत्तरप्रदेश, हरियाणा से शराब आ रहा है और जिस दिन बंद ही कर देंगे तो कहां-कहां रोकेंगे ? हमारा प्रदेश 7 प्रदेशों से घिरा हुआ है तो यह तो सोचना पड़ेगा। इसको कैसे रोकें ?

डॉ. रमन सिंह :- आप एक बार स्पष्ट बोल दीजिये, उसमें ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है कि हमने जन घोषणापत्र में जनता के सामने गलत वादा किया था और इसके लिए हम जनता से माफी मांगते हैं। हम शराब बंदी नहीं करेंगे, ऐसा बोल दीजिए। काम खत्म। आपने नीति बनायी, आपने वादा किया, आपने जन घोषणापत्र में कहा जब आपने जन घोषणापत्र में कहा तो उससे मुकरने की बात है तो वह नीति क्या थी ? उस नीति का कैसे क्रियान्वयन हुआ जो वादा आपने किया था, श्रीमान् हमने उसको केवल याद दिलाया है।

श्री भूपेश बघेल :- अब रूक जा न भई। एक झन बोल दे हे, उसका जवाब तो दे दूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, एक मिनट। मेरा इसी से संबंधित प्रश्न है।

श्री भूपेश बघेल :- मैं प्रश्न का उत्तर देने के लिए नहीं खड़ा हूँ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं प्रश्न नहीं कर रहा हूँ। आपने कहा कि ये नीति आपने बनायी थी। हम उसी नीति को चला रहे हैं। जब इस नीति को बना रहे थे तो आपने विरोध किया था। आपने जिस नीति का विरोध किया था, आप उस नीति को क्यों चला रहे हैं ?

श्री भूपेश बघेल :- अब फिर से शराब की बात, आप खड़े हो रहे हो।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं शराब की बात नहीं है। आप मुख्यमंत्री बनने से पहले जानते थे कि छत्तीसगढ़ 7 प्रदेशों से जुड़ा हुआ है। आज मुख्यमंत्री बनने के बाद नहीं जाने हैं।

श्री भूपेश बघेल :- अजय जी, याद दिलाने के लिए धन्यवाद्।

श्री बृहस्पत सिंह :- गुजरात और बिहार में भी घर पहुँच सेवा मिलती है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है माननीय रमन सिंह जी की स्मरण शक्ति कितनी है, ये मैं नहीं जानता, लेकिन जब हमारी सरकार बनी तो इनका बयान आया था कि अब फिर से शराब में ठेकेदारी प्रथा शुरू होगी। हमने साथियों के साथ विचार-विमर्श किया कि क्या करना है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तो जब नई नीति लाना है तो फिर तुरंत क्यों चेंज करना ? वह ठेकेदारों की याद दिला रहे थे। जब हम परिवर्तित करेंगे, जब शराबबंदी करेंगे तो फिर इसको समाप्त कर देंगे। फिर नई नीति लाने की आवश्यकता क्या थी ? इसलिये हमने नहीं लाया और जहां तक के डॉ. साहब माफी मांगना है तो छत्तीसगढ़ की जनता से माफी मांगने में हमको कोई संकोच नहीं है, लेकिन अभी वक्त है मुझे इस कुर्सी में बैठे और हमारी सरकार आये सवा साल हुए हैं । आप इतना धैर्य क्यों खो रहे हैं ? जिस प्रकार से हमने ऋण माफी की, जिस प्रकार आज पूरा शिक्षाकर्मी शब्द ही समाप्त हो गया। अब इतिहास की बात हो गई। ये काम हमने किया है। (मेजों की थपथपाहट) और आपने तो शिक्षाकर्मी का संविलियन कर दिया था, उनको एक ढेला पैसा नहीं दिया था। आपने घोषणा कर दी थी आपने केवल एक दिन बोनस के लिए सत्र बुलाया था। उनको एक पैसा नहीं दिया था। वह तो हमारी सरकारी आयी तब हमने उसके लिए प्रावधान किया। (मेजों की थपथपाहट) वह आपने नहीं किया था। केवल घोषणा ही कर दिये थे। आपने घोषणाएं तो बहुत की थीं। आप कर्ज की बात बहुत कर रहे हैं। ये सेलफोन लिये हैं, मोबाईल बांटे हैं। हमको ही उसका पैसा पटाना पड़ेगा। आपने कर्जा लिया और हमको पटाना पड़ेगा। आप टिफिन बांटे थे, वह सब हमारे लिए छोड़ गये हैं। आप बोलते हैं कि इतना कर्जा हो गया। ठीक है भई हमने कर्जा लिया किसानों, ऋण माफी, बोनस देने के लिए कर्जा लिया। वह तो दिख रहा है। आप किसके लिए कर्जा लिये थे? आपने तो बोनस नहीं दिया था, आपने तो ऋण माफी नहीं की थी।

श्री बृहस्पत सिंह :- ये टिफिन और मोबाईल बांटे थे।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर 47 हजार करोड़ रूपये कर्ज कहां से आ गया ? वह स्काई वॉक, एक्सप्रेस वे, किसके लिए था ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज माननीय रमन सिंह जी पर कैप्टा इंकम की बात कर रहे थे। वह आंकड़े ठीक है। पिछले समय 96 हजार था, इस समय 98 हजार है। आपके समय पर कैप्टा इंकम बहुत अधिक था, उसके पहले 95 हजार, 91 हजार रहा होगा, जो भी रहा होगा, लेकिन आपके शासनकाल में इतना पर कैप्टा इंकम होने के बाद 40 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे क्यों जीवनयापन कर रहे थे? क्यों 18 प्रतिशत लोग झुग्गी-झोपड़ी में रह रहे थे? क्यों हमारे 37 प्रतिशत बच्चे कुपोषित थे? क्यों हमारी 41 प्रतिशत महिलायें एनीमिया से पीड़ित थीं? क्यों? आपने उधर ध्यान ही नहीं दिया। आप आदिवासी की बात कर रहे थे, बहुत अच्छा लग रहा था। नेता जी, आप बहुत दिशा में जा रहे हैं।

डॉ. रमन सिंह :- आपने चूंकि मुझे कोड किया है, इसलिए मुझे खड़ा होना पड़ रहा है। माननीय मुख्यमंत्री जी, आई.एम.आर., एम.एम.आर., मॉनुट्रिशन के ये 15 साल के आंकड़ें देख लीजिए, हिन्दुस्तान में सबसे बेहतर परफारमेन्स किसी राज्य का रहा है तो वह छत्तीसगढ़ का रहा है। आज मैं कह रहा हूं। उस 15 साल के बारे में कह रहा हूं कि आप 15 साल के तीन आंकड़ें देख लें और हिन्दुस्तान के किसी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

राज्य से तुलना कर लें।

श्री भूपेश बघेल :- नेता जी, वही तो मैं भी कह रहा हूं। यदि मैं राष्ट्रीय औसत से तुलना करना हूं यहां औद्योगिक वृद्धि हुई है, कृषि में वृद्धि हुई है तो आप राज्य की तुलना करते हैं कि राज्य से कितना बढ़ा? भई छत्तीसगढ़ी में एक ठो कहावत हे बोड़ी के दुनी और सौ के सौवईस, तोर राज में 50 लाख मीट्रिक खरीदत रहेस, आखिरी साल में 70 लाख मीट्रिक टन खरीदे तो किसान मन के आय बाढ़ गये। मैंहा 80 लाख मीट्रिक टन खरीदेन, ये साल 83 लाख खरीदहां तो सौ के सौवईस तो होईस तो आय कैसे बढ़ही, सौ ही होईही ना। बोढ़ी के दुनी, एक के दू और सौ के सौवई, पच्चीस, तो एक ज्यादा होईही कि 25 ज्यादा होईही। हमन गांव के रहईया हन, हमन इही भाषा समझथन।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सिंचाई के बारे में बात करे थे, बिल्कुल सही है, मैं आपकी चिंता से और आपके जो सुझाव हैं उसमें अपने आपको सम्मिलित करता हूं। हमारी भी चिंता वही है। आज जब आप सिंचाई परियोजना के बारे में बोल रहे थे कि बजट में 20 करोड़ रख दिये हैं, हम शुरूआत तो किये हैं, आप 15 साल में तो शुरू भी नहीं किये थे। ये वही एरिया है, चाहे बस्तर, सरगुजा, जशपुर हो, ये वह इलाके हैं जहां सिंचाई रकबा शून्य से 5 प्रतिशत तक है। आपने 15 साल में इसमें वृद्धि नहीं की। उन आदिवासी क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी हों, चाहे परंपरागत रूप रहने वाले लोग हों, उनको उन्हीं के हाल में छोड़ दिया, 1 रुपये किलो चावल भर दिला दिये और चाउर वाले बाबा बने रहे, लेकिन इनका हाल आपने कभी सुधारने की कोशिश नहीं की। यदि आप मॉनुट्रिशन कह रहे हैं तो यह वहीं है। दंतेवाड़ा में आप चल दीजिए। आप गरीबी रेखा की बात कर रहे हैं, यदि पूरे प्रदेश का 40 प्रतिशत है तो आप दंतेवाड़ा में चल देंगे तो 57 और 60 प्रतिशत है। यदि पूरे प्रदेश का मॉनुट्रिशन 37 प्रतिशत है तो वहां 60 और 70 प्रतिशत है। यह जो असमानता है उसको दूर करने का काम हमारी सरकार कर रही है। वह असमानता कैसे दूर होगी ? आज पूरे प्रदेश में हम लोगों ने जो आदिवासी क्षेत्र, अनुसूचित क्षेत्र हैं, वहां हम लोग काम करना शुरू किये हैं। लघु वनोपज, आपके राज्य में तो लघु वनोपज का समर्थन मूल्य तक गिर गया था, उसका विरोध तक नहीं कर पाये थे। 2 रुपये किलो महुआ की आज बात कर रहे हैं, कभी आदिवासी महुआ फेंकता है, लेकिन आपके शासनकाल में महुआ फेंकना शुरू किया और महुआ पेड़ा को काटना शुरू करवा दिये थे ताकि ये प्रदेश आदिवासी विहीन हो जाये। आप षडयंत्र की बात कर रहे थे, षडयंत्र तो वो था। लेकिन आदिवासी पहचान गये, वह पिछले समय पहचान गये थे। हमारे मैदान के हिस्से के लोग गड़बड़ हो गये थे, नहीं तो पिछले समय ही हम लोग सरकार में आ जाते। बस्तर, सरगुजा के आदिवासी पहले पहचान गये थे। आप 600 गांव उजाड़ दिये, फारेस्ट राईट एक्ट के तहत उनको अधिमान्यता पत्र नहीं दिया, सामुदायिक दावा नहीं दिया, उनके लघु वनोपज को नहीं खरीदा। उनको 2 रुपये में महुआ खरीदने के लिए बाध्य कर दिया। यह आपकी रणनीति है। हमारी नीति उनको सुपोषित करने, उनका इलाज करने की है। मुख्यमंत्री खाद्य सुपोषित योजना, मुख्यमंत्री हाट बाजार

Uncorrected and unedited/Not for Publication Thursday, March 05, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

क्लिनिक योजना, वह सारी योजनाओं के बारे में बोल चुका हूं, मैं रिपीट नहीं करना चाहूंगा। उसकी आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति कैसे सुधरे। रमन सिंह जी बोल रहे थे कि शिक्षा के लिए कुछ नहीं है। आप जगरगुंडा जानते हैं । 13 सालों से स्कूल बंद था । इस समय श्री लखमा जी ने जाकर स्वयं शुरू किया और उस स्कूल में 305 बच्चे पढ़ रहे हैं, हम लोगों ने सुकमा में 105 स्कूल शुरू किये हैं । (मेजों की थपथपाहट) आपने शिक्षा से दूर कर दिया था । इतना दहशत का वातावरण था कि बस्तर के लोग यह सोच रहे थे कि हम नक्सलियों से डरें कि पुलिस से डरें कि सरकार से डरें ? हर तरफ डर ही डर । इधर कुंआ और ऊधर खाई । आज बस्तर के लोगों को लग रहा है कि यह सरकार जो है वह हमारी सरकार है । (मेजों की थपथपाहट) हम वहां पर हर योजनाएं ले जा रहे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं चर्चा करूंगा तो बहुत लंबा हो जायेगा । हम उसे मालिकाना हक भी देंगे, उसे पढ़ायेंगे-लिखायेंगे भी, उसके रोजगार की भी व्यवस्था करेंगे, उसके ईलाज की भी व्यवस्था करेंगे और बस्तर और सरगुजा में सिंचाई में जो असंतुलन है उसे भी दूर करने के लिये सिंचाई मंत्री जी का जो प्रस्ताव है वह यही है । (मेजों की थपथपाहट) आज शुरू करेंगे हो सकता है कि पहले शुरू किये होते तो आज यह पूरा हो गया होता लेकिन आपने शुरूआत ही नहीं की । बोधघाट कभी शुरू ही नहीं हो सकता, क्यों शुरू नहीं हो सकता ? आपने पूर्व मंत्री श्री अरविंद नेताम जी का जिक्र किया । मैंने उनसे पूछा, उनसे मेरी मुलाकात हुई । श्री कवासी लखमा जी भी थे, मैंने कहा कि बोधघाट का विरोध क्यों करते हैं ? तो उन्होंने कहा कि बोधघाट का विरोध नहीं है लेकिन बस्तर को उससे कोई लाभ नहीं मिलने वाला है तो मैंने कहा कि बांध बनेगा तो क्यों लाभ नहीं मिलेगा ? उन्होंने कहा कि यह हाईड्रल प्रोजेक्ट है, इसको सिंचाई के लिये नहीं बल्कि बिजली पैदा करने के लिये लगाया गया है । हमने तत्काल मंत्री जी से, अधिकारियों से बात की कि यह बोधघाट योजना है । यह बिजली के लिये नहीं बल्कि इसे बस्तर की सिंचाई के लिये बनाना है और इसके लिये आप सबका सहयोग चाहिए । (मेजों की थपथपाहट) फिर वहां उंगली मत कर देना कि परमिशन ही मत दो । परमिशन के लिये आपको भी ले जायेंगे । उंगली करने का मतलब काड़ी करना है । (हंसी)

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- नेता जी, परमिशन मिलनी चाहिए ।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बोधघाट-बोधघाट इतनी बातें हो रही हैं । बोधघाट का पहले साल भर या दो साल के अंदर डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तो बना लीजिये, उसका डिटेल सर्वे तो करा लें । बड़ी-बड़ी बातें तो बाद में होंगी कि वह 50,000 करोड़ का प्रोजेक्ट है कि 1 लाख करोड़ का प्रोजेक्ट है और उसमें कहां-कहां से फंडिंग होगी उस विषय को लेकर तो बाद में चर्चा होगी लेकिन अभी तो आपको जो बेसिक काम करना है उसको तो कर लें, एक साल के अंदर कर लें । मैं तो यही कहता हूं कि अच्छी बात है, यदि इच्छाशक्ति है तो करें । इन 4 सालों के रहते कर लें, डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट और बाकी बातें तो बाद में होंगी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- क्या अगले वाले साल में उम्मीद नहीं है ?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे कोई घमंड नहीं है लेकिन डॉ. रमन सिंह जी ने जो बातें कही है, मुझे अच्छा लगा और यह जो चुनौती दी है उसे मैं स्वीकार करता हूं । (मेजों की थपथपाहट) यह तो विकास के लिये है, प्रदेश के हित के लिये है, सिंचाई के लिये है, किसानों के लिये है और यदि वह सिंचाई बीजापुर, दंतेवाड़ा, सुकमा में हो जाती है तो नक्सलवाद भी समाप्त हो जायेगा क्योंकि लोग हल पकड़ेंगे ।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय ।

श्री भूपेश बघेल :- आज क्या हो गया है ? आज आपको बार-बार खड़े होना बहुत अच्छा लग रहा है ।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि आप उस प्रोजेक्ट के बारे में बात कर रहे हैं और खासतौर से इंद्रावती पर बनने वाले बोधघाट के उस साईट में आप गये भी होंगे, कई बार गये होंगे और उस साईट से यह कल्पना कर सकते हैं कि वहां से यदि पानी को लिफ्ट करना है, पानी को ऊपर उठाना है तो अलग-अलग जिलों में ले जाने के लिये कम से कम 300 मीटर उस पानी को लिफ्ट करना पड़ेगा जैसे ईजराईल करता है ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आदरणीय, मैंने पहले ही जिक्र किया जब कल आप कह रहे थे कि जब पोलावरम बना, जब कालेश्वरम बन रहा है तो टोपोसीट देखियेगा कि टोपोसीट के मुताबिक बोधघाट का पानी तो गंगरैल और तांदुला तक आ सकता है ।

श्री भूपेश बघेल :- अभी अजय जी नहीं हैं, अधिकारियों ने आपको गलत सलत बता दिया होगा, इसलिए गड़बड़ है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अधिकारी तो वही है, जो उस समय थे ।

श्री भूपेश बघेल :- हम लोग काम ले लेंगे ना, चिंता क्यों करते हैं ? अध्यक्ष महोदय, माननीय साथियों ने, अजय जी आ गए हैं, सहकार संघवाद के बारे में चर्चा कर रहे थे, नेता जी ने भी बात कही है। अध्यक्ष महोदय, यह देश भारत सरकार के अपने अधिकार क्षेत्र हैं, कुछ अधिकार राज्यों को मिला हुआ है । अलग-अलग एजेंसियां काम करती हैं । माननीय अजय जी कह रहे थे कि आपने सीबीआई पर प्रतिबंध लगा दिया । अजय जी, आप थोड़े दिन गृहमंत्री भी रहे हैं, तीन महीने रहे । यह प्रतिबंध कब से लगा ? प्रतिबंध लगाने वाला कौन, उस समय किसकी सरकार थी? यह प्रतिबंध आपने लगाया, सन् 2012 में लगाया, आपने राज्य के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया, लेकिन भारत के राजपत्र में प्रकाशित नहीं कराया था । केवल हमने वही काम किया, आपने यहां प्रतिबंध लगा दिया तो भारत के राजपत्र में प्रकाशित हो जाए । यह प्रतिबंध आपने लगाया, हम पर आरोप मत लगाइएगा । यह कृत्य आपने किया है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने तो कोई आरोप नहीं लगाया । मैंने कहा कि जो केन्द्र सरकार की सातवीं सूची के विषय हैं, क्या आप उसमें भी प्रतिबंध लगाएंगे और मैंने यह कहा कि आप दूसरी प्रतिस्पर्धा में जाइए कि निवेश आए, सहकारी संघवाद के मैंने दो पहलू बोला था ।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, अभी आई.टी. के बारे में चर्चा हुई । हम सब मंत्रिगण राज्यपाल जी के पास गए थे । मुख्य कारण क्या था, आई.टी. का कोई विरोध नहीं है, आई.टी. इसके पहले भी आती रही है और आगे भी आएगी । लेकिन एक सामान्य प्रक्रिया है, जब भी आई.टी. आती है तो उस संबंधित जिले के पुलिस अधीक्षक को सूचना देकर उससे पुलिस फोर्स लेते हैं, ताकि आई.टी. के अधिकारियों के साथ कोई दुर्व्यवहार न हो जाए, सुरक्षा मिले । एक सप्ताह रहे लेकिन आपने सूचना देने की जहमत भी नहीं उठाई । आप कह रहे थे ना, किसी एस.पी. को चिट्ठी लिखी है ? किसी एस.पी. को चिट्ठी नहीं लिखी गई । डी.जी. को भी जानकारी नहीं और सीधे सीआरपीएफ की फोर्स को सैकड़ों की तादाद में, और वह भी उस समय जब राज्य में राष्ट्रपति आने वाले है, और उस प्रदेश में जहां नक्सली पुलिस की वर्दी पहनकर घूमते हैं, उस प्रदेश में आप रातोंरात ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ये बातें आपके राज्यपाल जी को दिये हुए मेमोरंडम में नहीं थी ।

श्री भूपेश बघेल :- हमने उनको बताया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- समाचार पत्रों में छपा कि आपने कहा है हमारी सरकार को अस्थिर करने का प्रयास है ।

श्री भूपेश बघेल :- बिल्कुल सही बात है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपकी सरकार कैसे अस्थिर हो जाती, इन 68 विधायकों पर आपको विश्वास नहीं है क्या ?

श्री भूपेश बघेल :- चलिए ठीक है । अब आप प्रक्रिया की बात कर रहे हैं, किसी के घर भी जब छापा पड़ता है तो आई.टी. क्या करता है ? वह तुरंत ही प्रेस में नोट जारी करता है कि इस व्यक्ति के घर, इस अधिकारी के घर, इस व्यापारी के घर, इस उद्योगपति के घर गए थे, ये-ये सामान मिला । उसकी सूची जारी करते हैं। आपने ऐसा किया क्या ? जिस टी.वी. की बात कर रहे हैं, उन्हें कहां से जानकारी मिल गई, क्या आई.टी. ने वह जानकारी दी है ? अध्यक्ष महोदय, उस समय तो समाचार पत्र पढ़ने से ऐसा लग रहा था कि 100 करोड, 25 किलो सोना और 200 करोड़, इतनी बेनामी, इतनी नगदी, नोट गिनने की मशीन आई है । सीबीआई आ रही है, ईडी आ रही है, ऐसा वातावरण बना दिया गया, और क्या मिला ? जितने भी छापे मारे हैं उसमें 2 करोड़ 56 लाख रूपये मिले हैं। 6 महीने से रेकी कर रहे थे तो उसका खर्च भी वसूल नहीं हुआ। जिन अधिकारियों के बारे में कह रहे हैं, उनमें किसी के यहां 3 लाख, किसी के यहां 13 लाख, किसी के यहां 26 हजार ये राशि मिल रही है। आप क्या करना चाह रहे हैं? आप अस्थिर नहीं करना चाह रहे हैं तो क्या करना चाह रहे हैं। मध्यप्रदेश में आपने क्या किया

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

है? यहां के तुरंत बाद मध्यप्रदेश में किया? वहां बहुमत कम है तो वहां विधायकों को तोड़ने का काम कर रहे हैं। ऐसा है कि आप कुछ भी कर रहे हैं, यहां तो फर्क ही नहीं पड़ना है तो अब क्या करो तो फिर इर्द-गिर्द के लोगों को बदनाम करो। षड्यंत्र करो। आप आज तक किये क्या हो? आपको शिक्षा क्या मिलती है ? षड्यंत्र की शिक्षा मिलती है (शेम-शेम की आवाज) और वही काम अभी भी हो रहा है। अध्यक्ष महोदय, मैं तो पत्रकार मित्रों से भी कहना चाहूंगा और उनसे निवेदन करना चाहूंगा। वे प्रजातंत्र की प्रहरी हैं, लेकिन ऐसी कोई बात न आये कि जिन लोगों के यहां छापा नहीं पड़ा है, उनका भी नाम आ गया। जो चीजें हुई ही नहीं हैं, उसके बारे में छप गया। तो थोड़ा सा सनसनी आजकल वो मनोहर कहानियां और जेम्स ब्रेटली की उपन्यास जैसे नहीं होना चाहिए। मुझे कह रहे थे कि हमारे यहां तो कुछ नहीं मिला। उसके यहां तो 1 करोड़ रूपये मिला। बिल्कुल सही है। अफरोज अंजूम पूर्व पार्षद यतीम लड़के को हम लोगों ने टिकट देकर पार्षद बनाये थे, उसके घर छापा मारे थे तो 1800 रूपये मिला और आपके कार्यकर्ता के यहां एक करोड़ रूपया मिला। अब वह केबल चलाता है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा वह कार्यकर्ता आज भी आपको माला पहनाने आया था।

श्री भूपेश बघेल :- नहीं, माला तो आप लोग भी पहनाते हैं। मैं आपके क्षेत्र में भी गया था तो आपने क्या किया था?

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं, आज खास काम से।

श्री भूपेश बघेल :- मैं आपके क्षेत्र में गया था तो क्या आपने मुझे माला नहीं पहनाया था ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं तो रोज पहना दूंगा।

श्री भूपेश बघेल :- आप उसके बारे में क्यों कह रहे हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी चलिए।

श्री भूपेश बघेल :- आपने निष्कासित कर दिया क्या ? केबल-वेबल चलाना सरकार का काम नहीं है। वो तो हम जले हुए हैं। यहां बृजमोहन जी नहीं हैं। केबल चलाकर क्या हुआ था ? भाभी जी हैं। भैया है ही नहीं। वर्ष 2000 से वर्ष 2003 के बीच में। केबल के चक्कर में हमें नहीं पड़ना है। अब जो लोग चला रहे हैं, वे जानें। वो हमारे नियंत्रण में नहीं है। यदि वे कुछ कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा आप बताइए, अभी आप बोले थे मनोहर कहानियां और जेम्स ब्रेटली पसंद नहीं है तो रानू प्रेम वाजपेयी ज्यादा पसंद है। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग तो किसान हैं। धरातल में रहने वाले लोग हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- उपन्यास का नाम तो आप ही ने लिया है।

श्री भूपेश बघेल :- तो मैं वही कह रहा हूं। आप खेत में और मेढ़ में बैठकर क्या पढ़ते थे ? या रेलवे स्टेशन में ट्रेन में बैठकर क्या पढ़ते थे ? मेरा निवेदन यह है कि इस प्रकार का सनसनीखेज खबरें

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

न फैलायें। जो गलत कर रहे हैं, उनके खिलाफ बात बात आये। कोई तकलीफ नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि सभी अधिकारी ईमानदार हैं, लेकिन सभी को आप भ्रष्टाचारी की श्रेणी में मत रखिए। बहुत सारे ईमानदारी अधिकारी भी हैं। लेकिन अगर आप सबको भ्रष्ट बना देंगे। आपने जिसकी इज्जत उतार ली। फ्रंट पेज में छाप लिया। प्राइम टाइम में दिखा लिया और उसके घर कुछ नहीं मिला। अब आप क्या करेंगे ? वह वीडियो तो चल ही रहा है न। आजकल तो वाट्सअप यूनिवर्सिटी चल रहा है। वह छापा पड़ा नहीं और हजारों-करोड़ों के सामान बाजार में आ गया। हमारे प्रधानमंत्री जी तो कहते हैं कि मैं उससे बाहर आउंगा फिर बाद में बदल दिया। एक दिन पूछा ऐसा क्यों कह रहे हैं प्रधानमंत्री जी। मैंने कहा कि राजनीति की पहली पाठ है, जिस सीढ़ी से चढ़ो, उसे गिरा दो। तो वह काम यदि प्रधानमंत्री कर रहे हैं तो गलत नहीं कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- उससे पीडित तो टी.एस. सिंहदेव भी हैं। इसीलिए वे यहां नहीं है।

श्री भूपेश बघेल :- वे तो कोरोना का बयान देने के लिए गये हैं। कोरोना के मामले में एक वर्कशॉप है, उसमें मुझसे पूछकर गये हैं। अध्यक्ष महोदय, बहुत समय न लेते हुए मैं केवल इतना कहना चाहूंगा कि हमारी सरकार अवैध शराब के बारे में सभी सदस्यों ने जो चिंता की, मैं और हमारी सरकार भी इससे सहमत हूं कि जो अवैध शराब की बिक्री हो रही है, यदि उसमें किसी जिले में अवैध शराब बिका तो फिर उसके लिए संबंधित जिले के एस.पी. जिम्मेदार होगा। (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- भैय्या, सट्टा के लिए भी बोल दो। सट्टा,जुआ के लिए भी एस.पी. जिम्मेदार होगा। सट्टा भी भारी चल रहा है।

श्री भूपेश बघेल :- बिलकुल सही बात। मैं,आपसे सहमत हूं। पटवा मटका नहीं चलना चाहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- कोई भी। आप जो भी नाम ले दो। आप बोल ही दीजिये कि उसके लिए एस.पी. जिम्मेदार होगा।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब थोड़ी से तकनीकी बिन्दुओं पर भी चर्चा कर लूं, नहीं तो वित्त मंत्री के रूप में कोई बात नहीं किया, तो ठीक नहीं होगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, बजट का कुल आकार 1,02,907 करोड़ रूपये का है। कुल व्यय में से पूंजीगत व्यय 13,814 करोड़ रूपये है, जो 14.9 प्रतिशत है। राजस्व आधिक्य 2,431 करोड़ रूपये अनुमानित है। वर्ष 2018-19 के स्थिर भाव पर छत्तीसगढ़ के जी.एस.डी.पी. विकास दर 8.26 प्रतिशत है। भारत का जी.डी.पी. विकास दर 5 प्रतिशत अनुमानित है। अखिल भारतीय वृद्धि दर से राज्य का वृद्धि दर 3.26 प्रतिशत अधिक होना अनुमानित है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर 2.8 प्रतिशत वृद्धि दर के विरूद्ध राज्य में 3.31 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है। आद्योगिक क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर 2.5 प्रतिशत वृद्धि के विरूद्ध राज्य में 4.94 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है। वहीं वर्ष 2020-21 में प्रति व्यक्ति आय 98,281 रूपया संभावित है, जो गत वर्ष की तुलना में 6.35 प्रतिशत अधिक है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अंत में हमारे विधायक साथी बहुत धैर्यपूर्वक बैठे हुए हैं। जब विपक्ष में आओ न तब पता चलता है। लेकिन शिवरतन जी तो वैसे के वैसे ही हैं। (हंसी) सत्ता का सुख तब भी नहीं मिला था, वह कितना चिल्लाते रहे, बोलते रहे, हमारे बगल में रहे, लेकिन वह इधर आ ही नहीं पाये। लेकिन वे उतना दु:खी नहीं हैं। लेकिन जो लोग मंत्री थे, उनको तकलीफ ज्यादा है। अध्यक्ष महोदय, सदस्यों की जो सुविधाएं हैं, क्योंकि महंगाई भी बढ़ गई है, उनको यात्राएं भी करनी पड़ती है। तो वेतन तथा रेल्वे कूपन, जो हवाई यात्रा है, उसको 4 लाख से बढ़ाकर 8 लाख कर रहा हूं। (मेजों की थपथपाहट) लेकिन इसके साथ एक और सुविधा, जो अभी तक नहीं मिलती थी, वह बोर्डिंग की है। दिल्ली जाते हैं तो छत्तीसगढ़ भवन, सदन है, उसमें रहते हैं। लेकिन जब दूसरे प्रदेश जाते हैं, तो वहां बोर्डिंग की बड़ी समस्या होती है तो होटल का जो किराया है, उसको भी इसमें दिया जा सकता है। (मेजों की थपथपाहट) उसमें 8 लाख तक की यात्रा करें, कम्पेनियन ले जाये, होटल में रूके, 8 लाख रूपये है। उसी प्रकार से जो हमारे भूतपूर्व विधायक हैं, मुझे उधर की ज्यादा चिंता है। अभी बहुत सारे भूत हो गये हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- भूत सबको होना है।

श्री धरमलाल कौशिक:- सच्चाई यही है कि राम नाम सत्य है तो भूत सबको होना है। सच्चाई यही है। कोई एक बार में होगा, कोई दो बार में होगा, कोई तीन बार में होगा।

श्री भूपेश बघेल :- उस दर्द को मैं भी समझता हूं। डा. रमन सिंह जी भी समझते हैं। थोड़े दिन के लिए वे भी भूत हुए थे। ननकीराम जी तो जानते ही हैं। अजय जी तो फिर कभी इधर, कभी उधर। चौबे जी जैसे को भी अनुभव हो गया है, जो लगातार जीतते रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके साथ एक ही बार इधर-उधर हुआ था।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भूतपूर्व विधायकों का जो 20 हजार रूपया पेंशन है, उसको बढ़ाकर 35 हजार रूपया पेंशन किया जाता है। अब उनके लिए भी टेबल ठोक दो यार। (मेजों की थपथपाहट) उनका पेंशन पहले बढ़ाया है, 20 हजार से 35 हजार किया गया है और रेल्वे कूपन, हवाई यात्रा और साथ ही उनको भी बोर्डिंग की सुविधा 2 लाख से बढ़ाकर 4 लाख की जाएगी । (मेजों की थपथपाहट) और जनसम्पर्क की जो राशि है, मैंने पिछले साल घोषणा की थी, वह 1 अप्रैल से लागू हो जाएगी । (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी, धन्यवाद के साथ आपकी घोषणा एक साल में लागू होती है । आपने अभी जो घोषणा की, वह इसी साल से लागू होगी, यह कहिए ।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, एक चीज और बच गई । जो कुटुम्ब पेंशन की राशि है, उसे 10 हजार से बढ़ाकर 25 हजार रूपए की जाती है । (मेजों की थपथपाहट) इसी के साथ मैं पूरे सदन को धन्यवाद देता हूं कि माननीय सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए विशेष रूप से आपको धन्यवाद देते हुए अपनी वाणी को यहीं विराम देता हूं । धन्यवाद, जयहिन्द, जय छत्तीसगढ़ ।

अध्यक्ष महोदय :- आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद । आप सबको, विधायकगणों को, पूर्व विधायकगणों को, सबको बधाई ।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही शुक्रवार, दिनांक 6 मार्च, 2020 को 11 बजे दिन तक के लिए स्थगित ।

(सायं 5 बजकर 51 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही शुक्रवार, दिनांक 6 मार्च, 2020 (फाल्गुन 16, 1941) के पूर्वाहन 11:00 बजे दिन तक के लिए स्थगित की गई)

चन्द्र शेखर गंगराड़े

रायपुर (छत्तीसगढ़) **प्रमुख सचिव**

दिनांक 05 मार्च, 2020 **छत्तीसगढ़ विधान सभा**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं